

**Text Darke With In
The Book Only
And**

Dranched Book

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178975

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—552—7-7-66—10,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H83/G98V** Accession No. **G.H. 6**

Author **मुकुट**.

Title **विष्णु - छाया**.

This book should be returned on or before the date
last marked below. /

विकृत-छाया

लेखक

श्री गुरुदत्त

प्रधान विक्रेता

भारती-साहित्य-सदन, नई दिल्ली ।

प्रकाशक
राजहंस प्रकाशन
दिल्ली ।

पथम संस्करण
१९४७
मूल्य साढ़े चार रुपये

मुद्रक
अमरचंद्र
राजहंस प्रेस,

भूमिका

समय व्यतीत होने के साथ-साथ संसार की प्रत्येक बात में परिवर्तन होता रहता है। परिणाम स्वरूप सदैव धीरे-धीरे मनुष्य के भोजन, पोशाक, रहन-सहन और विचारों में भी परिवर्तन हो रहा है। कुछ लोगों का तो यह भी मत है कि मनुष्य के शरीर की बनावट, लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई और रूप-रेखा में भी समय के साथ-साथ अन्तर पड़ता जाता है। किन्तु प्रायः यह परिवर्तन इतने धीरे-धीरे होते हैं कि मनुष्य इनका अनुभव भी नहीं करता।

कभी-कभी संसार में क्रांतियां भी होती हैं। तो परिवर्तन इतनी द्रुत गति से होते हैं कि अन्धे भी उसका अनुभव करने लगते हैं। सारांशतः संसार की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है। प्रकृति के यह परिवर्तन अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के परिणाम पैदा कर सकते हैं। विशेषरूप से मनुष्य-समाज में होने वाले परिवर्तन तो अच्छे-बुरे मिले-जुले होते ही हैं। कुछ लोगों का विचार है कि परिवर्तन केवल उन्नति के ही सूचक होते हैं। उनकी यह निश्चित धारणा है कि समयानुसार होने वाले यह परिवर्तन वातावरण और परिस्थितियों के उत्तर होते हैं, जैसा समय आता है उसके अनुकूल ही समाज में परिवर्तन हो जाते हैं। अतएव इन परिवर्तनों को रोकना सर्वथा अवांछनीय और असम्भव है।

ऐसे लोगों से लेखक का मतभेद है। यदि समाज में होने वाला प्रत्येक परिवर्तन स्वाभाविक और अनिवार्य ही है तो फिर प्रचारकों की, रहबर, नेता और पैगम्बरों की, इस संसार में आवश्यकता ही नहीं रहती और मनुष्य इतर जीव-जन्तुओं को भाँति वातावरण और परिस्थितियों का खिलौना-मात्र रह जाता है।

मनुष्य में जब से विचार-शक्ति पैदा हुई है तब से ही यह प्रकृति का दासता त्यागकर उस पर राज्य करने का यत्न करता रहा है। इस प्रयत्न में उसे प्रकृति से जो संघर्ष करना पड़ा है उसका इतिहास बहुत लम्बा है। इस संघर्ष में अनेकों बार हार खाकर भी मनुष्य निरन्तर प्रयत्नशील रहा है और समाज की वर्तमान स्थिति उन तमाम विजयों की प्रतीक है, जो उसने आज तक प्रकृति पर प्राप्त की हैं।

प्रकृति से हमारा अभिप्राय उस वातावरण और परिस्थितियों से है, जिनमें मनुष्य पैदा होता है। मनुष्य का जीवन उन परिस्थितियों से युद्ध करने में व्यतीत होता है और वह चाहता है कि जो कुछ उसने इस संघर्ष में प्राप्त किया है वह अपनी सन्तति को विरासत में देता जाय। इसके विपरीत प्रकृति का यह प्रयत्न रहता है कि मनुष्य ने जो कुछ प्राप्त किया है वह सब उसमें छीन ले और पुनः मनुष्य को उस अवस्था तक पहुँचा दे जहाँ से उसने अपने इस संघर्ष का आरम्भ किया था, अर्थात् उसे वह उस जंगली हालत में ले जाय जिसमें कि वह तब था जब कि उसका बन्दरों से समीप का नाता था।

प्रकृति अपने इस प्रयत्न में अनेकों प्रलोभनों से सहायता लेती है। मनुष्य बुद्धि और स्मरण-शक्ति से काम लेकर इन प्रलोभनों का विरोध करता है और वह दिन-प्रतिदिन आगे-ही-आगे चलता जाता है।

इस पर भी दुर्बल मनुष्य प्रकृति के इन प्रलोभनों का शिकार हो जाते हैं और अपने मनुष्यत्व को भूलकर प्रकृति के प्रवाह में बहने लगते हैं।

वे परिवर्तन, जो प्रकृति पर प्रभुत्व प्राप्त करने पर होते हैं, उन्नति कहे जाने चाहिए। उदाहरण स्वरूप मनुष्य वायु से अधिक बोझिल प्राणी है। वह हवा में उड़ नहीं सकता। मनुष्य ने प्रकृति के इस बंधन को ताड़ डाला है और उसने ऐसे हवाई जहाज बना लिये हैं जो न केवल उसे ही, प्रत्युत उसके साथ सैकड़ों मन बोझा उठाकर मीलों तक आकाश में ले जाते हैं। यह मनुष्य की प्रकृति पर विजय है। इसलिए

इसे हम उन्नति कहेंगे। रेगिस्तान में वनस्पति इत्यादि पैदा नहीं हो सकती, परन्तु फ़िलिस्तीन में यहूदियों ने रेगिस्तान में नारंगियों के बाग लगा दिये हैं। यह मनुष्य की प्रकृति पर विजय है। और भी देखिये, एक से अधिक स्त्रियों से विवाह करने के लिए, प्रकृति ने पुरुष को बनाया है। मनुष्य समाज ने नियम बना दिया है, कि यह नहीं होगा। धीरे-धीरे मनुष्य ने इसे ठीक मानकर अपना व्यवहार निश्चय कर लिया है। यह मनुष्य की प्रकृति पर विजय है। यह सब बातें मनुष्य ने उन्नति की ओर जाने की हैं।

कठिनाई तो उस समय पड़ती है जब मनुष्य प्रमादवश अपनी हार को जीत मानने लगता है। अनेकों ऐसे उदाहरण हैं जब वास्तव में कोई मनुष्य प्रकृति के प्रलोभनों के सम्मुख परास्त होता है; परन्तु स्वभाव और प्रकृति का नाम ले लेकर वह अपनी हार को जीत ही समझता और बताता है। फिर वह उसको स्वतन्त्रता उदारता, व्यक्तित्व इत्यादि के सुन्दर नाम देकर लोगों का भी अपनी भांति दुर्बल बनाकर इन प्रलोभनों के सम्मुख नत-मस्तक होने को ग्रामन्त्रित करता है।

स्त्रियों की स्वाधीनता का आन्दोलन कई अंशों में इन्हीं मार्गों पर चल रहा है। बन्दरों की जाति में, जिसके समीप मनुष्य सभ्यता के उषा-काल में था, बंदरी को कितनी और किन-किन बातों में स्वतन्त्रता प्राप्त है? फिर मनुष्य ने, अपनी उस अवस्था में स्त्रियों को क्या बनाया हुआ था? और अब स्त्रियों को क्या प्राप्त हो चुका है? इस परिवर्तन का इतिहास हमारी उक्त धारणा का एक लम्बा उदाहरण है। यही बात विचारणीय है।

समाज ने धीरे-धीरे ऐसे कानून और प्रथाएँ बनाई हैं, जिनसे स्त्रियों की अवस्था उस प्रारम्भिक काल से बहुत उन्नत हो गई है। इस पर भी प्रकृति स्त्रियों को घसीटकर पुनः उसी जंगली अवस्था के गर्त में ले जाना चाहती है और कुछ प्रकृति से उपस्थित प्रलोभनों में फँसकर वह मनुष्यत्व तक खो देने को तैयार हो जाती है। सबसे बड़ी मज्जे की बात तो

यह है कि छाया जैसी नारियां उस गड्ढे में गिरती हुई यह घोषित करती हैं कि वे यह सब कुछ स्त्रियों की स्वतन्त्रता, व्यक्तित्व और उन्नति के लिए ही कर रही हैं।

यूरोप में स्त्रियां कितना धन श्रृंगार में खर्च करती हैं और वहां का संगीत, चित्र-कला, नृत्य और अन्य सब ललित कलायें स्वाभाविकता के नाम पर कितनी बनावट उपस्थित करती हैं? यह कुछ भी ध्यान से देखने वालों को पता चल जाता है। इस पर भी भारतवर्ष की स्त्रियां उस सबकी अन्धा-धुन्ध नकल करने में लग जाती हैं और फिर समझती हैं कि वह उन्नति के मार्ग पर जा रही हैं। रुज और लिपस्टिक के रंग के शोड पर मुग्ध होने वाली स्त्रियां, बालों पर सैकड़ों रुपये व्यय कर उन पर अनेकों प्रकार की रेखायें निकालने वाली स्त्रियां और साड़ी या ब्लाउज के दस दिन पुराने फैशन पर झुंझलाकर पतियों से लड़ने वाली स्त्रियां, स्त्री जाति का उद्धार करने का दम भरें तो, उनको 'विकृत' नाम देने के अतिरिक्त और कहा ही क्या जा सकता है ?

पुरुष और स्त्री का सम्बन्ध स्वाभाविक तथा प्रकृति के नियमानु-कूल होते हुए भी, शताब्दियों के अनुभव के बाद लगाये गये प्रतिबन्धों को, वे ही लोग उन्नति के मार्ग में बाधा समझते हैं, जो प्रकृति से उपस्थित प्रलोभनों में फँसकर भी प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की घोषणा करते हैं।

इसी प्रकार संयुक्त परिवार की प्रथा है। हिन्दू समाज ने इसे कई शताब्दियों के अनुभव, मनन और अनुशीलन के पश्चात् एक रूप दिया था। यह अभी पूर्णता को प्राप्त भी नहीं हुआ था कि विज्ञान की उन्नति ने परिवार के छोटे-से घेरे को तोड़कर बड़े-बड़े समूह बनाने सुगम कर दिये। इस पर भी मनुष्य में पशुता का भाव (animalism), जो प्रकृति ने इसमें डाल रखा है, रह-रह कर ऊपर उभर आता है और यह सांश्लेपन का विचार, पूर्ण समाज में व्याप्त होने के बजाय परिवारों में से भी लुप्त होता जा रहा है। स्वार्थ और व्यक्तिगत प्रगति ही इसका

कारण है। परिवार में एक भाई जब अधिक धन पैदा करने लगता है तो वह दूसरे भाई को, जो उतना पैदा नहीं कर सकता, अपने पर बोझा, अपने व्यक्तित्व पर बाधा और अपनी कमाई पर अन्याय पूर्वक डाका समझने लगता है। यह बात पूंजीवादी मनोवृत्ति के कारण ही उत्पन्न हो रही है। समाजवादा, सिद्धांत से समष्टिगत (collective) जीवन को श्रेष्ठ मानते हैं और पूंजीवादी वर्ग व्यक्तिगत (Individualism) प्रगति को ठीक समझता है। जहां कहीं पूंजीवादी समष्टिगत जीवन बनाते हैं वहां भी वे किसी-न-किसी स्वार्थ को लक्ष्य में करके ही बनाते हैं। इन सब घटनाओं से समाज फिर उस प्रागैतिहासिक काल अर्थात् जंमलीपन की ओर चला जायगा, कि जब संसार बलवान् अथवा धूर्तों के लिए ही था।

पशुता की ओर से हटाकर मनुष्यता की ओर ले जाना ही इस पुस्तक की वास्तविक समस्या है। अनुचित स्वतंत्रता, उच्छ्रंखलता और पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव पर होने वाली शोषण-वृत्ति का प्रतिकार ही इसकी पृष्ठभूमि है।

‘विकृत-छाया’ एक उपन्यास है। इसमें वर्णित नाम, स्थान और घटनाएं, सब कल्पित हैं। ये किसी विशेष व्यक्ति और स्थान से सम्बन्ध नहीं रखती। अतः इसमें किसी का मान अथवा अपमान लक्ष्य नहीं है।

पुस्तक को यह रूप देने में, जिसमें यह पाठकों के सम्मुख उपस्थित है, श्री क्षेमचन्द्र जी ‘सुमन’ का भारी सहयोग प्राप्त हुआ है। इसके लिए लेखक उनका अत्यन्त कृतज्ञ है।

पुस्तक को छापने के लिए राजहंस प्रेस, सदर बाजार दिल्ली के प्रबन्ध का धन्यवाद किये बिना नहीं रहा जा सकता। उनके पूर्ण सहयोग के बिना इसका इस काल में छपना असम्भव ही था।

—गुरुदत्त

संकेत

१. विकृति	३
२. पतन तथा उत्थान	८६
३. आश्रम-जीवन	१४०
४. तर्क-वितर्क	१७४
५. बदला	२३८
६. विवाह	२७१
७. प्रकाश	२९१

विकृत-छाया

पहला भाग

विकृति

: १ :

विचारों का विकास प्रायः जब के विकास के साथ-साथ होता है । जब धन एकत्रित होता है तो वह अपना प्रभाव मन पर डालता है । परन्तु विकास के अर्थ सदैव भलाई की ओर ही जाने के नहीं । धन के प्रभाव से जो विकास होता है वह प्रायः मन को विकृत ही करता है ।

पं० केशवदेव भारत-सरकार के दफ्तर में सन् १९२१ में एक साधारण क्लर्क के पद पर नियुक्त हुए थे । उस समय, जब वह दिल्ली में आये तो स्वयं, अपनी स्त्री और एक गोदी का लड़का लिये हुए पहुँचे थे । वे जिला जालन्धर (पंजाब) के एक गांव के रहने वाले थे । इन्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त कर पंजाब-सरकार की नौकरी में चले गये थे । वहाँ से भारत-सरकार के दफ्तर में आगये । पंजाब-सरकार के दफ्तर में चालीस रुपये मासिक वेतन था और भारत-सरकार के दफ्तर में आने पर साठ रुपये मासिक होगया था ।

उस समय पं० केशवदेव की धर्म-पत्नी कपड़े धर धोती थी । पं० जी उन्हीं कपड़ों को पहनकर दफ्तर जाते थे । पं० जी तथा उनकी स्त्री नित्य सन्ध्या-उपासना करते थे और होली-दिवाली पर हवन भी कर लेते थे । घर पर फर्नीचर, दो खाटों और एक-दो संदूकों के अतिरिक्त और कुछ नहीं था । दफ्तर अभी सिविल लाइन्स में था । इस कारण पंडित जी ने रहने की कशमीरी गेट के भीतर एक मकान में दो कमरे पाँच रुपये मासिक पर लिये हुए थे ।

सन् १९३९ में, जब का यह वृत्तान्त है, पं० केशवदेव रायबहादुर पं० केशवदेव डिप्टी सेक्रेटरी फूड डिपार्टमेंट होगये थे । इतने ऊंचे पद पर वे कैसे पहुँचे, यह इस कथा का विषय नहीं है । कुछ योग्यता, कुछ सिफारिश, कुछ चापलूसी, कुछ खुशामद और सबसे अधिक साथियों तथा मातहत लोगों की निन्दा करने का इसमें हाथ अवश्य था । दिल्ली के सरकारी दफ्तरों में विशेष रूप से और प्रान्तीय सरकारी दफ्तरों में साधारण रूप में उन्नति के यह ढंग सबको भली प्रकार विदित हैं ।

अब पं० केशवदेव तुगलक रोड पर एक विशाल कोठी में रहते हैं । केवल ड्राइंगरूम की सजावट और फर्नीचर पर सहस्रों रुपये का खर्चा हुआ था । कोठी के बाहर घास का विस्तृत लॉन (मैदान) और पीछे फूलों का बागीचा है । पं० जी तथा उनकी धर्म-पत्नी अब सन्ध्या-हवन नहीं करते ? प्रत्युत अब प्रातः खाट पर ही उनके लिए 'काफी' चांदी के बर्तनों में परस कर लाई जाती है । पलंग से उठकर आधा घंटा बागीचे में टहल-टहलकर कभी एक फूल को उखाड़ कभी दूसरेकी पंखड़ियां मरोड़ते हुए टट्टी की प्रतीक्षा करना उनका नित्य का काम हो गया है ।

लाहौर में पंडित जी आर्य समाज के कार्य पर और वैदिक धर्म पर अगाध श्रद्धा रखते थे । प्राचीन आर्य-संस्कृति के गुण गाने में अपना गौरव माना करते थे और अब वे परमात्मा के नाम पर हंसी किया करते हैं । उदार विचारों के पोषक होने से मुसलमान रसोइये का बनाया खाना ही वे अब पसन्द करते हैं । उनकी स्त्री अर्थात् मिसेज केशवदेव पति के और पति के मित्रों के साथ बैठकर मास-मछली खाने में आनन्द अनुभव करने लगी हैं ।

पूर्व परिचय के कारण कभी-कभी किसी आर्यसमाजी से अब भी भेंट होता है तो वे कहा करते हैं 'भाई, चन्दा देने की बात छोड़ो । वह तो मैं देता ही हूँ क्योंकि मुझे अपनी मान-प्रतिष्ठा और समाजिक स्थिति को ऊँचा रखना है । वास्तव में मैं अब इन छोटी-छोटी बातों में विश्वास नहीं रखता । मैं अपने को मनुष्य समझता हूँ और जाति, देश तथा मत-मतांतरों

विकृति

के भगड़ों से ऊंचा पाता हूँ ।’

रायबहादुर का एक लड़का था जो लाहौर में पैदा हुआ था और इस समय चौबीस वर्ष का था । नाम था भृगुदत्त । पढ़ा तो था बी० ए० में इतिहास; परन्तु काम करता था ठेकेदारी का । पिता के परिचय और प्रतिष्ठा के कारण उसे अच्छे-अच्छे ठेके मिल जाते थे । रायसाहब की एक लड़की भी थी । नाम था छाया । आयु इक्कीस वर्ष की थी और कॉलिज में पढ़ती थी । पूर्ण रूप से आधुनिक विचार, भाषा और वेश से प्रभावित कथित उन्नति के मार्ग पर वेग से चली जा रही थी । लड़की बोर्डिंग हाउस में रहती थी । उसके पिता का कहना था कि घर पर रहकर शिक्षा का प्रबन्ध ठीक नहीं हो सकता । भृगुदत्त भी अपने छात्र-जीवन में बोर्डिंग हाउस के जीवन का आनन्द प्राप्त कर चुका था और छाया, जो लड़कियों को किसी प्रकार भी लड़कों से कम अधिकार वाली नहीं मानती थी, बिना बोर्डिंग हाउस में दाखिल हुए अपनी शिक्षा को कैसे पूर्ण समझ सकती थी ?

आज छाया की सगाई की चर्चा थी । कुछ दिन पूर्व एक मिस्टर बलवीरसिंह रायबहादुर से आकर मिला था और उसने कहा था—

‘मे आपकी लड़की छाया का मित्र हूँ । उसके कहने के अनुसार मैं आपसे उसके साथ विवाह करने की स्वीकृति लेने आया हूँ ।’

इस पर रायबहादुर ने बलवीरसिंह का परिचय मांगा । बलवीर ने उत्तर में कहा, ‘मे ठाकुर शमशेरसिंह, जयपुर रियासत के एक ठिकानेदार, का लड़का हूँ । मेने विलायत से डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त की है । लंडन का एम० डी० हूँ । पिताजी की आर्थिक स्थिति जयपुर दरबार से भगड़ा होने के कारण कुछ अच्छी नहीं । इस पर भी भली-भांति निर्वाह कर सकने की क्षमता हममें है ।’

रायबहादुर ने छाया से पूछकर सूचित करने का वचन दिया था । इस वचन के अनुकूल आज अंतिम निर्णय करने के लिए बलवीरसिंह और उसके पिता को आमंत्रित किया गया था । बलवीर अपने एक परम मित्र मिस्टर कमल को भी आग्रह पूर्वक साथ ले आया था । रायबहादुर के

बंगले पर जब ये लोग पहुंचे तो व्यावहारिक आव-भगत के पश्चात् रायबहादुर ने बलवीरसिंह के पिता को बताया कि 'लड़की को कॉलिज-होस्टल से बुलाया है, अभी आती होगी। बातचीत उसके आने पर ही होगी।'

सब लोग कोठी के ड्राइंग रूम में बैठे थे। कुल पांच आदमी थे। रायबहादुर केशवदेव और उनके सुपुत्र पं० भृगुदत्त और तीन मेहमान। उनके सम्मुख दो तिपाइयों पर चाय का सामान लदा पड़ा था। केक, पेस्टरी, बिस्कुट, देसी मिठाई और फल थे। साथ ही दूध और चीनी रखी थी। केवल चाय का पानी लाना शेष था। सब वस्तुएं अति रोचक ढंग से सजाकर रखी गई थीं।

कुछ देर तक रायबहादुर की ठाकुर शमशेरसिंह से और बलवीरसिंह की भृगुदत्त से इधर-उधर की बातचीत होती रही। बलवीरसिंह के मित्र कमलनारायण चुपचाप बैठे थे। उनसे बातें करने वाला कोई नहीं था।

कमलनारायण विशेष तौर पर और दूसरे, जब बातों से अवकाश पाते, अथवा जब कभी बंगले के बाहर सड़क पर किसी मोटर के भागकर जाने का शब्द सुनाई देता तो खिड़की में से बाहर देखते थे। सब लोग जानते थे कि छायादेवी मोटर गाड़ी पर आने वाली है। जब साधारण बातों का कोष समाप्त हो गया तो दोनों वृद्धजनों ने बातें समाप्त कर दीं। बलवीर और भृगुदत्त भी कुछ अधिक काल तक परस्पर सिनेमा और दूसरे ऐसे ही विषयों पर बात करके चुप होगये।

कमल इस चुप्पी से बेचैन हो उठा। यों तो उसे इन लोगों की बातों के विषय में किसी प्रकार की भी रुचि नहीं थी; परन्तु अब तो सर्वथा चुप्पी से वह और भी घबरा उठा। उसका बार-बार हिलना और वहां बैठे हुए व्यक्तियों के मुख को देखना, उसके मन के भावों को प्रकट करता था। वह वातावरण को बहुत सीमा तक अस्वाभाविक अनुभव कर रहा था। एक घंटा भर छायादेवी की प्रतीक्षा करके वह उकता गया। वह अपने मित्र बलवीरसिंह को, जो भृगुदत्त के साथ एक सोफे पर बैठा था,

सम्बोधित कर बोला,

‘दादा ! क्या हमारा यहां आना पहले निश्चय नहीं हो चुका था ?’

रायबहादुर इस प्रश्न का अर्थ समझ गये और लज्जा अनुभव करते हुए कहने लगे, ‘क्षमा कीजिएगा ! अवश्य ही कुछ कारण होगया होगा । अन्यथा वह तो समय पर काम करने वाली लड़की है । सर्वथा ‘माइर्न’ है । हर पांच मिनट के पश्चात् घडी देखा करती है । मुझे भय है कि कहीं मार्ग में कोई दुर्घटना न होगई हो ।’

इस पर बलवीरसिंह ने कहा, ‘कुछ बात नहीं । हमें तो यहां रात का खाना खाने तक रहना है न । देरी से कुछ हानि नहीं हो रही ।’

‘परन्तु दादा ! इस प्रकार चुप रहने से तो रात के खाने का समय आयगा नहीं ?’

‘तो तुम ही कुछ कहो न ।’ शमशेरसिंह ने कमल से कहा ।

‘पर मेरी बात एक सरकारी अफसर के घर कैसे हो सकती है ? और फिर यदि अफसर महोदय स्वीकृति दे भी दें तो क्या विश्वास है कि उससे कोई लाभ होगा ?’

‘शमशेरसिंह ने बात टालने के विचार से कह दिया, ‘रायबहादुर ! यह मेरे एक परम मित्र का लड़का है । बचपन में ही इसके माता-पिता का देहान्त हो गया था । तब से यह मेरे घर में मेरे लड़के की तरह रह रहा है । बलवीर का इससे बहुत स्नेह है और वह ही इसे हठ करके साथ लाया है । कमल बोलता अधिक है परन्तु निरर्थक कभी नहीं कहता । यह लेखक है, कवि है और फ़िलासफर भी है । इसके अतिरिक्त कर्मशील भी है; परन्तु जीवन के विषय में यह अपने विचार सर्व-साधारण से कुछ विलक्षण रखता है ।’

रायबहादुर ने मुस्कराकर उत्तर दिया, ‘तब तो इन्हें महापुरुष मानना चाहिए ।’

कमल ने वैसे ही गम्भीर भाव रखा और कहा, ‘सो तो ठीक है, किन्तु महापुरुषों को भूल नहीं लगती क्या ? अथवा बढ़िया पदार्थों को

देखकर उनके मुख से लार नहीं टपकती क्या ?'

इस पर भृगुदत्त ने कहा, 'तो आप खाइये न ।'

'वाह ! यह भी कोई ढंग है खिलाने का ।'

रायबहादुर, 'तो आओ सब चाय पियें । वह अभी आती ही होगी ।'

शमशेरसिंह ने कहा, 'नहीं ! नहीं ! यह कमल की बात छोड़िए । इसका तो स्वभाव ही ऐसा है । खाने में शेर है, परन्तु इसके कहने से नाराज होने की बात नहीं ।'

'वाह चाचाजी ! बना बनाया काम बिगाड़ दिया आपने । सबसे बड़ी बात यह है कि एक घंटा प्रतीक्षा तो की हमने, और देरी से आने वाले को दंड मिला ही नहीं ।'

'किसको दंड दिलवाइयेगा ?' एक लड़की ने, जिसने कमल की कुर्सी के पिछली तरफ से कमरे में प्रवेश किया था, पूछा ।

'लो आगई' रायबहादुर ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, 'आओ बेटी छाया । तुमने तो कहा था ठीक चार बजे पहुंच जाओगी ।'

लड़की ने निकर पहना हुआ था । उस पर टैनिस् फैशन के खुले गले की सफ़ेद कमीज थी । पंरों में सफ़ेद छोटी जुरबिं और सफ़ेद टैनिस् शू । हाथ में टैनिस् का बल्ला था । वह सिर से नज़्जी थी और बाल कटे हुए थे ।

रायबहादुर के कहने पर सब लड़की की ओर देखने लगे थे । केवल कमल ही था जो उसकी ओर नहीं घूमा था । वह अपनी कुर्सी का ढासना लगाये बैठा रहा और आगे की ओर देखता रहा । लड़की कमल के पीछे ही खड़ी रही और रायबहादुर बैठे हुए व्यक्तियों से छाया का परिचय कराने लगे ।

'साहब ? यह है मेरी लड़की छाया देवी ।' अब छाया को सम्बोधित कर बोले, 'छाया बेटी ।' बलवीरसिंह के पिता की ओर संकेत कर 'यह है बलवीर जी के पिता, ठाकुर शमशेरसिंह । आप जयपुर के एक ठिकानेदार हैं ।'

बलवीरसिंह की ओर संकेत कर, 'इनको तुम जानती ही हो ?'

कमल की ओर संकेत करके रायबहादुर उसका परिचय कराने ही वाले थे कि छाया बोल उठी, 'इनको मैं जानती हूँ। कोई बदतमीज बे अदब आदमी है।'।

जिन-जिनका परिचय हो रहा था वे हाथ जोड़कर छाया को 'नमस्ते' कर रहे थे और छाया सिर हिला और मुस्कराकर उनकी 'नमस्ते' स्वाकार कर रही थी जब कमल की बारी आई तो वह उसी प्रकार बैठा रहा जैसे बैठा था। इससे चिढ़कर छाया ने उसे बदतमीज और बेअदब कहा था। इतना कहकर वह क्रोध से उबलती हुई कमल के पीछे से आगे आगई और माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कमल की ओर देखने लगी। उसे सम्मुख आया देखकर कमल ने हाथ जोड़ दिये और कहा, 'देवी जी नमस्ते।'।

'फूल' छाया ने पाँव भूमि पर पटकते हुए कहा।

'धन्यवाद।' कमल ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

'डैडी !' छाया ने पिता की ओर देखकर कहा, 'यह मूर्ख यहाँ कैसे आगया है ! बफून !'

'बेटी' रायबहादुर ने बहुत नम्रता से ताड़ना की।

छाया एक खाली कुर्सी पर बैठ गई। उस समय कमरे में दो 'बैरे' आए और उन्होंने खाने के सामान से लदी तिपाइयों में से एक उठाकर बलवीरसिंह और उनके पिता के सामने रख दी और दूसरी छाया के पास। बलवीर एक कुर्सी उठाकर छाया की कुर्सी के पास ले गया और वहाँ जा बैठा। भृगुदत्त और रायबहादुर शमशेरसिंह के पास जा बैठे। कमल अभी भी अपनी कुर्सी पर बैठा था। बलवीर ने आवाज दी, 'कमल भैया ! आओ न। अभी तो श्री गणेश ही है।'।

कमल बलवीर के समीप एक खाली स्थान पर बैठ गया। छाया ने बलवीर की ओर घूरकर देखा और पूछा, 'आपका श्री गणेश से क्या अभिप्राय है ?'

बलवीर सोच रहा था कि क्या उत्तर दे, परन्तु कमल ने उसकी दुविधा दूर कर दी। उसने उत्तर दिया,

‘सुमन चोट लागे अति प्यारी।

मधुर मनोहर मञ्जुल न्यारी ॥’

बलवीरसिंह ने तिरछी दृष्टि से छाया को देखते हुए कहा,

‘सुमन व्यापार है अति तीखा।

लागे कांटा जो ना दीखा ॥’

छाया को कहने का अवसर दिये बिना ही कमल ने उत्तर दे दिया,

‘कंटक भय से डरे जो माली।

बिन पुष्प रहे पूजा थाली ॥’

बलवीर कुछ और कहने वाला था कि छाया बोल उठी, ‘यह कवि-दरबार अब बन्द कीजिए। मुझे एक घंटा देर हो गई थी और उसके लिए क्षमा मांगने वाली थी।’

कमल ने बीच में ही बात काटकर कह दिया, ‘और वह आपने मांग ली। परन्तु यह देर हुई कैसे?’

‘एक टेनिस-मैच खेलने लगी थी। कुछ तो मैच लम्बा हो गया और कुछ मेरे जीतने के उपलक्ष में कॉलिज में खुशी मनाई जाती रही। वहां से छुट्टी पाकर सीधी यहां को भागी हूँ।’

बलवीर, ‘तो हमारी बधाई भी स्वीकार हो।’

छाया ‘थैंक यू।’

कमल, ‘पर मैच किसके साथ था?’

छाया, ‘सेंट स्टीफन्स कॉलिज के एक लड़के से। वह दिल्ली का एक प्रसिद्ध खिलाड़ी है।’

कमल, ‘यह तो मामूली बात है।’

छाया, ‘मामूली? कभी टेनिस खेला भी है?’

‘खेल की बात नहीं, कुमारी जी! बात यह है—

कमल नैन की आभा सह सके नहीं कोय ।

इनसे जीते हार है विजय हार से होय ॥'

छाया, 'वाह ! वाह !! क्या कहना आपकी खुशामद का । आपको तो किसी नाटक कम्पनी में 'क्लाउन' का काम मिलना चाहिए ।'

कमल, 'आपकी प्रशंसा के लिए धन्यवाद ।'

बलवीर ने बात बदल दी, 'हम लोग एक विशेष प्रयोजन से आये हैं ।' इस समय छाया दोनों मेहमानों के लिए चाय बना रही थी । चाय डालते हुए उसने कहा, 'मुझे मालूम है । डैडी ने बताया था ।'

बलवीर, 'आपसे मिलकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है ।'

'थैंक यू ।'

'आप कैसा अनुभव करती है ?'

'देखने में तो आप अच्छे प्रतीत होते हैं परन्तु.....।'

'परन्तु क्या ?'

'यह आपके साथी कुछ जंचे नहीं ।'

'यह तो साधा हैं । इनके गुण इनसे मिलकर अनुभव करने की बात है । इनके बाहर पर मत जाइये ।'

'होंगे । इस समय आप इनको साथ क्यों लाये हैं ?'

'इनकी सम्मति आपके विषय में जाननी थी ।'

'ओह ! पर मैं आपसे एकान्त में बातें करना चाहती हूँ ।'

'तो क्या किसी दूसरे कमरे में चलें ?'

छाया ने चाय प्यालों में डाल दी थी । दूध वह अभी बलवीर के प्याले में डाल पाई थी कि उसने उक्त प्रश्न कर दिया । छाया ने दूध का बर्तन वहीं छोड़ दिया और अपने स्थान से उठकर बोली, 'आइये ।'

बलवीर भी उठ खड़ा हुआ । छाया और बलवीर को उठा देख सब लोग उनकी ओर देखने लगे । छाया ने अपने पिता की ओर देखकर कहा, 'डैडी ! हम दूसरे कमरे में हैं । अभी आते हैं ।'

कमल से नहीं रहा गया वह बोल ही उठा—

‘जहां ज्वार ऊंचे चढ़े तो पर घाटा आय ।

समतुल रहने से सदा किञ्चित् सोच न पाय ।’

वह दोहा छाया ने सुन लिया और उसने धूमकर कमल की ओर देखा, परन्तु वह अपनी चाय में दूध डाल रहा था । उसने छाया की ओर नहीं देखा ।

छाया का भाई, जिसे कमल का व्यवहार बुरा प्रतीत हो रहा था, उसके अकेले बैठे रह जाने से खिलखिलाकर हंस पड़ा । परन्तु कमल ने उस ओर ध्यान नहीं दिया । इस पर भृगुदत्त ने कमल को सम्बोधित करके कहा, ‘साहब ! इधर ही आजाइये । अकेले में क्या मजा आयगा ?’

‘धन्यवाद ! आपकी मिठाई में तो बहुत कुछ मजा है ।’

: २ :

बलवीर बड़ों के सम्मुख अपनी होने वाली स्त्री से एकान्त में जाकर बात करने में लज्जा अनुभव करता था, परन्तु छाया का प्रगतिशील स्वभाव वह जानता था । इसलिए छाया जैसी सुन्दर लड़की को अपनी स्त्री बनाने के लोभ में वह उसकी बात न टाल सका और चुपचाप अपने पिता की असन्तोषयुक्त दृष्टि को देखते हुए भी सिर नीचा झुकाये छाया के पीछे-पीछे कमरे से बाहर निकल गया । कमल का दोहा वास्तव में उसके लिए ही था और वह इसके अर्थ को समझता था ।

छाया उसे लेकर एक दूसरे कमरे में चली गई । वहां उसकी मां बैठी थी । छाया ने मां की ओर प्रेम भरी दृष्टि से देखकर कहा, ‘मम्मी डीयर ! ज़रा बाहर चली जाओ । हम प्राइवेट में कुछ बातचीत करेंगे ।’

बलवीर ने जब छाया को उसे ‘मम्मी’ कहते सुना तो समझ गया कि वह उसकी मां है । अतएव उसने हाथ जोड़कर ‘नमस्ते’ कर दी । मां बिना चूँ-चरा किये नमस्ते का उत्तर देकर कमरे से निकल गई । बलवीर ने कहा भी, ‘माता जी को रहने दो क्या हानि है ?’

‘आइये ! आइये ! यहां बैठिये ।’ छाया ने उसके कहने को टालते हुए कहा ।

बलवीर एक कुर्सी पर बैठ गया । छाया उसके सम्मुख कुर्सी पर बैठकर बोली, ‘मुझे आपको यहां लाने का प्रयोजन यह है कि स्त्री तो मैं ही आपकी बनूंगी न । वहां बैठे लोगों का इससे कुछ सम्बन्ध नहीं । इस कारण मैं आपसे अपने मन की वास्तविक बात कह देना चाहती हूँ; ताकि पीछे आपको पछतावा न हो ।’

‘बताइये !’

‘मैं स्त्रियों के अधिकार पुरुषों के बराबर मानती हूँ ।’

‘बराबर अथवा एक जैसे ।’

‘दोनों शब्दों के एक ही अर्थ है । मैं नहीं चाहती कि मेरे आपसे, एक मित्र के अतिरिक्त और, कोई सम्बन्ध हों ।’

‘ओह ! लैंगिक सम्बन्ध भी नहीं ?’

‘फून !’ छाया ने लज्जा से लाल होते हुए कहा ।

बलवीर ने मुस्कराकर कहा, ‘मैं तो डर गया था ।’

‘मैं बहुत बड़े परिवार को पसन्द नहीं करती । इस कारण सन्तान-निरोध के उपाय प्रयुक्त करने का अधिकार चाहती हूँ ।’

‘मुझे यह स्वीकार है ।’

‘मैं चाहती हूँ कि आपके माता पिता या आप, या तो तीस हजार रुपया मेरे नाम बैंक में जमा करा दें या आपके जीवन का बीमा इतनी रकम का हो जाय और वह मेरे नाम लिख दिया जाय ।’

‘और ?’

‘और यह कि मैं आपके बाप के साथ नहीं रहूंगी ।’ मेरे विवाह से पूर्व ही आप पृथक् मकान में रहने लगियेगा ।’

‘हां, तो और ?’

‘मैं घर का काम-काज कुछ नहीं करूंगी । उसके लिये नौकर रखवा दूंगा ।’

‘हां’

‘बस और कुछ नहीं। इन बातों के करने का एक इक्करारनामा अभी द तो मैं पिताजी को विवाह की स्वीकृति दे दूंगी।’

‘परन्तु यह सब एकदम तो हो नहीं सकता। कुछ बातें मुझे अपने पिताजी से भी पूछनी हैं, क्योंकि वह उनके करने की हैं।’

‘तो फिर अभी कुछ निर्णय नहीं हो सकता।’

‘यह बातें आपने पहले क्यों नहीं बताईं। मैं तो कई बार आपसे मिल चुका हूँ। आज बिना निर्णय चले किये जाने से तो मेरे पिता जी का अपमान हो जायगा।’

‘यह राजपूती शान की बातें यहां नहीं चल सकतीं। आज हम अकबर या राणा सांगा के काल में नहीं रह रहे। यह बीसवीं सदी है।’

‘तो क्या बीसवीं सदी में किसी के समय का मूल्य नहीं है अथवा अब सब लोग अपनी मान-प्रतिष्ठा के लिए चिन्तित नहीं रहे? आपको तथा आपके पिता को हमें बुलाने से पहले इन सब बातों पर विचार कर लेना चाहिए था। आप इतनी बार मुझसे मिलीं और एक बार भी तो रुपये-पैसे की बात आपने नहीं की।’

‘मिस्टर बलवीर! रुपया केवल रुपया लेने के लिये ही नहीं लिया जाता। मान-प्रतिष्ठा की सुरक्षा का सूचक भी रुपया माना जाता है।’

‘रुपये की इतनी महिमा सरमायादार समाज में है, यह मैं मानता हूँ। परन्तु रुपया रहते हुए भी कभी ऊपर की बातें नहीं रहती; ऐसा देखा गया है। वास्तविक बात तो सचाई और ईमानदारी का व्यवहार है। रुपया अपने आप आ जाता है।’

‘आज संसार में सचाई और ईमानदारी की गारण्टी रुपये से होती है और मैं इतना रुपया चाहती हूँ ताकि आपके व्यवहार मेरे साथ उचित रह सके।’

‘अर्थात् मुझे अपने व्यवहार की आपके पास जमानत जमा करनी है। मैं यह नहीं कर सकूंगा।’

‘तो अभी विवाह का निर्णय भी नहीं हो सकता ।’

‘अच्छी बात ।’ बलवीर इतना कहकर अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ । ‘चलो बाहर चलें सब लोग हमारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे ।’

‘तो वहां क्या कहियेगा ?’

‘मैं कुछ नहीं कहूंगा । मैं समझता हूं कि अब हमारा यहां ठहरने का कुछ प्रयोजन नहीं है । अतएव हम चले जायेंगे ।’

‘यदि पिताजी ने कुछ पूछा, तो ?’

‘तो जो तुम्हारे मन में आया कह देना ।’

दोनों ड्राइंग रूम की ओर चल पड़े ।

: ३ :

बाहर ड्राइंग रूम में रायबहादुर और शमशेरसिंह तो खाने का बहाना मात्र कर रहे थे । वह बातें नहीं कर रहे थे । दोनों छाया और बलवीर के उठकर चले जाने से चिन्तित थे । कमल ने, जितना कुछ था, खाना खाकर और दो प्याला चाय पीकर उनकी ओर ध्यान दिया और उनको चिन्तित बैठा देख उठकर उनके समीप आगया । वहां बैठकर बात करने के लिए भृगुदत्त से बोला, ‘मुझे आप लोगों का धन्यवाद करना ही चाहिए ।’

भृगुदत्त, ‘क्यों ?’

‘भाई यह पेस्टरी बहुत स्वादिष्ट थी । वैनजर से लाये होंगे ?’

‘सुना है आप कवि हैं ?’

‘चाचाजी से सुना होगा । वे मेरी प्रशंसा ऐसे ही किया करते हैं ।’

शमशेरसिंह ने समय टालने के लिए कह दिया, ‘कुछ भी हो यह कुछ लिखते-पढ़ते अवश्य रहते हैं और मुझे उसके सुनने में आनन्द आता है ।’

‘तो कुछ सुनाइये ।’ भृगुदत्त ने मजाक उड़ाने के लिए कह दिया ।

‘हां. हां । कुछ तो इरशाद फरमाइये ।’ रायबहादुर ने भी अपनी

बेचैनी को छिपाने के लिए कह दिया ।’

‘हां अवश्य सुनाओ ।’ बलवीर के पिता ने रायबहादुर के प्रस्ताव का समर्थन कर दिया ।

कमल ने भी समय के भार को हलका करने के लिए कहा, ‘अच्छी बात, चाचाजी ! आपकी बात तो मैं टाल नहीं सकता ।’

कमल ने कहना आरम्भ कर दिया—

‘कुछ जन लोभवश, मानवता भूलकर,

मान यश नाम बेच नाक कटवाते हैं ।

बहुत है मालिक के, दंड के भय अधीन,

कांप-कांप कृतज्ञता अपनी जताते हैं ॥

खाय पीय भोगकर, मन मौज उड़ा-उड़ा,

पशु भी तो अपना जीवन बिताते हैं ।

बिरले हैं सिंह नर, आफत में धीर वर,

जगत् को जीत कर, यश मान पाते हैं ॥

और भी हैं :—

पेड़ पर चढ़कर, अपने को बढ़ाकर,

जग को दिखानेवाले, मूर्ख तो बहुत हैं ।

कीमती पहन वस्त्र, भूषण से देह लाद,

सुन्दर कहाने वाले, मूर्ख तो बहुत हैं ॥

धोखा-धड़ा चातुरी से घूस ज़बर जोरी से,

धनी बन जाने वाले मूर्ख तो बहुत हैं ।

बिना सोच समझ के, पराया जो माल खाते,

ऐसे मुटियाने वाले, मूर्ख तो बहुत हैं ॥

ऐसे वीर धीर नर, आन मान बात पर,

जीवन मिटाने वाले कहीं ही मिलते हैं ।

मन के पवित्र और, वचन से सत्यवादी,

सीख को सुझाने वाले, कहीं ही मिलते हैं ॥

पर हित करने को, कष्ट दुख सहकर,
 खुद को मिटाने वाले कहीं ही मिलते हैं ।
 संसार से विरोध को, भेलने में अटल जो,
 भय नहीं खाने वाले कहीं ही मिलते हैं ॥'

भृगुदत्त बोल उठा, 'वाह ! वाह ! क्या कहना आपकी कविता
 तो कमाल की है, परन्तु यह मॉडर्न (अर्वाचीन) नहीं है ।'

कमल ने प्रसन्नता तथा रोष प्रकट किये बिना कह दिया, 'परन्तु
 इसमें कोई प्राचीनता भी तो दिखाई नहीं देती । और सुनिये—

स्वाधीनता के युग में, औरतों ने परदे से,
 बाहर निकलकर कैसा अच्छा है किया ।
 मुख होठ लाल कर, कसी हुई जाकट से,
 सौन्दर्य उगल कर कैसा अच्छा है किया ॥
 लिवैण्डर स्नो, क्रीम की, नगर के बजारों में,
 सफाई सकलकर कैसा अच्छा है किया ।
 चूल्हा चौका छोड़कर, साहबों की पी. ए. बन,
 क्लर्कों को विकल कर कैसा अच्छा है किया ॥'

'वाह ! वाह ! आपने भी यह कवित्त कैसा अच्छा है किया ।' छाया
 ने, जो बलवीर के साथ पुनः वहां आ गई थी, कहा ।

कमल, आपकी दाद का शुकुरिया ।'

बलवीर और छाया को आया देख स्वाभाविक रूप से सबकी दृष्टि
 उनकी ओर गई । बलवीर ने अपने पिता के समीप पहुंचकर कहा,
 'पिता जी । अब चलें ।'

यह सुन सब छाया का मुख देखने लगे । वह मुस्करा रही थी ।
 रायबहादुर ने माथे पर तयौरी चढ़ाकर पूछा, 'क्या बात है छाया ?'

'कुछ बात नहीं है डेडी ! अभी विवाह का निर्णय नहीं हो सकता ।'
 'मेरे पूछता हूं, क्यों ?'

छाया ने पिता के पास पहुंच पिता के गले में अपनी दोनों बांहें डाल-कर लाड़ से कहा, 'डैडी डीयर !'

रायबहादुर के माथे से बल उतर गये और उन्होंने पूछा, 'बेटी ! क्या बात हुई ? हमारी भी तो राय हो जाय ।'

'नहीं, डैडी ! अभी नहीं ।'

शमशेरसिंह लड़की को इस प्रकार हठ करते देख उठ खड़ा हुआ । कमल तो पहले ही उठकर बलबीर के समीप खड़ा हो गया था । शमशेरसिंह ने चलने से पूर्व कहा, 'बहुत अच्छी हंसी रही साहब ! अच्छी बात है । अब हम चलते हैं ।'

तीनों कमरे से बाहर निकल आये और जिस मोटर में आये थे उसी में सवार होकर चले गये । मार्ग में बलबीर के पिता ने पूछा, 'आखिर क्या हुआ था एकान्त में जाकर । तुम तो कहते थे लड़की मान गई है और रायबहादुर केवल एक दो साथियों के सामने बात करने के लिये विचार करेगे ।'

'मेने समझने में भूल की पिता जी । आपको कष्ट दिया इसके लिये क्षमा चाहता हूं ।'

कमल, 'मैं तो उसे देखते ही समझ गया था कि यह नौका पार नहीं लगेगी ।'

'वाह ! तुमने तो उसे घूमकर देखा तक भी नहीं था ।'

'अरे दादा नहीं ! मेरे सामने एक आइना लगा था । ज्योंही वह कमरे मे दाखिल हुई थी मैंने उसे सिर से पांव तक उसमें देख लिया था । उसे अपनी सगाई के अवसर पर अपने होने वाले श्वसुर के सम्मुख इस प्रकार जांधे नंगी करके चला आता देख मैं जान गया था कि यह दाल गलने वाली नहीं है ।'

शमशेरसिंह, 'आखिर वह क्या कहती थी ?'

'पिताजी ! कहती थी कि उसके नाम तीस हजार रुपया आप या मैं बैंक में जमा करा दूं, ताकि यह रकम उसके प्रति मेरे सद् व्यवहार की गारण्टी

रहे । मैंने इससे इन्कार कर दिया । बस ।’

‘वाह ! उसे वचन दे देना था । विवाह के बाद जो होता हम समझ लेते ।’

कमल, ‘पर चाचाजी ! इतनी वेईमानी की आवश्यकता ही क्या थी ?’

‘कमल बेटा ! यह दुनिया है । चतुर बनने वाले मूर्खों के लिए ही तो धोखा देने की नीति बनी है ।’

‘पिताजी यह पुण्य-कर्म कोई और कर देगा’ बलवीर ने कहा, ‘हमें इसमें लिप्त होने की आवश्यकता नहीं । वास्तव में उसके बाह्य-सौन्दर्य ने मेरे मन में भ्रम उत्पन्न कर दिया था । मैंने उसे भीतर से भी वैसा ही सुन्दर समझा था ।’

: ४ :

वास्तव में छाया ने उस दिन टेनिस का मैच जीता था । यह भी सत्य है कि इस जीतने में जहां उसके टेनिस-खेल में कौशल का हाथ था वहां उसके सौन्दर्य का हाथ भी कम नहीं था । सेट स्टीफन्स कॉलिज के मिस्टर अकबरअली उत्तरी भारत के एक विख्यात खिलाड़ी थे । छाया अपने कॉलिज में सबसे अच्छा खेलने वाली थी । दोनों का खेल तय हो गया । खेलने के समय छाया जैसी सुन्दर लड़की को सम्मुख देखकर अकबर की आंखें चौंधिया गईं और वह अच्छा खिलाड़ी होते हुए भी हार गया । छाया के लिए उसे जीतना सुगम नहीं था । उसे अपना पूर्ण बल, योग्यता और चतुराई प्रयुक्त करनी पड़ी थी । जब खेल समाप्त हुआ तो अकबर के मित्रों ने कुछ ताना देकर कहा, ‘इस छोकरी से हारकर ठीक नहीं हुआ । लोग समझेंगे जान-बूझकर हार गये हो ।’

‘जान बूझकर तो नहीं’ अकबर ने कहा, ‘इस पर भी उसका खूब-सूरत होना मेरे हारने में एक वजह जरूर है ।’

अकबरअली अपना पुलओवर पहनकर छाया को उसके जीतने की बधाई

देने गया और हाथ मिलाकर बोला, 'मिस छाया ! मैं आपकी कामयाबी पर आपको मुबारकबाद देता हूँ । मुझे इससे दिली खुशी हुई है ।'

'क्यों,' छाया ने अचम्भे में पूछा ।

'आप लोगो की जीत हमें खुश ही करती है ।'

इसके पश्चात् कॉलिज में चाय-पार्टी हुई । और इस प्रकार एक घंटा पीछे छाया घर को रवाना हुई । कॉलिज की लड़कियां चाहती थीं कि छाया की इस जीत का उत्सव खूब धूम-धाम से मनाया जाय, परन्तु छाया की जल्दी ने मजा किरकिरा कर दिया । छाया, यह वचन देकर कि वह शीघ्र ही लौट आयगी, पिता की मोटर में, जो उसे लेने आई हुई थी, सवार होगई ।

छाया रात का खाना खाते समय तक नहीं लौटी । लड़कियां डाइनिंग हॉल में खाना खा रही थी । एक स्थान पर छाया की कमरे की सायिन बैठी थी । किसी ने उसे कहा, 'शायद आज छाया नहीं लौटेगी ।'

'शायद' उसका उत्तर था ।

'न जाने कौन-सा जरूरी काम था, जिसे वह टाल न सकी ?'

'सो तो मैं जानती हूँ । इस पर भी अब तक तो उसे आ जाना चाहिए था ।'

'तुम जानती हो ? भला क्या काम था ?'

'छाया की सगाई थी आज ।'

'सच कहती हो ?'

'हां । मुझे पक्का पता है । जहां तक मैं समझती हूँ आज वह किसी की होने वाली बीवी (Would be wife) होकर लौटेगी ।'

वह लड़की जिसको छाया के कमरे की सायिन ने यह सूचना दी थी अपनी कुर्सी पर खड़ी होगई, ताकि डाइनिंग हॉल का सब लड़कियां उसकी आवाज सुन सकें । और कहने लगी, 'आर्डर ! आर्डर !'

सब लड़कियां उसकी ओर देखने लगीं । जब हॉल में शान्ति हो गई तो वह कहने लगी, 'आप सबको विदित है कि छाया ने आज का संच

जीतकर हमारे कॉलिज का नाम रोशन किया है। हम सब इसके लिए उसे बधाई दे चुकी हैं। मुझे अभी-अभी छाया की सहेली माया से एक और सूचना मिली है कि छाया को आज हमें एक और खुशी के सम्बन्ध में बधाई देनी होगी। माया कहती है कि आज छाया की सगाई हुई है।

सब लड़कियों ने खाने की मेजों पर हाथ पटक-पटककर अपनी खुशी का प्रदर्शन किया। वही लड़की फिर कहने लगी—

‘इस डबल बधाई के लिए हमें छाया से एक बहुत शानदार दावत भी लेनी चाहिए।’

‘जरूर, जरूर’ सब लड़कियों ने इसका समर्थन किया। अब वह लड़की बैठ गई और माया कुर्सी पर खड़ा होकर कहने लगी, ‘सुनिये ! सुनिये !!’ फिर सब लड़कियाँ चुप हो गईं।

‘उपमा जी ने जो प्रस्ताव रखा है मैं उसका समर्थन करती हूँ। परन्तु छाया से पहले पूछ लिया जाय कि उसकी सगाई हो गई है या नहीं। मझे यह मालूम है कि गई तो वह सगाईके लिए ही है। परन्तु कहावत है न “There are many a slips between the cup and the lips” आप जानती हैं कि छाया हमारी ‘स्त्री-पुरुष-समता समिति’ की प्रधान है। न जाने वह कोई ऐसी बात कर बैठे जिससे काम बिगड़ गया हो।’

इस पर एक और लड़की खड़ी होकर कहने लगी, ‘आज छायादेवी का सितारा बलन्द है। हमें विश्वास करना चाहिए कि वह जैसे मैच जीती है वैसे ही वहां से इस विषय में भी जीतकर ही आयगी। भला कौन पुरुष है जो छाया जैसी सुन्दर लड़की के लिए क्या कुछ नहीं कर देगा।’

‘हुर्रे ! हुर्रे !’ लड़कियों ने मेजों को पीटना शुरू कर दिया। उसी लड़की ने फिर कहना आरम्भ किया, ‘इसलिए मेरा प्रस्ताव है कि इस खुशी में दावत और जलसे का प्रोग्राम बनाना आरम्भ कर दिया जाय। मेरी सम्मति है कि आज रात को यहां एक नाच किया जाय।’

लड़कियों ने ‘हुर्रे ! हुर्रे !!’ करके तथा सीटियां बजा-बजाकर और

मेजों पर हाथ पटक-पटक कर डाइनिंग हॉल को सिर पर उठा लिया। इस शोर को सुनकर होस्टल की सुपरिन्टेण्डेंट, हॉल में इस हल्ले का कारण जानने के लिए आ गई। माया कुछ कहने के लिए कुर्सी पर खड़ी होकर लड़कियों को चुप करा रही थी। सुपरिन्टेण्डेंट ने उसे ही डांटकर कहा, 'माया कैसा शोर मचा रहा है ?'

सब लड़कियां चुप होगईं। माया कुर्सी से नीचे उतरकर खड़ी होगई। सुपरिन्टेण्डेंट ने फिर पूछा, 'बताती क्यों नहीं क्या बात है ?'

माया नहीं बोली, पर उपमा, जो सुपरिन्टेण्डेंट की प्रिय छात्रा थी, बोली, 'हम छाया के मैच जीतने की खुशी मना रही हैं। क्या हमें हंसने की भी स्वतन्त्रता नहीं ?'

'दूसरों की पढ़ाई में जो बाधा पड़ती है; मैच जीतने की खुशी तो सायंकाल हो चुकी। क्या अब जन्म भर इसकी चर्चा चलेगी ?'

इस पर उपमा बोली, 'बहन जी ! एक और भी बात है। छाया की आज सगाई हुई है।'

इस पर लड़कियों ने फिर तालियां बजा दीं। सुपरिन्टेण्डेंट को क्रोध चढ़ आया, 'तो आप सब सगाई होने की खुशी मनाना चाहती हैं ?'

लड़कियों ने समझा कि सुपरिन्टेण्डेंट उन्हें इस बात की स्वीकृति देने वाली हैं। इस कारण सबने 'हां ! हां !' के नारे लगाये। परन्तु सुपरिन्टेण्डेंट ने एक कुर्सी पर खड़े होकर कहा, 'मैं इस बात की स्वीकृति नहीं दे सकती।'

उपमा ने पूछा, 'बहन जी क्यों ?'

'इसलिए कि सगाई अथवा विवाह औरतों की गुलामी के चिन्ह हैं। जब हममें से कोई इस बन्धन में फंसे तो हमें प्रसन्नता प्रकट करने के स्थान में शोक मनाना चाहिए।'

'हीयर ! हीयर !!' के नारे लगे। सुपरिन्टेण्डेंट ने दोनों हाथ खड़े कर सबको चुप कराते हुए कहा, 'आप इतना पढ़-लिख गई हैं; परन्तु

मुझे शोक है कि इस पर भी आप, अभी तक, पुराने रीति-रिवाजों को आदर की दृष्टि से देखती हैं। मैं कहती हूँ कि हम पढ़ी-लिखी लड़कियों को तो इस गुलामी से छुट्टी पा जाना चाहिए। आपको पढ़ाने में जो मेहनत खर्च की है वह यदि आपमें विद्रोह की भावना भी नहीं जगा सकी तो मैं समझती हूँ कि सब कुछ व्यर्थ ही हुआ है। स्त्री जाति का उद्धार करने के लिए जागो, उठो और स्त्रियों में एक ऐसी श्रेणी बना दो जो पुरुषों को बता दे कि अब उनकी धोखेबाजी नहीं चल सकेगी।'

'हीयर ! हीयर!!' के नारे चारों ओर गूजने लगे। अब एक लड़की खड़ी होकर, हाथ खड़ा करके बोली, 'थ्री चीयर्स फॉर विमैन्स इंडिपेंडेंस (स्त्रियों की स्वाधीनता की विजय हो) ।'

सबने उत्तर में कहा, 'हिप ! हिप !! हुर्रें ।'

कुर्सी पर खड़ी लड़की ने आवाज़ दी, 'हमारी आज्ञादी ?'

सबने उत्तर में कहा, 'जिन्दाबाद ।'

उसने फिर कहा, 'औरतों पर हुकूमत करने वाले पतियों का ?'

सबने कहा, 'सर्वनाश हो ।'

इस पर सबने जोर-जोर से मेजों को पीटना आरम्भ कर दिया। इसी समय छाया ने डाइनिंग हॉल में प्रवेश किया। नारे लगाने वाली लड़की, जो अभी तक कुर्सी पर खड़ी थी, छाया को देखकर उसकी ओर सकेत करके बोली, 'आर्डर ! आर्डर !! आज की "हीरोइन" (अभिनेत्री) आरही है ।'

सुपरिन्टेंडेंट ने कहा, 'हीरोईन ? नहीं 'विक्टिम' (शिकार) ।'

कुर्सी पर खड़ी लड़की ने कहा, 'मैं कहती हूँ कि आज की नायिका के लिए मार्ग छोड़ दिया जाय ।'

लड़कियाँ इधर-उधर हट गईं और बीच में मार्ग बना दिया गया। परन्तु छाया सबको देखती हुई वहीं खड़ी रही। कुर्सी पर खड़ी लड़की ने फिर कहा, 'हमारे कॉलिज की चमकती किरन, जिसने आज एक

लड़के, भारी खिलाड़ी, को पछाड़ा है, इस समय 'मेट्रिमोनियल' क्षेत्र में एक लड़के से हार खाकर चली आ रही है।'

छाया ने अपने स्थान पर खड़े-खड़े ही बात काटकर कहा, 'इसे बन्द करो। यह झूठ है।'

इतना कह वह दौड़कर उस लड़की के समीप जा पहुँची और उसे कुर्सी से नीचे उतारकर, स्वयं कुर्सी पर खड़ी होकर कहने लगी, 'मैं हैरान हूँ कि यह झूठा समाचार आपको किसने दिया है। मेरी न तो सगाई हुई है और न ही शादी। आप सबको प्रसन्न होना चाहिए कि मैं एक बहुत अच्छे परिवार की बहू बनने के प्रलोभन का मुकाबला करने में सफल हुई हूँ।'

इस पर सब उपस्थित लड़कियों ने तालियाँ बजाकर प्रसन्नता प्रकट की। एक बोली, 'छाया बहन?' सबने घोषणा की 'जिन्दाबाद।' छाया जो अभी तक कुर्सी पर खड़ी थी कहने लगी 'मैं आपको ठीक बात बताती हूँ। रियासत जयपुर के एक "ठिकानदार" (जमींदार), अपने सुपुत्र को, जो लंदन से एम० डी० कर आये है, और अपने लड़के के मित्र को साथ लेकर मुझे देखने आये थे, वे मुझे देखकर प्रसन्न हुए; परन्तु मैंने उनके सम्मुख विवाह के लिए इतनी कड़ी शर्तें रखी कि वह दुम दबाकर भाग गए।'

एक लड़की, 'छाया बहन?'

सब, 'जिन्दाबाद।'

छाया, 'मैंने कहा मैं स्त्रियों को पुरुषों के बराबर समझती हूँ।'

वह बोले, 'मैं तो आपका मान करता हूँ।'

मैंने कहा, 'मैं मान नहीं चाहती। मैं बराबरी चाहती हूँ।'

वह बोले, 'मान तो बराबरी से भी ऊँची बात है।'

मैंने कहा, 'मैं ऊँचा होना नहीं चाहती। मैं व्यर्थ में अपना मान नहीं चाहती और न मैं किसी पुरुष को मान की दृष्टि से देख सकती हूँ।'

वह बोले, 'मैं अपना घर बसाना चाहता हूँ।'

मैंने कहा, 'मुझे आपके घर से दिलचस्पी नहीं।'

‘परिणाम यह हुआ कि वह चुपचाप चले गए ।’

इस पर सब लड़कियों और सुपरिन्टैण्डेंट ने छाया के कहने की प्रशंसा की और छायादेवी की जय बुलवाई । इस समय उपमा खड़ी होकर बोली, ‘छाया दीदी की डबल विजय की प्रसन्नता में आओ हम गायें । वही गाना जो हमारी स्वाधीनता का द्योतक है ।’

पहले उपमा गाती थी । पीछे दूसरी लड़कियां मिलकर गाती थीं ।

‘हम औरतों को बिलकुल आजाद कर रहेंगी ।

इस जुलूमोसितम को हम बरबाद कर रहेंगी ॥

हम मानेंगी नहीं इनकी मीठी-मीठी बातें,

न इनके कौल का हम इतबार कर रहेंगी ॥

तलिस्म तोड़ डालेंगी हम भूठी रस्मों का,

पति देवतो से हम इक बात कर रहेंगी ॥’

गाना समाप्त कर सब लड़कियां खुशी-खुशी अपने-अपने कमरों में चली गई । छाया खाना घर पर ही खाकर आई थी । इस कारण बिना खाये कमरे में जा पहुँची । माया वहाँ पहले ही उपस्थित थी । छाया उसे देख उसके सामने खड़ी होकर माथे पर तयौरी चढ़ाकर बोली, ‘तो यह तुमने बताया था कि मेरी सगाई हो रही है ।’

माया, ‘तो इसमें कौन पाप हो गया है ?’

छाया, ‘मैं पूछती हूँ तुमने बताया क्यों ?’

‘मैं तुम्हारे अधीन नहीं हूँ जो मुझे डांटने लगी हो ।’

‘तुमने आज मुझे लज्जित कराया है और मैं इसका बदला लूँगी ।’

‘ऊँह !’ माया ने घृणा से कहा, ‘अभी क्या लज्जित हुई हो जिस दिन विवाह होगा सब शेखी, जो बखानती हो, निकल जायगी और तब लज्जित होगी ।’

‘मैं विवाह ही नहीं करूँगी ।’

‘नहीं जी ! विवाह नहीं करोगी पर सिनेमा में जाकर साथ बैठे लड़कों से हंसी मजाक करोगी । देखो छाया ! मैं तुम्हारे विषय में

बहुत कुछ जानती हूँ । सब भेद खोल दूंगी ।'

'तो क्या मैं तुम्हारी बातें नहीं जानती ? मेज़ के दरार में जो तसवीर तुमने छिपा रखी है क्या मैंने वह देखी नहीं ?'

'ओह ! परन्तु क्या तुम यह भी जानती हो कि वह तसवीर किसकी है ? जानती हो तुम्हारे ही भाई भृगुदत्त की है । मैं उससे प्रेम करती हूँ ।'

'प्रेम गुलामी का दूसरा नाम है ।'

'यदि यह गुलामी है तो बहुत मीठी है ।'

'ऊँह ! पता लग जायगा जब बच्चे पैदा करने की मशीन बन जाओगी ।'

माया ने अपनी मेज़ का दरार खोलकर एक तसवीर निकाल ली और उसे चूमकर छाती से लगाकर आंखें मूंद ली । छाया ने क्रोध में कहा, 'अच्छा देखूंगी तुम्हारे स्वप्न कैसे पूरे होते हैं ?'

माया उसकी बात अनसुनी करके बोली, 'कैसी सुन्दर आंखें हैं । छाया ! इन आंखों से ही वे तुम्हारे भाई प्रतीत होते हैं और यह तुम्हारी आंखें ही हैं जो मुझे सदैव उनकी याद दिलाती रहती हैं ।'

छाया ने दांत पीसते हुए कहा, 'तुम्हारा उससे विवाह नहीं हो सकता ।'

'ऐसा मत कहो छाया ! हम इतनी दूर तक जा चुके हैं कि अब लौटने को स्थान नहीं है ।'

'तब तो और भी अच्छा है । अपने भाग्य को रोओगी । मैं आज ही डेडी को लिखती हूँ । भृगुदत्त का तुमसे मेल-जोल बन्द हो जायगा ।'

माया ने कुछ सोचकर कहा, 'प्रतीत होता है कि तुम घर से निराश होकर लौटी हो । शायद विवाह न करने की जो बहादुरी बखान रही थी, वह सब कल्पना मात्र हा थी । विवाह की इच्छा करके तो गई होगी; पर अंगूर बहुत ऊँचे होने से खट्टे बताने लगी हो । सब समझ गई हूँ । बहेन जी (सुपरिन्टेण्डेंट) की वैराग की कथा भी जानती हूँ । सुनोगी ?.....

बेचारी कुरूप हैं और स्वभाव की चिड़चिड़ी हैं । पतिदेव से नित्य झगड़ा होता था । आखिर उकताकर उन्होंने दूसरा विवाह कर लिया

है। और बहन जी विमैन्ज इंडिपेंडेंस मूवमेंट (स्त्री-स्वतंत्रता-आन्दोलन) की नेत्री बन गई हैं।'

'तो तुम स्त्रियों की स्वाधीनता की पक्षपातिन नहीं हो? बस, प्रेम के झूठे प्रलोभन में फंस गई हो।'

'यह तो अपने भाई से पूछना कि उसका प्रेम झूठा है या सच्चा। मैं तो अपनी ओर से उसे सच्चे हृदय से प्रेम करती हूँ।'

'नाली की गन्दगी में पले कीड़ों की भांति तुम उसी में आनन्द समझती हो न। इसका फल भी शीघ्र ही मिलेगा।'

इस वार्तालाप के पश्चात् दोनों में पढ़ने की हिम्मत नहीं रही थी। दोनों अपनी-अपनी खाट पर लेट मुख पर चादर ओढ़ अपने-अपने विचारों में लीन होगई। माया सोच रही थी 'भगवान् करे इस चुड़ैल छाया का कहना सच न हो। भृगुदत्त देवता है। वह जब बातें करता है तो साक्षात् भगवान् प्रतीत होता है। उसके मुख से शब्द ऐसे निकलते हैं मानों फूलों से भरी डाली से फूल भर रहे हो। कितनी भोली-भाली सूरत है। भला कौन है जो उस पर विश्वास न करेगा?'

दूसरी ओर छाया मन में सोच रही भी 'मेरा चुनाव कितना गलत था। बलवीर से तो कमल अधिक सुन्दर, चतुर और समझदार प्रतीत होता है। कुछ मुह-फट अवश्य है; परन्तु बात कैसी नाप-तोलकर करंता है। कैसा सुन्दर कटाक्ष था उसकी चौपाई में, "सुमन चोट लागे अति प्यारी।" और फिर "कमल नयन की आभा सह सके नहीं कोय।" और वह कवित्त कैसा सुन्दर व्यंग (Satire) है—

"चूल्हा-चौका छोड़कर, साहबों की पी० ए० बन,
वल्की को विकल कर, कैसा अच्छा है किया।"'

कितना सत्य है उसका कथन। परन्तु उसके मन पर प्रभाव जमाना बलवीर जितना सुगम नहीं। उसका डोल-डोल शरीर का गठन और ओज बलवीर से कई गुना अधिक है। साथ ही कवि होने से शायद प्रत्येक बात की विश्लेषण शक्ति भी उसमें कम नहीं है। ऐसी परिस्थिति

में मैं कैसे उस तक पहुँचूँ ? बलवीर से प्रेम करना भूल थी । कमल असम्भव है । कैसी बेहूदा बात है । जो चाहती हूँ वह हो नहीं सकता । सब लोग मुझे सुन्दर कहते हैं पर कमल की आंखों में यह सौन्दर्य समा क्यों नहीं गया.....?’

विचार करते-करते थक जाने पर उसे नींद आगई ।

: ५ :

कमल के मन पर बलवीर और छाया की घटना का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था । कई वर्ष से वह ग्राम-सुधार के कार्य में लगा हुआ था ।

देहली से ग्यारह मील की दूरी पर तुगलकाबाद के समीप एक गांव में उसने एक शिक्षा का केन्द्र खोल रखा था । सप्ताह भर वह स्वयं वहां रहता था । वहां के लोगों को साफ-सुथरा रहना, थोड़े में निर्वाह करना, रस्म-रिवाजों की व्यर्थता से बचना और खेती-बाड़ी की उन्नति के उपाय बताना उसने अपना काम बना लिया था । एकबच्चों की पाठ-शाला भी उसने खोल रखी थी । वह दो घंटे नित्य उसमें पढ़ाता था । अपने निर्वाह के लिए समाचार पत्रों में लेख लिखना और पुस्तकें लिख-कर छपवाना उसका कार्य था ।

प्रायः शनिवार को सायंकाल वह अपने केन्द्र से चला आता था और शनिवार की रात तथा रविवार को दिन भर और रात भर बलवीर के घर रहकर सोमवार को प्रातः अपने केन्द्र पर चला जाया करता था । इस शनिवार को जब वह आया तो बलवीर और बलवीर के पिता उसे छाया को देखने ले गये । वहां जो कुछ उसने देखा और फिर बलवीर ने अपनी बात-चीत का जो वृत्तान्त सुनाया उससे उसके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा था । अगले दिन रविवार था । स्वभाववश बहुत प्रातःकाल उठकर शौचादि से निवृत्त हो वह घूमने चल दिया । वह कोठी से बाहर निकला ही था कि उसे बलवीर ने पुकारा ‘कमल भैया ।’

कमल घूमकर खड़ा हो गया । बलवीर भी घूमने के लिए तैयार

होकर आया था। बलवीर प्रायः देरी से उठा करता था। इससे कमल ने विस्मय से पूछा, 'बहुत जल्दी उठ गये दादा ?'

'यह बात नहीं। आज सोया ही नहीं।'

'क्यों ? बहुत प्रेम था छाया से ?' कमल ने तिरछी दृष्टि से देखते हुए मुस्कराकर पूछा।

'प्रेम वेम तो मैं जानता नहीं। असल में बात यह है कि मैं उसके पीछे नहीं भाग रहा था; प्रत्युत वह मेरे पीछे पड़ी थी। उससे मेरी जान-पहचान कैसे हुई, पहले यह बता दूँ। लगभग एक मास की बात है कि मैं "ओडियन" में पिकचर देखने गया था। सीट रिजर्व कराई हुई थी। जब मैं अपनी सीट पर बैठा तो मेरी बगल में छाया और उसकी एक सहेली माधुरी बैठी थीं। वह परस्पर बातें कर रही थी। बातें ऐसी थीं कि मेरा ध्यान उधर गये बिना नहीं रहा। छाया मेरे साथ की सीट पर थी और माधुरी उससे अगली पर। माधुरी कह रही थी कि किसी सभा में उसने स्त्रियों की दुर्दशा की सूक कहानी सुनाई। कहानी वह मन से बनाकर लिखकर ले गई थी। कैसे एक कमसिन लड़की का विवाह एक दुराचारी पति से हो गया। वह पति उसकी परवाह नहीं करता था। लड़की जब समझदार हुई तो उसे अपने अधि-कारों का पता चला। वह पति से झगडा करने लगी। पति उसे पीटने लगा। एक दिन उसने उसे इतना पीटा कि बेचारी बेहोश होगई। पति ने समझा मर गई है। खून के अभियोग में पकड़ा जाने के भय से वह स्त्री के शव को वहीं छोड़ घर को ताला लगाकर परदेश चला गया। स्त्री को जब होश आया तो अपने को मकान में बन्द पा उसने हल्ला किया। पड़ोसियों द्वारा दरवाजा खुलने पर वह बाहर निकली। कई वर्ष तक पति फरार रहा। पति के फरारी के दिनों में वह मजदूरी करके केवल अपना निर्वाह ही नहीं करती रही; प्रत्युत उसने घर की अवस्था भी बहुत कुछ सुधार दी। जब पति लौटा और उसने घर में आर्थिक सुविधा के लक्षण देखे तो वह स्त्री के चरित्र पर सन्देह करने

लगा और फिर उससे झगड़ना और उसे पीटना आरम्भ कर दिया । स्त्री हताश हो गई और विष खाकर मर गई । पति ने दूसरा विवाह करा लिया और फिर पहले जैसा महाभारत मचने लगा ।

माधुरी ने कहानी सुनाकर कहा, 'स्त्रियों की दुर्दशा की यह कथा सुनकर कईयों की आंखों में आंसू आगये । अन्त में मैंने स्त्रियों को बताया कि इसमें दोष उसके पति का इतना नहीं था जितना कि स्त्री का था । स्त्री ने उस पुरुष को घर क्यों आने दिया ? उसके आते ही उसे पुलिस के हवाले क्यों नहीं कर दिया । ऐसे पति से सम्पर्क रखने की उसे आवश्यकता ही क्या थी ।'

इस पर जोश में छाया ने कहा, 'यदि मे उमकी जगह पर होती तो उसको जूतों से पीटती ।'

'मेरी हंसी निकल गई ।' मैं उनकी बातें सुन तो अवश्य रहा था ; परन्तु मेरी निगाह सामने की ओर थी ।

छाया ने समझ लिया कि मैं उसकी बहादुरी को हंसी में उड़ा रहा हूं । वह क्रोध से लाल-पीली होकर बोली, 'क्यों जी आप हंसे क्यों हैं ?'

मैंने उनकी ओर ऐसे देखा मानो मैं उनकी बातें सुन ही नहीं रहा था और आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, 'क्या मुझे कह रही है आप ?'

छाया पर मेरी इस चालाकी का कोई प्रभाव नहीं हुआ । वह बोली, 'बहुत बदतमीज़ हैं जी आप ? हमारी बात पर हंसे भी हैं और फिर बहाना करते हैं कि आप नहीं हंसे ?'

मैंने गम्भीर होकर कहा, 'लड़की ! ऐसी भाषा तुम्हारे जैसे सुन्दर मुख को शोभा नहीं देती । अपरिचित लोगों की बातों में बोला नहीं करते ।'

'परन्तु क्या यह बात पुरुषों के लिए नहीं है । आप हमारी बात में हंसे हैं या नहीं ?'

'सो भूल हुई, परन्तु मैंने तो यत्न किया था कि आपको पता न

चले कि मैं आपकी बातें सुन रहा था ।’

‘तो आप मानते हैं कि आप मेरी बात पर ह्से हैं ।’

‘हां !’

‘क्यों ?’

‘इसलिए कि आपकी बात बेहूदा थी । पहले तो यह कि आप इतनी नाजूक हैं कि मरियल-से-मरियल पुरुष भी आपसे जूते नहीं खायगा । फिर आप जैसी सुन्दर लड़की के पास तो बीसियों और हथियार हैं जो जूतों के स्थान पर प्रयुक्त किये जा सकते हैं ।’

‘आप खूब है जी; एक ओर प्रशंसा करते हैं तो दूसरी ओर ताड़ना भी ।’

‘बुद्धिमान् पुरुषों को स्त्रियों के प्रति यही व्यवहार करना चाहिए ।’

‘आप वास्तव में चतुर प्रतीत होते हैं परन्तु मेरी जैसी लड़की आपकी चतुराई का मखौल ही उड़ायगी । देखिये मैंने भी तो आपके मुंह से कहला लिया है न कि आप हमारी बातें सुन रहे थे ।’

‘मैंने यह तो नहीं कहा कि आप चतुर नहीं हैं । मैं तो मानता हूं कि स्त्रियां पुरुषों से अधिक चतुर होती हैं ।’

‘मालूम होता है कि आप अपनी स्त्री से तंग आये हुए हैं ।’

‘क्षमा करें देवी जी ! मेरा विवाह ही नहीं हुआ ।’

‘तब भी आप स्त्रियों के विषय में जानकारी रखने का दावा करते हैं ।’

‘आप जैसी सुन्दर लड़कियों से ही मुझे शिक्षा मिली है ।’

‘आप मेरे सौंदर्य की बहुत प्रशंसा कर रहे हैं । क्या एक कुमारी लड़की के सम्मुख ऐसा कहना अनुचित नहीं ।’

‘आपने यह सज-धज इसलिए ही तो की हुई है कि आपको देखने वाले सुन्दर मानें ।’

‘परन्तु यह कहने की क्या आवश्यकता है ?’

‘इसलिए कि आपको पता लग जाय कि आपके जूते से अधिक

गहरी चोट इसकी लगती है ।’

‘तो आप चुटिया गये हैं ?’

‘इसमें सन्देह ही क्या है ।’

‘मुझे आप पर दया आती है ।’

‘धन्यवाद ।’

हम बातें कर ही रहे थे कि पक्कर आरम्भ होगई । मैं तो चुप हो गया; परन्तु वे दोनों आपस में कुछ बातें करती रहीं ।

खेल समाप्त होने पर जब मैं बाहर आया तो छाया ने मुझे ‘नमस्ते’ की और चलते हुए कहा, ‘आपसे मिलकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ है । क्या कभी फिर आपके दर्शन हो सकेंगे ।’

‘जब आप आजा करें’ मैंने कहा ।

‘हम हर बुधवार को सिनेमा देखने आती हैं । आप अगले बुधवार को हमें यहाँ मिल सकेंगे तो कृपा होगी ।’

अगले बुध को जब मैं सिनेमा देखने गया तो छाया अपनी उसी सहेली के साथ एक स्थान पर बैठी थी । मेरे लिए सीट किसी दूसरी पंक्ति में थी । मैं अपनी सीट पर जब जा बैठा तो उसकी सहेली उठकर मेरे पास आई और बोली, ‘वह आपको बुलाती हैं ।’ मेरी सीट पर वह बैठ गई, और मैं उनकी सीट पर छाया के पास में जा बैठा । इस दिन मेरी उससे बहुत बातें हुईं । वह बहुत समझदार किंतु थोड़ी उच्छृंखल प्रतीत होती थी । उस दिन उसने स्वयं मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया और ऐसी बातें बनाई कि कल तक मैं उल्लू बना रहा पिछले सप्ताह उसने मुझसे कहा, कि मैं उसके पिता से बातचीत करूँ और फिर कल का दिन अंतिम निर्णय के लिए निश्चय हुआ । कल जो कुछ हुआ, उसकी मुझे स्वप्न में भी सम्भावना न थी । मैं अब समझता हूँ कि यह सब नाटक खेला गया है और मेरी उस सिनेमा वाली हंसी के प्रतिकार में मेरे साथ ही पिताजी का भी अपमान किया गया है ।

कमल बहुत देर तक चुपचाप बलवीर की बातों पर मनन करता

रहा । दोनों कुदसिया बाग में टहलते रहे । पश्चात् कमल ने कहा, 'सारी बात सुनने से तो मैं भी इसी परिणाम पर पहुँचा हूँ कि लड़की के मस्तिष्क में विकार उत्पन्न हो चुका है और इसका परिणाम बहुत भयंकर होगा । परन्तु दादा तुम्हें चिंता नहीं करनी चाहिए; प्रत्युत प्रसन्न ही होना चाहिए । यदि कहीं इस लड़की से तुम्हारा सम्बन्ध हो जाता तो जन्म भर का फजीता होता ।'

फिर दोनों कुछ दूर तक चुपचाप चलते गये । एकाएक कमल ने खड़े होकर कहा, 'दादा मैं कल की घटना से एक भारी परिणाम पर पहुँचा हूँ । और वह यह है कि ग्राम-सुधार के स्थान पर नगर-सुधार की बहुत अधिक और शीघ्र ही आवश्यकता है । इसने मेरे मस्तिष्क को एक नई विचार-धारा में डाल दिया है । जब हम ग्रामों में काम करने जाते हैं तो क्या बुराई के स्रोत को छोड़ पत्तों को पानी नहीं देते । देहातों की सब बुराइयाँ शहर के लोगों से अथवा उनके कारण से ही तो हुई हैं । नगरों में काम करने की अधिक आवश्यकता है ।'

'तो फिर ?'

'फिर क्या । मैं अपना कार्य-क्षेत्र ही बदल देना चाहता हूँ ।'

: ६ :

कमल की प्रकृति निश्चल बैठने की न थी । एम० ए० पास करने के बाद नौकरी करने का विचार उसके मन में पैदा ही नहीं हुआ । बलवीर के पिता ने पूछा, 'कमल अब क्या विचार है ?'

'चाचाजी मुझे जीविका उपार्जन करने की चिन्ता नहीं । यह तो कई वर्ष से थोड़ी बहुत कर ही रहा हूँ । इसके लिए तो तीन घंटे नित्य का काम पर्याप्त है; परन्तु केवल तीन घंटे काम करने से तो शरीर चालू नहीं रह सकता । इस कारण मैं सोच रहा हूँ कि कोई ऐसा कार्य करूँ जिससे शरीर चालू भी रहे और कुछ उपयोगी फल भी निकले ।'

इसके कई दिन पश्चात् कमल ने बलवीर के पिता से कहा,

‘चाचाजी ! मैंने अपने जीवन का कार्य निश्चय कर लिया है ।’

‘क्या बेटा ?’ शमशेरसिंहजी ने पूछा ।

‘मैं ग्राम-सुधार का कार्य करूंगा ।’ मैंने इसके लिए भोगल गाँव को अपना कार्य-क्षेत्र बनाना निश्चय किया है । आप वहाँ अपनी भूमि में से कुछ मुझे किराये पर दे दें । मैं उसका उचित किराया दे दूंगा ।’

‘क्या करोगे बेटा ?’

‘अपने खाने पहनने के लिए मैंने पाँच-छः समाचार पत्रों के लिए नियमित रूप से लेख लिखने का प्रबन्ध कर लिया है । वर्ष में एक आध पुस्तक भी लिख लिया करूंगा । इससे आशा करता हूँ कि दो सौ रुपये मासिक का काम तो बन ही जायगा । शेष समय मैं देहातियों की तरह रहूँगा, उन जैसा काम करूँगा और उनके रहन-सहन के धरातल को ऊँचा बनाने का प्रयत्न करूँगा ।’

शमशेरसिंह कमल के विचारों की दृढ़ता को जानते थे । इस कारण उन्होंने उसे हतोत्साहित नहीं किया । उन्होंने केवल इतना ही कहा, ‘उस गाँव में हमारी लगभग पचास एकड़ भूमि है । सो उसका तुम इस्तेमाल कर सकते हो ।’

अगले ही दिन कमल ने वहाँ जाकर अपने रहने लायक मकान बनवाना आरम्भ कर दिया । मकान में दो कमरे थे । एक अपने रहने के लिए और एक रसोई-घर । मकान बन जाने पर उसने मकान के बाहर एक चौपाल बनवाई और उसमें बच्चों की पाठशाला खोल दी । गाँव की एक बुढ़िया को उसने रसोई बनाने के लिए तथा घर की सफाई इत्यादि के लिए नौकर रख लिया । इस सेवा के उपलक्ष में उसने उस बुढ़िया को दो बीघा भूमि की आय देने का वचन दिया ।

कुछ ही महीनों में उसका काम चल निकला । उसकी पाठशाला में बीस-पच्चीस लड़के-लड़कियाँ पढ़ने आती थीं । सायंकाल तीन घंटे वह अपने लिखने-पढ़ने का कार्य करता था । प्रातः स्कूल से पूर्व वह होम्यो-पैथिक दवाइयों से ग्रामवासियों की चिकित्सा करता । दोपहर को अपने

खेतों में जाता और वहां किसानों से मिलकर काम करता। रात प्रायः पढ़ने में व्यतीत होती। यह सब उसके घर का काम-काज करने वाली उस बुढ़िया नौकरानी की सहायता से ही हो सकता था। वह जात की मुराइन थी। नगर में किसी के घर बहुत दिन तक चौका-बासन का काम कर चुकी थी। इससे भले घर के लोगों के रहन-सहन को वह जानती थी। वह प्रातःकाल उठकर गाय की सानी करती। उसके पश्चात् गाय का दूध निकालकर उसे गर्म करती और कमल को पीने को देती। फिर गौशाला को साफ करती। गाय को कमल के खेतों में चरने भेज देती। इससे निपटकर वह रसोईघर में खाना बनाने चली जाती। वह कभी मक्की और कभी बाजरे की मोटी-मोटी रोटियां और दही, कभी कोई भाजी तैयार कर, दोपहर में स्कूल के समय के समाप्त होने तक, कमल को खाने को दे देती थी। कमल रोटी खाने के बाद कुछ आराम करता। यदि तो गरमी अधिक होती तो लिखने के काम पर बैठ जाता और सरदी के मौसम में खेत में चला जाता। सरदी के दिनों में पढ़ने का काम वह रात में करता था।

नौकरानी का नाम सुहागिन था। वह विधवा थी और उसके कोई सन्तान नहीं थी। पर उसके भाई की एक लड़की उसके पास रहती थी। लड़की का नाम था मुरली। जब सुहागिन कमल का काम करने लगी तो मुरली बारह वर्ष की थी। वह भी अपनी बुआ के साथ, जिसे वह मां कहकर पुकारती थी, कमल के यहाँ आती और बुआ के काम में सहायता देती थी। वह कमल के रसोईघर में ही खाना खाने लगी थी। मुरली की मां के देहान्त पर मुरली के पिता ने दूसरा विवाह कर लिया था और मुरली की सौतेली मां मुरली से अच्छा व्यवहार नहीं रखती थी। यही कारण था कि मुरली अपने पिता को छोड़कर बुआ के पास रहती थी।

जब कमल ने स्कूल खोला तो मुरली भी उसमें दाखिल होगई। मुरली की बुद्धि गाँव के दूसरे बच्चों से बहुत अधिक कुशाग्र थी। जो सबक दूसरे बच्चे एक सप्ताह में तैयार कर पाते मुरली उसे एक घंटे में

तैयार कर लेती। इसका एक प्रमुख कारण यह भी था कि मुरली को भोजन दूसरे बच्चों से अच्छा मिलता था। वह दूध, छाछ आदि नित्य पी जाती थी। इस पर सायंकाल किताब लेकर दिये के पास बैठकर वह तब तक पढ़ती थी जब तक कि कमल समाचार पत्रों के लिए लेख लिखता रहता था।

दो महीने में मुरली ने दो श्रेणियों की पढ़ाई समाप्त कर दी। फिर दो महीनों में वह हिन्दी इतनी पढ़ गई कि रामायण पढ़ने लगी। इससे कमल मुरली पर विशेष स्नेह करने लगा था।

इस पाठशाला को खुले तीन वर्ष और कमल को ग्राम-सुधार का कार्य करते साढ़े तीन वर्ष हो चुके थे। कमल की उपस्थिति से गांव वालों की कठिनाइयां दूर हो गई थीं। सब धीरे-धीरे कमल को पसन्द करने लगे थे और अपने बच्चों को उसकी पाठशाला में पढ़ने भेजते थे। कमल को जो खेत मिले थे उनकी पैदावार सब प्रकार के खर्च निकालकर बच ही जाती थी। इसे वह गांव के गरीबों में बांट देता था।

मुरली रामायण भली-भांति पढ़ और समझ लेती थी। इसके अतिरिक्त वह उन पत्र-पत्रिकाओं को भी पढ़ने लगी थी जो कमल अपने पढ़ने के लिए लाया करता था। सुहागिन और मुरली कमल के रसोई-घर में रहती थीं और वे सब प्रकार से सुखी थीं।

इसी समय छाया और बलवीर वाली घटना घटी। कमल गम्भीरता-पूर्वक अपने कार्य की सार्थकता पर विचार करने लगा। इसके साथ ही देश में एक और घटना घटी। सन् १९४२ में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के दब जाने और उसके पश्चात् देश में विद्रोह की आग भड़क उठने तथा लोगों के बुरी भांति कुचल दिये जाने के समाचार धीरे-धीरे लोगों को मिल रहे थे। कमल को जब सब समाचार मिले तो वह कांग्रेस की नीति और कार्य-क्रम पर सन्देह करने लगा। अब छाया के बलवीर के साथ किये गए व्यवहार ने उसके मन में उठते प्रश्नों को एक नवीन रंग दे दिया।

पहले वह महात्मा गान्धी का अनन्य भक्त था । इसी कारण वह देहा-
तियों का सुधार करने में अपना सारा जीवन लगा देने का विचार कर
चुका था । परन्तु महात्मा जी को 'भारत छोड़ो' जैसे महत्वपूर्ण आन्दो-
लन को बिना किसी योजना अथवा तैयारी के चलाते देख उसकी श्रद्धा
में अन्तर आने लगा था । वह सोचता था महात्मा जी ने सन् १९२१ में
आन्दोलन चलाया तो एक छोटी-सी घटना के कारण उसे बन्द कर दिया ।
फिर १९३० में और उसके पश्चात् १९३२ में आन्दोलन चलाया तो सरकार
ने उसे दबा दिया । अब १९४२ में तो सीधा आन्दोलन था और उसके
लिए कोई योजना होनी चाहिए थी । जब तक योजना बन न जाय
कोई बात मुख से निकालनी नहीं चाहिए । इस पर भी कई मास तक
"भारत छोड़ो" पर वाद-विवाद अथवा विचार-विनिमय होता रहा,
परन्तु समय पर पता चला कि महात्मा जी अभी यह भी निर्णय नहीं कर
सके थे कि तार का खंभा उखाड़ देना हिंसा है अथवा अहिंसा ।

इससे महात्मा जी के व्यक्तित्व में श्रद्धा रखते हुए भी वह महात्मा
जी के राजनीतिक कार्य-क्रम पर गम्भीरता से विचार करने पर विवश
हो गया । महात्मा जी के ग्राम-सुधार के कार्य-क्रम को देखकर ही वह
नगर के सुख और आराम के जीवन को तिलाञ्जलि देकर देहात में आ
बसा था । अब वह सोचता था कि क्या शेष निर्माण कार्य-क्रम की भांति
यह काम भी उलटा ही नहीं है क्या ?

ये विचार उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रहे थे जब छाया की
घटना ने आकर टक्कर दी । वह सोचता था, छाया में इतनी उच्छृङ्खलता
कैसे आई । वह इस परिणाम पर पहुंचने के लिए विवश हो गया कि
पाश्चात्य सभ्यता का सम्पर्क हिन्दुस्तानियों से नगरों में हुआ है । इस
सम्पर्क से लाभ उठाने के स्थान में नगर वालों ने नवीन सभ्यता के दुर्गुणों
को अपनाया है । उन दुर्गुणों का प्रसार अब देहातों में भी होने लगा है ।
कई दिन के मनन के पश्चात् वह इस निर्णय पर पहुंचा था कि यदि
सोगों के सुधार की आवश्यकता है, और वह सुधार मुझे करना है तो

बुराई को स्रोत पर ही राकना होगा ।

जब से वह इस विचार-धारा में पड़ा था, अपने जीवन-कार्य की नवीन योजना बनाने में लीन था । सुहागिन कमल को कई दिन से चिन्ता में डूबा देख स्वयं चिन्तित थी । यह स्त्री-स्वभाव है । जिस की सेवा में वह थी उसकी चिन्ता, यद्यपि छन कर, उसके मन में आये बिना नहीं रह सकती थी ।

एक दिन उसने पूछ ही लिया, 'कमल भैया ! भूख नहीं लगती क्या ?'

'नहीं मां ।' वह उसे मां कहकर सम्बोधित किया करता था ।

'बेटा क्यों ?'

'इसकी चिकित्सा सोच रहा हूं । शीघ्र ही ठीक हो जायगी ।

इसी समय मुरली आ गई । बोली ! 'मां । नाहर कान्हू का लड़का आज घर आया है । बहुत सुन्दर-सुन्दर वस्तुएं लाया है । कहता था कलकत्ता से खरीदकर लाया हूं ।'

सुहागिन ने कमल को बात समझाने के लिए कह दिया । 'वह मुराइन जो सब्जी के खेत में काम करती है न ? उसका लड़का 'नाहर' फौज में भर्ती हो गया था । आज वह छुट्टी पर घर आया है ।'

अब मुरली ने अपनी धोती की आंटी में से एक वस्तु निकालते हुए कहा, 'उसने मुझे यह दी है ।'

इतना कहकर मुरली ने बहुत सुन्दर गोल्डप्लेटिड डिबिया में बंद 'लिपस्टिक' निकालकर दिखाई । डिबिया बहुत सुन्दर बनी थी । कमल ने उसे हाथ में लेकर देखा और पूछा, 'यह उसने तुम्हें दी है ।'

'हां । कहता था कल दोपहर को आना कुछ और भी दूंगा ।'

'जानती हो यह किसलिए होती है ।' कमल ने 'लिपस्टिक' को दिखाकर पूछा ।

मुरली ने पूछ लिया, 'किस लिए होती है ?'

'तुमने उससे पूछा नहीं ?'

'पूछा था । कहता था कल जब मिलोगी तो बताऊंगा ।'

कमल ने मरली की मां से कहा, 'देखो यही तो मैं आजकल सोचा करता हूँ ।'

मुरली की मां को वह लिपस्टिक देते हुए कहता गया, 'मेरी राय है कि यह तुम नहर को दे आओ और उसे डाँटकर कहना कि ऐसी चीजें वह मुरली को फिर न दे ।'

'व्यों ?' मुरली ने उसे मां के हाथ से लेने का यत्न करते हुए कहा ।

कमल ने उत्तर नहीं दिया; प्रत्युत वह उठकर बाहर खेतों की ओर चला गया ।

मुरली ने अचम्भे में माँ को देखते हुए पूछा, 'मां क्या है यह ! बाबू नाराज हो गए हैं ।'

मुरली की मां ने उस सुन्दर डिबिया को बालक की दृष्टि से देखते हुए कहा 'मुझे क्या मालूम बेटी ! पर मैं वापस कर दूँगी । मालिक को नाराज करना नहीं चाहती ।'

मुरली इसका अर्थ कुछ भी नहीं समझी । इतना वह अनुभव करती थी कि कमल उसकी बातों को टालता नहीं था । यदि आज उसने उसकी रुचि के विपरीत कुछ कहा है तो अवश्य इसमें कुछ होगा । इस कारण इतनी सुन्दर डिबिया के चले जाने से असन्तुष्ट होते हुए भी वह चुप रही ।

: ७ :

कमल अतःकाल उठकर साधारण रोगों की औषधि बाँटने का काम करता था । गांव में मौसमी रोगों, मलेरिया इत्यादि के अतिरिक्त और रोग बहुत कम होते थे । इस कारण कमल को कुछ अधिक दवा-इयों की आवश्यकता नहीं पड़ती थी । कमल स्नान करके बैठा ही था कि एक स्त्री आई । वह बीस-बाईस वर्ष की आयु की प्रतीत होती थी । कमल ने प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा । वह बोली, 'बाबू दवाई चाहिए ।'

‘बैठ जाओ ।’

वह स्त्री चटाई पर बैठ गई । कमल ने पूछा, ‘क्या तकलीफ़ है ?’

‘बाबू ! कल से पेशाब करते समय बहुत दर्द होता है । और पेशाब की हाजत बार-बार होती है ।’

‘कोई गर्म चीज़ तो नहीं खाई ।’

‘यही जो रोज़ खाती हूँ वही खाया है । ज्वार-बाजरे की रोटी और आलू का साग ।’

कमल ने अपने डिब्बे में से एक औषधि निकालकर दूध की शक्कर पर एक बूंद उसे खिला दी । वह चली गई ।

दोपहर को उस औरत का भाई आया । कमल स्कूल का काम समाप्त करके खाने पर बंठा था । कमल ने उसे आया देखकर पूछा, ‘मोहन !’ यह उस लड़के का नाम था । ‘कैसे आये ?’

‘सुबह भन्तो आई थी तुम्हारे पास ?’

‘हां । दवाई खा गई थी ।’

‘बाबू उसकी हालत बहुत खराब है । चीखें मार रही है । पेशाब नहीं उतरता ।’

‘तो उसे दिल्ली ले जाओ । हस्पताल में इलाज होगा । जल्दी करो ; कहीं गड़बड़ न हो जाय ।’

‘कैसे ले जाऊं ।’

‘गांव में एक तांगा है उसमें डालकर ले जाओ ।’

‘तांगे वाला तीन रुपये मांगता है ।’

कमल समझ गया कि इसके पास रुपये नहीं हैं । इस कारण उसने अपनी जेब में से तीन रुपये निकालकर दे दिये और कहा—

‘इन्हें ले जाओ ।’

अगले दिन एक और घटना हुई । कमल के खेत में करने में वाली एक औरत की लड़की ‘किसनो,’ जो कमल के स्कूल में भी पढ़ती थी, अपनी मां के साथ आई । उसकी मां बोलौ, ‘बाबू यह लड़की बीमार है । इसे

दवाई दो ।’

‘क्या ?’

‘कहती है पेशाब करने के स्थान पर दर्द होता है ।’

दो दिनों में एक छोटे से गांव में दो एक जैसे रोगी देखकर कमल विस्मय में पड़ गया । उसने लड़की से पूछा, ‘कब से दर्द है ?’

‘आज सुबह से है ।’

‘कैसे होता है ?’

‘जैसे कोई सुई चुभोता है ।’

‘सवेरे से कितनी बार पेशाब हुआ है ।’

‘तीन-चार बार हो चुका है ।’

कमल ने सोचा कि इस लड़की की डाक्टरी परीक्षा करानी चाहिए । इस विचार के आते ही उसे बलवीर की याद आई । उसने लड़की की मां से कहा ‘गांव में तांगा है न । उसे ले आओ । मैं इस लड़की को दिल्ली चिकित्सा के लिए ले जाऊंगा ।’

जब लड़की ने बलवीर के सम्मुख अपनी अवस्था का वर्णन किया तो उसने लड़की की मूत्र परीक्षा की । इसके बाद उसने कमल से कहा, ‘लड़की को तो सुजाक का रोग है । इसके मूत्र में गनोरिया के कीटाणु उपस्थित हैं ।’

‘यह कैसे हुआ ?’ कमल ने आश्चर्य से पूछा ।

‘सो तो लड़की से पूछना चाहिए । किसी गनोरिया के रोगी ने इससे सम्भोग किया है ।’

कमल ने “किसनो” की मां से कहा, ‘लड़की को डांटकर पूछो कि क्या किसी ने इससे व्यभिचार किया है !’

जब लड़की को डांटा गया तो उसने कहा, ‘कान्हू के नाहर ने उसे एक अंगूठी दी थी और खेत में ले जाकर उससे व्यभिचार किया है ।’

कमल को यह समाचार सुनकर बहुत शोक हुआ । उसने बलवीर से उसकी चिकित्सा करने के लिए कहा । दवाई दे दी गई । बलवीर ने कमल से कहा, उस “नाहर” की चिकित्सा कराओ न । नहीं तो वह गांव

की दूसरी लड़कियों को भी खराब कर देगा।' कमल को मुरली की बात याद आ गई। इस विचार के आते ही वह गांव को वापस लौटा। मार्ग में उसे उस औरत की याद भी आई, जिसे उसने पहले दिन अस्पताल पहुंचवाया था।

गांव में पहुंचकर उसने मोहन को बुलाया और स्वयं मुरली की मां को बुलाकर पूछा, 'वह नाहर की वस्तु तुमने वापस कर दी है या नहीं?'

'कर दी थी। वह तो कहता था मां रहने भी दो। लड़कियों के शृंगार की वस्तु है। पर मैं वहां छोड़कर चली आई।'

'अच्छा किया है। और देखो मुरली को कह देना कि यदि वह वहां उससे मिलने गई तो तुम दोनों को घर से निकाल दूंगा। "किसनो" को उसने खराब किया है।'

'कमल बाबू! हम तुम्हारे कहने से बाहर नहीं जा सकते।'

'भरी मुरली को समझाओ नहीं तो पीछे रोओगी।'

इतने में मोहन आगया। कमल ने पूछा, 'कल भन्तो को हस्पताल ले गये थे!'

'हाँ बाबू, हस्पताल वाले तो कहते थे उसे यहीं रख जाओ। सो मैं उसे वहीं छोड़ आया हूँ। कल पता करूंगा।'

'देखो सच बताना। भन्तो का "नाहर" से कोई वास्ता है।'

'है क्यों नहीं। "नाहर" हमारे घर आता जाता है। आज भी आया था।'

'तो जाओ। नाहर को मेरे पास भेज देना।'

नाहर दूसरे दिन प्रातःकाल कमल से मिला। कमल ने उसे डांटकर कहा, 'नाहर! देखो तुम मेरे से चिट्ठी लेकर डाक्टर के पास जाकर अपनी चिकित्सा कराओ नहीं तो मैं तुम्हें पुलिस के हवाले कर दूंगा।'

'क्यों मैंने क्या किया?'

'तुमने इतना बड़ा पाप किया है कि इसके लिए तीन वर्ष की कठोर

कैद का दण्ड होना चाहिए । पर जो मैं कहता हूँ उसे कर लो ।’

‘कमल बाबू ! मुंह सम्हालकर बोलो । मैं फौजी नौकर हूँ । यदि मेरे संग कोई झगड़ा किया तो ठीक न होगा ।’

‘अरे मूर्ख ! क्यों बनता है । तूने किसनो से व्यभिचार किया है या नहीं और जानता है कि वह नाबालिग है ।’

‘बाबू साहब ! इसका प्रमाण ही क्या ?’

‘उसे भी वही रोग हो गया है जो तुम्हें है । तुम्हारी परीक्षा और भन्तो तथा-किसनो के बयान ही तुम्हें कैद कराने के लिए काफी हैं ।’

आखिर “नाहर” मान गया कि वह चिकित्सा के लिए उसी दिन दिल्ली चला जायगा । कमल के पूछने पर वह कहने लगा ‘कलकत्ता में मैं बीमार हुआ था । वहां दवाई खाई थी । मेरा विचार था कि ठीक हो गया हूंगा ।’

: ८ :

शनिवार को प्रायः बलवीर अपनी मोटर लेकर कमल को लेने आया करता था । वह प्रायः दोपहर बाद आता था और कमल के साथ खेतों में घूमता और सायंकाल उसे साथ लेकर दिल्ली लौट जाता था । सोमवार को कमल प्रातःकाल दिल्ली से चलकर स्कूल के समय से पहले गांव में पहुंच जाया करता था ।

आज शनिवार था । इस कारण कमल ने स्कूल में जाने से पूर्व ही अपने लेख, जो उसने सप्ताह भर में लिखे थे, और कुछ अन्य वस्तुएं दिल्ली ले जाने के लिए मुरली को बांधने को दे दीं और कहा, ‘देखो मुरली । इन सबको मेरे यैले में रख देना और हां यदि मैं सोमवार को न लौट सकू तो बच्चों को तुम पढ़ा देना ।’

‘मुझसे पढ़ेगा ही कौन ? सब मेरी हंसी करने हैं ।’

‘हंसी ? क्या कहते हैं ?’

‘कहते हैं कल की छोकरी मास्टर बन गई है ।’

‘चलो तो आज मेरे सामने पड़ाओ ।’

‘नहीं बाबू जी ! यह मुझसे नहीं हो सकेगा ।’

‘अच्छी बात ।’

कमल स्कूल चला गया । वहाँ लड़कों को सबक देकर लड़कियों को गणित करा रहा था कि बलवीर की मोटर आ गई । कमल ने समझा कि वह ऐसे ही जल्दी चला आया है और वह उसके मकान में प्रतीक्षा करेगा । ऐसा समझकर वह पुनः गणित कराने लगा तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब मोटर में से बलवीर के पीछे छाया भी उतर आई । कमल को इस स्कूल में छाया के आने की कदापि आशा नहीं थी । उसने सोचा बलवीर से पुनः सुलह हो गई है क्या ? वह विस्मय में वहीं खड़ा का खड़ा रह गया । बलवीर छाया को वहीं ले आया जहाँ कमल खड़ा अचम्भे में उन्हें देख रहा था । जब वह बिलकुल समीप आ गए तो कमल को चेतनता हुई और उसने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया । ‘आइये ! आज आपका आना कैसे हुआ । मैं तो यह समझने लगा था कि शायद मैं स्वप्न में देख रहा हूँ ।’

‘वाह ! क्या मैं आपके इतने खिलाफ हूँ कि आपसे मिलने भी न आऊँ ?’

‘बेवकूफ, बदतमीज़ के विशेषण तो शायद आपकी कृपा को ही प्रकट करते थे ?’

‘ओह छोड़िये उस दिन की बातों को । प्रत्येक बात अपने-अपने वातावरण में ही ठीक लगती है । आपसे कई बातें करनी थीं, इससे कई दिन से आपको ढूँढ़ रही हूँ । आखिर बलवीर जीसे सहायता लेनी पड़ी ।’

‘तो आप वहाँ ग़रीब की कुटिया में बैठिये, मैं काम समाप्त करके अभी आता हूँ ।’

‘क्या आपकी किसी ने यहाँ नौकरी लगाई हुई है, जो इसे एक दिन भी छोड़ नहीं सकते ।’

‘जी हाँ ! मेरे आत्मा ने । मैंने इसे अपना धर्म समझ रखा है ।’

छाया, 'मैंने समझा था कि ज़रा जल्दी चलेंगे तो दिल्ली खाने के समय से पूर्व ही पहुँच सकेंगे और लंच "डेवीको" में करेंगे।'

'परन्तु मेरा खाना तो यहां बन गया है। मैं उसे व्यर्थ नहीं गंवा सकता।'

'किसी गरीब को दिलवा दीजिएगा। कौन बड़ी नेमत होगी?'

'ख़ाँकर देखो तो पता चले। आज सब यहीं खाओ न?'

'नहीं। मैं तो "डेवीको" में तीन सीट रिजर्व करा आई हूँ और दाम भी दे आई हूँ।'

'यह तो आपने अन्याय किया है। मुझसे पूछे बिना मेरे लिए वहां व्यर्थ रुपया गंवाया है।'

'रुपये की चिन्ता न करें।' छाया के मुख पर शोक के चिह्न भल-कने लगे 'मैं आपको निमंत्रण देने आई हूँ। मानना न मानना आपके अधिकार में है।'

कमल तो साफ-साफ निमंत्रण अस्वीकार करने लगा था; परन्तु बलवीर ने कमल के हाथ को, जिसे वह पकड़े हुए था धीरे से दबाकर संकेत कर दिया। कमल चुप हो गया और उसे कुछ भी उत्तर नहीं दिया। कुछ देर तक छाया ने उत्तर की प्रतीक्षा की और फिर कहा, 'बलवीर जी तो कहते थे कि आप साफ-साफ बात करने वाले हैं और अयुक्ति-संगत बात बिलकुल भी नहीं करते। अब चुप क्यों हो गये हैं?'

छाया की आवाज़ में कंपकंपी आगई थी और कमल को कुछ ऐसा प्रतीत होने लगा था कि उसकी आंखों में आंसू भी छलक रहे हैं। इससे उसने तुरन्त उत्तर दे दिया, 'छाया देवी! मैं नहीं जानता कि बलवीर जी से आपकी क्या बख़्शीत हुई है। मैं तो उस दिन के आपके चाचा जी के साथ किये गए मज़ाक की याद कर रहा था। ख़ैर यदि आप अब निमंत्रण देती ही हैं तो मैं इन्कार नहीं कर सकता। क्या बलवीर जी ने निमंत्रण मान लिया है?'

बलवीर, 'ये कई दिन से तुम्हारे विषय में पूछने आ रही थी। मुझसे

उस दिन के व्यवहार के लिए क्षमा भी मांग चुकी हैं और मनें क्षमा कर दिया है। अब तुमसे यह सुलह करने के लिए आज के खाने का प्रबन्ध कर आई थीं। मनें समझा कि यदि हमें खाना वहां ही खाना है तो जल्दी ही चलना चाहिए।'

'अच्छी बात; मैं अभी तैयार हुआ जाता हूं। वहां तो एक बजे ही पहुंचना है न।'

'और अब बारह तो बजने वाले हैं।'

'अच्छी बात!' इतना कहकर कमल ने स्कूल में छुट्टी कर दी और छाया और बलवीर को अपने कमरे में ले गया। वहां कमरे में एक खाट बिछी थी। जिस पर बिस्तर और एक कम्बल रखा था। फर्श पर एक चटाई थी जिस पर पुस्तकें, एक छोटी-सी डस्क और लिखने का सामान रखा था। एक और होम्योपैथिक दवाइयों का डिब्बा भी था। इस चटाई के सामने दो चटाइयां और बिछी थीं। कमल ने आवाज दी, 'मुरली!'

मुरली रसोईघर से आ गई। कमल ने कहा, 'मुरली वह कम्बल यहां बिछा दो ना।'

मुरली छाया के मुंह को विस्मय से देखती रह गई। छाया ने कहा, 'कम्बल बिछाने की क्या जरूरत है? अब समय नहीं है। चलना ही चाहिए।'

'कुछ जल-पान तो कर लो, छाया देवी!'

'जी नहीं फिर खाने का मज्जा नहीं रहेगा।'

इस पर कमल ने मुरली से पूछकर थैला ले लिया और उसके साथ हो लिया। तीनों मोटर में बैठकर चल पड़े।

कमल डाइवर के पास आगे बैठा था। बलवीर और छाया पीछे की सीट पर बैठे थे। मार्ग में कोई बातचीत नहीं हुई। जब तीनों आने स्थान पर "रेस्टोरेंट" में जा बैठे तो बात कमल ने आरम्भ की, 'दादा! यह जो सुलह हुई है इसे कहां तक ठीक समझूं। क्या मैं तुम्हें इसके लिए बधाई दूं?'

उत्तर में छाया ने कहा, 'मिस्टर कमल ! उस दिन जो व्यवहार हुआ था वह मैंने तो अपनी ओर से स्वाभाविक समझ ही लिया था । परन्तु आप लोगों ने इसका बहुत बुरा माना है । सो उसके लिए मैं शोक प्रकट कर चुकी हूँ । परन्तु क्या आप मेरा यह अधिकार नहीं मानते कि मैं विवाह से पूर्व अपनी राय बदल सकती हूँ । हां, भूल केवल यह हुई कि मैंने निर्णय करने में देरी की ।'

कमल, 'पर प्रश्न तो यह है कि आजकल का निर्णय क्या फिर हमारे अनुकूल सिद्धान्त हो सकेगा ?'

छाया ने मुस्कराकर पूछा, 'हमारे से, आपका क्या मतलब है ?'

'बलवीर जी से । क्या आपस में आप दोनों ने शर्तें तय कर ली हैं ?'

'हां । परन्तु उनमें विवाह न करके केवल मित्र के रूप में ही रहने का निर्णय है ।'

'मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई है ।'

इस समय खाना आरम्भ होगया था । कमल ने डबल रोटी के टुकड़े दूध में डालकर चम्मच से खाने आरम्भ कर दिये थे । एकाएक कमल ने छाया की ओर देखकर कहा, "आप जो स्त्रियों के अधिकार और उनकी पुरुषों से बराबरी करना चाहती हैं मेरी समझ में यह नहीं आता । कुछ आर्थिक सुविधाओं की बात तो हो सकती है । वह भी विशेष परिस्थितियों में । अन्यथा मैं तो देखता हूँ कि आजकल की शिक्षित कही जाने वाली स्त्रियों ने तो पहले ही इतने अधिकार प्राप्त कर लिये हैं कि उनसे कुछ वापिस लेने की ही आवश्यकता है; उसमें उन्हें और अधिकार देने का प्रश्न ही नहीं उठता ?'

'ओहो !' छाया ने मुख लम्बा करके कहा, 'आप अभी से घबरा गये हैं । जो कुछ हमने प्राप्त किया है यह तो उसका एक अंश-मात्र भी नहीं जो हम प्राप्त करना चाहती हैं ।'

'यही तो मैं जानने के लिए उत्सुक था कि आप क्या कुछ और

चाहती हूँ ? देखिये ! मैं आप जैसी शिक्षित नारियों का उल्लेख कर रहा हूँ । आप अब मित्रों (लड़के-लड़की का भेद-भाव छोड़कर) के साथ सिनेमा देखती, क्लबों में जाती, और नाचती भी है । बिना किसी सम्बन्धी को साथ लिये पर-पुरुषों के साथ विदेश-देश घूमती हैं । आपसे पूछने का अधिकार न तो आपके माता-पिता को रहा है और न ही (यदि आप विवाहित हैं तो) आपके पति को । कहीं पति देवता को सन्देह हुआ तो आप उसका घर छोड़ सकती हैं और गुजारे के लिए खर्चा मांग सकती हैं । आप पोशाक जैसी चाहें पहन सकती हैं । चाहे तो उससे आप नंगी दिखाई दें और चाहे परदे में । अब इस युद्ध ने तो एक और भी मार्ग आपके लिए खोल दिया है । आप बिना रोक-टोक 'टोमीज' और 'मैन्कीज' की बांह-में-बांह डालकर 'बार' में जाकर 'रिलैक्सेशन' शब्द के अर्थों को सार्थक कर सकती हैं । और.....'

छाया ने बीच ही में रोककर पूछा, 'मैं यह कुछ नहीं जानती । मैं तो समझती हूँ कि हमें प्रत्येक बात का अधिकार होना चाहिए । फिर हम स्वयं अपना भला-बुरा समझ लेंगी । आखिर प्रकृति ने हमें भी तो सोचने-समझने की शक्ति दी है ।'

'यही तो देखना है' कमल, जो अपना सूप समाप्त करने में पीछे रह गया था, और बैरा उसकी प्लेट उठाने के लिए बेचैन हो रहा था, यह कहकर प्लेट उठाकर सूप पीने लगा ।

छाया हंस पड़ी । कमल ने सूप समाप्त करके प्लेट मेज पर रख दी । छाया को हंसते देखकर कमल मुस्कराया और कहने लगा, 'आप मेरे पीने के ढंग को देखकर हंसी हैं ?'

'यह प्राचीन (Primitive) ढंग है।' छाया ने हंसते हुए कहा ।

'मुझे अर्वाचीन (Modern) लोगों के तरीकों से कुछ प्रेम नहीं है ।'

'तो क्या आप समझते हैं कि वैसी पुराने काल की स्त्रियां वाञ्छनीय हैं जो घर के चूल्हे-चौके के अतिरिक्त और कुछ न तो करना जानती थीं

और न कर सकती थीं, उन्हें देश, जाति और मनुष्य समाज के उतार-चढ़ाव का भी ज्ञान नहीं होता था ।’

‘मैं उनकी चर्चा नहीं कर रहा और न ही उनकी इन त्रुटियों को अच्छा कह रहा हूँ । परन्तु उनको चूल्हे-चौके और घर के अन्य कामों से आपका आन्दोलन मुक्ति नहीं दिला सकता ; घर के गन्दे कामों से छुड़ी तब तक नहीं हो सकती जब तक कि विज्ञान इतना उन्नति न कर ले कि चूल्हा-चौका और अन्य काम छोटी-छोटी मशीनें करने लगें । यह जानती हो, कब होगा ? इस विषय में मैं तो उस काल के स्वप्न देखता हूँ जब घर में नौकरों (Domestic Servent) की आवश्यकता नहीं होगी । प्रत्येक घर के बनने के समय ही उसमें ऐसे यंत्र लगा दिये जाया करेंगे जिनसे रोटी पकाने का पूर्ण उपक्रम, चौका-बासन का फजीता, घर के बुहारने और इस प्रकार के गन्दे कार्य, स्वयं हो जाया करेंगे और इन पर खर्चा इतना कम होगा जो गरीब-से-गरीब की सामर्थ्य में होगा ।’

‘और तब तक स्त्रियां गन्दगी के कीड़ों की भांति इसमें लिप्त रहें !’

‘पर देवीजी ! यह मेरे आधीन नहीं कि बिना इन कामों के जीवन सम्पन्न कर दूँ । मुरली को तुमने देखा है न । उसकी मां ने अपनी आत्म-कथा में एक मजेदार बात बताई थी । जब उसका पति जीता था तो वह अपनी स्त्री से घर के सब काम-काज कराता था और चाहता था कि वह उसकी रोटी खेत में भी पहुंचाये । मुरली की मां कई वर्ष तक यह सब कुछ करती रही । एक दिन वह इससे उकताकर अपने घर वाले से बोली कि अब उससे यह नहीं होता । इस पर पति बोला, तो काम कैसे चलेगा । मुरली की मां ने कहा, “चले या न चले वह कुछ नहीं कर सकती ।” उसने काम छोड़ दिया । एक दिन पति ने मोटी-मोटी आधी कच्ची आधी पक्की रोटियां बनाईं । दोनों ने खाईं । दोनों के पेट में दर्द रहा । अगले दिन मुरली की मां भागकर दिल्ली चली आई और एक कोठी में नौकरी कर ली । दो साल यहां नौकरी की । अपनी रोटी चौका-बासन और कोठरी की सफाई तो उसे करनी ही पड़ती थी । ऊपर से

मालिक का चौका-बासन, कोठी की सफाई के अतिरिक्त मालकिन के बच्चों के गन्दे कपड़े धोने का काम भी उसे ही करना पड़ता था। दो ही वर्षों में उसे पता चल गया कि पति की नौकरी ग़ैर की नौकरो से अच्छी है। वह एक दिन घर लौट आई। परन्तु उस समय तक उसका पति अपने हाथ की कच्ची-पक्की रोटियां खा-खाकर इतना बीमार हो चुका था कि उसके पहुँचने के दो दिन पश्चात् ही वह परलोक-गमन कर गया। अब बताओ किसी-न-किसी को तो यह काम करने ही होंगे। इनसे छुट्टी पाने के लिए विज्ञान की उन्नति की आवश्यकता है।'

सब लोग तीनों कोर्स समाप्त कर चुके थे। बैरे ने बर्तन उठाये, और छाया ने रसीद निकालकर बैरा को दे दी।

कमल ने उठते हुए कहा, 'छाया देवी धन्यवाद। इस पर भी मैं आपसे यह कहता हूँ कि आपकी विचार-धारा में एक भारी दोष है। जब दो व्यक्ति प्रकृति ने एक समान नहीं बनाये तो उनके काम भी एक समान नहीं हो सकते। यूँ तो लोग अपने पालतू कुत्तों और घोड़ों को अपने समान सुख और आराम में रखना चाहते हैं परन्तु यह चाहने की बात है। इसके लिए कोई नियम नहीं बन सकता। यह अस्वाभाविक है कि स्त्री-पुरुष दोनों एक समान रहें।'

'मैं आपके सिद्धान्त को नहीं मानती। इस समय भी मैं आपसे जो बातें करना चाहती थी, शायद नहीं कर सकी। मैं आपसे फिर मिलूँगा।'

'अच्छी बात नमस्ते।' बलवीर और कमल ने कहा।

छाया ने उत्तर दिया 'चीयरों।'

: ६ :

छाया अभी कमल और बलवीर से विदा भी नहीं हुई थी कि छाया का भाई भृगुदत्त और माया मोटर से उतरकर रैस्टोरेण्ट की ओर आते हुए दिखाई दिये। भृगुदत्त इतना जमघट देख छिप जाना चाहता था; परन्तु कमल ने आगे बढ़कर उसे आवाज दे ही दी। 'हैलो मिस्टर भृगुदत्त;

कैसी तबियत है ?'

भृगुरत्न को विवश हो सबमे मिलना पड़ा। उसके पीछे माया खड़ी थी। माया की आंखें लाल हो रही थीं। ऐसा प्रतीत होता था कि वह रो रही है। बलवीर ने एक क्षण माया को देख हाथ जोड़कर 'नमस्ते' की। माया ने अचम्भे में उत्तर दिया। उसका बलवीर से परिचय नहीं था। बलवीर ने आगे बढ़कर कहा, 'माया अब बड़ी हो गई हो न; पहचानती भी नहीं। तुम नवीनचन्द्र की बहन हो न।'

माया ने अभी भी अचम्भे में कहा, 'मैंने आपको पहचाना नहीं।'

'मे नवीन का मित्र बलवीर हूँ। तुम कई बार हमारे घर पर आई तो हो। मैं सान वर्ष तक विलायत रहा हूँ न, इसी से भूल गई मालूम होती हो।'

'ओह।' माया को याद आगया और उसने प्रसन्न होकर कहा।

'बलवीर दादा! परन्तु उस समय मैं बहुत छोटी थी। इस पर भी आपने खूब पहचाना।'

'नवीन आजकल कहा है? आप अब उस मकान में तो नहीं रहते। मैंने विलायत से लौटकर पता किया था।'

माया का चेहरा उतर गया और उसने एक लम्बी सांस खींचकर कहा, 'पिता जी का देहान्त हो गया था। नवीन फौज में भर्ती हो गया है। उसे "क्रिस्त कमीशन" मिल गई है। माता जी को अकेले यहां रहने में असुविधा थी, इस कारण मुझे बोर्डिंग हाउस में दाखिल कराकर वे स्वयं स्यालकोट चली गई है।'

'तो तुम बोर्डिंग हाउस में रहती हो? वहां पर कोई कष्ट तो नहीं?' बलवीर ने कष्ट का नाम ही लिया था कि माया की आंखें आसुओं से भर आईं।

बलवीर ने आश्चर्य से पूछा, 'माया राती क्यों हो? क्या बात है?'

माया ने अपने ब्लाउज के भीतर से रूमाल निकालकर आंखें पोंछते हुए कहा 'नही दादा! कुछ नहीं। ऐसे ही पुरानी बातें याद आगई थी।'

बलवीर को अब ध्यान आया कि माया की आंखें पहले भी फूली हुई थीं, परन्तु सब के बीच में बात करने में शायद असुविधा हो, ऐसा सोचकर उसने कहा, 'अच्छी बात है ! तुम हमारा घर तो जानती हो । वहाँ कभी-कभी आजाया करो । वहाँ माताजी है और पिताजी भी आजकल यहीं रहते हैं । जयपुर नहीं जाते ।'

इतना कहकर उसने माया को हाथ जोड़कर 'नमस्ते' की । भृगुदत्त कमल और छाया के साथ बाते करता-करता बलवीर की गेटर के पास चला गया था । जब बलवीर माया से विदा हुआ तो भृगुदत्त कमल तथा छाया को छोड़कर माया के साथ रेंटोरेट की ओर चला गया ।

रेंटोरा की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए भृगुदत्त ने पूछा, 'बलवीर से जान पहचान है क्या तुम्हारी ?'

'हां, वे मेरे भाई के मित्र हैं ।'

'उससे क्या कह रही थी तुम ?'

'कुछ नहीं ऐसे ही भाई और पिताजी के विषय में बातें हो रही थी ।

'झूठ बोलती हो न । रो नहीं रही थी तुम उसके सामने ? मैंने स्वयं तुम्हें आंखें पोंछते देखा है ।'

उस समय वह खाने के स्थान पर पहुँच गए थे । दोनों एक मेज पर बैठ गए और खाने के सामान का आर्डर दे दिया । जब बैरा खाना लेने गया तो माया ने कहा, 'आपको अब भय लग रहा है कि मैं किसी से कुछ कह न दूँ । पर मैं कहती हूँ आप मुझसे विवाह क्यों नहीं कर लेते, जिससे कि आपका भय दूर हो जाय ।'

'देखो माया ! आज एक घंटे से मैं तुम्हें बार-बार कह रहा हूँ कि हमारा विवाह तो असम्भव है । हाँ मैं तुम्हारे रहने और खाने-पीने का प्रबन्ध कर दूँगा । जब बच्चा होगा तो उसका भी पूरा-पूरा प्रबन्ध हो जायगा । रुपये पैसे की कमी नहीं रहेगी । बच्चे की शिक्षा इत्यादि का प्रबन्ध भी बहुत अच्छा कर दूँगा ।'

'परन्तु लोग क्या कहेंगे ?'

‘वाह, लोगों से डरती हं !’

‘आप भी तो लोगों के डर के मारे विवाह नहीं करते ।’

‘मे लोगों से नहीं डरता । मैं पिताजी से डरता हूं । आखिर रुपया तो उनके पास ही है न ।’

‘मैं तो निर्धन बनकर भी आपकी अधीनगी होकर रहने में अपना सौभाग्य समझूंगी ।’

‘पर मैं तो गरीबी में नहीं रह सकता ।’

माया निहतर हो गई । इस समय बेरा खाली प्लेटें रख गया । भृगुदत्त ने बेरे के चले जाने पर कहा, ‘माया ! अब तो यही हो सकता है कि मैं तुम्हारे लिए कहीं मकान ले दूं । तुम छिपकर वहां रहो । मैं कभी-कभी जब मुझे अवकाश मिलेगा, तुमसे मिल लिया करूंगा ।’

माया चुप थी । वह कभी-कभी एक लम्बी आह ले लेती थी । खाना आया । दोनों ने खाया । इस सब समय में माया ने एक शब्द नहीं कहा, वह मन में अपने सुख-स्वप्नों को चूर-चूर दुप्रा देख रही थी । वह सोचती थी कि इसी की बहन श्रीमती के अधिकारों का डींग हांकती फिरती है । वह मेरे अधिकारों के लिए अपने भाई म लड़ने और झगड़ा करने के लिए तैयार हो जायगी क्या ? उसे छाया से किञ्चित् भी आशा नहीं थी । इस पर भी “डूबते हुए के लिए तिनके का सहारा” की भांति वह छाया से सब बात कहकर अन्तिम यत्न करना चाहती थी । इस बात का वह निश्चय कर चुकी थी कि भृगुदत्त की सम्मति के अनुकूल वह चोरी-चोरी नहीं रहेगी । इससे तो यही ठीक रहेगा कि वह आत्म-घात कर ले ।

खाना समाप्त हो चुका था । भृगुदत्त ने दाम चुका दिये और दोनों उठकर बाहर निकल आए । जब भृगुदत्त मोटर में सवार हो रहा था तो माया ने बिदा माँगने से पहले कहा, ‘मैं छिपकर रहने से मर जाना अच्छा समझती हूं । इस कारण अन्तिम प्रार्थना करती हूं कि आप विवाह की कोई सूरत निकालें । मैंने आपके कहने पर भरोसा किया था और अब

प्रार्थना करती हूँ कि एक अबला के विश्वास को न तोड़े।'

भृगुदत्त ने बिना उतर दिये मोटर चला दी और माया कॉलिज की ओर लौट पड़ी।

: १० :

रैस्टोरां से निकलकर बलवीर ने अपने मोटर ड्राइवर से छाया को कॉलिज छोड़ आने को कह कमल से पूछा, 'अब किधर चलियेगा ?'

कमल ने मोटर से अपना थैला निकाल लिया और बोला, 'पहले तो "भजूदूर" के दफ्तर में जाना है। यह दो लेख वहा देने हैं। उसके पश्चात् जामा मस्जिद के समीप "रफीक हाटल" में मिस्टर मजीद न चाय के लिए बुलाया है। वहां चार बजे पहुंचना है। इसके बाद तुम्हारे दवाई-खाने में चलेंगे। वहां—में तुमसे भविष्य के प्रोग्राम के विषय में बात-चीत करना चाहता हूँ।'

दोनों ने तागा किया और 'भजूदूर' के दफ्तर में जा पहुंचे। सम्पादक से भेट हुई। उसने बहुत प्रसन्नता से लेख पढ़े और खूब लिये। पश्चात् तीस रुपए का एक चेक काटकर दे दिया और कहा, 'मिस्टर कमल! आपके विचार तो कम्युनिस्टों से बिल्कुल मिलते हैं; परन्तु आप कम्युनिस्ट पार्टी में सम्मिलित नहीं होते।'

'मैं कम्युनिस्ट नहीं हूँ। मैं तो बुद्धिवादी Rationalist हूँ, अर्थात् मैं विचारशील हूँ। समाजवाद एक व्यक्ति-युक्त सिद्धान्त है। मैं इसे मानता हूँ। कम्युनिस्ट भी इसी सिद्धान्त को मानते हैं। इस कारण मेरी उनसे समानता है। परन्तु इस सिद्धान्त को कार्य रूप में लाने का जो ढंग कम्युनिस्ट प्रयोग में ला रहे हैं वह मुझ व्यक्ति-युक्त प्रतीन नहीं होता।'

'उदाहरण के रूप में ज़रा बतायें तो कि कम्युनिस्टों के कार्यक्रम का कोन-सा अंश आपको पसन्द नहीं है।'

'इससे लाभ ही क्या होगा? कम्युनिस्टों का व्यवहार तो यह है कि जब कोई उनको समझाने का यत्न करता है तो वह उसे "बोर्जुआ"

का नाम देकर गाली देने लगते हैं।'

सम्पादक महाशय यह आलोचना सुनकर क्रोध से तम-तमा उठे और बोले, 'तो आप बोरुआ वर्ग की हिमाया करते हैं। मिस्टर कमल, आप जैसे पढ़े-लिखे लोगों को ऐसी बात कहते लज्जा नहीं मालूम होती क्या ?'

कमल हँस पड़ा और बोला, 'यह बात, जिसका आपने अब प्रदर्शन किया है, एक है जिससे मैं आपकी पार्टी का सिद्धान्त मानते हुए भी उसका सदस्य नहीं बन सकता। जो मैंने कहा उसका अर्थ समझे बिना ही आप आवेश में आ गए।''

'मेरा आवेश में आना ठीक नहीं क्या ? शताब्दियों से मनुष्य का रक्त चूस-चूस कर मोटे हो जाने वाले सरमायादारों का नाम लेकर आपने मेरे मस्तिष्क में हलचल मचा दी है। जो मोटरों में चढ़ते हैं, जब कि ६६ प्रतिशत लोगों को पहनने को जूता भी नहीं मिलता, उनका नाम लेना भा यहाँ पाप है।'

कमल ने गम्भीर होकर कहा, 'मैं आपके मनोद्गारों की सराहना करता हूँ; परन्तु आपका बात करने का यह ढंग अशिक्षित मजदूरों को ही अच्छा लग सकता है, किसी पढ़े-लिखे विद्वान् को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता।'

'हमें आप जैसे पढ़े-लिखों की आवश्यकता नहीं है।'

'यही तो मैं कहता हूँ। मेरी आपकी पार्टी को आवश्यकता नहीं है। मुझे अपने लेख आपक पत्र में छपवाने की आवश्यकता है; इसलिए मैं यहाँ आता हूँ। यदि आपको उनके छापने की भी आवश्यकता न हो तो वापस कर दीजिये।'

इतना कहकर कमल ने जेब से 'चैक' निकालकर मेज पर रख दिया। सम्पादक ने कुछ नरम होकर कहा, 'मिस्टर कमल नाराज हो गये न। जब सिद्धान्त की चर्चा होती हो तो निजी व्यवहार आलोचनात्मक नहीं होता।'

'अच्छी बात है।' कमल ने चैक उठाकर जेब में डाल लिया और

‘आदाब अर्ज’ कर रखसत ली। दफ्तर से बाहर निकले ना बलबोर ने कहा, ‘कमल भट्ट्या ! इन लोगों से कैसे व्यवहार रख सकते हो तुम ?’

कमल ने लम्बी सांस खींचकर कहा, ‘दादा ! कम-मे-कम यह लोग ईमानदार तो हैं। दूसरी श्रेणी के लोगों की बात देखो। कितनी अश्वर-गर्दी मचा रखी है। ‘तिज्जार्त’ में मेने पांव लेख दिये हैं। पांच महीने गुजरने पर भी दाम अभी तक नहीं मिले। यह तो कुछ नहीं, जितनी घोखा-घड़ी सरमायादार श्रेणा में हांता है उतनी दूसरी किसी श्रेणी में नहीं होती। इस श्रेणी के लोग जितना भी धन उचित अथवा अनुचित उपायों से प्राप्त कर सकते हैं कर लेते हैं। इसलिए कि जो कुछ भी उनकी जेब में चला जाता है वह उनका हो जाता है और वह उसको दूसरों को खरीदने के लिए प्रयोग में लाते हैं।’

‘तो वास्तव में यह दोष कानून का है जो उनको ऐसा करने की स्वीकृति देता है ?’

‘हां ! देश का कानून सरमायादारों का बनाया हुआ है। इस कारण सरमायादारों के अनियमितपन को यह सहन कर लेता है। अब प्रश्न यह है कि देश का कानून बनाने की सामर्थ्य सरमायादारों से कैसे छीनी जाय। इसके लिए सबसे पहला कार्य यहां स्वराज्य स्थापित करना है। इसके साथ कानूनी सभाओं को बनाने के अधिकार की योग्यता धन नहीं होना चाहिए। सब सही दिमाग वाले लोगों को कानूनी सभाओं के चुनाव में सम्मति देने का अधिकार होना चाहिए और सही दिमाग रखने वालों के कुछ लक्षण निश्चित होने चाहिए। ऐसी अवस्था में हम साधारण लाग केवल धन के बल पर राज्य करने वालों को अशक्त कर देंगे।’

: ११ :

रात को बलवीर और कमल एक ही कमरे में सोते थे। बलवीर के पिता खाना खाने के पश्चात् लड़कों के साथ ही उनके सोने के कमरे में

आगये। ठाकुर शमशेरसिंह उस दिन छाया के पिता के घर वाली घटना को अभी भूले नहीं थे। उसे कई सप्ताह व्यतीत हो चुके थे इस पर भी वह छाया का नाम सुनते ही माथे पर त्योंरी चढ़ा लेते थे।

आज तीसरे पहर जब डाइवर छाया को कॉलिज छोड़कर घर आया तो बलवीर के पिता ने उससे पूछ लिया था कि बलवीर और कमल कहा गये हैं। डाइवर ने कह दिया कि दोनों तागा करके पुरानी दिल्ली गये हैं और वह छाया देवी को कॉलिज छोड़कर आ रहा है। इस पर उन्होंने पूछ लिया कि वह उन्हें कहा मिली थी। डाइवर ने बताया कि छायादेवी प्रातः दम बजे ही बलवीरजी के चिकित्सालय में पहुंच गई थी। वहां से माढ़े ग्यारह बजे वे दोनों कमलजी के पास गाव में गये थे। वहां से लौटकर तीनों रेस्टोरां में खाना खाने गये और अब लडकी कॉलिज गई है। इस समाचार से शमशेरसिंहजी को अचम्भा भी हुआ और क्रोध भी। रात को जब सब खाना खा चुके और बलवीर तथा कमल अपने कमरे में चले गये तो वे भी उनके साथ वहां पहुंच गए। बलवीर और कमल अपने-अपने पलंग पर बैठे थे, शमशेरसिंह समीप रखी कुर्सी पर ऐसे बैठे कि दोनों से बातें कर सकें। कमल ने कहा, 'दादा मैं आज अपने जीवन में परिवर्तन करना चाहता हूँ। मैं देहात में कार्य करना परमावश्यक समझ कर वहाँ जा बैठा था; परन्तु अब मेरे विचारों में भारी परिवर्तन हो रहा है। मैं इस बात को भली भाँति समझ गया हूँ कि सुधार की आवश्यकता ग्रामों से अधिक नगरों में है। महात्मा जी के ग्राम-सुधार की मैं निन्दा नहीं करता, परन्तु मैं यह समझने लगा हूँ कि ग्रामवासियों के सुधार के लिए भी हमें नगरों में कार्य और नगर वालों के, सुधार की आवश्यकता है। किसी भी दृष्टिकोण से देखूँ; मुझे तो ऐसा ही प्रतीत हो रहा है कि सात लाख भारतीय गाँवों का भाग्य भारत के पचास-साठ नगरों के भाग्य से बंधा है। राजनीतिक, आर्थिक, आत्मिक, मानसिक अथवा शारीरिक किसी भी आवश्यकता को लें। देहातों में सुधार, नगरों का अथवा नगरवालों का सुधार किये बिना,

कुछ भी नहीं हो सकता। दिन प्रतिदिन नगरों में नये-नये मानसिक और शारीरिक रोग उत्पन्न होते रहते हैं। ये धीरे-धीरे समय और अन्तर की छननी से छनते-छनते देहातो में पहुँच रहे हैं। यदि हम अपने नागरिकों को स्वस्थ, सबल और मन तथा शरीर से निरोग बनायेंगे तो निःसन्देह देहाती न केवल अनेको बुराइयों से बचे रहेंगे; प्रत्युत उनमें पर्याप्त सुधार भी होने लगेगा।'

'परन्तु अपनी सीमित शक्ति से तुम क्या कर सकोगे।'

'मैं अपनी सीमित शक्ति को सीमित क्षेत्र में ही व्यय करूँगा मैं उससे एक उदाहरण उपस्थित करना चाहता हूँ; जिससे दूसरे भी अपनी शक्ति को इसी ओर लगायें।'

अब शमशेरसिंह जो अपने मन की बात कहने के लिए वहाँ आये थे बोल उठे, 'और छाया तुम्हारी इस योजना को मुझाने वाली और इसमें सहायता करने वाली हैं?'

'छाया? चाचाजी यह आपको किसने बताया है?'

'वह आज दिन भर जो तुम दोनों के साथ रही है। मैं समझता हूँ कि शायद उसकी संगत का लाभ उठाने के लिए ही तुम यह योजना बना रहे हो।'

'जो नहीं', कमल ने मुस्कराते हुए कहा, 'मैंने तो अपनी याजना कई दिन से बना रखी है। उसमें अभी कई बातें हैं जो विचारणीय हैं। फिर भी उसकी मोटी बातें मैं विचार चुका हूँ।'

कमल इतना कहकर कुछ क्षण तक चुप रहा। बलवीर और उसके पिता इस प्रतीक्षा में थे कि कमल अपनी बात को समाप्त कर दे तो कुछ कहे। कमल ने छन की ओर देखते हुए कहा, 'मैं समझता हूँ कि नगरों के लोग अस्वस्थ वायु-मंडल में रहकर स्वयं रोगी होते हैं और जब वह रोग महामारी का रूप धारण कर लेते हैं तो फिर देहातों की गरीब जनता को ग्रस लेते हैं। इस कारण लोगों के लिए स्वास्थ्य-प्रद मकानों और उत्तम वायु मंडल में रहने का प्रबन्ध किया जाय। दूसरी बात यह है कि शहरों में,

विशेष रूप से, इस युद्ध के दिनों के नगरों में अमेरिकन येकीज और ब्रिटिश टोमीज के सम्पर्क में आने से लोग चरित्र-हीनता सख रहे हैं। अतएव मैं कम-से-कम अपने संगी-साथियों को स्त्रियों से मेल-मिलाप बढाकर भी भी चरित्रवान् बनाये रखने के साधन उपस्थित करना चाहता हूँ। और तीसरी बात यह है कि नगर के रहने वालों को मैं मिखाना चाहता हूँ कि आय में नगर वालों का माप दंड (Measure) रखते हुए खच में गांव वालों का माप ले आऊ और खाने इत्यादि की अवाश्यकताओं में कमी न होने दें। इन सबसे अधिक मैं नगरों के स्वार्थी लोगों को संयुक्त-जीवन (corporate life) की ओर लाना चाहता हूँ।'

इस समय कमल पुनः या तो मांस लेने के लिए अथवा अपने कहने का प्रभाव बलवीर के पिता पर देखने के लिए कुछ क्षण तक चुप हो गया। शमशेरसिंह ने अभी भी कुछ सम्मति नहीं दी। अतएव कमल ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, 'चाचा जी ! इतना विचार तो मैं कई दिन से कर चुका हूँ; और आजकल मैं अपनी इसी योजना को कार्य रूप में लाने के लिए गम्भीरता पूर्वक विचार कर रहा हूँ। छाया आज आई थी। मैं नहीं जानता वह क्यों आई थी ! वह कहती थी कि वह बलवीर से केवल मित्रता का व्यवहार रखना चाहती है। उसका विवाह का विचार किंचित मात्र भी नहीं है।'

'अजीब लड़की है ? जब बलवीर के साथ इतनी तू-तू में मैं होचुकी है तब भी उसकी मोटर में घूमने से वह तनिक भी सकोच नहीं करती। पूरी निर्लज्ज प्रतीत होती है।'

'इसे वह स्वतंत्रता, उदारता और अर्वाचीनता मानती है।'

'परन्तु तुम दोनों भी पूरे गधे हो कि उस दिन का अपमान धोल-कर पी गये।'

इसका उत्तर बलवीर ने दिया, कहा, 'पिताजी ! वह मेरे पास कई दिन से आ रही थी और कमल का पता पूछती थी। आज मुझ गांव जाना ही था; इस कारण कमल से मिलने के लिए वह मेरे साथ ही चली गई।'

‘तो फिर उससे कोई विशेष बात हुई थी ।’

‘कुछ नहीं ! केवल इतना कहनी थी कि फिर मिर्गूगी ।’

‘प्रतीत होता है कि अब वह कमल पर डोरे डाल रही है । देखना यह है कि वह भी तुम्हारे जितना ही गधा है या कम ।’

बलवीर और कमल दोनों हंस पड़े । बलवीर के पिता ने फिर कहा—

‘देखो बेटा, स्वतंत्रता और उसके उपभोग करने की शक्ति साथ-साथ बढ़नी चाहिए । कठिनाई हमारे देश में यह है कि हम स्वतंत्रता का उपभोग करने लगे हैं बिना उसके योग्य बुद्धि और शक्ति प्राप्त किये । देखो बागीचों में छोटे-छोटे पौधों की रक्षा के लिए बाड़ लगा दी जाती है । वह बाड़ तब तक नहीं उठाई जाती जब तक कि पेड़ इतना दृढ़ नहीं हो जाता जिससे राह जाते लोग उसे उखाड़ न सके । यद्यपि मैं स्त्रियों से प्रायः मिलता जुलता नहीं तथापि मिलनेसे मैं किसी प्रकार की हानि भी नहीं उठा सकता । परन्तु युवा और युवतियों में बिना प्रतिबन्धों के मेल-जाल अनिच्छित परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है ।’

इस पर कमल ने कहा ‘चाचाजी आप निश्चित रहें । हम सीमा से बाहर नहीं जायेंगे । हम असीमित स्वतंत्रता के उपासक नहीं हैं । इसे स्वतंत्रता न कहकर उच्छ्वलता ही कहा जा सकता है ।’

: १२ :

अपयी योजना के विषय में कमल का पहला काम यह था कि उसने अपने लिए एक बैठक शहर में भाड़े पर ले ली । इसमें केवल एक ही कमरा था और यह वह तुर्कमान दरवाजे के भीतर ले सका था । मकान के चारों ओर बसने वाले प्रायः मुसलमान थे । इस बैठक पर उसने बोर्ड लगवा दिया, जिस पर लिखा था सहयोग-समिति (Association of Co-operater) । कमल का दूसरा काम यह था कि भिन्न-भिन्न पत्रों में विज्ञापन दे । एक विज्ञापन उदाहरणार्थ नीचे लिखा जाता है—

‘सहयोग-समिति के लिए सदस्यों की आवश्यकता है । सदस्यों का मेहनती और ईमानदार होना तथा उनका संयुक्त-जीवन (Corporate-

life) में विश्वास होना परमावश्यक है । सदस्य बनाने में उन लोगों को अच्छा समझा जायगा जो बेकार हैं और जिन पर परिवार का बोझ अधिक है । सभा के नियम-पालन करने वाले के लिए खाने-पहनने व मकान तथा उचित मनोरंजन का प्रबंध भी सभा की ओर से किया जायगा । उम्मीदवार सभा के मंत्री से उसके कार्यालय में रविवार के दिन १२ बजे से ४ बजे के भीतर मिलकर इस विषय में बातचीत कर सकते हैं ।”

नीचे कार्यालय का पना लिखा था । ऐसे विज्ञापन कमल ने कई दिन्दी तथा उर्दू के पत्रों में छपवाये । इनका परिणाम यह हुआ कि एक मास में सैकड़ों की संख्या में लोग मिलने के लिए सहयोग-समिति के मंत्री मिस्टर कमल के पास आये । प्रायः लोग योजना और समिति के उद्देश्य और नियम देख व सुनकर चले जाते थे । कुछ कह जाते थे कि विचार करके आयगे और फिर नहीं आते थे । ऐसे बहुत कम थे जो दोबारा इस समाज के विषय में पूछने आते थे । एक मास की मुलाकातों के पश्चात् केवल पांच व्यक्ति ऐसे आये जो इस समिति में सम्मिलित होने को तैयार हुए अथवा जिनको कमल और बलवीर ने इसमें आने की स्वीकृति दी । इन पांच सदस्यों के अतिरिक्त बलवीर और मुरली की मां पहले ही सम्मिलित होगये थे ।

लोग जो इस सभा का विज्ञापन पढ़कर आते थे; पहले तो समझते थे कि यह कोई संस्था है जहां नौकरी मिलेगी । पीछे जब कमल उनको सब बात समझाना तो उन्हें समझने में कठिनाई होती थी फिर समझ जाते थे तो प्रायः लोग यह सोचते थे कि यह योजना अस्वाभाविक है । नमूने के तौर पर, एक रविवार के दिन एक समय इस सभा के कार्यालय में लगभग तीस उम्मीदवार बैठे थे । कमल उन सबको अपने सम्मुख बैठकर समझा रहा था । उसने बताया ।

‘हमने एक संस्था बनाई है जिसमें वह लोग सम्मिलित हैं जो संयुक्त-

परिवार के ढग पर रहना चाहते हैं । इस संस्था में परिवार के अर्थ एक ही मां बाप की सन्तान से नहीं है । हम परिवार उसको सम्भूत हैं जिसमें वे लोग हों जो सबकी खुशी-गरी, प्रमोदी-गरीबी, दुःख-मुख को अपना समझे । हम सब लोग एक स्थान पर इकट्ठे रहेंगे । और जो लोग इसमें सम्मिलित होंगे वे मंत्री की आज्ञानुसार काम करेंगे । प्रत्येक सदस्य के परिवार के लोग भी, जो उसके साथ रहेंगे, वह मंत्री की आज्ञानुसार जो काम भी उनको बनाया जायगा, करेंगे । सब सदस्यों और उनके साथ रहने वालों, बाल-बच्चों तथा स्त्रियों के काम से जो कुछ भी प्राप्त होगा वह संस्था की सम्मिलित आय होगी । इसी प्रकार जो कुछ भी सदस्यों और उनके परिवार के उन लोगों के, जो समिति के आश्रय में रहेंगे, रहने, खाने और पहनने आदि का खर्चा समिति की उस आय में से दिया जायगा । शेष जो कुछ बचेगा वह समिति की सम्पत्ति होगा । यदि कोई सदस्य समिति को किसी समय छोड़ना चाहेगा तो वह छोड़ सकेगा ; परन्तु समिति की सम्पत्ति में से उसे कुछ दिये जाने के लिए समिति किसी प्रकार से बाध्य नहीं होगी । यदि सब सदस्य किसी समय इस संस्था को बदल देना चाहेंगे तो वह अस्सी प्रतिशत सख्या में सहमत होने से कर सकेंगे । ऐसी परिस्थिति में सभा की पूर्ण सम्पत्ति उस समय के काम करने वाले सदस्यों में बराबर-बराबर बांट दी जायगी । जो सदस्य मंत्री अथवा समिति की सम्पत्ति के विपरीत व्यवहार रखेगा, समिति को उसे अपने में से निकाल देने का अधिकार होगा । इस अवस्था में सदस्य को समिति की सम्पत्ति में से कुछ भी पाने का अधिकार नहीं होगा । साधारणतः समिति की सम्पत्ति का उपभोग सभा के सदस्यों की राय से ही होगा ।

यह मेरी योजना है । इस प्रकार की संस्था में सम्मिलित होने की इच्छा रखने वालों को पहले एक प्रार्थना-पत्र भरकर देना होगा । प्रार्थना-पत्र स्वीकार होने पर एक स्टाम्प कागज पर इकरारनामा लिखकर देना होगा । पश्चात् उसे अपनी सम्पत्ति ; जो वह अपने अधिकार में रखता है, समिति के हवाले कर देनी होगी अथवा उस सम्पत्ति से जो आय

होगी वह समिति की सम्पत्ति बना देनी होगी। जिस दिन से वह यह कर देगा उस दिन से उसके और उसके परिवार के लोगों के पालन-पोषण का भार समिति अपने ऊपर लेगी और साथ ही उससे तथा उसके परिवार के उन लोगों से जो जैसा काम कर सकेगा, काम लेगी।'

इस वर्णन के पश्चात् उपस्थित लोग शका-समाधान करने लगे।

एक ने पूछा—'क्या इस समिति के कोई सदस्य पहले भी है?'

'तीन है।'

'इन तीनों की आय कितनी-कितनी है?'

'एक विस्थापन डॉक्टर है। उनका आय दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। इस समय लगभग पान सौ रुपया मासिक है। दूसरा मे हूँ। मेरा काम पुस्तकें इत्यादि लिखना है। मेरी आय भी नित्य प्रति बढ़ रही है। इस समय दो सौ रुपये मासिक से कम नहीं है। तीसरे एक स्त्री और उसकी लड़की है। इनके आने खर्च हैं और यह लोग अपने खर्चों की आय संस्था को देते हैं जो लगभग तीस रुपया मासिक है।'

'यह संस्था कब से काम कर रही है?'

'एक मास से।'

'आप और डॉक्टर साहब क्या सचमुच ही इतनी भारी आय संस्था को दे देते हैं?'

'हां!'

'आप ऐसा क्यों नहीं करते कि जितनी जिसकी आय हो उसी के अनुसार उचित मुविजाय दी जाय और सम्पत्ति का अधिकारी वह ही माना जाय।'

'ऐसा तो इस समय ममार में हो ही रहा है। इसके करने के लिए किसी संस्था की आवश्यकता नहीं है।'

'परन्तु आप अधिक धन देना करने वालों को अधिकलाभ उठाने का अधिकारी क्यों नहीं मानते।'

'दोनों बातें गलत हैं। कोई अधिक रुपया नहीं सकता। मनुष्य मनुष्य

की मेहनत में थोड़ा ही अन्तर होता है। जहाँ हमें भारा अन्तर प्रतीत होता है वहाँ कोई धोखा-धड़ी है। इसी प्रकार धन के भोग में भी एक और दूसरे में कुछ अधिक अन्तर नहीं हो सकता। जहाँ है वहाँ धन का व्यर्थ व्यय करना ही मानना चाहिए।'

'यह बात समझ में नहीं आई। कुछ व्याख्या से समझाइये।'

'बात स्पष्ट है। मनुष्य की मेहनत, चाहे तो वह कोई वकील करे और चाहे कोई कुली, लगभग बराबर ही होती है। एक की मेहनत यदि अधिक आय कर देती है तो वह इसलिए नहीं है कि उसको मेहनत करने में अधिक कष्ट हुआ है; प्रत्युत वह इसलिए है कि एक के पास मेहनत के साथ साधन अधिक हैं और वह साधन उसको प्रकृति से अथवा किसी परिस्थिति विशेष के कारण मिले हैं। डॉक्टर साहब का ही उदाहरण लें तो बात समझ में आ जायगी। डाक्टर साहब की अधिक आय इस कारण है कि उन्होंने डॉक्टरी की शिक्षा प्राप्त की है। इस डॉक्टरी की पराक्षा पास करने में उनका एक घनी के घर में उत्पन्न होना, फिर एक डॉक्टरी कालिज का भोजन होना और उसमें प्रोफेसरो का तथा अन्य साधनों का उपस्थित होना सम्मिलित है। यह साधन हैं जो उनकी आय को बढ़ाते हैं। इन साधनों के न होने में एक कुली का दोष नहीं। इससे हम दोनों के परिश्रम का मूल्य लगभग एक जैसा ही लगाते हैं।

'रहा भोग करना। उसमें भी मैं यह बताना चाहता हूँ कि अच्छा खाना, अच्छा पहनना और अच्छे पकान में रहना तो सबका अधिकार है। शेष जो व्यय किया जाता है वह व्यर्थ है।'

'यदि कोई पुरुष आपका सदस्य बनता है तो उसकी स्त्री अथवा और कोई सम्बन्धी जो उनके आश्रय में है, और सदस्य बनना नहीं चाहता उनका क्या होगा?'

'समिति के सभी आश्रित उसके सदस्य माने जायेंगे और उनको समिति के नियम पालन करने होंगे और समिति के द्वारा निश्चित काम भी उन्हें करने होंगे। यदि वह नहीं मानेंगे अथवा नहीं करेंगे तो वह संस्था में नहीं रह सकेंगे।'

‘स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध आपकी सस्था में क्या होगा ?’

‘ठीक वही, जो बाहर साधारण रूप में होता है।’

इस सब समाधान के पश्चात् भी श्रोताओं को इसमें भलाई प्रतीत नहीं होती थी और प्रायः लोग आधा घंटा अथवा घंटा कमल और बलवार से वाद-विवाद करके चले जाते थे। वास्तव में बात यह थी कि जो कमाते और खाने हे उन्हें किसी नवीन पथ का पथिक बनने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती थी और युद्ध के समय में जो कोई थोड़ी सी भी चालाकी जानता था वह अपने निर्वाह में कई गुना अधिक पैदा कर लेता था। उसे इस बात की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती थी कि वह अपने आपको किसी संस्था के अधीन कर दे।

इस पर भी जो बेकार थे उनमें से कुछ अपने भाग्य की परीक्षा के लिए इस संस्था में प्रविष्ट हो गये। एक दिन एक आदमी आया। उस दिन कमल पांच छः मंडलियों को समझाकर थक चुका था। वह आदमी एक फटे अखबार का टुकड़ा हाथ में लिए पता ढूँढने हुए दफ्तर में आ पहुँचा।

कहने लगा, ‘साहब। दो घंटे से आपका स्थान ढूँढ रहा हूँ। बहुत ठठिनाई हुई है ढूँढने में।’

‘हमें बहुत शोक है। परन्तु इसमें दोष हमारा नहीं। देहली म्युनि-सिपैलिटी ने गलियों के नम्बर इत्यादि ही इतने गदे ढग से लगाये हैं कि सुगमता से वह समझ ही नहीं पड़ते। खैर बताइये आप क्या चाहते हैं?’

‘कल मेरा स्त्री राशन की दुकान से चीनी लाई थी, तो वह इस कागज में बंधी थी। इस पर मेरी नज़र पड़ गई। आपने रविवार के दिन बारह बजे मिलने को कहा था। अब अढ़ाई बजे पहुँच सका हूँ। आप मुझे अपना सदस्य बना लें।’

कमल ने अवश्वमे में इस व्यक्ति को सिर से पाँव तक देखा। वह यूँ तो कंठ पतलून पहने हुए था। परन्तु पतलून में क्रीज़ नहीं रही थी। प्रतीत होता था कि घर धुली हुई है। उस पर लोहा नहीं किया गया

था और उसे पहने कई दिन हो चुके थे। इसी प्रकार कोट था जो चुड़-मुड़ और काफी मैला हो चुका था। कोट की बांह दो स्थानों पर फटी थी और रफू की हुई थी। कमीज के कालर बिलकुल चुड़-मुड़ हो चुके थे और यह मैली थी। बूट की एड़ी बिलकुल घिस गई थी जिससे पांव टेढ़े पड़ने से बूट भी टेढ़ा हो गया था। बूट पर पालिश हुए तो कई महीने हो गये मालूम होते थे। जुर्राबें भी थीं परन्तु फटी। एड़ी बूट के बाहर से भी दिखाई देती थी। हजामत बने कई सप्ताह हो चुके थे। देखने में नीम पागल-सा प्रतीत होता था। वह ग़ादमी कमल के सम्मुख मेज के दूसरी ओर खड़ा था। बलवीर ग्राज उपस्थित नहीं था। आधा मिनट तक इस ग्रागन्तुक मनुष्य को देखकर कमल ने कुछ सचेत होकर पूछा, 'आपका नाम क्या है ?'

‘मदनमोहन ।’

‘भाई मदनमोहन जी, इस कुर्सी पर बैठ जाओ ।’ संकेत पाकर समीप रखी हुई कुर्सी पर मदनमोहन बैठ गया ।

अब कमल ने फिर पूछा, ‘आपने हमारी संस्था के नियम जान लिये हैं ?’

‘इसकी क्या आवश्यकता है। आपने लिखा है कि आप बेकारों के सदस्य बनाना अधिक अच्छा समझते हैं। सो मैं हूँ। मेरा सब कुछ आपके लिए हाज़िर है ।’

‘मदनमोहन जी ! फिर भी हमारी बात समझ लेनी चाहिए। यह हमारे नियम छपे हैं। आप पढ़ लें ।’ इतना कहकर कमल ने मेज की दराज में एक चार पृष्ठ का विधान निकालकर दिखाया ।

मदनमोहन ने वह नियमावली लेकर अपने सम्मुख रख ली और बोला, ‘साहब ! मुझमें पढ़कर समझने की ताकत नहीं है। आप यह बतायें कि आप मुझे सदस्य बनाकर मेरे खाने और रहने का प्रबन्ध कर देंगे या नहीं। यदि कर देंगे तो मुझे जिस भी नियम में बांधना चाहेंगे मैं बंधने को तैयार हूँ ।’

कमल उसकी बात सुनकर घबरा उठा । उसे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि शायद वह कई दिन से भूखा है । इस विचार के आते ही उसने पूछा, 'आपने खाना खाया है या नहीं ?'

'कल प्रातःकाल से नहीं खाया । लेकिन छोड़िये इस बात को । इस वक्त केवल मेरे खाने का प्रश्न नहीं है । मेरे आश्रित तीन और व्यक्ति हैं । मुझे उनकी चिन्ता है । मैं तो रेल के नीचे लेटकर मर जाने को भी तैयार हूँ, परन्तु उनका क्या करूँ ?'

'वे कौन हैं ?'

'मेरी बहन, मा और स्त्री ।'

'उन्होंने भी कुछ नहीं खाया ?'

'खाना तो घर पर रखा है । मैंने अभी कहा था कि स्त्री कल राधन खरीदकर लाई थी । परन्तु साहब, वह सब कुछ ऐसे स्थान से आया है कि गलं से नीचे नहीं उतरता ।'

इतना कहते-कहते मदनमोहन की आंखें भर आईं । कमल भौंचक्का हो देखता रह गया । उसका मन कुछ कहने को उबल रहा था; परन्तु उसको कहने के लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिल रहे थे । मदनमोहन ने उठते हुए कहा, 'तो मैं जाऊँ ? यह विज्ञापन भी दूसरे विज्ञापनों की भांति झूठा है क्या ?'

'बैठिए । यह झूठा नहीं है । यह प्रार्थना-पत्र भर दो ।' इतना कहकर कमल ने छपी हुआ एक प्रार्थना-पत्र निकालकर उसके सामने रख दिया और कलम-दावात उसकी ओर सरका दी । मदनमोहन ने फार्म भर दिया । उसने लिखा—

'मैं मदनमोहन, पुत्र बनवारीलाल, रहने वाला मीरपुर पंजाब का हूँ । मेरे आश्रित एक बहन जिसका नाम वीणा' आयु बाईस वर्ष और एक माँ जिसका नाम केवली, आयु पैंतालीस वर्ष हैं और स्त्री का नाम लक्ष्मी, आयु तेईस वर्ष है । मेरी आयु पच्चीस वर्ष की है । मैं पंजाब यूनि-वर्सिटी का ग्रेजुएट हूँ । इतिहास और अर्थ-शास्त्र का बी० ए० हूँ । जब

से मैंने बी०ए० पास किया है कोई पक्की नौकरी नहीं मिली। मैं अब बेकार और बेसरो-सामान हूँ।

मैंने इस समिति के नियम पढ़ लिये हैं और वायदा करता हूँ कि उनको मानूंगा।'

नीचे उसने हस्ताक्षर कर दिये।

कमल ने उस प्रार्थना-पत्र के नीचे अपने स्वीकृति-सूचक हस्ताक्षर कर दिये और प्रार्थना पत्र को मेज़ के दराज़ में रखकर जेब से एक रुपया निकालकर देते हुए कहा, 'आप बाज़ार से पूरी खाकर शीघ्र लौट आएँ। क्योंकि मैं लगभग एक घंटा यहाँ और रहूँगा। फिर यह दफ्तर एक सप्ताह के पश्चात् रविवार को ही खुलेगा।'

मदनमोहन ने रुपया मेज़ पर रखते हुए कहा, 'बिना कोई काम किये मैं आपसे रुपया कैसे ले सकता हूँ?'

बिना खाये और पेट भरे आप क्या काम करियेगा? शीघ्रता कीजिये, मैं चाहता हूँ कि आप परिवार सहित हमारे आश्रम में चले चले।'

मदनमोहन ने फिर रुपया उठा लिया और बैठक के नीचे उतर गया। पन्द्रह मिनट के पश्चात् वह वापिस आ गया। दस आने उसने वापस कमल के सम्मुख रख दिये और पूछने लगा, 'अब क्या करूँ?'

'अब आप घर चले जाइये और फौरन अपना सब सामान तांगे में लादकर अपने सब परिवार समेत डाक्टर बलवीर की दुकान पर, जो फव्वारे के पास है, चले जाइये। तांगे का भाड़ा वहाँ पर ही दे दिया जायगा। मैं वहाँ पर आपकी इन्तज़ार करूँगा।'

मदनमोहन, बिना और कुछ कहे वहाँ से चला गया। कमल को उसके वापिस लौटने में सन्देह ही था।

ठीक चार बजे कमल ने दफ्तर बन्द किया और बलवीर के चिकित्सालय पर जा पहुँचा। बलवीर आज एक ऑपरेशन पर गया हुआ था। दुकान यद्यपि रविवार के कारण बन्द थी तो भी इस ऑपरेशन के प्रबन्ध के लिए अवखुली रखी गई थी। चपरासी वहाँ उपस्थित था

और कम्पाउंडर बलवीर के साथ गया हुआ था ।

कमल वहां बैठकर बलवीर की प्रतीक्षा करने लगा । उसे मदन-मोहन के लौटने की कुछ अधिक आशा नहीं थी । बलवीर लगभग छे बजे आया । आकर उसने रोगी के लिए नुस्खा लिखकर कम्पाउंडर को दे दिया और फिर कमल के साथ चलने को तैयार हो गया ।

बलवीर रोगी के घर अपनी मोटर में गया था । वह दुकान के सम्मुख खड़ी थी । दोनों मोटर में बैठ गए । ड्राइवर ने मोटर स्टार्ट कर दी और वह चलने ही वाली थी कि एक तांगे में दो चार कपड़े की गठरियां लादे मदनमोहन अपने सारे परिवार को लेकर वहां पहुंच गया । मदनमोहन लपककर उतरा और हाथ से ड्राइवर को रोकने का संकेत कर कमल के समीप जाकर बोला, 'साहब मैं आ गया हूं ।'

'ओह ! तो आप आ गये हैं ? बहुत अच्छा किया है । तांगे वाले को बुलाओ ।'

कमल ने तांगे वाले को तुगलकाबाद के आगे मथुरा रोड से हटकर अपने आश्रम का स्थान बताया और कहा, 'इनको वहां ले चलो ।'

'यह तांगा नहीं जायगा हजूर ! जगह बहुत दूर है ।'

'जो मांगोगे, वह देंगे ।'

'नहीं साहब ! मैं नहीं जा सकता ।'

कमल किसी और तांगे को करने वाला था कि बलवीर ने कहा, 'तांगा कहाँ मिलेगा कमल, आओ इनको मोटर में छोड़ आएँ ।'

इतना कह बलवीर ने ड्राइवर को पिताजी के पास कोठी पर यह कहकर भेज दिया कि वे दोनों आश्रम गये हैं । और दुकान के नौकर से मदनमोहन की गठरियां पीछे कैरियर पर बंधवा ली । मदनमोहन और तीनों स्त्रियों को पीछे की सीट पर बैठा, स्वयं ड्राइवर के स्थान पर बैठ, समीप कमल को बैठा वह आश्रम को चल पड़ा ।

बलवीर और मुरली की मां के अतिरिक्त मदनमोहन उनकी संस्था

का पहला सदस्य था ।

: १३ :

कमल ने यह नया आश्रम तुगलकाबाद से कुछ दूर मथुरा रोड के किनारे लगभग साठ बीघा भूमि लेकर बनाना आरम्भ कर दिया था । अभी पांच झोंपड़े ही बनवाये थे । प्रत्येक झोंपड़े में दो दो कमरे थे । दीवारें मिट्टी की और छत फूस की बनी थी । फर्श पक्के सीमेन्ट के थे और कुर्सी तीन फुट के लगभग ऊंची थी । प्रत्येक कमरे में एक-एक दरवाजा और दो-दो खिड़कियां थीं । झोंपड़ों के सम्मुख खुला परन्तु समतल मैदान था जिसके बीचों-बीच एक कुआं था । कुएं की जगत पक्की और भूमि से पांच फुट ऊंची थी और कुएं पर पानी खींचने के लिए चार चरखड़ी लगी थीं । जगत पक्की सीमेन्ट की बनी थी । एक झोंपड़ी में बलवीर, जब वह आश्रम में आता था, तो रहता था । दूसरी झोंपड़ी में कमल का निवास-स्थान था । तीसरी में मदनमोहन परिवार सहित रहता था । चौथे में रसोई घर था । और पांचवें में मुरली की मां तथा मुरली रहती थीं । तीन और झोंपड़ों के लिए पक्के चबूतरे बने थे; परन्तु ऊपर की दीवारें अभी नहीं बनी थीं ।

अपनी झोंपड़ी में कमल एक चटाई पर बैठा तकिये का सहारा लिये एक पुस्तक पढ़ रहा था । पीछे दीवार की खिड़की से प्रकाश आरहा था । सामने की दीवार के साथ खिड़की के एक ओर मेज रखी थी । उस पर एक संदूकची थी और कुछ किताबें रखी थीं । कलम-दावात और लिखने के लिए कागज भी रखे थे । कमल कुर्सी पर बैठ मेज पर लिखने का काम किया करता था । मेज की बाईं ओर दीवार में दरवाजा था, जिससे दूसरे कमरे में जाने का मार्ग था । उस कमरे में कमल के सोने के लिए एक खाट पर बिस्तर बिछा था और बिस्तर को ढांपने के लिए उस पर कम्बल बिछा दिया गया था ।

मदनमोहन की माँ सबका खाना बनाती थी । मुरली की मां खेत में काम करती थीं । मुरली माँ की सहायता भी करती थी और सब

भोंपड़ियों की सफाई भी करती थी। वीणा को अभी आश्रम के कपड़े मिलने और उनकी मरम्मत करने का काम दिया गया था। मदनमोहन की बलवीर ने अपने रसूख से एक नौकरी लगवा दी थी। उसे वहां से सौ रुपया मासिक मिलता था। अभी तक आश्रम का खर्चा बलवीर और कमल की आय से ही चलता था। भोंपड़ियां बनवाने में जो कुछ व्यय हुआ था वह प्रायः सबका सब बलवीर की जेब से निकला था।

दोपहर का समय था। मुरली आश्रम की सफाई में लगी थी। सबसे अंत में वह कमल के सोने का कमरा साफ करने आई थी। कमल एक पुस्तक पढ़ने में लीन था। वह उसकी मेज भाड़कर सोने के कमरे में चली गई। वहां जब वह बिस्तरा भाड़ रही थी तो तकिए के नीचे एक चिट्ठी, जिस पर इतर लगा प्रतीत होता था, उसने पड़ी देखी। चिट्ठी अंग्रेजी में थी। इससे वह पढ़ न सकी। ऐसी चिट्ठी उसने कमल के सामान में पहले कभी नहीं देखी थी। इस चिट्ठी को देखकर काम करती-करती वह धीरे-धीरे गुन-गुनाने लगी और क्रमशः उसका स्वर तेज होता गया। वह गा रही थी—

मोरे साजन रसिया रे।

मैं भोली थी अबला नारी, समझ न सकी अनाड़ी।

सौतन मन बसिया रे, मेरे साजन रसिया रे॥

मुझसे करे सूझ की बातें, विराग में ही बीती रातें।

वह उनसे हंसिया रे, मेरे साजन रसिया रे॥

कमल का ध्यान गाने के कारण किताब से हट गया। मुरली का स्वर मीठा था और इस गाने में कमल को उसके हृदय की पीड़ा अनुभव हुई। वह ध्यान से सुनने लगा। मुरली गा रहा थी—

कैसे कहूँ मैं मन की बतियां, बिना नींद काटूं मैं रतियां।

गेरों से फंसिया रे, मेरे साजन रसिया रे।

कमल ने कुछ आवेश में आवाज दी 'मुरली !'

मुरली ने गाना बन्द कर दिया और कमल के सम्मुख आकर खड़ी

हो गई। कमल ने कहा, 'यह क्या गा रही हो ? तुम्हें लज्जा नहीं आती ।'

मुरली ने आंखें नीचे किये हुए कहा, 'बाबू जी....।' इस के आगे वह कुछ नहीं कह सकी। कमल ने कहा, 'बाबू की बच्ची कुछ समझती भी हो कि क्या गा रही थीं ?'

'समझती क्यों नहीं। मैं सब जानती हूँ।'

'तुम्हें ऐसा गाते लज्जा नहीं आती ?'

'आती तो है। परन्तु दूसरी औरतें भी तो गाती हैं।'

'देखो मुरली ! तुम दूसरी गंवार लड़कियों की तरह नहीं हो ? तुम अब पढ़-लिखकर समझदार हो गई हो। जो लड़की रामायण पढ़ लेती है। उसे ऐसे गन्दे गीत शोभा नहीं देते।'

'मैं कब गाना चाहती हूँ, पर जब मन की बात किसी गाने में पाती हूँ तो वह अनायास मुँह से निकल जाता है।'

'मन की बात ? इससे क्या मतलब है तुम्हारा ?'

बाबू जी बात यह है कि जब यह नया आश्रम नहीं बना था तब आप मुझे नित्य पढ़ाते थे। बहुत अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाते थे और अब आप पुस्तकें पढ़ने, आश्रम का प्रबन्ध करने, बलवीर बाबू जी से बातें करने और या उस धूरे वाली से मिलने में सारा समय खर्च कर देते हैं। मेरा मन आपकी बातें सुनने और आपसे पढ़ने को करता है।'

'वह धूरे वाली कौन ?'

'वह जिसकी चिट्ठी आपके तकिये के नीचे पड़ी है।'

'अच्छा ! तो छाया देवी से मतलब है तुम्हारा ?'

'मुरली चुप रही।'

कमल ने गम्भीर होंकर पूछा, 'तुम्हें उससे ईर्ष्या होती है क्या ?'

'हां' मुरली ने सिर हिलाकर कहा।

'क्यों ?'

'वह जब भी आती है आप उठकर चले जाते हैं।'

‘ठीक है। अब ऐसा नहीं करूंगा। मुरली तुम सत्य कहती हो। तुम मेरे आश्रम में रहने वाली हो न ? इससे मुझे तुम्हारा अधिक ध्यान रखना चाहिए। अच्छा तो आज रामायण ले आओ मैं तुम्हें पढ़ते सुनूंगा।’

मुरली खुशी से फूलती हुई अपनी कुटिया में गई और रामायण की पुस्तक उठा लाई। रामायण अपने सम्मुख रख एक चटाई पर, जो कमल की चटाई के समीप ही बिछी थी, बैठ गई। उसने पढ़ना आरम्भ करने से पहले पूछा, ‘कहां से पढ़ूँ?’

‘आरम्भ से ही पढ़ो। मैं तुमसे नित्य ही रामायण सुना करूंगा और तुम्हें इसके भावार्थ समझाया करूंगा।’

मुरली ने पढ़ना आरम्भ किया।

वर्णनामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि
मंगलानाम च कर्तारो वंदे वाणी विनायको ।
भवानी शकरो वंदे श्रद्धा विश्वास रूपिणी
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वांतमथीश्वरम् ॥

कमल ने इसका अर्थ समझाते हुए कहा—

‘कला की देवी सरस्वती और सब शुभ कार्यों के देवता गणेश का तुलसीदास जी नमस्कार कर इस ग्रन्थ का आरम्भ करते हैं। यह इस कारण कि सरस्वती वर्ण, शब्द और वाक्यों के निर्माण करने वाली है और श्री गणेश सब कार्यों को मंगलमय बनाने में समर्थ हैं।’

इस पर मुरली ने पूछा, ‘तुलसीदास ने परमात्मा का स्मरण क्यों नहीं किया। परमात्मा से छोटे देवताओं की क्यों वंदना की है?’

कमल, ‘हां यह प्रश्न तुम्हारा ठीक है परन्तु एक बात तुम नहीं समझ रही हो। वह यह है कि हिन्दू जितने भी देवी-देवताओं को मानते हैं वह एक दूसरे से भिन्न अथवा परमात्मा से भिन्न नहीं हैं। वह सब-के-सब परमात्मा के भिन्न-भिन्न गुणों को बताते हैं। ईश्वर सब में व्यापक है या यों कहो कि हम सब भी ईश्वर का रूप ही हैं। ईश्वर के उन

गुणों का तुलसीदास आवाहन कर रहे हैं जिनकी उनको रामायण लिखने में आवश्यकता पड़ेगी ।’

‘तो हम सब ईश्वर हैं ? बहुत मजे की बात है । इससे हम जब पूजा करते हैं तो अपने को ही पूजते हैं ।’

‘हां ! पूजा के यह अर्थ नहीं कि हम किसी की प्रशंसा करते हैं । हम अपने में उन गुणों को लाने का यत्न करते हैं जिन गुणों की हमें अपने कार्य में आवश्यकता पड़नी होती है । यह भिन्न-भिन्न नाम, सरस्वती, गणेश, शिव, दुर्गा इत्यादि तो संक्षेप में कहने और स्मरण करने के लिए रख छोड़े हैं ।’

मुरली इससे संतुष्ट नहीं हुई थी और अभी इस विषय पर और प्रश्न पूछने ही वाली थी कि उसकी दृष्टि भोंपड़ी से बाहर चली गई । भोंपड़ा के बाहर एक मोटर आ खड़ी हुई और उसमें से छाया उतरी । मुरली ने कहा, ‘लो वह आ गई ।’

कमल की पीठ दरवाजे की ओर थी ! उसने कुछ नहीं देखा इस कारण पूछने लगा, ‘कौन आ गई ?’

‘वही धूरे वाली ।’ इतना कह मुरली ने निराशा और क्रोध में रामायण बंद कर दी और उठने लगी हो थी कि कमल ने कहा, ‘मुरली बैठी रहो ।’

मुरली ने पुस्तक तो नहीं खोली पर वहां से उठी नहीं । छाया ने भोंपड़ी के दरवाजे पर खड़े होकर पूछा, ‘क्या मैं अन्दर आ सकती हूं ।’

‘हां । आइये ।’ कमल ने कहा जब । छाया आई तो उसे मुरली के पास चटाई पर बैठने को कहा, ‘बैठिये छाया देवी ।’

छाया ने सैंडल उतारे और मुरली के पास बैठ गई । उसने मुरली की ओर तथा उसके सम्मुख रखी रामायण की ओर देखा और बोली, ‘क्षमा कीजिएगा मैंने आपके काम में विघ्न डाला है ।’

कमल ने कहा, ‘मैं इस लड़की को रामायण पढ़ा रहा था । यदि आपको समय हो तो आप भी सुनें ।’

‘समय की बात नहीं कमल जी ! मुझे रामायण जैसी पुरानी किताब में रुचि नहीं है । और फिर राम भगवान् थे । हनुमान उड़कर हिमालय पर आये और फिर उसी रात वापस लंका जा पहुँचे । हनुमान जामवंत इत्यादि बन्दर और रीछ थे । इस बीसवीं सदी में ऐसी बातें करना भी तो शोभा नहीं देता ।’

‘ठीक है ! इसकी शोभा अथवा कुशोभा की बात छोड़ो । तुम इससे कोई प्रश्न पूछो । तीन वर्ष से मैं इसे पढ़ा रहा हूँ । मेरे देहात के स्कूल में यह सबसे चतुर विद्यार्थिनी है ।’

‘अच्छा ? तो पूछती हूँ । तुम पढ़कर क्या करोगी ?’

‘पढ़ने से पुस्तकों में लिखी बातें समझने की योग्यता आती है ।’

‘पुस्तकों में लिखी बातों के समझने से क्या होता है ?’

‘बुद्धि बढ़ती है ; जिससे हमें सच-भूठ, हानि-लाभ, न्याय-अन्याय, और पाप-पुण्य में भेद मालूम हो जाता है ।’

‘क्या सब पढ़े-लिखों को इनका भेद पता चल जाता है ?’

‘नहीं । जो अच्छी पुस्तकें पढ़ते हैं और फिर उनमें लिखी बातों को कार्य रूप में लाते हैं वही इन तत्त्व की बातों को समझ सकते हैं ।’

‘यह सब बातें तुमको किसने बताई हैं ?’

‘कमल बाबू से जब मैं कोई बात पूछती हूँ तो बहुत प्रेम से बताते हैं । इससे मैं यह सब समझ सकती हूँ ।’

‘तुमने कौन-कौन-सी पुस्तकें पढ़ी हैं ?’

‘महाभारत और रामायण ।’

‘दोनों में कौन अच्छी पुस्तक है ।’

‘मुझे रामायण अच्छी प्रतीत होती है ।’

अब छाया ने कमल की ओर देखकर कहा, ‘आपकी शिष्या सच हा बहुत समझदार है ।’ फिर मुरली की ओर देखकर पूछने लगी, ‘तुम्हारा नाम क्या है ?’

‘मुरली ।’

‘ओह ! बहुत सुन्दर नाम है । परन्तु क्या मुरली बजती भी है कभी ?’

‘हां छाया देवी, सुनोगी ?’ कमल ने उत्तर दिया ।

छाया ने प्रश्न भरी दृष्टि से मुरली की ओर देखा मुरली ने कहा,
‘गाना सुनाऊं ? मगर मैं तो उनको सुनाती हूं जो मुझे सुनाता है ।
जो स्वयं नहीं गा सकते उनको सुनाने से लाभ नहीं ।’

‘हां । हां ।’ कमल ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, ‘मुरली ठीक
तो कहती है । सुनने का अधिकार उसको ही है जो सुना सकता है ।’

छाया कुछ सोचकर बोली, ‘तो मुरली ! तुम मेरा गाना सुनोगी ?’

‘हां ही क्या है ।’

‘अच्छी बात । तो पहले तुम सुनाओ, पीछे मैं सुनाऊंगी ।’

‘सच ?’ मुरली ने खुश होकर पूछा ।

‘हां । सच ।’

‘तो सुनिये ?’ मुरली ने गाना आरम्भ कर दिया—

प्रभु जी ! प्रभु जी ! अब राखो लाज हमारी

धनियन के सब संगी साथी

निर्धन के हो तुम रखवारे

अन्याय भरे इस जग में तो

अब तुम सुन लो टेर हमारी । प्रभु जी....

‘सचमुच ही बहुत मीठी आवाज है तुम्हारी ।’

‘तो अब आप गाइये ।’

‘मुझे तो कोई हिन्दुस्तानी में गाना नहीं आता ।’

‘तो विलायती ही गा दो न ।’

‘परन्तु तुम क्या समझोगी ?’

‘वाह ! आपका स्वर तो सुन लूंगी ।’

‘हां, हां ! गाओ न ।’ कमल ने प्रोत्साहन देते हुए कहा । अंग्रेजी में
गाइयेगा । मैं मुरली को उसका अनुवाद सुना दूंगा ।’

छाया कुछ देर तक न-न कर गाने को तैयार हो गई । उसने गाया,

I did but look and love awhile
 'T was but for one half hour;
 Then to resist I had no will,
 And now I have no power
 To sigh & wish is all my ease
 Sigh which do heat impart
 Enough to melt the coldest ice
 Yet can not warm your heart.'

मुरली हंस पड़ी। छाया का मुख लज्जा से लाल होगया। मुरली यह देखकर क्षमा मांगने लगी, 'मैं क्षमा चाहती हूँ। पर मेरा अभिप्राय यह नहीं था कि आपका अपमान करूँ।'

कमल ने बात बदल दी। 'इन्हीं भावों पर एक हिन्दी में कविता भी है।' कमल ने गाकर सुनाई

“जब देख लिया इक भर के नज़र
 मन मोह गया सुधि गई बिसर
 सब कुछ चरणों पर अर्पण कर
 बेबस मैं भई अब जाऊँ किधर ॥

जब देख लिया.....

अब बात रही वस आहों की
 इनकी ज्वाला का है यह असर
 हिमाचल को सागर कर दें
 हृदय पत्थर को न छूए मगर ॥

जब देख लिया.....”

मुरली, 'तो यह अर्थ है आपके गाने का?'

छाया, 'मगर मैं पूछती हूँ कि तुम हंसी क्यों थीं?'

'आप पर नहीं हंसी थी। एक बार मैं कमल बाबू के साथ दिल्ली गई थी। वहाँ जब हम एक कोठी के बाहर से जा रहे थे तो एक गोरी

औरत ऐसा ही कुछ गा रही थी। मैंने समझा उस बंगले में कोई मर गया है, जो वह बेचारी रो रही है। कमल बाबू ने बताया कि वह गा रही थी परन्तु मुझे विश्वास नहीं आया था। आज आपको भी वैसे ही गाते सुन मुझे अपनी भूल का पता चला है और उस दिन की बात पर हंसी आ गई थी।'

कमल ने बात बदल दी, 'अच्छा तो मुरली, एक गाना और सुनाओ। यह तुम्हें दंड दिया जाता है, तुम्हारे गंवारपन के लिए।'

मुरली आंखें नीची करके बैठी रही। छाया बिना कुछ बोले देखती रही। कमल ने कहा, 'मुरली गाओ न।'

मुरली ने धीरे-धीरे गाना आरम्भ कर दिया। एक पद बोलकर वह भूल गई कि वह दंड भोग रही है और पूरे मन से गाने लगी—

पापी मन काहे तू ललचाय !

उठ भागा है चांद पकड़ने, तारों से जा बातें करने
सोच समझकर चलना है, अब पत्थर से तू न बतला। पापी...

सूझ-बूझ इसी में सारी, मग में पग धर मत नर-नारी

या निर्लेप कमल-सा बनकर, रह जग से बिलगाय ॥ पापी...

छाया यह गाना सुनकर चकित हो गई और मुरली का मुख देखन लगी। मुरली की आंखों में नमी प्रतीत हो रही थी। कमल ने भी देखा और उसने बात समाप्त करने के लिए कहा, 'अच्छा मुरली जाओ तो इनके खाने को कुछ ले आओ।'

मुरली तुरंत उठकर बाहर चली गई।

: १४ :

छाया, 'मालूम होता है कि गाना आप ही सिखाते हैं इसे ?'

'सिखाता तो मैं यहां कई बच्चों को हूं। परन्तु सीखते वही हैं जिनमें सीखने की शक्ति होती है।'

‘यह लड़की कौन है !’

‘जब मैंने ग्राम-सुधार का कार्य आरम्भ किया था तो एक मुराइन को चौका-वासन के लिए नौकर रख लिया था। वह काम बहुत चतुराई से करती थी। कुछ दिन पश्चात् मैंने उसे दिन भर काम करने के लिए नौकरी दे दी। वह लड़की उसके भाई की है और उसी के पास रहती है। उसका नाम सुहागिन है। विधवा है। वह जब विधवा थी तब छोटी आयु की थी पर उसने विवाह नहीं किया। अब वह इस आश्रम की सदस्या बन गई है। मुरली तब से ही यहां पढ़ती है जबसे इसकी बुआ मेरे पास आकर नौकर हुई थी। और अब तो वह पढ़कर होशियार हो गई है। वह अब अनेकों बातों के विषय में वाद-विवाद करती है।’

‘आपने दंड की बात कही ता उसकी आंखों में आंसू झलकने लगे थे।’

‘परन्तु उसे शिष्टाचार भी तो सीखना चाहिए न। आप लोग तो अपने धन के बल पर अपने अवगुणों पर परदा डाल लेती हैं परन्तु एक निर्धन की लड़की में तो अवगुण होने ही नहीं चाहिए।’

उसी समय मुरली एक प्लेट में दो मूली, धोकर रख लाई थी। प्लेट के एक कोने में थोड़ा नमक, लाल मिर्च रखी थी। छाया ने अचम्भे में मुरली की ओर देखकर पूछा, ‘यह किसके लिए लाई हो मुरली?’

‘आपके लिए।’

‘मैं कोई गाय-बैल हूं क्या?’

‘गांव में और कुछ मिलता भी तो नहीं।’ मुरली की मां ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा।

‘छाया देवी खा लो न।’

‘मूली खाने से पेट में दर्द होने लगता है।’

‘इसीलिए तो मैं कहता हूं कि सुधार की आवश्यकता नगर के लोगों में है। आपके विचार बिगड़े हुए हैं। आपका रहन-सहन और पोशाक गलत है और आपके शरीर भी अस्वस्थ हैं। मानसिक और

शारीरिक दोनों प्रकार के रोग नगरों में पैदा होते हैं और फिर वहां से देहातों में जाते हैं ।

‘तभी आपने देहात में काम बन्द कर दिया है ?’

‘देहात में शिक्षा का अभाव है । मैं चाहता हूं कि देहाती पढ़ लिख तो सकें पर वह नागरिकों के अवगुणों से दूर रहें । इस कारण मैंने अपनी पाठशाला बन्द नहीं की । परन्तु नागरिकों के सुधार की बात भी आरम्भ कर दी है ।’

‘परन्तु नगर वाले आपकी सुनेंगे क्यों ?’

‘और कोई सुने चाहे न सुने, आप तो सुन ही रही हैं ।’

‘मेरे अकेले के सुनने से क्या होगा ?’

‘कम-से-कम, मूली खाने से एक नवयुग की उपासिका के पेट में दर्द तो न होगा ।’

‘बस ?’

‘तो खाइये, देखिये कितनी मीठी प्रतीत होती है । मुरली के अपने खेत की है और अभी-अभी उखाड़कर लाई गई है ।’

चाकू लेकर छाया ने मूली को छीलना आरम्भ कर दिया । मुरली जो समीप ही खड़ी थी हंस पड़ी और बोली, ‘देवोजी ऐसे नहीं । देखिये बाबूजी कैसे खा रहे हैं ।’

इस समय कमल ने एक मूली उठा ली थी और खानी आरम्भ कर दी थी ।

मूली बिना छीले बिना काटे खाकर समाप्त करके छायादेवी उठ खड़ी हुई, और कहने लगी, ‘अब इस मूली को हजम करने के लिए कुछ चलना फिरना चाहिए ।’

‘हां तो चलिए आपको उस पहाड़ी पर ले चलूं । जानती हूं वहां क्या है ?’

‘नहीं ।’

‘सूर्य कुंड है । बहुत सुन्दर स्थान है ।’

कमल भी उठ खड़ा हुआ । चलने से पूर्व कुछ सोचकर उसने मुरली

की ओर देखकर कहा, 'तुम भी चलो हमारे साथ ।'

'सच ?'

'हां, जाओ ओढ़नी ओढ़ आओ ।'

मुरली जब चली गई तो छाया ने कहा, 'यह तो आपने ठीक नहीं किया ।'

'क्यों?'

'मैं आपसे एकान्त में कुछ बातें करना चाहती हूं ।'

'बातें ही न ? बहुत एकान्त होगा और फिर मुरली आपको मना नहीं करेगी । इससे भय करने का कोई कारण नहीं ।'

'नहीं भय की कोई बात नहीं, चलिए ।'

दोनों चल पड़े । मुरली ओढ़नी सिर पर ले भागती हुई आकर उनसे मिल गई । खेतों से निकलकर पथरीला मार्ग आगया । छाया हांफने लगी । मुरली हृग्णि की भाँति चपल गति से चली जाती थी । जब कुछ आगे निकल जाती तो ठहरकर उनकी प्रतीक्षा करने लगती । कमल ने पूछा, 'थक गई क्या छाया देवी ?'

'नहीं । अभ्यास न होने से हांफनी चढ़ गई है ।'

'यह तो बहुत चढ़ाई नहीं है ।'

ज्यों-त्यों करके वे पहाड़ी पार करके कुंड के समीप जा पहुँचे । स्थान बिल्कुल सुनसान था, वायु अति स्वच्छ थी और दृश्य बहुत विशाल । चलने में परिश्रम से और दृश्य के सौन्दर्य को देखकर छाया का मुख खिल उठा था । वह कुंड के समीप एक स्याह पत्थर पर लेट गई और बोली, 'बहुत अच्छा स्थान है ।'

'हां' कमल ने छाया के समीप बैठते हुए कहा, मुरली अभी थकी नहीं थी वह कूदती-फांदती कुछ दूर तक चली गई । छाया ने लेटे-लेटे ही कहा, 'मैं आज बहुत प्रसन्न हूँ ।'

'भला सुनूँ तो क्यों ?'

'सब बात तो नहीं बता सकती । हां, एक बात तो आपको विशेष

बताने के लिए आई हूँ ।’

‘क्या?’

‘मैंने कॉलिज छोड़ दिया है ।’

‘अरे ! यह क्यों?’

‘मैंने एम० ए० की परीक्षा दे दी है और अब और पढ़ने का विचार नहीं है । आपने उस दिन कहा था न कि ‘मुरली की मां ने दो वर्ष तक नौकरी करके कहा था कि उसे अपने पति की नौकरी साहब की नौकरी से अधिक पसन्द आई है ।’ मुझे उसकी युक्ति में सार प्रतीत हुआ ह । मैंने मन में सोचा कि यदि विवाह ही करना है तो फिर पढ़ने से क्या होगा ।’

‘तो अब आप यह समझने लगी हैं कि घर के काम-काज में भी कोई लज्जा अथवा अपमान की बात नहीं?’

‘विविध समस्या है । घर का काम कुछ बहुत अच्छी बात तो है नहीं । और मैं समझती हूँ कि यह काम छोटे दर्जे के नौकरों का है । औरतों को ही यह काम करना है ? सो मैं नहीं समझती कि क्यों ? इस पर भी आपको उस व्यंगात्मक कवित्त, ने मेरे मन में हलचल मचा दी है । आपने कहा था न, “चूल्हा-चोका छोड़कर, साहबों की पी० ए० बन, क्लर्कों को विकल कर, कैसा अच्छा है किया ।” शायद आपके कवित्त को मैं सड़े मस्तिष्क की बदबू समझ लेती यदि मेरी एक सहेली, जो W. A. C. (I) है, मुझे अपनी कथा न सुनाती । निर्मला नाम है उसका । मेरे साथ इंटरमीडियेट में पढ़ती थी । एक गरीब की लड़की है परन्तु औरतों की पूर्ण रूप में स्वाधीनता की वकील है । मैं एक दिन उसके घर गई तो देखा कि उसके कमरे में ऐसे कीमती तोहफे रखे थे कि मेरे मुख में भी पानी भर आया । मेज पर एक लिखने का पैड रखा था, जिसका कवर चांदी का जिसमें कहीं-कहीं सोना मढ़ा, था । मैंने पूछा ‘निर्मल कितने का लाई हो?’ तो बोली, ‘साहब ने भेंट दी है ।’

‘किस सेवा के लिए?’ मैंने पूछा ।

‘जिस सेवा के बदले स्त्रियों को, पुरुष दे सकते हैं।’ उसका उत्तर था। ‘देखती नहीं हो, कि यह कमरे की सब वस्तुएँ पुरुषों ही की दी हुई तो हैं। ज़रा किसी की ओर मुस्कराकर देख लिया कि वह भेंट देने को विवश हो जाता है।’

‘ऐसा क्यों है, मैं नहीं समझी?’

‘मैं जानता हूँ।’ कमल ने कहा, ‘परन्तु इस विषय में केवल यही कहना चाहता हूँ कि पुरुष तथा स्त्री के सम्बन्धकी समस्या इतनी जटिल है कि वह एक-आध दिन विचार करने से सुलभ नहीं सकती। हमें देखना चाहिए कि इस समय भारतवर्ष में स्त्रियों के लिए घर का काम नियत है। आप चाहती है घर से बाहर के काम स्त्रियाँ करें ताकि वह पुरुषों के बराबर हो जायें। यह मैं पूछता हूँ कि फिर घर का काम कौन करेगा? क्या नौकरों को घर के प्रबंध में वह पदवी दी जा सकती है या दी जानी चाहिए जो स्त्री (गृहिणी) को उपलब्ध है। यदि नहीं तो फिर घर का काम कौन करेगा। इसके साथ ही यह बात भी है कि भारतवर्ष क्या, प्रायः सब सभ्य देशों में घर से बाहर का काम प्रायः पुरुष करते हैं और कहीं एक दो स्त्रियाँ काम करने चली जायें तो वे वहाँ एक अलभ्य वस्तु हो जाती है। इस कारण पुरुष उनको चाहते हैं। यह चाहना उनके दफ्तर में काम के लिए नहीं होती, उनका वह काम अलभ्य वस्तु नहीं है। अलभ्य है उनका स्त्रीत्व। और उसी की चाहना वहाँ के पुरुषों में उठती है। यदि कहीं स्त्रियाँ बहुसंख्या में हों और एक-आध पुरुष वहाँ काम करने चला जाय तो उसकी दफ्तर के काम करने की योग्यता को छोड़कर भी उसके पुरुषत्व की चाहना स्त्रियों में उठ पड़ेगी। कहने का अभिप्राय यह है कि स्त्रियों को स्त्रियों में और पुरुषों को पुरुषों में ही रहकर काम करना चाहिए। अन्यथा निर्मला वाली बात तो होगी ही।’

‘आपकी युक्तियाँ तो ठीक हैं। मैं यह कभी पसन्द नहीं करूँगी कि कोई नौकर मेरे पति के लिए खाना अथवा कपड़े पसन्द करे। मेरे

अथवा मेरे पति के कमरे की सजावट-अपने ढंग पर करे। परन्तु घर के कामों में छोटापन तो दिखाई देता ही है और मेरा मन इससे विद्रोह करता है।’

‘मैं एक और विचार आपके सम्मुख रखता हूँ। जितना जो अमीर होता है उतना ही कीमती प्रबन्ध उसके घर में रहता है। तो काम के घटिया बढ़िया होने में अमीरी और गरीबी का प्रश्न है पुरुष और स्त्री का नहीं।’

‘जब तक आप कॉलिज में थी, एक बात थी कि आप किसी कार्य में व्यस्त तो रहती थीं। अब खाली रहकर क्या करेंगी आप ? “An idle brain is devil’s workshop” वाली बात न हो जाय।’

‘मैं खाली नहीं रहती। सच तो यह है कि जब से कॉलिज छोड़ा है एक क्षण भर की भी फुरसत नहीं मिलती। मैंने स्त्रियों में स्वावलम्बन और स्वतंत्रता की अभिलाषा जगाने का कार्य आरम्भ कर दिया है। दिल्ली शहर में मैंने सात केन्द्र खोल दिये हैं और प्रत्येक केन्द्र पर सप्ताह में एक दिन जाती हूँ। परिणाम यह हुआ है कि पूरा सप्ताह भर मुझे इस काम में लग जाता है।’

‘वहां केन्द्रों में आप क्या करती हैं ?’

‘सबसे पहला काम है कि स्त्रियों में यह भावना जगाना कि “वह पुरुषों से किसी प्रकार भी कम नहीं !” अभी तो यही काम हो रहा है।’

‘बलवीर जी कभी मिलते हैं या नहीं ?’

‘नहीं ! मेरा उनसे मन नहीं मिला। वह चाहते थे कि मैं उनसे विवाह कर लूँ। अन्यथा उनसे मेरा मिलना ठीक नहीं।’

‘और आप उनसे विवाह नहीं करना चाहती ?’

‘ना ! मैं उनसे प्रेम नहीं करती।’

‘पहले आपने ही तो उनसे बातचीत आरम्भ की थी।’

‘मुझे इसका शोक है। बात यह हुई कि पीछे मुझे मालूम हुआ

कि मैं किसी और से प्रेम करती हूँ ।’

‘भगवान करे कि आपका यह प्रेम स्थायी हो ।’

‘आपकी शुभकामना के लिए धन्यवाद । और मैं समझती हूँ कि इस बार मैं भूल नहीं कर रही ।’

‘यही तो देखना है ?’

इस समय मुरली दूर एक पथर पर बैठकर गाने लगी थी—

‘हमने की उनसे मुहब्बत, जो इसे नहीं जानते ।’

आवाज़ में बहुत मिठास थी । इससे कमल और छाया ने बातें करना छोड़ दिया और उनका गाना सुनने लगे । वह गा रही थी—

‘हमने की उनसे मुहब्बत जो इसे नहीं जानते ।

दर पे उनके हैं खड़े और वे नहीं पहचानते ॥

किस्मत की बेरुखी ने इक लीक खीच दी है ।

धन-हीन को धनी तो अपना नहीं हैं मानते ॥

क्यों जगाया प्यार को पलने पे था सोया हुआ ।

साफ़ गो बनते हैं अब शेखी बड़ी बखानते ॥

कमल ने कहा, ‘मुरली कितना अच्छा गाती है ।’

‘मैं तो हैरान हूँ कि यह सब गीत वह कहाँ से सीख गई है । और फिर कैसे ठीक अवसर पर ठीक वस्तु गाती है ।’

‘इसी में उसकी प्रतिभा है ।’

‘मैं तो समझती हूँ कि वह आपसे प्रेम करती है । इसीसे आपको किसी दूसरी लड़की के पास बैठा देखकर उसे दाह होता है ।’

‘हो सकता है । मुझे प्रेम से दखे जाने का अभ्यास हो गया है । बलवीरजी, उनके माता-पिता और मेरे अन्य मित्र भी मुझसे बहुत प्रेम करते हैं ।’

‘क्यों ?’

‘यह मैं उन सबकी उदारता ही समझता हूँ ।’

‘और यदि मैं आपसे प्रेम करूँ तो ?’

‘इसे भी आपकी उदारता ही मानूंगा ।’

‘तो आप मेरा प्रेम स्वीकार करेंगे ?’

‘प्रेम का प्रसाद अस्वीकार नहीं किया जा सकता ।’

‘कमल !’ छाया ने कमल का हाथ पकड़ लिया और उसकी आंखों में देखने लगी ।

‘छाया देवी ! यह प्रेम नहीं है, वासना है ।’

‘दोनों में क्या अन्तर है ? मैं नहीं समझती ।’

छाया ने कमल का हाथ अपने गालों पर रख लिया और उसे अपने हाथ से मलने लगी । एक क्षण तक कमल किंकर्तव्य-विमूढ़ छाया की आंखों में उठती हुई मस्ती को देखता रहा । उसे ऐसा अनुभव हुआ कि वह जमीन में धंसा जाता है । एकाएक उसे चेतना हो आई । उसने अपना हाथ खींच लिया और वहां से उठ खड़ा हुआ ।

छाया ने विस्मय और निराशा से देखते हुए पूछा—

‘क्या हुआ ?’

‘कुछ नहीं ! आपके समझने में भूल हुई है । मैं आपके प्रेम के योग्य नहीं हूं ।’

छाया भी उठ खड़ी हुई और निराशा से आंखों में आंसू भरते हुए पूछने लगी, ‘क्यों ?’

‘मैं मुरली से प्रेम करता हूं, छाया देवी ! उसकी मां की स्वीकृति की प्रतीक्षा कर रहा हूं ।’

‘ओह ! ...’ इसके आगे छाया के मुख से कुछ नहीं निकल सका । उसके मुख का रंग पीला पड़ गया और वह खड़े न रह सकने के कारण पुनः उसी सपाट पत्थर पर बैठ गई ।

‘छाया देवी !’ कमल ने कहा, ‘मैं प्रेम और वासना में अन्तर समझता हूं । मैं तुमसे प्रेम करता हूं परन्तु ऐसे ही जैसे अपनी बहन से । हममें वासना-तृप्ति की बात नहीं हो सकता ।’

कमल को उठा देख मुरली अपने स्थान से उठकर उनके पास आ गई ।

छाया उसे आया देख उसके हाथ का आश्रय ले उठ खड़ी हुई और बात बदलकर बोली, 'मैं बहुत थक गई हूँ ।'

'जाते समय तो उतराई ही है । कष्ट नहीं होगा ।' मुरली ने कहा ।

कमल गम्भीर खड़ा था । छाया और मुरली आगे-आगे चलीं । और कमल उनके साथ पीछे-पीछे चल दिया ।

दूसरा भाग

पतन तथा उत्थान

: १ :

छाया कमल से ऐसा उत्तर पाने पर बहुत निराश हुई थी और वह अपने शोक को भूलने के लिए स्त्रियों के उद्धार के काम में लग गई। इन जलसों में जो वह कर रही थी, उससे नगर के स्त्री-समाज में कुमारी छाया देवी की चर्चा होने लगी थी। दुर्भाग्य अथवा सौभाग्य से छाया के इस काम में उसे एक पुरुष साथी भी मिल गया। यह महानुभाव मि० रामलुभाया सेठ बी० ए० एल-एल० बी० थे। वे पंजाब हाईकोर्ट में वकील थे और हिन्दू कानून के विशेषज्ञ समझे जाते थे।

छाया का इनसे परिचय इस प्रकार हुआ। कटरा नील में स्त्रियों की एक सभा में एक स्त्री ने अपनी कथा सुनाई। उसने बताया 'कि उसका एक बहुत बड़े परिवार में विवाह हुआ था। अब वह विधवा है। उसे परिवार भर की सेवा करनी पड़ती है, तब उसे खाने को सूखी रोटी और पहनने को सादे कपड़े मिलते हैं। जितने बढ़िया-बढ़िया कपड़े थे उसकी सास ने अपने अधीन कर लिये हैं। जब कभी वह किसी काम के लिए रुपया पैसा मांगती है तो उसे फटकार दिया जाता है और कहा जाता है कि "रांड होकर भी नखरे नहीं गये।" वह इतनी दुःखी है कि अब आत्म-घात के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं रहा।' इस कथा को सुनकर

छाया का रक्त खील उठा। उसने कहा, 'तुम खर्च के लिए दावा कर दो और परिवार से पृथक् रहो।'।

'कैसे करूँ ? कौन मेरी बात करे ? मैं तो किसी को जानती नहीं। मेरे पास एक पंसा भी तो नहीं मुकदमा करने को ?'

छाया ने कहा, 'अच्छी बात है। मैं तुम्हारा प्रबन्ध करूँगी।'।

दूसरे ही दिन उसने भृगुदत्त को कहा, 'किसी ऐसे वकील का पता निकालो जो "हिन्दू लाँ" को समझता हो।' भृगुदत्त ने पता करके मिस्टर रामलुभाया सेठ का नाम बताया। फिर एक दिन छाया उस स्त्री को लेकर मिस्टर सेठ की बैठक में जा पहुँची। उसने वकील साहब को अपनी स्त्री-सुधार-सभा का परिचय कराकर साथ की विधवा स्त्री की बात बताई। वकील साहब ने कहा, 'यूँ तो मैं ऐसे मुकदमे में राय देने के दो सौ रुपये लेता हूँ; परन्तु आपकी इस संस्था की बात सुनकर मैं आपसे इतनी फीस माँग नहीं सकता।'।

छाया को वकील साहब की फीस का विचार नहीं आया था। उसने समझा था कि जैसे डॉक्टर-हकीमों ने खैराती दवाखाने खोले हुए हैं वैसे वकील भी किसी गरीब का काम खैरात में कर देंगे। वकील साहब को फीस की बात करते सुन एक क्षण तक वह विस्मय में खड़ी रही, पश्चात् साहस बांधकर बोली, 'यह स्त्री बहुत गरीब है। मैंने सुना है कि मुफलिसों के लिए तो सरकार ने भी रियायत कर छोड़ी है और आपको तो इन्सान के नाते इसका मुकदमा मुफ्त कर देना चाहिए। हम तो केवल अभी आपसे राय ही माँगने आये हैं।'।

'इसका मतलब मैं यह समझूँ कि आपके पास कुछ नहीं है ?'

'हमारी संस्था अभी बिलकुल नई है। चन्दा अभी हम नहीं करतीं।'।

'तो कुछ आप सहायता कर दें, कुछ मैं छोड़े देता हूँ।'।

'मैं तो सैकड़ों रुपये महीने पहले ही इस पर व्यय कर रही हूँ। मेरे पास तो और अधिक बचता ही नहीं।'।

मिस्टर सेठ ने नज़र भरकर छाया की ओर देखते हुए कहा, 'यदि

यह बात है तो मैं काम कर दूंगा और कुछ नहीं लूंगा ।’

मिस्टर सेठ ने जब सब कहानी सुनी तो कहा, ‘इस स्त्री को पच्चीस रुपया महीना गुजारा मिल जायगा । और अधिक के लिए इसे कहीं नौकरी इत्यादि करनी होगी । कल यह मेरे पास प्रातः नौ बजे आ जाय तो मैं इसकी अर्जी दिलवा दूंगा । बाद में देखा जायगा ।’

अगले दिन छाया फिर उस स्त्री को लेकर मिस्टर सेठ की बैठक में पहुंची । वकील साहब ने मुन्शी को बुलाकर अर्जी लिखवाई और जब तक मुन्शी उस प्रार्थना-पत्र को पक्के कागज पर लिख रहा था, मिस्टर सेठ ने कहा, ‘आइये थोड़ा-सा नाश्ता कर लीजिये; फिर मेरे साथ कचहरी चले चलियेगा । वहां अर्जी लिखवा दूंगा ।’

छाया, ‘आप नाश्ता कीजिये । हम यहीं बैठती हैं ।’

‘आइये न, मुझे आपकी संस्था के विषय में भी कुछ बातें करनी हैं ।’

छाया और वह स्त्री वकील साहब के साथ डाइनिंग रूम में चली गईं । वकील साहब के पहुंचते ही दूध, पौरिज, दो अंडे और दो रोटी के टोस्ट रख दिये गए । वकील साहब ने पूछा, ‘आपके लिए क्या मंगवाऊं ?’

‘कुछ नहीं ! मैं तो “ब्रैक फास्ट” करके आई हूं, और यह दिन मैं एक बार खाती हूं ।’

खाते हुए वकील साहब ने कहना आरम्भ किया, ‘आपके काम की मैं सराहना करता हूं । मुझे यह देखकर कि यह काम अब स्त्रियां स्वयं सम्भाल रही हैं, बहुत प्रसन्नता हाती है । मैं आप लोगों की सहायता के लिए सदैव तैयार हूं । रुपये से, परिश्रम से और अपनी योग्यता से स्त्रियों के, स्त्री-पुरुष-समता के इस आन्दोलन में मैं यथाशक्ति सहायता करूंगा ।’

‘आप किस रूप में हमारी सहायता कर सकते हैं ?’

‘कचहरी के काम के अतिरिक्त भी मैं हर तरह से, आप जैसे चाहें और जहां चाहें, सहायता करने को तैयार हूं । मैं एक पुस्तक इस विषय पर लिख रहा हूं कि कानून ने पुरुष और स्त्री में कहां असमता रखी

है। इसके पश्चात् में एक पुस्तक लिख रहा हूँ कि रस्मो-रिवाज कहां-कहां-स्त्री-पुरुषों में भेद-भाव डालते हैं। मैं समझता हूँ मेरा “कानूनी-ज्ञान” इस पुस्तक द्वारा औरतों के आन्दोलन में बहुत सहायता देगा।”

‘यह ठीक है। परन्तु हम आपसे पुस्तकों के अतिरिक्त स्त्रियों के संगुठन में भी सहायता चाहती है।’

‘यही तो मैं भी कह रहा हूँ। आप जब भी चाहें मेरे से सलाह कर सकती हैं और यदि कहीं व्याख्यान देने अथवा चंदा करने की आवश्यकता हो तो मेरे पर भरोसा कर सकती हैं।’

उस स्त्री का मुकद्मा तो पेश हो गया और उसके परिणामस्वरूप उस स्त्री को, बिना मुकद्मा लम्बा चले, पच्चीस रुपये मासिक का खर्चा लिख दिया गया। परन्तु साथ ही इसका परिणाम यह हुआ कि छाया और मिस्टर रामलुभाया सेठ में मेल-जोल बढ़ गया। अब स्त्रियों के केन्द्रों में मिस्टर रामलुभाया वकील और छाया देवी प्रायः इकट्ठे देखे जाते थे। मिस्टर सेठ का छाया के घर आना और छाया का रामलुभाया के घर जाना मेल-जोल में अगला कदम था।

मंगल का दिन था छाया और रामलुभाया सेठ एक सभा में भाषण देकर लौट रहे थे। मिस्टर सेठ की गाड़ी थी और वे उसे स्वयं ही चला रहे थे। छाया उनके पास अगली सीट पर बैठी थी। मिस्टर सेठ ने कहा, ‘मिस छाया देवी आपका वर्णन करने का ढंग अति उत्तम है। आज तो आपने कमाल ही कर दिया है। मैं समझता हूँ थोड़ा सोसायटी में मेल-जोल पैदा करना चाहिए और शीघ्र ही आपकी मशहूरी देहली से बाहर होने लगेगी।’

‘सोसायटी कहां से लाऊँ। मैं तो किसी को जानती नहीं।’

‘मैं एक राय दूँ ? आप मेरे साथ क्लब चला करें।’

‘तो वहां की मेम्बर बन जाऊँ !’

‘अभी आज ऐसे ही चलिये। मेरे मेहमान बनकर। मेम्बर फिर बन जाइयेगा।’

‘तो आप मुझे निमंत्रण दीजिये ।’

‘हां, हां ! अब छै बजे हैं । आप तैयार रहियेगा । मैं आपको मोटर में आठ बजे लेने आऊंगा ।’

‘तैयार रहूंगी ।’

: २ :

जब से छाया ने कॉलिज छोड़ा था माया के कमरे में उपमा रहने लगी थी। उपमा का स्वभाव छाया से भिन्न था। वह माया से सहानु-भूति रखती थी। इसी से उसने अपनी सारी भेद की बातें उपमा को बता दी थीं।

एक दिन माया अपने कमरे में अपने अन्धकारमय भावी जीवन के विषय में सोचते-सोचते व्याकुल हो उठी और मन के शोक को दवाने के लिए वह गुनगुनाने लगी। उसे एक गज़ल, जो उसने अपने कॉलिज की मैगज़ीन में पढ़ी थी, याद आ गई। वह उसे गाने लगी।

इस बदलती दुनिया में इतबार किसका हो
अपने पराये हो गये अब प्यार किसका हो ।
सूरज ने भी अपना मुख है छुपा लिया
काला हुआ ज़माना तो दीदार किसका हो ।
कहते थे कि इन्सान हैं हम भूल नहीं सकते
इन्सान ही हैवान हुए तो इसरार किसका हो ।
इक पलक झपकने में दुनिया बदल गई
किस्मत ने साथ छोड़ा तो इकरार किसका हो ।
तारीकी में तो साया ने भी साथ न दिया
जो हमको दिया छोड़ तो गुनहगार किसका हो ।

उपमा माया की अवस्था से दुखी थी परन्तु वह नहीं जानती थी कि किस प्रकार उसकी सहायता करे। आज जब आई तो उसने माया को गाते हुए सुना। उसने पूछा, ‘माया क्या बात है ?’

‘आज अन्तिम निर्णय हो गया है। वह बदमाश यह कहकर चला

गया है कि मैं जो चाहूँ कर लूँ वह कुछ परवाह नहीं करता ।’

‘तो फिर ?’

‘मैंने अब विष खा लेने का निश्चय कर लिया है; केवल विष खरीदकर लाने की समस्या बाकी है ।’

‘यदि विष न मिला तो ?’

‘तो फिर क्या ? रेल के नीचे सिर देकर कट मरूगी ।’

‘परन्तु मैं पूछती हूँ कि इसके अतिरिक्त और कोई चारा नहीं रहा क्या ?’

‘मुझे तो और कुछ नहीं सूझता ।’

‘मैं समझती हूँ कि भृगु के पिता से क्यों नहीं मिलतीं; शायद वह लड़के को समझाये । और फिर छाया से कहना चाहिए; वह स्त्रियों की सहायता में जलसे करती फिरती है । तुम्हारी भी तो उसे सहायता करनी चाहिए ।’

‘मुझे उन लोगों से कुछ भी आशा नहीं ।’

‘यत्न तो करना ही चाहिए ।’

माया चुपचाप कुछ काल तक सोचती रही । थोड़ी देर बाद वह उठकर बोली, ‘उपमा बहन तुम ठीक कहती हो । जब मरना ही है तो, दो गाली कम खाकर मरो या दो गाली अधिक खाकर; क्या फ़रक पड़ जाता है । मैं अभी जाती हूँ और इस बात की भी परीक्षा किये लेती हूँ ।’

उसने कपड़े पहने और कुछ रुपये जेब में डालकर होस्टल के बाहर निकल गई । चार बजे का समय था । टांगा किया और वह पं० केशवदेव के बंगले पर जा पहुँची । पंडित जी घर पर नहीं थे; भृगुदत्त भी उनके साथ ही गया हुआ था । नौकर ने जब सुना कि वह पंडितजी से मिलने आई है तो उसने बरामदे में रखी कुर्सी पर बैठने का संकेत करते हुए प्रतीक्षा करने के लिए कह दिया । माया वहाँ बैठ गई । वह आज निर्णय किये बिना वहाँ से न टलने का निश्चय करके आई थी । ६ बजे

मिस्टर सेठ की मोटर में छाया आई। मोटर में छाया मिस्टर सेठ के पास बैठी थी। छाया उतर पड़ी और मोटर चली गई। छाया उतरकर जब बरामदे में पहुंची तो माया को वहां बैठा देख अचम्भे में खड़ी रह गई। माया ने उठकर कहा, 'छाया। तुम आ गईं ?'

'हाँ। क्या काम है ?' छाया ने अभिमान से गर्दन सीधी करके कहा।

'मैंने सुना है तुम स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा के लिए सभाएं कर रही हो।' इसी से आशा बांधकर तुम्हारे पास आई हूं।'

'क्या चाहती हो ?'

'तुम्हारे भाई ने मुझसे सम्बन्ध पैदा कर के मुझे छोड़ दिया है। मैं चाहती हूं कि तुम मेरे अधिकारों के लिए मेरी सिफारिश करो।'

'किससे ?'

'अपने पिताजी से।'

'क्या सिफारिश करूं ?'

'यही कि तुम्हारा भाई मुझसे विवाह कर ले ?'

'पर इसमें क्या प्रमाण है कि भृगु से तुम्हारा सम्बन्ध था। यह तो किसी दूसरे से भी हो सकता है।'

'मुझे उससे गर्भ ठहर गया है। तुम तो जानती हो कि मैं तुम्हारे भाई से प्रेम करती थी।'

'इससे क्या होता है ? इससे यह सिद्ध कैसे हो गया कि बच्चा भृगु का है।'

माया चुप हो गई और छाया अपने कमरे में चली गई माया के लिए अब केवल भृगु के पिता से बातचीत करनी ही बाकी रह गई थी। वे अभी तक नहीं लौटे थे। माया बरामदे में बैठकर उनकी प्रतीक्षा करने लगी। रात हो गई। आठ बजे वकील साहब फिर कार लेकर आये और छाया को साथ लेकर चले गये। माया अभी भी वहीं पर बैठी रही। साढ़े नौ बजे कार में पं० केशवदेव, भृगुदत्त और उसकी माता आये।

आते ही भृगुदत्त की माता ने नौकर से पूछा, 'छाया आई है क्या ?'

'आई थी और आठ बजे फिर वकील साहब के साथ चली गई है।'

'मालूम नहीं लड़की को क्या हो गया है। घर पर तो उससे बैठा ही नहीं जाता।' यह कहते हुए सब लोग बरामदे में आये तो माया ने उठकर हाथ जोड़कर नमस्ते की। भृगुदत्त उसे देख अपने कमरे में चला गया। माया ने भृगुदत्त के पिता से कहा, 'मैं आपसे एक अत्यावश्यक बात करने आई हूँ।'

'परन्तु इस समय तो बहुत देरी हो गई है। क्या आप कल नहीं आ सकतीं ?'

'मैं चार बजे से यहां आपकी प्रतीक्षा कर रही हूँ। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि कितना आवश्यक काम है।'

'अच्छी बात है, भीतर आ जाओ।'

छाया की माँ ने कहा, 'तुम्हें तो मैंने कहीं पर देखा है ?'

'जी ! मैं आपकी लड़की की सहेली हूँ। होस्टल में उसी के कमरे में रहती थी।'

'ओह ! याद आगया तुम्हारा नाम माया है ? ठीक है न।

भीतर आ जाओ, माया बेटी।'

सब ड्राइंग रूम में जा पहुंचे। पं० केशवदेव एक कुर्सी पर बैठ गये और माया को अपने समीप कुर्सी पर बैठने को कहा। छाया की माँ माया के पास बैठ गई।'

'हां तो बताओ ?' पं० केशवदेव ने पूछा।

'मैं आपसे प्रार्थना करना चाहती हूँ कि आप अपने लड़के से कहें कि उसने मेरे साथ जो-जो वायदे किये हैं उन्हें पूरा करे।'

'क्या-क्या वायदे किये हैं, उसने ?'

'आप उसे बुलाकर पूछिये न। वह अपने मुख से ही बतायगा तो अच्छा होगा।'

भृगुदत्त की माँ ने आवाज दी, 'भृगु ! भृगु !'

भृगु अपने कमरे से आ गया। पं० केशवदेव ने पूछा, 'क्या बात है ? भृगु !'

यह क्या बात कहती है ?'

भृगु, 'क्या कहती है पिता जी ?'

'कहती है तुमने इससे कोई वायदे किये हैं।'

'मैं इसको नहीं जानता कि यह कौन है ?'

'ओह ! और आज ही दोपहर के समय मुझको कहते थे कि पिता जी की आज्ञा टाल नहीं सकते।'

'क्या बात है भृगु ?'

'पिता जी। मैं इस लड़की को नहीं जानता।'

'अब बताओ ! क्या नाम बताया है तुमने ?'

'मेरा नाम माया है, मैं छाया की सहेली हूँ। एक दिन होस्टल में ये अपनी बहन को सिनेमा दिखाने के लिए लेने गये तो मैं भी इनके साथ चली गई। फिर कई बार यह मुझसे मिलने आये। धीरे-धीरे इनसे मेरा परिचय गहरा होता गया और यह मुझसे कई स्थानों पर गुप्त रूप से मिलते रहे। अब मैं मां बनने वाली हूँ और यह मुझसे विवाह करने से इन्कार करते हैं।'

बाप ने माथे पर त्योंरी चढ़ाकर कहा, 'भृगु ?'

भृगु ने उत्तर दिया, 'पिता जी ! मैं इसे नहीं जानता। यह सब झूठ है। मुझे फंसाने का कोई भारी षड्यंत्र है।'

केशवदेव ने कुछ देर तक सोचकर माया से पूछा, 'तुम्हारी बात का क्या प्रमाण है ?'

'इस बात का कोई साक्षी नहीं।'

'बिना साक्षी के कौन तुम्हारा विश्वास करेगा ?'

'मैं सौगन्ध पूर्वक कहती हूँ।'

'चोर की कसम का क्या विश्वास ?'

'मैं सत्य कहती हूँ। मुझ पर विश्वास कीजिये। नहीं तो मैं आत्मघात कर लूंगी।'

'अब केशवदेव को क्रोध चढ़ आया। वे कहने लगे, 'निकल जाओ

बाहर । मैं तुम्हारे जैसी लड़कियों की बातें खूब जानता हूँ । जाओ ! निकल जाओ ।’

‘बेटे से बाप अधिक निर्दयी प्रतीत होता है ।’ माया के मुख से चीख-सी निकल गई ।

‘शट अप’ केशवदेव ने खड़े होकर कहा । फिर उसने आवाज दी, ‘चपरासी !’

नौकर भीतर आ गया । केशवदेव ने उससे कहा, ‘इस लड़की को धक्के देकर कोठी से बाहर निकाल दो ।’

चपरासी अचम्भे में माया की ओर देखने लगा । केशवदेव चपरासी को हाथ लगाने से डरते देख स्वयं आगे बढ़े और माया की बांह पकड़कर घसीटकर उसे कमरे से बाहर धकेल दिया ।

माया विवश होकर कोठी से बाहर निकल गई । अब उसकी अंतिम आशा भी टूट गई । उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि सड़क पर घटाटोप अंधेरा है । वह दिशा-शून्य होकर चलने लगी । उसे अब पता नहीं था कि उसे किधर जाना है और न ही वह जानती थी कि किधर जा रही है । उसके मन में एक धुन सवार हो गई थी कि रेल की पटरी पर चली जाए और उस पर लेट जाए ।

वह चलती ही जाती थी । वह सड़क के बीचों-बीच चल रही थी । सामने से एक मोटर आई । उसके आगे के लैम्पों का प्रकाश उस पर पड़ रहा था, परन्तु वह अपने विचारों और अपनी धुन में इतनी लीन थी कि उसे न तो मोटर का प्रकाश ही दृष्टिगोचर हुआ और न ही उसने मोटर के भोंपू का शब्द सुना । वह वैसे ही सड़क के मध्य में चलती गई । मोटर चलाने वाले ने जब देखा कि आगे से हट नहीं रही तो उसने दोनों पैरों से ब्रेकें लगा दीं । मोटर के रुकने का ‘घीं’ सा शब्द हुआ और मोटर रुक गई । परन्तु इस पर भी माया को धक्का लग ही गया और वह पीछे की ओर गिर पड़ी ।

मोटर में बलवीर बैठा था । उसने तुरंत उतरकर गिरी हुई लड़की

को देखा। वह बेहोश हो गई थी और उसका सिर जोर से सड़क से टकरा गया था। सिर में घाव हो जाने से रक्त बहने लगा था। बलवीर ने उसे उठाया और जब उसने मोटर के लैम्पों के प्रकाश में उसे पहचाना तो वह चकित रह गया, उसके मुख से निकल गया, 'ओह, माया ! यहां कैसे ?'

उसने जब उसके सिर से रक्त बहते देखा तो वह उसे मोटर की पिछली सीट पर डाल मोटर में बैठ, मोटर को घुमा अपने घर की ओर भगा ले गया।

मोटर चलाते हुए मन में सोच रहा था कि माया को अवश्य कुछ कष्ट था। उसे रैस्टोरां के सम्मुख उसके रोने की बात याद आ गई। उस समय उसने पूछा था कि क्या बात है और माया ने केवल यह उत्तर दिया था कि पिता की याद आ गई है। बलवीर को उसके उत्तर पर विश्वास नहीं आया था। अब इस दुर्घटना से वह समझ गया कि कोई बात अवश्य है जो माया के मन को दुखी किये हुए थी। उसी दुःख में दुखी वह अन्य मनस्क हो चली आती होगी, जिससे उसने न तो मोटर का 'हार्न' सुना और न ही 'लैम्पों' का प्रकाश देखा।

इस बात के निश्चय होते ही कि माया दुखी है, वह विचार करने लगा कि उसे क्या कष्ट हो सकता है, जिसने उसे वास्तविक परिस्थिति से दूर कर अचेत-सा कर दिया था। छाया के भाई भृगु से माया के परिचय की बात ने बलवीर के मन में एक संशय पैदा कर दिया। उसने समझा कि जैसी बहन है वैसा ही भाई भी हो सकता है। दोनों विकृत विचार रखने वाले हो सकते हैं। दोनों पाश्चात्य सभ्यता की उपज हो सकते हैं और दोनों प्रेम के आवरण में अपनी वासना-तृप्ति को जीवन का लक्ष्य बना अपने इष्ट मित्रों तथा परिचितों में दुःख फैलाने वाले सिद्ध हो सकते हैं।

इन विचारों के मन में आते ही बलवीर कांप उठा। वह समझने लगा कि माया के साथ क्या दुर्घटना हुई होगी, ऐसी अवस्था में क्या करना चाहिए, वह सोचने लगा था।

इतना कहकर सेठ ने अपने सामने से गिलास उठाकर एक छोटी-सी चुस्की लगा ली। छाया ने भी उठाकर थोड़ी-सी पी और गिलास हाथ में पकड़े हुए वकील साहब की ओर देखकर पूछा, 'कहीं यह शराब तो नहीं ?'

'यह शैम्पेन है। आजकल यह एक अलभ्य वस्तु है। मेरे एक मित्र के पास कुछ बोतलें लड़ाई आरम्भ होने से पहलेकी रखी हैं। दो बोतलें उससे मांग लाया हूं। इस समय इसकी एक बोतल के लिए, लोग डेढ़ सौ रुपया देने को तैयार हैं।'

'यह कुछ मीठी है और पीछे कुछ बकबकी प्रतीत होती है।'

'आप तो "प्रेजुडिसेज" से ऊपर हैं न।'

'शराब के शब्द से तो नहीं डरती, केवल बेहोश हो जाने से डरती हूं।'

'ठीक ! आप ठीक कहती हैं। शराब में डरने की बात केवल बेहोशी हा है। परन्तु एक दो गिलास से थोड़े ही कोई बेहोश होता है।

इतना कहकर सेठी ने अपना गिलास खाली कर दिया। छाया भिन्न रह गई थी। मिस्टर सेठ ने उत्साहित करते हुए कहा, 'पी डालिये जी। यह तो कुछ भी नहीं।'

छाया ने भी गिलास का एक घूंट कर लिया। और कहा, 'यह तो इतना बदजायका नहीं।'

'बैरा !' मिस्टर सेठ ने आवाज दी, 'और लाओ।'

बैरा चला गया। वकील साहब ने कहा, 'सबसे बड़ी गुलामी विचारों की गुलामी है। जब हम किसी बात को ठीक या गलत इस कारण समझते हैं, क्योंकि वह हमारी धर्म-पुस्तकों में लिखी है या बूढ़े लोग कहते हैं और हम अपनी अकल का प्रयोग नहीं करते तो हम पक्के गुलाम समझे जाने चाहिए।'

'यह तो मैं भली-भांति समझती हूं। बूढ़े लोगों का जमाना गया। अब हमारा जमाना है। हमें अपने जीवन को बनाना है इसमें हम दूसरों का हस्ताक्षेप सह नहीं सकते।'

बैरा दो गिलास भरकर फिर ले आया। मिस्टर सेठ ने कहा, 'शेष सब यहां ले आओ।'।

'नहीं ! नहीं मैं अधिक नहीं पीऊंगी।'।

'और लोग भी तो आ रहे हैं।'।

'मेरे मन में तो स्वाधीनता का यह चित्र है कि स्त्री-पुरुष प्रत्येक बात में समान माने जायें। कोई रस्म, कानून अथवा विचार ऐसा न रहे जो स्त्री-पुरुषों में भेद-भाव माने।'।

इतने में एक लड़की और एक सिख युवक उनके पास आ खड़े हुए। मिस्टर सेठ ने उन्हें देखकर कहा, 'लो आ गये' और उठकर उनका स्वागत किया, 'आइये। थोड़ी देर हो गई आपको।' इसके पश्चात् उसने परिचय कराया।

'यह हैं छाया देवी। स्त्री-समाज के उत्थान का आन्दोलन चला रही हैं। रायबहादुर केशवदेव, डिप्टी सेक्रेटरी फूड डिपार्टमेंट की लड़की हैं। बहुत ही लायक और उन्नत विचार रखती हैं।'।

अब मिस्टर सेठ ने आये हुए व्यक्तियों का परिचय कराया, 'और यह मिस्टर इन्द्रजीतसिंह, सरदार बहादुर केवलसिंह के सुपुत्र हैं। इस समय दिल्ली के सबसे बड़े ठेकेदार हैं। और यह हैं मिस साठे, मेडिकल कॉलज की अंतिम श्रेणी में पढ़ती हैं। यह मरहठा जाति की हैं। इनके पिता महाराष्ट्र में एक बहुत बड़े राजनीतिक नेता हैं।'।

इसी समय एक जोड़ा और आ गया। मिस्टर सेठ ने उनका भी परिचय करा दिया, 'यह हैं मिस्टर मणान्द्रकुमार चौधरी, बंगाल के एक भारी जमींदार के सुपुत्र हैं।' यह, साथ की स्त्री की ओर हाथ कर कहा, 'मिसेज वर्मा। एक पञ्जाबी सिनेमा एक्टर की स्त्री। इनके पति आजकल बॉम्बे टॉकीज़ में काम करते हैं।'।

इस परिचय के पश्चात् मिस्टर सेठ ने सबको शराब पीने को कहा। सब अपने-अपने गिलास भरकर पीने लगे। छाया अभी संकोच करती

थी। उसे बेहोश हो जाने का डर भी था परन्तु मिस साठे ने भरा गिलास उसके हाथ में देकर कहा, 'वाह ! सोसायटी में ऐसी बात नहीं चल सकती।'।

छाया ने लज्जा के मारे गिलास हाथ में ले लिया। थोड़ी-थोड़ी कर पीने लगी।

पश्चात् खाने का प्रबन्ध था। खाने के पश्चात् फिर सबने दो-दो तीन-तीन छोटे पैग शैंम्पेन के लिये। पीने दस बजे मिस साठे ने अपने साथ आये सरदार इन्द्रजीत को कहा, 'मुझे छोड़ आइये। मेरे होस्टल के बन्द होने का समय हो गया।' इससे वह दोनों विदा मांगकर चले गये। मिस्टर सेठ, छाया, मिस्टर मणीन्द्र और मिसेज वर्मा बैठेर हे और बातों के साथ-साथ थोड़ी-थोड़ी शराब पीते रहे। जब दोनों बोटलें समाप्त हो गईं। तो मिस्टर सेठ ने कहा, 'मिस छाया यदि आपत्ति न हो तो एक राउंड डांस का लगा दें।'।

लॉन के एक कोने में बैंड बज रहा था और कुछ जोड़े नाच रहे थे। छाया ने सेठ की ओर देखकर कहा, 'जी तो बहुत चाहता है पर शराब से सिर चक्कर खा रहा है। मुझे डर है कि कहीं गिर ही न पड़ूँ।'।

'अच्छी बात आप बैठें, मैं मिसेज वर्मा से पेयर कर लेता हूँ।'।

मिसेज वर्मा का हाथ अपने हाथ में डालकर सेठ, नाचने वाले जोड़ों में चला गया। मिस्टर मणीन्द्रकुमार अपने स्थान से उठकर छाया के समीप आ गया और कहने लगा, 'मिस छाया ! आपसे मिलकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ है। कभी हमारे घर आइये न 'मैं नम्बर एक सी चार अलीपुर रोड पर रहता हूँ।'।

'आपके साथ वहां और कौन हैं ?'

'मैं अकेला हूँ। मेरे माता-पिता दरभंगा में हैं।'।

'आप यहां क्या करते हैं ?'

'मैं यहां एक सिनेमा-कम्पनी चलाने का प्रबन्ध कर रहा हूँ। शीघ्र ही हमारी कम्पनी लिमिटेड हो जायगी।'।

‘आपका विवाह अभी नहीं हुआ क्या ?’

‘हुआ तो है। परन्तु मेरी स्त्री सर्वथा गंवार है। वह सभ्य समाज में जाने से संकोच करती है। इससे मैंने उसे घर भेज दिया है। अब यह मिसेज वर्मा, मुझसे बहुत सहानुभूति रखती हैं। प्रायः यह मेरे घर आया-जाया करती हैं।’

‘अच्छी बात ! जब कभी यह आयें तो मुझे बुलाइयेगा।’

‘आपकी कोठी पर टेलीफोन है ?’

‘हां है।’

‘तब तो बहुत अच्छा है। मैं टेलीफोन पर आपसे बातें करूंगा।’

∴ ४ ∴

कमल के आश्रम में कुछ और लोग आकर रहने लगे थे। इस समय कुल ग्यारह परिवार थे। वह लोग जो बालिग थे, स्त्री-पुरुष मिलाकर, तीस थे। तीन बच्चे थे, जिनमें से एक तो दूध-पीता बच्चा था और दो स्कूल जाने योग्य। तीन बालकों में एक माया भी थी।

बलवीर जब माया को अपनी मोटर में डालकर ले गया था तो वह अचेत थी। घर ले जाकर सबसे पहले उसने उसके सिर पर पट्टी की, जिससे रक्त बहना बन्द हो जाये। पश्चात् उसे होश में लाने का यत्न किया गया। इस समय बलवीर की मां उसकी सहायता कर रही थी।

माया को जब होश आया तो रात के दो बज चुके थे। इसके पश्चात् माया को स्लीपिंग डोज़ देकर सुलाने का यत्न किया गया।

अगले दिन माया, दोपहर को लगभग ग्यारह बजे जागी और अपने को बलवीर के घर में पाकर बहुत हैरान हुई। रात के समय बलवीर की मां को, जब वह उसकी मरहम-पट्टी करने और उसे औषधि इत्यादि देने में सहायता कर रही थी, तो उसे रहस्य की बात का पता चल गया। माया के सो जाने पर उसने बलवीर से कहा था, ‘माया के पेट में बच्चा है।’

बलवीर कुछ ऐसी ही आशा कर रहा था। जो कुछ उसने

मोटर में आते समय अनुमान किया था उसका प्रमाण ५
में पाकर वह फिर माया के भविष्य के विषय में सोचने ल
उसकी मां ने बताया कि उसके विचार में माया को चौथा म
जा रहा है ।

जब माया जागी तो बलवीर की मां ने उसे बलवीर की मोटर से
टकरा जाने और फिर उनके घर लाये जाने की बात बताई । माया को
अपने इस प्रकार मरने से बचाये जाने की कहानी सुनकर बहुत शोक हुआ
और जब उसे यह पता चला कि बलवीर की मां को उसकी अवस्था का
पता चल गया है तो वह रो पड़ी ।

धीरे-धीरे बलवीर की मां ने सारी बात उससे पूछ ली और फिर
आगे के व्यवहार पर विचार किया । माया तो समझती थी कि अब इस
जीवन के रखने से लाभ नहीं और वह बलवीर से इस विषय में सहायता
चाहती थी । वह चाहती थी कि उसे कोई ऐसी औषधि दे दी जाय जिससे
वह शान्ति से मर सके । परन्तु बलवीर और बलवीर की मां के सम-
झाने और सान्त्वना देने पर वह राजी हो गई कि उसकी मां को बुला
लिया जाय ।

तार से उसकी मां को बुलाया गया और उसके आने पर माया को
कमल के आश्रम में रखने का निश्चय हुआ । यह बात तो बलवीर की मां
मानने के लिए कभी भी तैयार नहीं थी कि गर्भ-पात करवाया जाय ।
जहां तक माया के भविष्य का सम्बन्ध था बलवीर उसको प्रत्येक प्रकार
की सहायता देने को तैयार था ।

माया कमल के आश्रम में मुरली और अन्य स्त्रियों की देख-रेख में
रखी गई । माया जब मोटर से टक्कर खाकर लगी चोट से ठीक हो गई
तो उसे आश्रमवासियों के कपड़े सीने का काम दिया गया । बच्चों और
स्त्रियों के कपड़े सीने का कार्य तो उसने तुरंत ही सम्भाल लिया और
कठिन कामों के लिए उसे ट्रेनिंग दिलवाने का प्रबन्ध कर दिया गया ।
एक 'कटर' (कपड़े काटने की विद्या जानने वाले) की सेवायें इस काम

विकृत-छाया

कर ली गई और उचित साहित्य इस विषय पर लाकर र दिया गया। कमल का कहना था, 'समाज में जब हम इसका अंग बनकर रहते हैं तो हम उस पर भार रूप न होकर उसके वन को सुगम करने में सहायक होते हैं। उपयोगी कामों में केवल चार प्रकार के काम हैं। भोजन, वस्त्र, मकान और मनोरञ्जन।'

इस प्रकार माया को यह समझा दिया गया था कि वह आश्रम का अत्यावश्यक अंग है और आश्रम उसकी सहायता करने पर बाध्य है। माया अपनी वर्तमान अवस्था से असन्तुष्ट नहीं थी।

: ५ :

आश्रम में जीवन ठीक नियम से चलता था। प्रायः पुरुष लोग शहर में काम करते थे। आश्रम के सदस्य बनने के समय तो वे सब बेकार थे, परन्तु बलवीर, कमल और बलवीर के पिता के प्रयत्न से प्रायः सब नौकरी पा गये थे। यह लोग और स्कूल जाने योग्य बच्चे आठ बजे खाना खाकर एक "मोटर ट्रक" द्वारा नगर में पहुँच जाते थे और सायंकाल सब एक केन्द्र-स्थान पर एकत्रित हो जाते थे, जहाँ से ट्रक द्वारा फिर वे आश्रम में आ जाते थे।

आश्रम के अपने खेत थे, जहाँ स्त्रियाँ, जब उनके घर वाले काम पर चले जाते थे, काम करती थीं। खेतों में सब्जियाँ और अन्न उगाये जाते थे। सब्जियाँ, जो आश्रम की आवश्यकता से अधिक होती थीं, शहर की मंडी में ले जाकर बेच दी जाता थीं। एक-आध पुरुष, जो किसी प्रकार का भी काम शहर में करने के अयोग्य था, उसे भी खेतों में काम करने के लिए और आश्रम की रखवाली के लिए नियत किया हुआ था।

रोटी बनाने का काम एक ही स्थान पर इकट्ठा होता था। तैतीस प्राणियों का खाना एक ही चौके में बनता था। तीस बालिग लोगों में चौदह पुरुष थे जिनमें से बारह शहर में काम पर जाते थे। कमल वहीं आश्रम में लिखने-पढ़ने का काम करता था और आश्रम का प्रबन्ध करता

था । एक बूढ़ा पेन्शनयाफ़ता व्यक्ति भी था । सोलह औरतों में एक माया थी जो कपड़े सीने और मरम्मत करने का काम करती थी । पांच स्त्रियां चीका-बरतन और आश्रम की सफाई का काम करती थीं । दोष दस स्त्रियां खेतों में काम करता थीं ।

प्रायः सायंकाल सब स्त्री-पुरुष एक स्थान पर एकत्रित होते थे और अपनी-अपनी कठिनाइयां सबके सम्मुख बताते थे । ऐसे अवसरों पर ही कमल मासिक आय-व्यय का व्योरा सुनाता था और भावी प्रोग्राम का निर्णय किया करता था ।

आश्रम जब आरम्भ किया गया था तो भूमि तो बलवीर के पिता ने नाम मात्र भाड़े पर दी थी और दस सहस्र रुपया बलवीर और कमल ने जमा कराया था । उस समय आश्रम में एक भी रहने योग्य मकान नहीं था । ज्यों-ज्यों आश्रम-निवासियों की संख्या बढ़ती गई त्यों-त्यों कमल भोंपड़े बनवाता गया और अन्य प्रकार की सुविधायें उपस्थित करता गया ।

पिछले मास जो आय-व्यय का व्योरा कमल ने सुनाया था उसे मकान और अन्य स्थावर सम्पत्ति के अतिरिक्त पन्द्रह हजार से ऊपर रुपया जमा था । इस अवस्था से किसी को असन्तोष नहीं था ।

सायंकाल जब खेतों में काम समाप्त हुआ तो खेत में काम करने वाली स्त्रियां कुएं की जगत पर आ बैठीं । हाथ मुख धो लिया । वीणा को बंसरी बजाना बहुत अच्छी तरह आता था और वह प्रायः इस समय काम से छुट्टी पा कुएं की जगत पर बैठ पांव नीचे लटका बंसरी बजाया करती थी । आज जब वह बजाने लगी तो मुरली उसके पास आ बैठी और गाने लगी—

“मधु बांसुरी, प्यारी मन मोहिनी

मुरली सकल दुख हारिणी सोहती

मधुर हरी मुख में री अरी—मधु...

दूसरी स्त्रियां भी मुरली के पास आकर बैठ गईं । वीणा बंसरी

बजा रही थी। मुरली गा रही थी

ब्रज बनिता सब सुन व्याकुल भई
बाजत विरह भरी सखि प्यारी
सूझत न कछ काम काज घर
हरि के बिन सब रही दुखारी। मधु

मुरली ने गाना बन्द कर दिया। वीणा ने कहा, 'कैसा मीठा गाती हो मुरली।'।

'और तुम कैसा माठा बजाती हो।' वीणाने फिर बंसरी बजानी आरम्भ कर दी। एक स्त्री ने कहा, 'वीणा आज बहुत प्रसन्न प्रतीत होती है।' मुरली ने कह दिया, 'आज फिर वह आने वाले होंगे।' उसी स्त्री ने फिर पूछा, 'वीणा ! ठीक है ?'

वीणा ने बंसरी बजानी बन्द कर दी और उस स्त्री की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा। उस स्त्री ने कहा, 'वह मोटर वाले बाबू आज फिर आ रहे हैं क्या ?'

'हूँ।' वीणा ने कहा और फिर बजाने लगी। मुरली ने वीणा के चुटकी ली, 'अब तो वीणा शहर चली जायगी।'।

वीणा ने बंसरी बन्द कर कहा, 'कमल बाबू जेमे कहेंगे।'।

उस स्त्री ने कहा, 'यहां का जीवन नीरस प्रतीत होता है न।'।

इसी समय मोटर ट्रक, जिसमें आश्रम निवासी शहर से आते थे, पहुँच गया और एक एक करके सब लोग उसमें से उतर आये प्रायः स्त्रियां अपने-अपने घर पुरुषों के साथ चली गईं। वीणा और मुरली नहीं गईं। वीणा किसी की प्रतीक्षा में थी और मुरली को किसी की प्रतीक्षा नहीं थी। जब सब चली गईं तो मुरली ने पूछा, 'वीणा बहन, बहुत प्रेम है तुम्हारा उनसे ?'

'मुरली ! तुम सब बात नहीं जानतीं। यदि जानती होतीं तो यह प्रश्न न पूछतीं। मैं अब यह समझती हूँ कि उनसे विवाह हो जाय तो अच्छा ही है। परन्तु मैं आश्रम को भी छोड़ना नहीं चाहती।'।

इसी समय एक 'बूईक कार' आश्रम के दरवाजे पर आकर खड़ी हो गई। मुरली ने कहा, 'लो आ गये।' इतना कहकर वह कुएं की जगत से कूदकर रसोई घर की ओर चल पड़ी।

मोटर गाड़ी में से एक आदमी, जो अंग्रेजी ढंग की पूरी पोशाक पहने था, निकलकर वीणा के समीप आगया। वीणा वहीं कुएं पर टांगें लटकाये बैठी रही। वह आदमी सामने आकर खड़ा होगया। वीणा आंखें नीची किये बैठी रही। उस आदमी ने कहा, 'वीणा ! चलो मैं मोटर लाया हूं।'।

'वात यह है।' वीणा ने उत्तर दिया, कि 'कमल बाबू से मैंने बातें की थीं। उन्होंने अपनी सम्मति दी है कि मैं आपसे कहूं कि आप भी इस आश्रम के सदस्य बन जायें।'।

'और अपनी हज़ारों रुपये महीने की आमदनी आश्रम के हवाले कर दूं। राज-गद्दी छोड़कर कुलियों का काम करने लगूं। अपनी रानी को सोने और हीरों से ढांपने के स्थान में मैले चिथड़ों में देखूं।'।

'नहीं ! वह आपकी हज़ारों की कमाई लेना नहीं चाहते। वह तो कहते हैं, उस बेईमानी की कमाई को छोड़ दीजिये, ईमानदारी से रुपया कमाइये और ईमानदारों की संगति में रहिये।'।

'जो कुछ भी हो वीणा ! मैं तुमसे प्यार करता हू, और मैं तुम्हें इस प्रकार खेत में दो रोटी के लिए परिश्रम करते नहीं देख सकता। देखो ! अब मैंने कर्जन रोड पर एक बड़ी कोठी किराये पर ले ली है। दस हज़ार रुपया तो उसकी सजावट में खर्च कर दिया है और यह देखो, इतना कह उसने अपने कोट की भीतर की जेब से एक डिब्बी निकाली। और उसको खोल उसमें रखे आभूषण दिखाने लगा, 'यह तुम्हारे लिए चूड़ियां हैं। यह गले का हार है। यह कान के बुन्दे हैं। यह श्रृंगार-पट्टी, यह मंहदी और देखो यह सब, जिनके मैं नाम भी नहीं जानता, तुम्हारे लिए हैं। यह गले के हार के नीचे देखो कितना बड़ा नीलम लगा है। यह असली है। दो हज़ार रुपया तो इसी का दाम है। और यह नाक

की कील में जो हीरा जड़ा है, दो सौ रुपये का है ।’

चमचमाते आभूषणों को दे एक बार तो वीणा की आंखें चौंधिया गईं और वह कुछ उत्तर नहीं दे सकी । उसकी आंखें झुक गईं । अपने नंगे पांव, जिन पर से उसने अभी धोकर खेत की मिट्टी उतारी थी, देख वह लज्जित हुई । वह उत्तर देने लगी ही थी कि कमल अपने लिखने का काम समाप्त कर झोंपड़ी से बाहर निकला और इन दोनों को कुएं की जगत पर बातें करते देख घूमने के लिए दूसरी ओर चला गया । वीणा आभूषणों की चमकमाहट से परास्त हो चुकी थी और उस पुरुष के साथ जाने की स्वीकृति देने ही वाली थी । परन्तु कमल को देख उसके विचारों में परिवर्तन हो गया और उसने ऐसा अनुभव किया कि मानो वह गढ़े में लुढ़कते-लुढ़कते बची है । वीणा ने आवाज दे दी—

‘कमल बाबू ! कमल बाबू !!’

कमल ने वहीं खड़े-खड़े उनकी ओर देखा । वीणा ने कहा, ‘इधर आइये ! जरा आइये ।’

कमल उनकी ओर चल पड़ा । वीणा के पास खड़े पुरुष ने कहा, ‘वीणा एक तीसरे आदमी को बीच में डालना ठीक नहीं होगा ।’

‘मेरे तो यही सहारा हैं । मैं इनकी रायके बिना कुछ भी नहीं कर सकती ।’

‘एक समय मैं भी तो तुम्हारा सहारा था ।’

‘तुम स्वार्थवश थे । यह सहारा निःस्वार्थ है ।’

इतने में कमल वहां पहुंच गया । उस पुरुष ने आभूषणों का डिब्बा बन्द कर जेब में डाल लिया था । कमल ने वीणा की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा ।

वीणा ने कहा, ‘यह हैं नवल बाबू ! मैंने आपसे प्रातःकाल कहा था, मुझ लेने आये हैं । मैं आपकी सम्मति चाहती हूं ।’

‘वीणा देवी ! मैंने आपको अपने मन की बात कह दी थी । मैं फिर कहता हूं । नवल बाबू ! आप भी ध्यान से सुनें । मैं चाहता हूं

कि प्रत्येक मनुष्य ईमानदारी से जीवन व्यतीत करे । परन्तु मैं किसी भी ईमानदार व्यक्ति को बहुत सुख, आनन्द और ऐश की आशा नहीं दिला सकता । साथ ही मेरे चाहने से सब संसार तो सुधर नहीं जायगा ।’

‘आपको मेरा वीणा से पूर्व सम्बन्ध का पता नहीं, मिस्टर कमल ! तभी आप हमारे पुनर्मिलन में बाधा डालते हैं ।’

‘मैं समझता हूँ । मुझे सब मालूम है । वीणा के भाई ने मुझे बताया था कि जब वह और उसकी मां कई दिन से भूखे थे तो वीणा तुमसे रुपये लेकर खाना-दाना लाई थी । और उन रुपयों के बदले में इसने अपने को आपके पास बेच दिया था । कई दिन तक यह चलता रहा । परन्तु जब मदनमोहन को यह पता चला तो वह उद्विग्न-सा हो उठा । सौभाग्य से हमारे आश्रम का विज्ञापन उसके हाथ लग गया और उसने अपने को तथा वीणा को उस पतित अवस्था से बचा लिया ।

वीणा ने जब अपनी लज्जा की बात कमल के मुख से सुनी तो उस का मुख लाल हो उठा । कमल ने कहना जारी रखा, ‘मैं इसमें आपकी उदारता नहीं देखता । परन्तु मैं आपसे ही उदारता की आशा क्यों करूँ ? जिस संसार में आप रहते हैं वहां बिना कुछ लिये कुछ भी नहीं दिया जाता । वह पूँजीपतियों का समाज है । वहां हर व्यक्ति को हर क्षण प्रत्येक बात का मोल देना पड़ता है और गरीबों को उसी वस्तु का दाम अधिक देना पड़ता है जिसके लिए जितना अमीरों को देना होता है । आपने कुछ रुपयों का बदला मांगा और बदले में वह वस्तु मांगी जो अमूल्य है ।’

नवल ने कुछ भँपकर कहा, ‘मैं उसी वस्तु का तो ठीक दाम देने आया हूँ । मैं वीणा को अपने घर ले जाकर उसे अपनी पत्नी बनाकर रखना चाहता हूँ ।’

‘यह तो ठीक है । मैंने इस बात से आपको मना नहीं किया । मैंने तो यह कहा है कि आपका काम ऐसा है जिसको मैं पसन्द नहीं करता । आपने जूआखाना खोला हुआ है । यह किसी प्रकार भी वीणा जैसी लड़की के पति के लिए ठीक काम नहीं है ।’

बोणा ने उत्साहित होकर कहा, 'मैं इनसे कहती हूँ कि इस आश्रम में चले आयें। जैसे सब लोग परिश्रम करके खाते हैं, वैसे रहें।'।

'कमल बाबू ! और मैं इससे कहता हूँ कि इस आश्रम में सब गरीब लोग रहते हैं। जिन्हें बाहर के जगत में रोटी खाने को नहीं मिलती थी वह आप की और बलवीर की आय पर पलने के लिए आ बैठे हैं। मैं ऐसा नहीं कर सकता। जब मैं अपने परिश्रम से हजारों रुपये महीने पैदा कर लेता हूँ तो फिर आप पर बोझा क्यों बनूँ ?'

'प्रश्न तो, नवल बाबू यह है कि क्या यह तुम्हारी हजारों की आमदनी अन्याय और असत्य पर आश्रित नहीं, क्यों ?'

मेरी आय उतनी ही अच्छी है जितनी किसी सटोरिये की। जैसे सट्टे के सोदे करने के लिए नगर में कई चम्बर्स खुले हैं वैसे ही मेरा घर है। इसके अतिरिक्त क्या वह ठेकेदार जो सीमेंट की जगह रेत मिलाते हैं, वह अफसर जो बिना घूस लिये किसी का काम नहीं करते, वह सोदागर जो एक रुपये की वस्तु के लिए दस वसूल करते हैं मुझसे अधिक ईमानदार हैं ? मैं जो कुछ करता हूँ बहुत सोच-समझ कर कर रहा हूँ।'।

'मगर नवल बाबू' कमल ने कहा, 'यह उदाहरण तुम हमें क्यों देते हो। हम क्या इनको जानते नहीं ? हम समझते हैं कि यह सरमायादारी का अभिशाप है। हम इसे छोड़ने के लिए ही शहर के गन्दे वायु-मण्डल को छोड़कर यहां चले आये हैं। हम तो यह कहते हैं कि आप भी आइये। ईमानदारी से निर्वाह के लिए यहां पर्याप्त स्थान है।'।

'साहब आप नहीं जानते कि ईमानदारी से रहकर मैंने कितना कष्ट पाया है। मैं आपको बताता हूँ। हम दो भाई हैं। पिता नूरपुर जिला कांगड़ा में महाजनी करते हैं। मेरे बड़े भाई पूरे बनिया प्रकृति के हैं और अव्वल दर्जे के व्यापारी हैं। जब मैं अभी स्कूल में ही पढ़ता था कि उसने पिता के कान कतरने आरम्भ कर दिये थे। परिणाम यह हुआ था कि पिताजी मुझे मूर्ख गंवार समझने लगे थे। यहां तक कि जब मैं मैट्रिक

की परीक्षा में पास हुआ तो बड़े भाई ने कह दिया 'नकल उड़ाकर पास हो गया है।' मुझे नालायक को कॉलेज की पढ़ाई के लिए भेजना घम का अपव्यय हो गया। मेरा विवाह करना किसी लड़की का जीवन बरबाद करना माना गया। मुझे कोई दुकान कराकर देनी रुपये को खतरे में डालना माना गया। परिणाम यह हुआ कि मुझे घर से भाग आना पड़ा। मैं दिल्ली में आया और राय बहादुर की मोटर का क्लीनर बनकर रोटी कमाने लगा। मैंने मोटर ड्राइवरी सीखी और केशवदेव जैसे बेईमान अफसरों की ड्राइवरी करता रहा। मैं प्रत्यक्ष देखता था कि किस प्रकार रिश्तत ली जा रही है, परन्तु मुझे पचास रुपये महावार ही मिलते थे। कमल बाबू ! मैं जहां गया मैंने यही देखा कि ईमानदार के लिए पचास-साठ रुपये से अधिक कुछ नहीं। इस दुनिया में बेईमान लोगों के लिए सब कुछ है। मोटर ड्राइवरी के दिनों में मैंने अनेक व्यक्तियों की नौकरी की। और ऐसा कोई आदमी नहीं देखा जो ईमानदारी से धनी बना हो। साहब ! मैंने दस वर्ष तक इमानदारी और मेहनत से काम किया है और इस काल में रहने को मकान तक नसीब नहीं हुआ। खाने को समय नहीं था। पहनने को मालिक के उतरे कपड़े मिलते थे। आखिर मैंने इस शराफत की जिन्दगी को नमस्ते की और बहुत सोच-विचार कर यह जूआ खिलाने का काम आरम्भ कर दिया। इस काम के लिए बहुत कठिनाई से मैंने पचास रुपये इकट्ठे कर, फतहपुरी में एक मकान भाड़े पर लिया। आप सुनकर हैरान होंगे कि पहले ही महीने में मेरे लिये नौकरी कोई प्रलोभन नहीं रही। मेरी आय पांच सौ रुपये थी। इस काम को करते मुझे केवल तीन वर्ष हुए हैं और अब मैं अपनी मोटर कार रखता हूँ जिसको हांकने वाला कोई ईमानदार ड्राइवर है। मैंने दो सौ रुपये महीने का बंगला कर्जन रोड पर भाड़े पर लिया है। हजारों रुपये का सामान उसमें लगाया है। दिल्ली के बड़े-बड़े पुलिस अफसर मेरे कारोबार को जानते हैं मगर मैं हर रोज़ उन के मुख में मिश्री डालकर बचा रहता हूँ। मैंने कानून को विशेष रूप से पढ़ा है। जूए के

विषय में कानून की किताबें मेरे पास हैं और मैं उनका पढ़कर तथा दिल्ली के प्रसिद्ध वकील मिस्टर रामलुभाया सेठ से राय करके अपना व्यवहार बनाता हूँ। जब सब दुनिया ही बेईमानों से भरी है तो आखिर मुझे ही आप क्यों सुधारने के पीछे पड़े हैं।

‘जब मैं फतहपुरी में जूआखाना रखता था तो मेरी नज़र वीणा पर पड़ी। यह मेरी बैठक के पीछे के मकान में रहती थी। मैं इनकी गरीबी से परिचित था। एक दिन वीणा अपने मकान की छत पर बैठी किसी गम्भीर विचार में पड़ी थी। मैंने पांसा फेंका, पूछ लिया, “क्यों जी! हम आपके पड़ोसी हैं किसी बात की आवश्यकता हो तो हमें बताइयेन।”

वीणा ने अचम्भे में मेरी ओर देखा। मैंने फिर कहा, “मैं आपकी हालत को जानता हूँ। मैं कई दिन से आपकी सहायता करने का विचार कर रहा हूँ परन्तु मौका नहीं मिला।”

वीणा के मुख से निकल ही गया, “आप सच कहते हैं। यदि कल तक मां को कुछ खाने को न मिला तो वे मर जायंगी।”

मैंने जेब से दस रुपये का नोट निकालकर उसे दे दिया और कहा, “कल फिर मिलना मैं और बन्दोबस्त कर दूंगा। लड़ाई के जमाने में दस रुपये तो गरम तवे पर एक बूंद हो गई। अगले दिन सायंकाल वीणा मुझे मिली और उसने अपनी पूर्ण कथा सुनाई। उसने बताया कि कई दुकानदारों का भी उन पर कर्ज है। उसने मुझे यह भी बताया कि कोई डाक्टर हैं जा उसे पेशा करने की सम्मति देते हैं। मैंने उसे दस रुपये और दिये और बताया कि मैं अविवाहित हूँ और उससे विवाह कर लूंगा। इसके पश्चात् मेरा इससे सम्बन्ध हो गया। फिर एकाएक बीच मैं आप कूद पड़े। अब यह समझती है कि वह मेरी सहायता के बिना जी सकती है और अब मेरे साथ रहने से इन्कार करती है। मैं आज इसे कहने आया हूँ कि इसे मेरे साथ रहना चाहिए। मेरा इस पर अधिकार है और मैं अपने अधिकार को प्राप्त करने के लिए कोई कसर उठा न रखूंगा।’

कमल ने माथे पर स्थिरी चढ़ाकर कहा, 'मिस्टर नवल ! मैं आपसे कहे देता हूँ कि यदि आपने कोई जबरदस्ती की तो मैं अपनी पूरी ताकत से इसका विरोध करूँगा। यह मत समझना कि आपका पुलिस में रसूल है। दूसरे लोग भी वहाँ पहुँच रखते हैं।'

नवल हंस पड़ा और बोला, 'कमल बाबू आप समझने में भूल करते हैं। मैंने जबरदस्ती करने के लिए नहीं कहा; परन्तु मैं ऐसे ढंग जानता हूँ कि वीणा अपनी इच्छा से मेरे साथ चली चलेगी।'

कमल ने कहा, 'यह उसकी इच्छा है। मैं कुछ नहीं कहूँगा।'

इतना कहकर कमल घूमने के लिए चला गया। नवल अब कुएं की जगत पर बैठ गया और वीणा को आराम से समझाने लगा।

: ४ :

कमल जब सिर करके लौटा तो उसने देखा कि उसके भोंगड़े के सम्मुख आश्रम के सब लोग खड़े हैं। कमल ने जब उनके वहाँ एकत्रित होने का कारण पूछा तो मदनमोहन ने सिर झुकाये हुए कहा, 'कमल बाबू; वीणा चली गई।'

'गई? अपनी इच्छा से गई है या बल पूर्वक ले जाई गई है?'

'अपनी इच्छा से ही गई प्रतीत होती है। जब आप चले गये तो वीणा और नवल परस्पर बातें करते रहे। लगभग आधा घंटा पश्चात् नवल मुझे बुलाने आया। मैं जब वीणा के समीप गया तो वह बोली, 'भैया मैं जा रही हूँ।'

'मैंने कहा, 'वीणा सोच समझ लो।'

उसका उत्तर था, 'भैया सब सोच लिया है। मैं समझती हूँ कि आप पर अथवा आश्रम पर मुझे अब बोझ नहीं डालना चाहिए। मुझे जहाँ जाना चाहिए और जहाँ रहना चाहिए वहाँ जा रही हूँ।'

उससे आपके लौटने तक प्रतीक्षा करने को कहा गया तो वह बोली, 'कमल बाबू से मुझे डर लगता है और मैं अपने मन की बात भी उनसे

नहीं कह सकती। उनको मेरी "नमस्ते" कह दीजियेगा।'

इसके पश्चात् सब लोग आ गये और सबने उसे समझाया परन्तु वह अपने संकल्प पर दृढ़ रही और नवल की मोटर में जा बैठी।

मैंने अन्त में कहा, 'कमल बाबू तुमसे मिलने आयेंगे।''

तो बोली, "भैया ! मैं मित्रता करती हूँ उनको वहाँ न भेजना। मेरा सुख इसी में है कि मुझे इनके साथ जाने दिया जाय। कमल बाबू का मैं हृदय से मान करती हूँ और चाहती हूँ कि उनका कहीं अपमान न हो जाय।' फिर कुछ सोचकर बोली, 'अच्छा मैं उनको पत्र लिखूंगी।' 'बस नवल मोटर चलाकर ले गया।'

कमल इस घटना से विस्मय में स्तब्ध मूर्तिवत् खड़ा रह गया। उसकी वीणा से जो बातचीत उस दिन प्रातःकाल हुई थी और फिर नवल से जो बातचीत उसके सैर को जाने से पहले हुई थी, इन दोनों से उसे विश्वास हो गया था कि नवल अकेला ही लौट जायगा; परन्तु अब वीणा का अपनी इच्छा से नवल के साथ चले जाना सुनकर वह कुछ समझ नहीं सका। उसे विस्मय में खड़ा देखकर मुरली बोली, 'मैं जानती हूँ वह क्यों चली गई है?'

सब हैरानी में मुरली की ओर देखने लगे। मुरली ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'नवल बाबू ने वीणा को इतने आभूषण पहना दिये थे कि वह सिर से पांव तक पीली हो गई थी। उन आभूषणों के लोभ ने उसे जाने पर विवश कर दिया प्रतीत होता है।'

कमल हंस पड़ा और उसके मुख से निकल गया, 'स्त्री, स्त्री ही है। आभूषण, वस्त्र उसकी जान हैं।'

कमल ने अब मदनमोहन से कहा, 'भाई मदनमोहन ! बहन को एक न एक दिन तो सुसराल जाना ही था, चिन्ता की कोई बात नहीं।''

इसके उपरान्त सब भोजन करने भोजनालय में चले गये। कमल न तो वीणा की घटना को मन से निकाल दिया था, परन्तु दूसरे लोगों के मन पर वह अभी भी अंकित थी। और दिन की अपेक्षा आज सब गंभीर

बन रहे थे तथा स्वामाविक हंसी-मजाक नहीं हो रहा था। कमल ने इस शोक के आवरण को दूर करने के लिए बातें आरम्भ कर दीं।

‘मैं समझता हूँ कि वीणा को जाना हमें ऐसे ही समझना चाहिए जैसे आश्रम की एक लड़की का विवाह हुआ है और उसके लिए आश्रम की ओर से कुछ दहेज देने का निर्णय होना चाहिए।’

मदनमोहन को इस घटना से सबसे अधिक दुःख था। इस कारण उसने कहा, ‘कमल बाबू ! आश्रम का धन ऐसी पर व्यय करना अनर्थ होगा।’

‘मैं समझता हूँ कि वीणा का अपने लिए पति का चुनाव ठीक हो चाहे गलत, यह इस बात के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखता। एक लड़की को जो दहेज दिया जाता है वह एक प्रकार का पिता की सम्पत्ति में से उसका भाग होता है। यहां उसके पिता का स्थान आश्रम ने ले रखा है। साधारण परिवारों में तो लड़की परिवार में एक खर्च करने वाला ही अंग होती है। हमारे आश्रम का प्रत्येक सदस्य आश्रम में लाभकारी कार्य करता है। यहां तक कि सोहनलाल अपनी स्कूल की पढ़ाई के साथ आश्रम में भी काम करता है। इसी प्रकार वीणा भी आश्रम के जीवन को सुखी और सुविधायुक्त बनाने में परिश्रम करती थी। अतः उसको उचित दहेज मिलना ही चाहिए।’

वीणा की मां ने कहा, ‘कमल भैया ! हम क्या दे सकेंगे। जहां हजारों नित्य आते जाते हैं वहां आपका दिया सागर में बूंद भी नहीं होगा।’

‘यह मैं जानता हूँ मां जी ! इस पर भी हमें अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार देते हुए लज्जा अनुभव करने का कोई कारण नहीं। यदि उसे यह पसन्द न हो तो लौटा सकती है अथवा किसी को दान-दक्षिणा में दे सकती है।’

इस समय बलबीर, जिसे आने में देरी हो गई थी, चीके में आ

पहुँचा और हाथ धोकर अपने स्थान पर बैठकर कहने लगा 'वीणा मुझे मार्ग में मिली है। कच्चे मार्ग में ही मोटरें जब एक दूसरे के पास से गुजरने लगीं तो वीणा ने हाथ के संकेत से रुकने को कहा। जब मैं माटर से उतरकर उनकी मोटर के पास गया तो बोली, "कमल बाबू से कह देना कि मैं इच्छा से ही जा रही हूँ। उनसे मेरी ओर से क्षमा माँगना कि मैं उनकी सम्मति का उल्लंघन कर रही हूँ। मैं इस सबका कारण लिखने का यत्न करूंगी।"

'मैं कुछ चकित अवश्य हुआ था परन्तु नवल बाबू ने जब कहा कि वह वीणा से सत्य ही प्रेम करता है और उसे अपनी जान से भी अधिक सुखी रखेगा तो मैं निश्चिन्त हो गया हूँ।'

कमल ने अपना प्रस्ताव फिर रखा कि वीणा को आश्रम का ओर से कुछ दहेज के रूप में देना चाहिए। इस पर बलवीर ने कहा, 'दहेज का शब्द बहुत बदनाम हो चुका है। इस पर भी मैं आश्रम की ओर से कुछ भेंट देने को ठीक ही समझता हूँ।' अंत में यह निश्चय हो गया कि दो सौ रुपये की कीमत की कोई वस्तु भेंट में दी जाय। कमल ने अगले दिन एक चांदी की सद्कची और उसमें तुलसीकृत रामायण रखकर भेज दी। साथ ही एक चिट्ठी लिख दी। उसमें लिखा था—
'प्रिय बहन वीणा, नमस्ते।

तुम्हारा संदेश मिला था। मुझसे क्षमा माँगने की आवश्यकता नहीं थी और न ही तुम्हारे चले जाने से मुझे विस्मय हुआ है। लड़कियों को विवाह कर लेने का पूर्ण अधिकार है और इसी अधिकार का तुमने प्रयोग किया है। अपने पति का चुनाव करना तुम्हारी निजी बात है। उसमें हम हस्ताक्षेप नहीं कर सकते। मैंने अपनी सम्मति नवल बाबू के विपरीत दी थी। इस कारण नहीं कि मुझे नवल बाबू से कुछ द्वेष था। यों तो मैं, इस बीसवीं शताब्दी में, धन-लोलुप समाज में किसको अच्छा और किसको बुरा कहूँ? मैंने तो जो कुछ कहा था वह एक सिद्धान्तात्मक बात थी।

हम आश्रम निवासियों ने सर्व सम्मति से यह निश्चय किया है कि आश्रम की ओर से तुम्हें तुम्हारे विवाह के अवसर पर यह भेंट दी जाय। हमें पूर्ण आशा है कि अपनी अमीरी में गरीब साथियों की यह छोटी-सी भेंट अस्वीकार न करोगी हम सब हृदय से चाहते हैं कि तुम और नवल बाबू चिरकाल तक सुख-शान्तिपूर्वक निर्विघ्न जीवन व्यतीत करते रहो।

हम सब, और विशेष रूप से तुम्हारी माता, भाई और भावज तुम्हें आशीर्वाद देते हैं। मुरली तुम्हारे जाने से बहुत उदास है। परन्तु मैं समझता हूँ वह शीघ्र ही इसको सहन कर लेगी। नवल बाबू को मेरी नमस्ते कहना।

—तुम्हारा आश्रम-साथी
कमल'

चिट्ठी डाक से और भेंट इन्क्यूर्ड पासल द्वारा भेजी गई थी। वीणा ने उसके मिलते ही उत्तर दिया—

‘पूज्य कमल बाबू, सादर प्रणाम।

आपने चिट्ठी डालकर मेरा भय, कि आप मुझसे रुष्ट होंगे, मिटा कर मेरे मन से भारी बोझा हटा दिया है। इसके लिए मैं जन्म भर आपके अहसान को भूल नहीं सकती। आप सबकी यह भेंट मुझे संसार की सब वस्तुओं से प्यारी है। मैं कृतघ्न नहीं हूँ। मूर्ख होऊँ तो होऊँ पर, किये को भूलने वाली मैं नहीं। आपने मुझे और मेरे भाई को ठीक समय पर सहायता देकर जो मुझ पर अहसान किया है वह विस्मरण नहीं किया जा सकता। इसी से मुझे भय था कि आप नाराज हो जायंगे क्योंकि मैंने आपकी सम्मति का उल्लंघन किया था। मैं कई दिन से आपको पत्र लिखने की सोच रही थी, परन्तु साहस न होता था। हर रोज़ कलम-कागज़ लेकर लिखने बैठती थी और कुछ लिख नहीं सकती थी। आज

आपकी भेंट और स्नेहभरी चिट्ठी ने मेरे मन में इतना उत्साह भर दिया है कि मैं यह पत्र लिखने का साहस कर रही हूँ ।

मैं अनुभव करती थी कि मेरे नवल जी से पूर्व सम्बन्ध के कारण मैं उनको छोड़कर जिससे भी विवाह करना चाहती वह मुझे उतने आदर से न रखता जितना कि नवल बाबू रख सकते हैं । नवल बाबू से मेरा सम्बन्ध प्रेम का परिणाम नहीं था । इस पर भी वे इतने खराब नहीं हैं जितना कि उनका काम सिद्ध कर सकता है ।

आप जब कुछ के समीप उनसे बात-चीत करके चले गये तो उन्होंने मुझसे पूछा, कि क्या मैं जीवन भर अविवाहित रहना चाहती हूँ ? मेरा उत्तर था कि यह बहुत कठिन तपस्या होगी । शायद मैं इसे निभा न सकूँ । इस पर उन्होंने फिर पूछा कि उनको छोड़कर मैं जान-पहचान वालों में, किसको पसन्द करती हूँ ? आप मुझे क्षमा करेंगे मैं अपने मन की बात कह रही हूँ और मैंने अपने हृदय की बात कही थी कि मैं उन से कहीं अधिक आपको अच्छा समझती हूँ और आपसे विवाह कर उन के लाखों से भी अधिक प्रतिष्ठा आपकी गरीबी में मानूंगी । मैंने यह कहा तो, परन्तु वे भी और मैं भी इस इच्छा की पूर्ति की असम्भवता को जानते थे । इस कारण नवल बाबू ने कहा कि अब तो आप मुरली से प्रेम करते हैं और फिर मुरली को परास्त करना मुझे शोभा नहीं देता । जितनी देर मैं आश्रम में रही हूँ मुरली मुझसे सबसे अधिक स्नेह करती रही है । इस कारण इस विचार की भयंकरता का ज्ञान मुझे नवल बाबू ने कराया और मैं उनके साथ चलने को तैयार हो गई । नवल बाबू तो चाहते थे कि आपके लौटने तक हम वहां ठहरें; परन्तु मुझे भय था कि आपको सम्मुख देखकर मैं फिर अपने विचार से डिग न जाऊँ । अपनी मन की, आपके प्रति अवस्था में मैं कहीं आप और मुरली के भीतर काँटा न बन जाऊँ, इस भय से मैं बिना आपका आशीर्वाद लिये भाग खड़ी हुई । मार्ग में सौभाग्य से बलवीर जी मिल गये और मैंने उनके हाथ आपके लौटने की प्रतीक्षा न करने के लिए क्षमा माँग ली ।

अब आपका आशीर्वाद मिला है और मैं फूली नहीं समाती। मेरी सब आश्रमवासियों को हाथ जोड़कर प्रणाम कह दीजियेगा। माताजी, भाई और स्नेहमयी भाभी को चरण-वन्दना कहना। मुरली कभी आपके साथ दिल्ली आवे तो उसे मिलने के लिए लाने की कृपा करना।

आपकी भेंट मैंने अपने कमरे में अपनी मेज़ पर रखी है और आज से प्रण कर रही हूँ कि नित्य आपकी भेजी रामायण वा पाठ किया करूंगी।

नवल बाबू को मैंने यह पत्र दिखा दिया है और वे आपको नमस्ते कहते हैं। आपकी भेंट के लिए धन्यवाद भेजते हैं और आशा करते हैं कि कभी-कभी मेरे साथ आश्रम में आने से आप उन्हें मना नहीं करेंगे।

—आपकी स्नेहाभिलाषिणी
बीणा'

: ७ :

छाया का स्त्रियों ने काम फैलता जा रहा था और वह वकील राम-लुभाया सेठ की सहाय्यता से देहली शहर और उससे बाहर भी विख्यात हो रही थी। कभी-कभी समाचार पत्रों में छाया देवी के काम की भूरि-भूरि प्रशंसा भी निकलती रहती थी। यह प्रशंसा के लेख प्रायः मिस्टर सेठ की लेखनी से लिखे होते थे। यह इन्हीं लेखों का परिणाम था कि छायादेवी को नित्य ढेरों पत्र आने लगे थे। प्रायः दुखी स्त्रियाँ अपने दुख का कथा लिखकर उसे भेजा करती थी। इन चिट्ठियों को पढ़कर छायादेवी दांत पीसा करती और दुगुने उत्साह से काम में लग जाती थी।

साथ ही छाया देवी यह भी जानती थी कि उसकी ख्याति के साधन मिस्टर सेठ हैं। जहाँ समाचार पत्रों द्वारा मिस्टर सेठ ने छाया देवी को सर्व साधारण में विख्यात कर दिया था वहाँ चाय पार्टियों और डिनरों ने छाया देवी को दिल्ली की कही जाने वाली उच्च समाज (High-class) में उसे चमका दिया था। और इसके लिए छाया को भारी मूल्य

झुकाना पड़ा था ।

एक दिन गाजियाबाद में एक उत्सव में व्याख्यान देकर मिस्टर सेठ और छाया देवी लौटे तो गरमी कुछ अधिक अनुभव कर रहे थे । मिस्टर सेठ ने कहा, 'छाया देवी आज तो गरमी कड़ी है । चलो आज क्लब के तालाब में स्नान करने चलें ।'

'पर मुझे तो तैरना नहीं आता ।'

'वाह, फिर तो जरूर चलिये । मैं सिखा दूंगा ।'

दोनों तैयार हो गये और 'चैल्म्स फोर्ड क्लब' के तालाब पर जा पहुँचे । मिस्टर सेठ और छाया देवी ने क्लोजेट में बदिंग ड्रेस पहनी । जब बदिंग ड्रेस में छाया को मिस्टर सेठ ने देखा तो वह चका-चौंध हो देखता रह गया । छाया ने उसे इस प्रकार अपनी ओर घूरते देखा तो पूछा, 'क्या देखते हैं आप ?'

मिस्टर सेठ ने कहा 'स्प्लेंडिड ।'

'क्या ?'

'आपका सौन्दर्य ?'

'आपके लिए तो सब स्त्रियाँ ही सुन्दर हैं ।'

'और उन सुन्दरियों में तुम अनुपम हो । छाया !।'

'चलिये, चलिये....'

मिस्टर सेठ तालाब में कूद पड़ा । छाया तालाब में जाने से भिन्न-कती थी । मिस्टर सेठ ने कहा, 'आइये न । आप तो संसार का उद्धार करने जा रही हैं और यह छोटा-सा तालाब भी पार करना नहीं जानतीं । छाया बहुत धीरे से तालाब में उतर गई और जब उसके पाँव भूमि में नहीं लगे तो वह बेतहाशा हाथ पाँव मारने लगी । सेठ ने हंसते हुए उसे पकड़ लिया और वह भय के मारे उससे चिपट गई । मिस्टर सेठ ने उसे जोर से अपने साथ लगाये रखा । एक क्षण के पश्चात् छाया को यह ध्यान आया कि वह मिस्टर सेठ से अनुचित ढंग से चिपटी हुई है । उसने मिस्टर सेठ के गले से हाथ निकाल उसकी बांह को पकड़कर कहा,

‘अब सिखाइये न । कैसे तैरूं ?’

मिस्टर सेठ ने दोनों हाथ बिछा दिए और कहा, ‘इन पर लेट जाओ ।’ छाया उन पर लेट गई । अब सेठ ने हाथों को पानी के नीचे कर छाया को कहा कि हाथ पाँव मारो । जब वह पानी में नीचे जाने लगती थी वह हाथों के सहारे से ऊंची कर देता था । आधा घंटा तक तैरने के पश्चात् छाया बिना आश्रय के अपने को पानी की सतह पर रखने में सफल होने लगी थी ।

छाया तैरने का यत्न करती-करता थक गई । सेठ साहब ने थकावट दूर करने के लिए तथा अधिक समय तक स्नान करने की सरदी मिटाने के लिए थोड़ी ह्लिस्की पीने का प्रस्ताव रख दिया । छाया ने इसे सहर्ष स्वीकार किया । अब वह शराब पीने से इतनी नहीं डरती थी जितनी कि पहले दिन डरी थी । दोनों तालाब से निकलकर बगल के बरामदे में, जहाँ इसी प्रयोजन के लिए मेज लगी थी, जा पहुँचे । जब पीने लगे तो थोड़ी से संतोष नहीं हुआ और पैंग-पैंग करते-करते एक बोतल समाप्त कर दी । इसके पश्चात् क्लोजेट में जा कपड़े पहन धर को रवाना हो गए । मिस्टर सेठ छाया को अपने घर ले गया ।

: ८ :

छाया का पिता दिल्ली के बाहर गया हुआ था । माया की घटना के पश्चात् पं० केशवदेव ने यह उचित समझा कि भृगुदत्त को कहीं बाहर काम ले दिया जाय । अतएव यत्न करके उसने उसे जबलपुर में एक ठेका ले दिया और अब लड़के का वहाँ काम जारी कराने के लिए दफ्तर से छुट्टी लेकर गया हुआ था । छाया पिता के घर न रहने से अधिक स्वतंत्रता अनुभव कर रही थी और बिना मां को बताये घर से आना-जाना तो उसका पहले से ही स्वभाव था । इस पर भी वह इतनी देर करके कभी नहीं आई थी जितनी इस दिन ।

छाया की मां ने रात का खाना अकेले खाया और बाद में सो गई ।

लगभग रात के डेढ़ बजे उसे कुछ खटका सुनाई दिया और वह चौककर उठ खड़ी हुई। ध्यान से सुनने पर उसे ऐसा भास हुआ कि छाया के कमरे में कोई है। अब उसे स्मरण हो आया कि छाया अभी तक नहीं आई थी। उसने बिजली का बटन दबाकर रोशनी की ओर घड़ी में समय देखा। डेढ़ बजा था। वह उठकर छाया के कमरे में देखने आई। छाया सोने की तैयारी में कपड़े उतार रही थी। छाया को मां का आना सुनाई नहीं दिया और वह गुनगुनाती हुई कपड़े उतार रही थी—

मैं जानती न थी हूँ प्रेम चीज क्या

जान लिया तो मैं हूँ सिहर उठी।

आकाश में जब चांद निकल आया

चमक उठी वसुधा नव शृंगार पा

बरस गई सर्वत्र सकल सुख-सम्पदा

अब पीय मिलन को मैं हो निडर उठी

जान लिया है तो मैं सिहर उठी ॥

छाया कपड़े उतारती जाती थी और फिर उन्हीं कपड़ों को पहनती जाती थी। उसके पाँव भी स्थिर नहीं थे। कई मिनट तक उसकी माँ यही सब कुछ देखती रही। वह हैरान थी और अब तक यह न समझ सकी थी कि उसे क्या हो गया है। छाया ने ब्लाउज उतारा था स्लीपिंग सूट पहनने के लिए और पुनः वही ब्लाउज पहन लिया। जब पहन चुकी तो उसे अपनी भूल का ज्ञान हो गया और खिलखिलाकर हंस पड़ी। मां को इससे क्रोध चढ़ आया और क्रोध में बोल उठी, 'छाया !'

छाया ने विस्मय में घूमकर मां की ओर देखा। मां को क्रोध में दरवाजे के पास खड़ा देखकर घूमती हुई पूछने लगी, 'ममी ! अभी सोई नहीं तुम ?'

इतना कहकर वह लुढ़कती और संभलती हुई मां के समीप आ खड़ी हुई और कहने लगी, 'ममी डियर ! जाआ सो जाओ।'

'क्या तुम्हें नींद नहीं आई ?'

इस समय छाया का मुख समीप होने से उसे शराब की बवबू भा गई। वह माथे पर त्योरी चढ़ाकर बोली, 'छाया ? शराब पी है तुमने ?'

'शराब ! हां शराब। ज़रा चखी है।'

'बहुत खराब काम किया है तुमने। मिस्टर सेठ बहुत खराब आदमा मालूम होता है।'

'ममी !' छाया ने खड़े न रह सकने के कारण पलंग पर बैठते हुए कहा, 'ममी ! तुम्हें हमारी बातों में दखल नहीं देना चाहिए।'

'क्यों ? मैं मां नहीं तुम्हारी क्या ?'

'ममी ! तुम सब कुछ हो, पर अतीत काल की हो। वर्तमान हमारा है; हम युवक तथा युवतियों का। हा.....हा.....हा.....।'

'क्या बक-बक करती हो ?'

'ममी !'

छाया की मां छाया का रुद्र रूप देखकर डर गई। छाया पुनः पलंग से उठ खड़ी हुई थी और बाहर निकल जाने को तैयार हो गई थी। मां ने छाया को पकड़ा और मिन्नत का भाव प्रकट करते हुए कहा, 'छाया ! अब सो जाओ.....लो मैं तुमको कपड़े पहनने में सहायता देती हूं।'

छाया का क्रोध जाता रहा और वह मां की सहायता से कपड़े उतारने लगी। उतारते-उतारते वह फिर बड़बड़ाई, 'मिस्टर सेठ को तो आता ही नहीं था।' इतना कहकर वह फिर हंसने लगी।

मां ने पूछा, 'क्या नहीं आता था ?'

सिर हिलाते हुए कुछ सचेत होकर वह बोली, 'ओ ममी ! तुम हो....कुछ नहीं.....कुछ.....नहीं।'

मां ने उसे स्लीपिंग सूट पहनाया और पकड़कर पलंग पर लिटा दिया। पश्चात् कमरे के बाहर जा दरवाजा बन्द कर दिया।

प्रातःकाल जब दरवाजा खोला तो छाया खुराटे भर रही थी। मां ने हिलाया और कहा, 'छाया उठोगी नहीं ?'

छाया ने 'ऊंह' करके करवट बदली और पुनः सो गई। मां ने फिर

ग्यारह बजे उठाया। छाया उठी तो सही परन्तु उसने उठते ही यह कहा कि उसके सिर में दर्द है और फिर लेट गई। मां ने एक बजे फिर उठाया। इस बार अधिक सफलता मिली। छाया उठकर शौचादि में लग गई। दो बजे के लगभग वह स्नानादि से छुट्टी पा खाने के लिए तैयार हुई ही थी कि कोठी के बाहर से मिस्टर सेठ की मोटर के हार्न का शब्द सुनाई दिया। छाया उठ खड़ी हुई और मां से बोली—

‘मैं अभी आई, ममी!’ इतना कहकर वह कोठी के बाहर निकल गई। दो मिनट में लौटकर वह मां से बोली, ‘मेरा खाना आज बाहर है। मैं सायंकाल को घर आऊंगी।’

इतना कहकर वह अपने कमरे में जाकर बाहर जाने योग्य कपड़े पहनने लगी।

: ६ :

आज छाया ने लम्बी पेंट पहनी थी और ऊपर खुले कालर की तथा लम्बी बाहों वाली कमीज। सिर से नंगी थी। पांव में बूट थे। जाते समय विस्मय में अवाक् मुख मां को, ‘ममी! चीयरो!’ कहकर कोठी से बाहर निकल गई। मिस्टर रामलुभाया सेठ स्वयं मोटर चला रहा था। छाया उसके पास जा बैठी। मिस्टर सेठ ने मोटर स्टार्ट करते हुए पूछा,

‘छाया! रात तुम्हारी माँ तो अवश्य नाराज हुई होंगी?’

‘कुछ कहती जरूर थीं। पर मुझे पूरा-पूरा होश नहीं था। इसलिए याद नहीं कि क्या कहती थीं।’

‘और अब भी कुछ नहीं कहा?’

‘अभी तो मैं सोकर उठी थी। स्नानादि करके खाने के लिए बैठा ही थी कि आप आ गये।’

‘ओह! तब तो मैं ही अच्छा रहा। दस बजे नींद खुल गई थी। कई दिन से काम-धन्धा कुछ नहीं कर रहा न? आपके साथ जलसों में जाऊँ या कचहरी। इस कारण आज एक जगह से दो हजार कमाकर

ला रहा हूँ ।’

‘दो हजार ? कोई बड़ा मुकद्दमा होगा ?’

‘मुकद्दमा नहीं । पर तुम छोड़ो इस बात को । मैं चाहता हूँ इस दो हजार में से एक हजार तुम पर अवश्य खर्च कर दूँ । चलो आज बाजार करें ।’

‘पर मुझे तो भूख लगी है ।’

‘हां, हां ; खाने के बाद ।’

दोनों होटल में खाने चले गये । वहां से निकलकर मिस्टर सेठ छाया को दरिबे में ले गया और वहां आभूषण खरीदने के लिए आग्रह करने लगा । छाया ने एक दो बार तो मना किया ; परन्तु मिस्टर सेठ ने कहा, ‘इतना तो मेरा कहना मानना ही होगा ।’

छाया गले के हार देखने लगी । इसी समय छाया की सहेली उपमा, अपनी मां और एक युवक के साथ उसी दुकान पर आ पहुची । छाया उसे देखकर खुशी से कूदती हुई बोली, ‘ओह उपमा ! हाऊ डू यू डू ?’ इतना कह छाया उपमा से गले मिली ।

उपमा ने पूछा, ‘कैसे आई हो छाया ?’

‘एक नैकलेस लेना है । और तुम ?’

उत्तर उपमा की मां ने दिया । ‘यह भी कुछ लेने आई हूँ । इसका विवाह है न ।’

इसके आगे उपमा ने मां के मुख पर हाथ रखकर कहने से रोक दिया । इस पर भी छाया खिलखिलाकर हंस पड़ी । उपमा की मां भी हंस पड़ी और साथ का युवक भी हंस पड़ा । उपमा की मां ने छाया को फिर कहा, ‘विवाह ६ तारीख का है । तुम जरूर आना ।’

‘जरूर आऊंगी ।’ छाया ने उत्तर दिया, ‘चाची कहां भेज रही हो उपमा बहन को ?’

‘यहीं दिल्ली में ही रहेगी ।’ आगे कुछ कहना चाहती थी ; पर साथ खड़े नवयुवक की ओर देखकर चुप हो गई । छाया इसका अर्थ समझ

गई और अपने संदेह को पक्का करने के लिए पूछने लगी, 'हमारे जीजा ...'।'

उपमा की मां ने कहा, 'हां आप ही हैं। लाला ब्रजकृष्ण हैं न, उन्हीं के सुपुत्र हैं।'

उपमा का मुख लज्जा से लाल हो रहा था और वह इसका बदला छाया से लेना चाहती थी। परन्तु अपनी मां का ध्यान दूसरी ओर करने के लिए बोली, 'मां जल्दा करो न। अभी कपड़े की दुकान पर भी तो जाना है।'

उपमा की मां आभूषण देखने लगी 'नैकलस' जो छाया देख रही थी। देखने लगी। एक जो सबसे बढ़िया प्रतीत होती थी, उपमा की मां ने उसका दाम पूछा। सराफ ने बताया 'बारह सौ अस्सी रुपया।' मां ने उपमा के मुख की ओर देखा। उपमा ने सिर हिला दिया अर्थात् इन्कार कर सराफ से कहा, 'कोई हलकी चीज़ दिखाइए।'

छाया ने मिस्टर सेठ की ओर देखा। इस पर मिस्टर सेठ ने वह हार उठा लिया और कुछ देर नीचे ऊपर करके देखने के पश्चात् छाया को कहा, 'ज़रा पहनकर देखो न।'

छाया ने हार गले में डाल लिया। मिस्टर सेठ ने देखकर कहा, 'बहुत फबता है।'

इसके पश्चात् सेठ ने जेब से सौ-सौ रुपये के तेरह नोट निकालकर सराफ को दे दिये। सराफ ने बारह सौ अस्सी रुपये की रसीद देकर शेष बास रुपये मिस्टर सेठ को वापिस कर दिये।

उपमा उठ खड़ी हुई और मां से बोली, 'मां, चलो पहले कपड़ा देख लें।'

छाया इस बात का अर्थ नहीं समझी। मां उठ खड़ी हुई थी परन्तु साथ आये युवक ने धीरे से उपमा को कहा, 'उपमा देवी! गरीबी से लज्जा आती है तुम्हें?'

उपमा का मुख लाल हो उठा और बिना एक शब्द भी और कहे वह

पुनः बैठ गई और फिर आभूषण देखने लगी। छाया सेठ साहब से इधर-उधर की बातें करते हुए वहीं खड़ी रही। वह देखना चाहती थी कि उपमा विवाह के लिए कितने दाम के आभूषण खरीदती है। उपमा ने अपने भावी पति की ताड़ना से लज्जित हो पूर्व निश्चयानुसार सात सौ रुपये में एक लाकेट, चार चूड़ियां, एक नाक की कील, तीन अंगूठियां और बाकी के पांच के लच्छे खरीद लिए। रुपये वह युवक देने लगा था कि छाया एकाएक उठ खड़ी हुई और उपमा तथा उपमा की मां को 'नमस्ते' करके दुकान के बाहर निकल गई।

: १० :

छाया मार्ग में मिस्टर सेठ से बोली, 'बहुत ही गरीब आदमी प्रतीत होते हैं।'।

मिस्टर सेठ ने उत्तर नहीं दिया। इस पर छाया ने पूछा, 'परन्तु आपने कहा था कि एक हजार खर्च करना है।'।

'इसमें क्या फरक पड़ जायगा। यदि दाव चला तो अभी और मिल जायेंगे।'।

'दाव चला ? इसके क्या अर्थ हैं ?'

'बात यह है छाया ! कि मुझे आज कुछ रुपये की जरूरत था। एक तो मैं आज तुम्हें कुछ भेंट करना चाहता था दूसरे मुझे अपने मुंशी का वेतन और होटल वाले का बिल देना है। मेरा स्वभाव है कि इन बातों के लिए मैं बैंक से नहीं निकलवाया करता। सो मैं नवल की कोठी चला गया था और दो हजार ले आया हूं आज।'।

'उधार ?'

मिस्टर सेठ ने हँसते हुए कहा, 'उधार नहीं ! जीतकर। वहां जूझा होता है।'।

'तो आप जूझा भी खेलते हैं ? बहुत खराब आदमी हैं आप।'।

'छाया इसमें कुछ भी खराबी नहीं। हम शराब पीकर अथवा

बेहोशी की हाखत में नहीं खेलते । सब बात साफ हाती है । कोई धोखा-फरेब नहीं होता । बड़े-बड़े अफसर और नगर के रईस आदमी वहां खेलने आते हैं । देखो । पांच महीने का मुंशी का वेतन पांच सौ देना है और होटल का बिल साढ़े चार सौ रुपया है । सो मुझे इस समय अढ़ाई सौ रुपया और चाहिए । आज मेरा सितारा तेज है । मैं अभी वहां पहुंचूंगा और यह कमी पूरी करने का यत्न करूंगा ।’

‘और यदि कहीं हार हो गई तो ?’

‘मेरा मन कहता है कि नहीं होगी । देखो छाया ! रात में तुम्हें पाया है । आज प्रातः दो हजार जीता है । ऐसे उच्च भाग्य के समय से लाभ न उठाना मूर्खता है ।’

मिस्टर सेठ की मोटर दरीबे के बाहर चांदनी चौक में खड़ी था । इस समय वे दोनों वहां पहुंच गए थे । मोटर में सवार होकर वे कर्जन रोड की ओर चल पड़े । मार्ग में छाया ने पूछा, ‘अब किधर चलियेगा ?’

‘मैं तो कर्जन रोड नवल की कोठी पर जा रहा हूं । देखो, कोई दाव लग जाए तो । चलो न तुम भी ज़रा तमाशा देखना ।’

‘मुझे वहां जाने में डर लगता है ।’

‘यह भी “प्रेजुडिस” है । एक बुद्धिमान् व्यक्ति को इनसे बाहर निकल आना चाहिए ।’

छाया चुपचाप सोचती रही । रामलुभाया सेठ मोटर भगाता हुआ कर्जन रोड पर नवल के बंगले में जा पहुंचा ।

नवल का ढंग दूसरे जूआ खिलाने वालों से कुछ भिन्न था । वह अपना नियमानुकूल दफ़्तर रखे हुए था । जब कोई आदमी उसके पास इस मतलब के लिए आता था तो वह उसे अपने दफ़्तर में ले जाता था । अपरिचित व्यक्ति बिना किसी पूर्व परिचित की सिफारिश के वहां खेल नहीं सकता था । जब परिचय की बात हो गई तो फिर नवल बाबू पूछते, ‘आपको किसी भी आदमी से खेलने में आपत्ति तो नहीं ?’

इसके उत्तर में जूआ खेलने वाला बताता कि वह अमुक आदमी से

खेलेगा, अथवा केवल एक से खेलेगा या जो कोई भी आजाय उससे । इन सब बातों का निश्चय हो जाने के पश्चात् यह फैसला होता कि किस शर्त पर और किस चीज़ से जूआ खेला जायगा । प्रायः लोग ताश से खेलना पसन्द करते थे । तब नवल मेज़ के दराज़ में से एक नया ताश का सैट निकालकर मेज़ पर रख कहता, 'एक रुपया आठ आने तो इसके लिए दे दीजिये । पांच-पांच रुपये प्रति खेलने वाला मकान इत्यादि का भाड़ा रख दे और नकद कम-से-कम पांच-पांच सौ रुपया ज़मानत दोनों पक्ष वाले जमा करा दें ।'

इसके होने के पश्चात् यदि केवल दो व्यक्ति खेलने वाले होते तो दोनों को एक पृथक् कमरे में बन्द कर दिया जाता । प्रायः वीणा दोनों में मध्यस्थ बन उनके पास बैठ जाती । ताकि किसी प्रकार का अनियमित कार्य न हो सके और जब बाजी जमा की हुई जमानत से ऊपर जाने लगती तो वीणा उन्हें और जमानत जमा कराने के लिए कहती । यदि कोई विश्वस्त आदमी हो और उसके पास धन न हो तो नवल उसे रुपया उधार देकर उनसे 'स्टाम्प' लिखवा लेता और तब फिर खेल आरम्भ हो जाता ।

नवल ने अपने को रुपया उधार देने वाला विख्यात भी कर रखा था ।

जब मिस्टर सेठ छाया सहित नवल के दफ्तर में पहुंचा तो नवल के अचम्भे का ठिकाना न रहा । वह छाया के पिता के यहां मोटर ड्राइवरी का काम कर चुका था । छाया ने भी उसे पहचान लिया था, परन्तु दोनों ने अपना पूर्व परिचय प्रकट करना उचित नहीं समझा । वहाँ एक भद्र पुरुष पहले ही बैठे थे । छाया और सेठ को आया देख नवल ने उठकर उनका स्वागत किया और दफ्तर में ले जाकर बैठा दिया । दो चार इधर-उधर की बातें होने के पश्चात् नवल ने मिस्टर सेठ से पूछा, 'क्या अभी और किस्मत आजमाई करने का इरादा है ?'

'सुबह वाला तो सब समाप्त हो गया है ।'

‘तो यह साहब तैयार हैं।’ इतना कहकर नवल ने दफ्तर में पहले से बैठे आदमी की ओर संकेत कर दिया।

‘मुझे मंजूर है।’

‘क्यों साहब?’ नवल ने उस आदमी से पूछा।

‘तैयार हूँ।’

इतना कहकर उस आदमी ने पाँच सौ पाँच रुपये निकालकर नवल की मेज़ पर रख दिये। मिस्टर सेठ ने भी इतना ही रुपया नवल के हाथ में देते हुए कहा, ‘ताश नहीं दीजियेगा क्या?’

‘हां!’

इस पर डेढ़-डेढ़ रुपया दोनों ने और निकालकर दे दिया। अब मिस्टर सेठ ने उससे पूछा, ‘यह देवी जी भी देखेंगी। आप को आपत्ति तो नहीं है?’

‘मुझे प्रसन्नता होगी।’

नवल इन तीनों को लेकर कोठी के भीतर गया। वहां वीणा को, जो ड्राइंग रूम में बैठी थी, साथ लेकर एक कमरे में चला गया। और एक नया ताश का पैकट इनके हवाले कर बाहर से दरवाजा बन्द कर पुनः अपने दफ्तर में आ गया।

भीतर सेठ और छाया मेज़ के एक तरफ बैठ गये और वह पुरुष मेज़ के दूसरी तरफ। वीणा दोनों के बीच एक कुर्सी पर हाथ में पेंसिल कागज लेकर बैठ गई।

ताश बांटने की बारी सेठ की आई। कार्ड बांटने के पश्चात् शर्त तय हो गई। उस पुरुष ने कहा, ‘पचास रुपया।’

सेठ का उत्तर था, ‘मंजूर।’

कार्ड उठाये गए। सेठ हार गया। वीणा ने सेठ के नाम पचास रुपए लिख दिये। इस प्रकार खेल आरम्भ हो गया। दस मिनट में सेठ पाँच सौ हार गया। सेठ ने अपने सामने बैठे आदमी से पूछा, ‘क्यों साहब और जमा करा दूँ?’

‘नहीं बस ।’ उसका उत्तर था

मिस्टर सेठ ने कहा, ‘अभी तो काम ज़रा गरम होने लगा था ।’

उस आदमी ने मुस्कराते हुए कहा, ‘आपसे नहीं । यदि यह देवीजी खेलें तो तैयार हूँ ।’ इतना कहकर उसने छायादेवी की ओर संकेत कर दिया ।

मिस्टर सेठ ने छाया की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा । छाया ने इंकार कर दिया । परन्तु मिस्टर सेठ ने छाया देवी को आग्रह करके कहा, ‘छाया देवी एक दाव तो लगाओ । पाँच सौ से अधिक नहीं खेलना ।’

छाया चुप रही । मिस्टर सेठ वीणा को ले बाहर दफ्तर में जा पाँच सौ रुपया जमा कर आया । अब ताश के पत्ते बांटने पर छाया की बारी काँड बांटने की आई । छाया ने काँड बाँटे । उस आदमी ने फिर पचास की शर्त लगाई । छाया ने कहा, ‘पचास नहीं सौ । ताकि शीघ्र ही बात समाप्त हो ।’

इस पर उस आदमी ने कह दिया, ‘यदि जल्दी है तो पाँच सौ’ । मिस्टर सेठ छाया को रोकना चाहता था, परन्तु उसके मुँह से निकल ही गया, ‘मंजूर’ ।

काँड पलटकर देखे गए तो मिस्टर सेठ की हंसी निकल गई । छाया जीत गई थी । मुकाबिले के आदमी ने वीणा से कहा, ‘मेरे अपने पाँच सौ अभी हैं ।’

‘हाँ’, वीणा का उत्तर था ।

इस पर उस आदमी ने कहा, ‘फिर चलिए’ ।

छाया ने फिर काँड बाँटे । उस पुरुष ने फिर कहा, ‘पाँच सौ ?’

छाया का उत्तर था, ‘मंजूर ।’

काँड उठाये गए मिस्टर सेठ के मुख से निकल गया, ‘दे मारा ।’ इस बार फिर छाया जीत गई थी ।

उस आदमी ने जेब से एक हजार और निकाल वीणा से कहा, ‘श्रीमती जी इन्हें जमा करा दें ।’

वीणा कमरे से निकल रुपया जमा कराने दफ्तर में चली गई । छाया ने कहा, 'आशा है आप मेरे जीतने से दुखी नहीं होंगे ।'

'आपसे हारकर, मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है ।'

'धन्यवाद' । छाया का उत्तर था ।

इतने में वीणा आगई । खेल फिर आरम्भ हुआ । छाया जीती हुई थी । इस कारण कार्ड फिर उसी ने बांटे । छाया का सितारा तेज था । दो बार में ही उस भद्र पुरुष का एक हजार भा गया । छाया ने कार्ड फेक दिए । उस पुरुष ने कहा, 'नाराज होगईं देवी जी ?'

'मुझे आपका रुपया जीतकर प्रसन्नता नहीं होती ।'

'परन्तु मुझे आपके सामन हारकर तो प्रसन्नता हा रही है । यदि इजाजत दो तो अबके में दो हजार भेज दूँ ।'

'तो कार्ड ही नए मंगवा लीजिए ।'

'नहीं इन बातों में क्या रखा है ?'

उस पुरुष ने हजार-हजार के दो नोट निकालकर वीणा के हाथ में दे दिए । वीणा रुपया जमा कराने बाहर चली गई । इस समय उस पुरुष ने कहा, 'मुझे आपको जीतते देख बहुत ही प्रसन्नता हो रही है । यह मेरा सौभाग्य है ।'

छाया ने कुछ उत्तर नहीं दिया । उसने खेलना इस कारण आरम्भ किया था कि मिस्टर सेठ कहीं यह न कहे कि कंठी तो ले ली; परन्तु उसकी सहायता को तैयार नहीं हुई । वह मन में सोच रही थी कि यदि हार गई तो अपनी हार का रुपया कंठी में से दे देगी । परन्तु अब जब जीत होने लगी तो उसकी दिलचस्पी खेल में बढ़ गई । इस पर भी उसने कह दिया, 'यदि आप चाहें तो अब भी खेल बंद हो सकता है ।'

'नहीं ! देवीजी । मेरे पास तो अभी बीस हजार के नोट और रखे हैं ।'

छाया चुप रही । वीणा लीट आई । खेल आरम्भ हो गया । दो मिनट में छाया ने यह दो हजार भी जीत लिया । इस बार छाया ने

ग्रीर खेलने से बिलकुल इन्कार कर दिया। विवश होकर सब बाहर बले आये। नियमानुकूल नवल ने चाय का प्रबन्ध कर रखा था। वह हारे हुए सज्जन चाय के लिए नहीं ठहरे। नवल को छाया के सामने कहने लगे, 'इन देवीजी से हार गया हूँ। इस पर भी कभी जीतने की अभिलाषा मन में लेकर वापिस जा रहा हूँ।' जाते हुए उसने सबको नमस्ते की।

: ६ :

अब छाया, मिस्टर सेठ, नवल और वीणा चाय पर बैठ गए और चाय पीते हुए नवल ने हिसाब सुनाया, 'सेठजी, तुम्हारा रुपया तो हार में गया है। पीछे छाया देवी के नाम का पांच सौ रुपया तो यह रहा। सब रुपया जो उस आदमी ने हारा है वह है एक हजार जमा एक हजार जमा दो हजार। कुल चार हजार। पांच फी सदी जीत पर हमारा कमीशन। कुल दो सौ रुपया। लीजियें शेष तीन हजार आठ सौ आपका यह है।'।

इतना कह नवल ने नोट गिनकर छाया के सम्मुख रख दिये और छाया ने उठाकर सेठ के सामने रख दिये। सेठ ने रुपया लेकर जेब में डाल लिया।

चाय पीते समय इधर की बातें चल पड़ीं। नवल ने पूछा 'छाया देवी ! कमल बाबू से अब मिलने नहीं जातीं तुम ?'

'नहीं ! वे महानुभाव उस मुराइन की लड़की को मुझसे अच्छा समझते हैं।'।

'वे उससे विवाह करने वाले हैं ?'

'मुझे मालूम है। मैं समझती हूँ बड़े-बड़े अक्लमन्द गाबर पर गिरते हैं।'।

'यह आश्रम की बात मुझे समझ नहीं आ रही।'।

'बात यह है कि बलवीर जी के पिता की सम्पत्ति हड़प करने का

सामान किया जा रहा है ।’

‘ओह ! यह बात है ।’ नवल ने कहा, ‘परन्तु यह हमारी वीणाजी हैं । जो उन पर रीझ पड़ी थीं ।’

इस पर वीणा ने कहा, ‘आप चाहे कुछ कहें । मुझे कमल जी सज्जन प्रतीत होते हैं । उनका आश्रम वास्तव में स्वर्ग ही है । सब लोग मन लगाकर मेहनत करते हैं और फिर सब बराबर-बराबर फल पाते हैं ।’

‘सारी उम्र में भी वहां रहकर तुम वैसी साड़ी न पा सकती थीं जैसी मैंने उस दिन खरीद कर दी है ।’

‘कुछ भी हो ! मैं तो उनके साथ रहकर भिक्षा मांगने को भी तैयार हो जाती । परन्तु वह तो माने ही नहीं ।’

इस पर छाया ने पूछा, ‘तो तुमने उनसे अपने मन की बात कहा थी?’

‘वैसे स्पष्ट बात तो नहीं हुई थी, परन्तु मेरे व्यवहार से उनका अनुमान लगा लेना निश्चय ही था । जब भी मुझे, अपने मन की बात स्पष्ट करते वह देख लेते तो कहते, “बहन वीणा, देखी मुरली अकेली है । उसकी सहायता कर दो न ।” उनका मुझे बहन कहकर पुकारना, मुझे, कान पकड़कर सीधे मार्ग पर लाना ही होता था । इसके अतिरिक्त इनके घर आकर तो मैंने स्पष्ट पत्र में लिख दिया था । उस पत्र के उत्तर ने तो बात सदैव के लिए ही समाप्त कर दी ।’

छाया ने उत्सुकता से पूछा, ‘क्या लिखा है उन्होंने?’

वीणा उठकर गई और अपने कमरे में से वह पत्र उठा लाई और पूछने लगी, ‘सुनाऊं?’

‘हां ! हां !!’ छाया ने आग्रह पूर्वक कहा ।

वीणा ने चिट्ठी सुनाई । उसमें लिखा था —

‘वीणा बहन, नमस्ते ! तुम्हारा पत्र मिला । पढ़कर विस्मय नहीं हुआ । यद्यपि तुमने कभी कुछ कहा नहीं था, तो भी तुम्हारे आचरण से, इसे बात का अनुमान लगाना कठिन नहीं था कि तुम मुझसे विवाह

करने की इच्छा रखती थीं। मैंने तुम्हें कभी भी ऐसी इच्छा करने तथा इसमें सफलता पाने की आशा में प्रोत्साहन नहीं दिया। कारण तुम जानती ही हो। मैं मुरली से विवाह करने का अपने मन में निश्चय कर चुका हूँ और मुरली से इसका वचन भी दे चुका हूँ। तुम मुरली से अधिक सुन्दर हो, अधिक पढ़ी-लिखी और अधिक समझदार हो। इस पर भी मेरे चुनाव में मुरली ही उत्कृष्ट ठहरती है। तुम शायद इसका कारण यह समझती होगी कि तुम्हारा नवल बाबू से सम्बन्ध मुझे ऐसा करने की प्रेरणा करता है। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि ऐसा नहीं है। तुम्हारा आश्रम का रहन-सहन उस जीवन को पूर्ण रूप से मिटा चुका है।

‘तुमसे पूर्व दिल्ली के स्त्री-जगत् में पुरुषों के प्रति विद्रोह की भावना उत्पन्न करने वाली अति सुन्दर कुमारी छाया देवी को भी मैं मुरली के मुकाबले में इन्कार कर चुका हूँ। इसका कारण यह है कि मुरली विवाह के विषय में हिन्दू समाज में प्रचलित पति-पत्नी सम्बन्ध को भली-भाँति जानती है। उस सम्बन्ध में कहीं-कहीं जो त्रुटियाँ आई हैं उनको छोड़कर शेष बातों में उसे वह ठीक समझती है। छाया और तुम ऐसा नहीं मानती।

‘छाया देवी तो यह समझती हैं कि स्त्री और पुरुष में बराबरी होनी चाहिए, प्रत्येक बात में और प्रत्येक रूप में। हिन्दू समाज ऐसा नहीं मानता। वह कई बातों में स्त्री को पुरुष से श्रेष्ठ मानती है और कई बातों में पुरुष से कम। इसमें समाज के संगठन का विशेष हाथ है। उस समय जो संगठन था उसमें स्त्री-पुरुष का आपस का सम्बन्ध वही ठीक था। अब समाज की रूपरेखा वेग से बदल रही है। इससे स्त्री-पुरुष का आपस का सम्बन्ध भी बदलना अनिवार्य है। परन्तु इसके यह अर्थ नहीं कि जहाँ प्रकृति ने दोनों को भिन्न-भिन्न बनाया है, वहाँ भी बल-प्रयोग द्वारा दोनों को बराबर करने का यत्न किया जाय। वास्तव में स्त्री-पुरुष में बराबरी है, बुद्धि में और अन्तरात्मा की

भावनाओं में। परन्तु असमता है शरीर की बनावट में और काम करने की शक्ति में। अपवाद तो सर्वत्र और सदैव होते हैं, परन्तु सिद्धान्त यही है। ऐसी परिस्थिति में स्त्री का कार्य पुरुषों के कार्य से भिन्न होना ही चाहिए। कभी किसी आपत्काल में स्त्री पुरुष का और पुरुष स्त्री का कार्य करने पर विवश हो जाय तो यह दूसरी बात है। किन्तु इससे यह सिद्ध नहीं हो सकता कि स्त्री पुरुष होगई और पुरुष स्त्री हो गया। दोनों में भेद तो रहेगा ही।

मुझे भय है कि छाया जैसी लड़कियां पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में आकर स्त्री और पुरुषों की बराबरी के अर्थों में अपनी श्रेष्ठता और स्वतन्त्रता के नाम पर उच्छृङ्खलता करना चाहती हैं।

आपकी बात छाया से कुछ भिन्न है। आप बराबरी और स्वतन्त्रता नहीं चाहती; प्रत्युत आप तो वासना को प्रेम के नाम पर चलाना चाहती हैं। हिंदू-समाज वासना और प्रेम में भेद समझता है। यह भेद सत्य है अथवा मिथ्या, स्वाभाविक है अथवा अस्वाभाविक, इस समय यह विवाद का विषय नहीं। बात यह है कि यह बात हिन्दू समाज में मानी जाती है, मुरली इसे ऐसा मानती है। इस कारण मैंने उसे चुना है। तुम और छाया शीघ्रातिशीघ्र विवाह करके अपनी वासना की पूर्ति करना चाहती थीं। इस उतावलेपन को उचित सिद्ध करने के लिए वासना को प्रेम का नाम दे रही थीं।

कोई भी लड़की या लड़का जब प्रेम के नाम पर अपनी वासना-तृप्ति की बात सोचता है तो उसका प्रेम टिकाऊ नहीं समझा जा सकता। तुम कहोगी कि वासना-तृप्ति की इच्छा स्वाभाविक है। यह मैं मानता हूँ; परन्तु तुमसे मैं यह पूछता हूँ कि क्या सब स्वाभाविक बातें करनी उचित हैं? संसार में 'प्रकृति' और 'स्वभाव' दो भारी बोझ देने वाले शब्द हैं। मनुष्य का पूरा इतिहास ही प्रकृति से विरोध करने का है। प्रकृति मनुष्य को इतर जीव-जन्तुओं की कोटि में रखना चाहती है और मनुष्य इनसे ऊपर उठना चाहता है। अन्त में झगड़ा होता है।

कभी जीत प्रकृति की होती है और कभी मनुष्य की। मनुष्य की प्रत्येक विजय विकास के क्षेत्र में उसे आगे और आगे ही ले जा रही है। इस समय यदि मनुष्य हतर जीव-जन्तुओं से सर्वथा भिन्न प्रतीत होता है तो इसमें उसकी वे सब विजय कारण हैं जो उसने लाखों वर्ष तक प्रकृति के साथ संघर्ष करके प्राप्त की हैं।

यही बात स्वभाव की है। जब एक युवक और युवती खुल्लम-खुल्ला मिलते हैं तो उनको वासना-तृप्ति की इच्छा स्वाभाविक और प्राकृतिक नियमानुसार होने पर भी, नियंत्रण में रखनी ही उचित है। मैं प्रत्येक युवक और युवती को परस्पर वासना में लिप्त होने की स्वीकृति नहीं दे सकता। यदि ऐसा करना है तो हमें वासना को प्रेम से पृथक् की वस्तु मानना पड़ेगा। हम सुन्दर वस्तुओं को पसन्द करते हैं। नेक और भले लोग हमें अच्छे लगते हैं। जो लोग देश और धर्म के लिए कष्ट भोगते हैं उनको हम अपने से भी अधिक चाहते हैं। यह पसन्द, यह अच्छा लगना अथवा यह चाह यदि बहुत उत्कट हो जाती है तो वही प्रेम कहाती है। इसके यह अर्थ कदापि नहीं कि इनसे सम्भोग अर्थात् विलास का स्वीकृति होना ही चाहिए। हम प्रेम तो करते हैं परन्तु विवाह, जो सम्भोग की स्वीकृति मात्र है, नहीं चाहते। बस यही मैं चाहता हूँ और मुरली इस बात को समझती है।

यही हिन्दू-समाज प्रचलित करना चाहता है। इसमें मनुष्य का स्वभाव और प्रकृति प्रतिकूल होने से पूर्ण रूप से सफलता नहीं मिली। इस पर भी प्रयत्न पूर्ण रूप से असफल भी नहीं गया।

इस विचार-धारा से प्रभावित करोड़ों हिन्दू नर-नारी परस्पर सम्पर्क रखते हुए भी वासना से दूर रहने में सफल हुए हैं। पूर्ण मनुष्य समाज की रीति के अनुसार हिन्दू-समाज की इस प्रकृति के वेग से संघर्ष कर रहा है और धीरे-धीरे वह, इस विषय में भी, प्रकृति पर विजय प्राप्त कर रहा है।

अब तुम नवल बाबू की स्त्री हो। इससे तुम्हें यह समझ लेना

चाहिए कि पत्नी बनकर तुम जो अधिकार नवल बाबू को दे चुकी हैं वह तुम किसी दूसरे को नहीं दे सकतीं। प्रेम करना सर्वथा भिन्न बात है।

वीणा बहन ! इन फिलासफी की बातों को छोड़ो। मेरा कहना तो यही है कि तुम नित्य रामायण को पढ़ा करो और जो कुछ पढ़ो, उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया करो। जीवन की अनेकों समस्याओं का उत्तर उसमें तुम्हें स्वयं मिल जायगा।'

चिट्ठी समाप्त हुई तो छाया ने नाक-भौं चढ़ाकर कहा, 'जो लोग बातें बहुत बनाते हैं, वह जीवन के आनन्द की बातों से अनभिज्ञ होते हैं।'

कमल की आलोचना सुनकर नवल हंस पड़ा और कहने लगा, 'मेरे लिए तो कमल का ऐसा होना ठीक ही साबित हुआ है। अन्यथा वीणा तो अभी भी आश्रम में बैठी बंसरो ही बजाती होती।'

वीणा ने आंखें नीचे किये हुए कहा, 'यह मेरे भाग्य में नहीं था।'

इस समय नवल के दो और ग्राहक आगये। नवल चाय से उठकर दफ्तर में चला गया। इस समय मिस्टर सेठ ने कहा, 'वीणा देवी ! ऐसा मालूम होता है कि यहां से तुम संतुष्ट नहीं हो ?'

'मेरे असंतोष से नवल बाबू का सम्बन्ध नहीं है। यह धन्धा मुझे पसन्द नहीं।'

'तुम्हारे जैसी सुन्दर लड़की तो जहां भी चली जायगी, आदर और मान पायगी।'

'बस बस रहन दाजिये इन बातों को।' इतना कहकर वीणा वहां से नवल बाबू के पाँछे-पाँछे दफ्तर में चली गई। मिस्टर सेठ और छाया भी उठकर क्लब में जा पहुँचे। वहां पहुँचकर मिस्टर सेठ ने बैरे को शराब खाने के लिए कह दिया और छाया को सब जीता हुआ रुपया देते हुए कहा, 'यह रुपया तो आपका है। यदि आप चाहें तो इसमें से मैं जरूरत के लिए ले लूँ ?'

'मैं इस धन को लूँगी ही नहीं।'

‘क्यों?’

‘मुझे डर है कि कहीं इसके लाभ में फंसकर मैं नित्य ही जूझा न खेलने लगूँ।’

‘तो फिर क्या होगा? देखो छाया! तुम्हारा भाग्य कितना प्रबल है। यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होता तो उसके बीस हजार इस समय मेरी जब मैं होते।’

‘पर मैं हार भी तो सकती हूँ।’

‘जब हार का समय आयगा तब देखा जायगा। छोड़ो इस बात को। यह लो मुझे तो इस समय एक हजार की ही आवश्यकता है सो मैं लिये लेता हूँ। शेष तुम रख लो।’ इतना कहकर मिस्टर सेठ ने छाया देवी का हैंड बैग उठाकर शेष नोटों का बंडल उसमें रख दिया।

तीसरा भाग

आश्रम-जीवन

: १ :

वीणा की चिट्ठी आने के पश्चात् कमल अपने विवाह के विषय में गम्भीरता से सोचने लगा था। वह विचार कर रहा था कि यदि विवाह ही करना है तो अभी क्यों न कर लें। मुरली उस समय सोलह वर्ष से ऊपर हो चुकी थी। वीणा के इस लिखने से कि उसे मुरली और उसके भीतर कांटा बन जाने का भय है, कमल की विचार-धारा इसकी सम्भावना की ओर जाने लगी थी। वह सोच रहा था कि कोई भी सुन्दर लड़की उसके मन में मुरली के विषय में विष भर सकती है अथवा कोई भी युवक मुरली को भरमा सकता है। तब ठीक नहीं होगा। कई दिन तक इन्हीं विचारों में उलझा रहने के उपरान्त उसने निश्चय कर लिया कि यदि विवाह करना ही है तो वह शीघ्र ही हो जाना चाहिए।

एक दिन वह मुरली की मां को एकान्त में देख उसके पास चला गया और कहने लगा, 'मां।'

'हां बेटा।'

'एक दिन तुमने मुरली के विवाह के विषय में कहा था। क्या वह मजाक था?'

'मजाक नहीं था बेटा ! बात यह है कि वर कहां है ? तुमने कहा था कि उसके लिए वर की चिन्ता मुझे नहीं करनी पड़ेगी वह तुम स्वयं

करोगे । क्या अब तुमने कोई वर ढूँढ लिया है ?’

‘ओह ! तो मुरली ने तुमसे कुछ नहीं कहा ?’

‘नहीं ! उसने अपने विवाह के विषय में कभी कुछ नहीं कहा ।’

‘अच्छा ? एक दिन मैंने एक वर उसे दिखाया था ।’

‘तो बताते समय उसे लज्जा लगती होगी ।’

‘परन्तु मां ! वह तो कहती थी कि वह कई बार इस विषय में तुम्हें कह चुकी है ।’

‘नहीं । अपने विषय में तो उसने कभी कुछ नहीं कहा । हां भैया तुम्हारे विवाह की बातें तो नित्य होती हैं ।’

‘हूँ ! तो क्या कहती हैं ?’

‘कहती थी । कमल बाबू का विवाह होना निश्चय हो गया । एक छोटी जात की लड़की है । मैंने जब पूछा, “सुन्दर है क्या ?” तो बोली कमल बाबू कहते हैं, “बहुत सुन्दर है ।”

‘मैंने पूछा, “मुरली तुमने देखी है, कैसी है ?” इस पर बोली’ “हां मां, देखी है । सुन्दर तो नहीं कही जा सकती । साधारण रंग है, मोटी नाक, छोटी-छोटी आंखें और बहुत पढ़ी-लिखी भी नहीं ।” मैंने पूछा, “तो कमल बाबू ने क्यों पसन्द किया है उसे ?” तो कहने लगी, “वे बहुत दयालु हैं । छोटी पर विशेष दया रखते हैं । बिचारी का कहीं विवाह नहीं होता था, इसलिए उस पर वे दया कर रहे हैं ।”

‘भैया ! एक दिन मैंने कहा भी था, “कमल बाबू तुम्हारे लिए वर ढूँढने को कहते थे । फिर कभी बात नहीं की ।” तो कहने लगी । “मुझ निगोड़ी को कौन पूछता है ।”

कमल हंस पड़ा और बोला, ‘अच्छा माँ ! अब मैं बहुत जल्दी ही मुरली के लिए वर ढूँढ निकालूँगा । मेरा विवाह तो अगले सप्ताह होने वाला है । यदि कोई अच्छा लड़का मिल गया तो यत्न करूँगा कि मुरली का विवाह भी उसी दिन हो जाय । आश्रम के खर्च में बचत हो जायगी ।’

‘बेटा जरूर ऐसा ही करो । हम देहाती लड़कियों को बड़ा करना पसंद नहीं करते ।’

‘जल्दी ही करूंगा मां ।’

इससे कमल को मुरली में हास्य-रस की प्रतिभा का भास हुआ । वह मन-ही-मन बड़ा खुश हुआ । कमल विवाह के प्रबन्ध के विषय में सोचने के लिए अपनी कुटिया में चला आया । वह अपनी चटाई पर बैठकर कुछ सोच ही रहा था कि मुरली कुटिया में आकर मेज पर कुछ ढूँढ़ने लगी । कुछ देर तक कमल मुरली को देखता रहा । जब कुछ नहीं समझ सका तो पूछने लगा, ‘मुरली ! क्या ढूँढ़ रही हो ?’

‘पंचांग ढूँढ़ रही हूँ, यहां रखा था ।’

‘इधर है । क्या करोगी उसका ?’

‘अगले सप्ताह में विवाह का मुहूर्त कब है देखना चाहती हूँ । मां कहती हैं आपका विवाह होगा ।’

कमल हंस पड़ा । मुरली कमल के समीप आकर पंचांग मांगने लगी । ‘यह है । मगर देखेगा कौन ?’

‘मैं । क्यों ?’

‘तुम पंचांग देखना जानती हो ?’

‘क्यों नहीं ?’

‘अच्छी बात है देखो तो विवाह का मुहूर्त कब बनता है ?’

मुरली वहीं बैठी-बैठी पंचांग को इधर-उधर करने लगी । आखिर उसने निकाल ही लिया । “विवाह के लिए शुभ-अशुभ दिवस विचार” इस शार्पक के नीचे पढ़ने लगी । कितनी ही देर तक पढ़कर बोली, ‘मुहूर्त तो इस मास भर में कोई नहीं है ।’

‘बस ? इसी योग्यता पर बात करती थी ?’

‘श्रीमान् जी, यहां स्पष्ट लिखा है कि आश्विन में विवाह नहीं होंगे ।’

‘इधर आओ । मैं दिखाऊं ।’

मुरली ने पञ्चांग का वह पन्ना जिस पर वह पढ़ रही थी, कमल के

सम्मुख रख दिया। कमल ने एक पंक्ति पर हाथ रखकर कहा, 'पढ़ो।'।

मुरली ने पढ़ा, लिखा था, 'यह नीचे लिखे महूर्त और दिनों का शुभ-अशुभ विचार साधारण लोगों के लिए है। राजा और महापुरुषों के लिए सब दिन और सब घड़ी-पल शुभ महूर्त होते हैं।'।

जब मुरली पढ़ चुकी तो कमल ने कहा, 'बस। मेरा तो इतने से ही प्रयोजन है। मैं साधारण लोगों में से नहीं हूँ।'।

'भला यह महूर्त साधारण लोगों के लिए ही क्यों है?'

'इसलिए कि वह "प्रेजुडिसेज" (वहमों) से दबे होते हैं।'।

'मैं समझी नहीं। "प्रेजुडिसेज" अर्थात् वहम क्या होते हैं। क्यों उनका प्रभाव साधारण लोगों पर होता है और विशेष लोगों पर नहीं होता?'

कमल ने ही मुरली में यह प्रत्येक विषय पर प्रश्न करने का स्वभाव डाला था। वह उसके इस प्रकार पूछने से कभी थकता नहीं था और प्रत्येक प्रश्न का उत्तर मनोयोगपूर्वक देता था। मुरली की ज्ञान-वृद्धि का एक यह भी विशेष कारण था। मुरली का यह प्रश्न कम महत्त्व का नहीं था।

उसने उत्तर में कहा, 'प्रेजुडिसेज अर्थात् वहम वह बातें हैं जिनके करने को अज्ञान तो न माने पर स्वभाव अथवा लोकमत उन्हें करने पर विवश करे। जन साधारण को यदि अपनी बुद्धि के अनुसार कार्य करने की स्वीकृति दे दें तो बुद्धि कम होने के कारण वह उचित मार्ग नहीं ढूँढ़ सकेंगे। इस कारण समाज ने उनके लिए नियम बना दिये हैं। परन्तु बुद्धिशील लोगों के लिए नियम नहीं हैं।'।

'वाह! यह तो कुछ न हुआ।' मुरली ने कहा, 'इस प्रकार तो प्रत्येक आदमी यह कहने लगेगा कि वह जन-साधारण से ऊँचा है और वह मनमानी करेगा।'।

'बात यह है कि इसमें हानि ही क्या है? यदि महूर्त के बिना सब लोग विवाह करने लगे तो गलत तिथि ढूँढ़ने में जो हानि होगी वह उन्हें सहनी पड़ेगी। जिन लोगों को अपनी बुद्धि पर भरोसा नहीं उनको

दूसरों से निश्चित किये गए मुहूर्त पर काम करना चाहिए। मैं तो समझता हूँ कि मैं ठीक मुहूर्त स्वयं ढूँढ सकता हूँ।'

'तो यह अपनी बुद्धि पर भरोसा करने की बात है।'

'बिलकुल।'

'पर मैं तो साधारण औरत हूँ। मेरे लिए तो मुहूर्त ढूँढने की आवश्यकता होगी।'

'हां! परन्तु मैं तुम्हारी बात थोड़े ही कर रहा हूँ। तुम्हारे लिए तो अभी वर ढूँढना है।'

'एक दिन आपने एक वर दिखाया तो था।'

'वह तो तुम्हें पसन्द नहीं है।'

'कौन कहता है?'

'मां कहती है कि मुरली को पसन्द नहो। मुरली के विचार में साधारण-सा रंग है। मोटी नाक है, छोटी-छोटी आंखें और कुछ पढ़ा-लिखा भी नहीं।'

'गलत है। मैंने यह नहीं कहा।' मुरली का मुख उत्तर देते समय लाल हो गया।

कमल न वही गम्भीर भाव धारण रखते हुए कहा, 'तो क्या कहा था तुमने?'

'मैंने कुछ नहीं कहा।' इतना कहते-कहते मुरली उठ खड़ी हुई।

कमल ने कहा, 'मुरली! बैठो तो। अभी तुम्हें विवाह का मुहूर्त तो बताया ही नहीं। मुरली तुम्हें ही तो सबसे अधिक काम करना होगा। मैंने निश्चय कर लिया है कि अगले सप्ताह रविवार के दिन बारह बजे विवाह हो। दो बजे दावत हो और सायंकाल मेहमानों के मनोरञ्जन का सामान हो।'

'पर यह सब क्यों?'

'इसलिए कि मेरे पिता-तुल्य चाचा, बलवीर जी के पिता और माता, यह सब कुछ चाहते हैं।'

‘कितना धन व्यर्थ जायगा। और फिर आप इतनी शान-शौकत करेंगे तो लड़की वालों को भी तो कुछ करना पड़ेगा।’

‘मैं तो कुछ आवश्यकता नहीं समझता। परन्तु चाचा जी कहते हैं कि आश्रम के लोगों को अच्छा खाने को देना और उनके मनोरञ्जन का प्रबन्ध करना धन का अपव्यय नहीं। इससे अच्छा धन का सदुपयोग और हो ही क्या सकता है और फिर इन सब बातों पर तो वे अपनी जेब से खर्च करेंगे।’

‘पर मैं पूछती हूँ कि आपकी स्त्री के माता-पिता कितने धनी हैं? कभी यह भी विचार किया है।’

‘यह भी विचार किया है। मैं अपनी स्त्री को कहना चाहता हूँ कि वह एक भी पैसा खर्च न करें। जो कुछ वह करना चाहती है वह आश्रम के कोष से होगा। दावत इत्यादि चाचा जी कर रहे हैं। बहू के लिए वस्त्र व आभूषण चाचाजी बनवा रहे हैं। बहू के माता-पिता को तो कुछ भी नहीं करना पड़ेगा, कपड़े पहनाकर लड़की को मेरे साथ कर देंगे।’

‘बिना विवाह के ही?’

‘विवाह क्या वस्तु है मुरली? यह तो एक प्रकार का लोगों के सम्मुख परस्पर वचन देने की बात है। सो तो होगा ही। केवल ब्राह्मण देवता बुलाकर संस्कृत भाषा में बोलने के बजाय हिन्दुस्तानी में बात-चीत होगी।’

‘परन्तु आपने कभी लड़की वालों के मन की बात भी पूछी है? आपकी बहू तो कहती है कि वह तो वैसे ही, उसी ढंग से और उसी भाषा में विवाह करायेगी जिस प्रकार राम, कृष्ण और दूसरे हमारे पूर्वजों का हुआ है।’

‘तुमने यह लड़की से पूछा है या लड़की की मां से?’

‘लड़की से। वह कहती है कि यदि विवाह में वेद-मंत्र न पढ़े गये तो उसके सम्बन्धी यह समझेंगे कि विवाह हुआ ही नहीं। आप तो जानते ही हैं कि आपकी बहू के सम्बन्धी छोटी जात के और अनपढ़ हैं।’

‘ठीक ! यह तो मैं भूल ही गयी था । मुझे अपनी बहू की मान-प्रतिष्ठा की रक्षा करनी है । यदि वेद-मंत्रों के पढ़ने से ही ऐसा होता है तो इसके करने में मेरी क्या हानि है ।’

मुरली ने कृतज्ञता का भाव दिखाते हुए कह दिया, ‘आप बहुत श्यालु है ।’

‘तुम्हारे विचार से न मुरली ? मेरी बहू मुझे न जाने क्या-क्या बुरे शब्द कहती होगी ।’

‘क्यों ? आपने उसका क्या बिगाड़ा है ? अवश्य कोई बहुत बुरा काम किया होगा ।’

‘इससे बुरा काम और क्या हो सकता है कि मैं बिना उसकी मंजूरी के उससे विवाह कर रहा हूँ ।’

‘यह तो बहुत बुरा किया है आपने ।’

‘मैंने तो यह सोचा है कि जंसे हमारे पूर्वज लड़कियों को बल पूर्वक उठाकर लाते थे और उनसे विवाह कर लेते थे, वैसे ही मैं करूँ ।’

‘परन्तु अब तो वह जमाना नहीं है ।’

‘इसी से तो मैं कहता हूँ, कि वह मुझे गालियाँ देगी ।’

‘तो आप प्रायश्चित्त कर लीजियेगा ।’

‘इस से सन्तुष्ट हो जायगी क्या वह ?’

‘मैं तो समझती हूँ उसे मान जाना चाहिए ।’

‘अपने आप ही कहती हो या उससे पूछकर बता रही हो ?’

‘किससे ?’ मुरली ने मुस्कराते हुए ।

‘किससे ! अरे उसी से.... ।’

‘ही-ही-ही’ करके हंसती हुई मुरली भाग गई ।

॥ २ ॥

छाया ने अपनी भूषणों की सड़कची में जूए से जीते हुए रुपये लाकर कर रखने आरम्भ कर दिये । दूसरे-तीसरे दिन, जब कभी अवसर मिलता,

तो वह नवल बाबू की कोठी में सेठ साहब के साथ अथवा अकेली जाती और एक-पाध घंटा मनोरञ्जन करके लौट आती। जब से उसने जूआ खेलना अपने प्रोग्राम में सम्मिलित किया था तब से उसने बाजी कम लगानी आरम्भ कर दी थी।

इन दिनों इसका स्त्री-सुधार कार्य ढीला पड़ गया था। अब क्लब में वह स्वयं सदस्य बन गई थी, और प्रायः वहाँ जाया करती थी। नवल बाबू के बंगले की भी यात्रा होती रहती थी। इसके अतिरिक्त मि० राम-लुभाया सेठ और मणीन्द्रकुमार चौधरी के मकान पर भी आना-जाना होता था।

छाया का सितारा बुलन्द था। इसके भूषणों की सँदूकची भूषणों से भरती जाती थी। भूषणों के अतिरिक्त भी उसके पास पचास हजार से ऊपर रुपया एकत्रित हो गया था। इसके अतिरिक्त मि० सेठ उस पर अपनी जान कुरबान करने को तैयार थे। मणीन्द्रकुमार उस पर लट्टू हो रहे थे। क्लब में भी वह सबको प्रिय थी। अनेक युवा-सदस्य उसके साथ नाचने को व्याकुल रहते थे। जब कभी डांस-नाइट को वह वहाँ पहुँच जाती तो बीसियों युवकों की उसके साथ नाचने की प्रार्थनाएँ उपस्थित हो जाती थीं।

ऐसे अवसरों पर मि० सेठ को बड़ा बुरा मालूम देता था। उसने ही छाया का दिल्ली की उच्च श्रेणी में प्रवेश कराया था और अब वह अन्य युवकों के संग इधर-उधर भागती फिरती थी। घर पर चाहे छाया से उसका कोई सम्बन्ध हो पर बाहर वह उसकी खुशामद करने वाला ही माना जाता था।

मंगल का दिन था। क्लब में मेहमानों की भरमार थी। आज छाया मणीन्द्रकुमार की मेहमान थी। मणीन्द्रकुमार ने छाया से कहा था कि 'वह बहुत प्रसन्न होगा यदि छाया अकेली ही उसकी मेहमान होगी।' इस पर छाया ने पूछा था, 'क्यों?'

मणीन्द्र ने कहा, 'मैं एक ऐसे विषय पर आपसे बात-चीत करना

चाहता हूँ जिसमें किसी दूसरे का हस्तक्षेप नहीं चाहता ।’

‘अच्छी बात है । मैं किसी को नहीं बुलाऊंगी ।’ छाया ने उत्तर में कहा ।

खाना खाने से पूर्व शराब पीते समय छाया ने पूछा, ‘आजकल मिसेज़ वर्मा दिखाई नहीं देती ?’

‘मिस्टर वर्मा बम्बई से आये हुए है आजकल ।’

‘तो ?’

‘तो क्या ? वह पसन्द नहीं करते कि उनकी स्त्री किसी दूसरे पुरुष से बातचीत भी करे ।’

‘मिस्टर वर्मा की उपस्थिति में भी ?’

‘नहीं ! बिलकुल नहीं ।’

‘ग़जब है । पुरुषों ने स्त्रियों को क्या समझ रखा है ?’

‘यही तो मैं कहता था । मगर मिसेज़ वर्मा ने मुझे कह दिया है कि जब तक उसके पति दिल्ली में हैं मुझे उसकी ओर नज़र उठाकर भी नहीं देखना चाहिए ।’

‘परन्तु वह क्लब में भी तो नहीं आतीं ?’

‘वह अथवा उससे पति देवता क्लब के सदस्य नहीं हैं । अपने मित्रों को मिसेज़ वर्मा ने चेतावनी दे रखी है; इसलिए किसी को उनको बुलाने का साहस भी नहीं होता ।’

‘मे तो समझता हूँ कि इसी कारण आप मेरी ओर आकर्षित हुए हैं ?’

‘नहीं, यह बात नहीं । आपसे पहले परिचय ही नहीं था । जब परिचय हुआ तो वह अभी मित्रता के दर्जे तक नहीं पहुँचा था । अब मैं मित्रता के दर्जे से घसीटकर इसे घनिष्ठता तक ले जाना चाहता हूँ । इसी कारण आज आपको अकेले में निमंत्रण दिया है ।’

‘ओह ! यह बात है । भला देखूँ कि यह घनिष्ठता कैसे उत्पन्न करते हैं आप ?’

‘यत्न तो कर रहा हूँ । सफलता भाग्य के आधीन है ।’

इसी समय मिस्टर रामलुभाया सेठ क्लब में अकेला आ पहुँचा । वह परिश्रित लोगों से मिलता और कुछ बात-चीत करता हुआ मणीन्द्र और छाया के पास आ गया । उन दोनों को देखकर उसे संतोष हुआ, जैसे वह उन्हीं को इतनी देर से ढूँढ़ रहा था ।

‘मिस्टर मणीन्द्र ! क्या अपने आप ही...?’

मिस्टर मणीन्द्र ने जब सेठ को देखा तो ऐसा भाव बना लिया जैसे वह कोई उससे अपरिचित व्यक्ति है । बायें हाथ से सलाम कर छाया से बोला, “खाना खोकर सिनेमा चलियेगा क्या ?”

छाया ने भी सिर हिलाकर मिस्टर सेठ का स्वागत करते हुए मणीन्द्र को उत्तर दिया, ‘किस पिक्चर-हॉल में चलियेगा ?’

मणीन्द्र ने कहा, ‘रीगल में “विलसन” लगी हुई है ।’

रामलुभाया सेठ ने जब दोनों को इस प्रकार अपनी अवहेलना करते देखा तो बैरा को एक कुर्सी लाने के लिए कहकर बोला, ‘छाया-देवी, मैं आपको घर ढूँढ़ने गया था ।’

छाया ने सेठ साहब की बात सुनी-अनसुनी करके मणीन्द्र से कह दिया ‘मुझे राजनीति में कोई रुचि नहीं । यहाँ नहीं ।’

‘तो प्लाज़ा चलें । वहाँ “माइ बैली वाज़ ग्रीन” लगी है ।’

‘मैंने देखी है । एक बार देखकर फिर दुबारा देखने को मन नहीं करता ।’

इस समय बैरा मिस्टर सेठ के लिए एक कुर्सी ले आया । उसने कुर्सी उनकी मेज के समीप ही लगा ली और उस पर बैठ गया । फिर बैरा से बोला, ‘एक छोटा ले आओ ।’

मणीन्द्र ने छाया से कहा, ‘तो ओडियन चलें । वहाँ “रोमियो ज्यूलियेट” लगी है ।’

‘हाँ यह ठीक है । यद्यपि इसे देखा है फिर भी बार-बार देखने को चित्त करता है ।’

मिस्टर सेठ ने बैरा से पैंग लेते हुए कहा, ‘छायादेवी ! आपके

लिए क्या मंगवाऊं ?'

छाया ने बैरा से कहा, 'दो आदमियों का खाना ले आओ ।'

मिस्टर सेठ ने बीच में ही टोककर बैरा से कहा, 'नहीं तीन के लिए ।'

बैरा चला गया । मणीन्द्र ने कहा, 'मिस्टर सेठ..... ।'

सेठ ने उसकी ओर देखकर उसकी बात बीच में ही काटकर कहा, 'ओह ! आप हैं ? मणीन्द्र बाबू ! आप खाना आज यहीं खायेंगे न ?'

मणीन्द्र ने कुछ क्रोध में कहा, 'नहीं आपके साथ नहीं ।'

'ओह ! यदि आपको मेरा और छाया का निमंत्रण स्वीकार न हो तो आपकी इच्छा ।'

छाया हंस पड़ी । मिस्टर सेठ ने छाया से कहा, 'आपके घर पर नौकर ने बताया था कि आप क्लब में आई है । आपसे मिलकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ है ।'

छाया ने पहली बार मिस्टर सेठ से पूछा, 'क्या आपको मुझसे कुछ काम है ?'

'आपके साथ खाना खाने की इच्छा थी ।'

उनकी यह बातें हो ही रही थीं कि बैरा ने खाने के लिए तीन प्लेट रख दिये । सेठ ने मणीन्द्र की ओर देखकर कहा, 'यही खा लीजिये साहब ! इनको व्यर्थ में अलहदा मेज लगानी पड़ेगी ।'

मणीन्द्र क्रोध से लाल-पीला हो रहा था और छाया चुपचाप इस झगड़े को देख रही थी । मणीन्द्र के मन में आया कि छाया को लेकर बिना खाये वहां से उठकर चला जाय । सेठ उसके मन की बात भांप गया और बोला 'ओहो ! नाराज होने की कोई बात नहीं । आखिर आप जो कुछ बात करना चाहते हैं वह मेरे सामने भी तो कर सकते हैं ।'

छाया ने देखा कि झगड़ा बढ़ रहा है और कहीं गड़बड़ हुई तो क्लब में उपस्थित सब लोग तमाशा देखने आजायेंगे । इससे उसकी बदल बदनामी होगी । यह सोचकर उसने मणीन्द्र बाबू से कहा, 'मणीन्द्रजी,

इसमें नाराज होने की क्या बात है ? आप जानते हैं कि मि० सेठ मेरे गहरे दोस्त हैं। यदि यह खाने पर आ बैठे हैं तो कौन-सा गजब हो गया ? बिल में ही चुका दूंगी।'

'बिल ? बिल ? क्या कहती हो छाया ? क्या मैं भूखा-नंगा हूँ जो दस-बीस रुपये नहीं दे सकता। यदि तुम कहो तो अपना सब कुछ तुम पर न्यौछावर कर सकता हूँ।'

'तो इतना करो, मणीन्द्र बाबू ! कि यहां तमाशा न बनाओ और चुप-चाप खाना खा लो। फिर तीनों सिनेमा चलेंगे।'

: ३ :

अगले दिन मि० सेठ, मणीन्द्र के उसके खाने पर आने से क्रुद्ध हो जाने का कारण जानने के लिए, ग्यारह बजे के लगभग छाया की कोठी पर पहुंच गया। वहां पहुंच कर उसे पता चला कि वह मणीन्द्र के साथ कहीं गई है। इससे उसके क्रोध का ठिकाना न रहा। रात को सिनेमा से लौटते समय उसने छाया से कहा था कि वह ग्यारह बजे मिलने आयगा। उसने निश्चय किया कि वह उसे ढूढ़ निकालेगा। अतएव मोटर में सवार हो वह मणीन्द्र के मकान पर पहुंचा। वहां कोई नहीं था। नवल की कोठी में पता किया वहां भी पता नहीं चला। अब वह क्लब, दराबा कलां, हुमायूँ का मकबरा, ओखला, कुतुब और होज़ खास पर उन्हें देखने पहुंचा। जी-तोड़ कोशिश करने पर भी वह उन्हें न पा सका। अन्त में निराश हो सांयकाल घर पर पहुंचा। रात को उसने टेली-फोन द्वारा छोया के घर से पता किया। उसे उत्तर मिला कि वह सो रही है।

मिस्टर सेठ ने निश्चय कर लिया था कि वह अब दो-तीन दिन तक छाया से मिलने का यत्न नहीं करेगा। अगले दिन उसे कचहरी में एक मुकद्दमा करना था। वह वहां जा पहुंचा। दोपहर के दो बजे वहां से घर लौटा और भोजन करके आधा घटा सोया। इसके बाद नवल की

काठी पर जा पहुंचा। वहां एक ठेकेदार के लड़के से एक घंटा तक छोटी-छोटी बाजी लगाई। हिसाब गिनने पर पता चला कि पचास रुपये जीते हैं। जब वह कमरे से बाहर निकलने लगा तो वीणा से पूछने लगा, 'क्या हिसाब बना।' वीणा ने एक कागज पर, जिस पर वह लिख रही थी, देखकर उत्तर दिया, 'पचास रुपये आपने जीते हैं।'।

मिस्टर सेठ ने हाथ की कलाई पर बंधी घड़ी देखकर कहा, 'एक घंटा हो गया है। इसमें आपका कमीशन तो बहुत कम रहा है। यदि बुरा न मानो तो यह आप रख लीजिये।'।

इतना कहकर उसने सौ रुपये का नोट वीणा के सम्मुख रख दिया वीणा ने नोट वापिस करते हुए कहा, 'यह मैं नहीं लूंगी। यह नवल बाबू का धन्दा है। कितना कमीशन लेना उचित है यह वे जानते हैं। मुझे इससे कुछ भी सरोकार नहीं है।'।

'यह तो भेंट है वीणा जी ! कमीशन नहीं।'।

'क्या छायादेवी का पेट भर गया है आपकी भेंटों से ?'

'क्या छाया देवी को देखा है आपने ?' मिस्टर सेठ ने उत्सुकता से पूछा।

'कल मणीन्द्रकुमार के साथ आई थी और बीस हजार हार गई हैं।'।

'बीस हजार ? यह कैसे हुआ ?'

'यह तो मैं नहीं जानती। पर तीन घंटे में यह सब कुछ हुआ। तीन बार ताश बदला गया। इस पर भी पासा नहीं पलटा और वह हारती ही गई।'।

'वह इतना रुपया साथ लाई थी क्या ?'

'नहीं, मणीन्द्र बाबू उसके प्रोनोट स्वीकार करते गये और हमें हमारा कमीशन देते गये।'।

'तो वह प्रोनोट नवल बाबू ने खरीद लिये होंगे ?'

'खरीद लिये थे और आज सुबह छाया देवी आकर सब रुपया दे

गई हैं और प्रोनोट ले गई हैं ।’

‘नवल बाबू ने किस दाम पर वे खरीदे थे ?’

‘यह हमारा रहस्य है, जो हम किसी दूसरे को नहीं बता सकते ।’

‘तो आप यह मेरी भेंट भी स्वीकार नहीं करेंगी क्या ?’

‘वकील साहब ? इन तिलों में तेल नहीं है ।’

इतना कहकर वीणा बाहर आ गई । मिस्टर सेठ सौ रुपये का नोट छिपाते हुए बाहर निकल आये । वे नवल बाबू के दफ्तर में हिसाब करने पहुंचे तो उन्होंने देखा कि छाया वहां बैठी है । बीस हजार रुपया हार जाने के पश्चात् भी छाया को वहां देखकर मिस्टर सेठ चकित रह गया । वह एक क्षण तक हत-प्रभ-सा खड़ा रहा । वह सोच रहा था कि भीतर जाये अथवा नहीं । इतने में छाया ने उसे देख लिया और पुकारा, ‘मिस्टर सेठ ! आइये न । ठहर क्यों गये ?’

सेठ भीतर चला गया । नवल ने पहले सेठ का हिसाब कर दिया । ‘यह पांच सौ आपका पेशगी और यह पचास जीत के । यदि ढाई रुपये टूटे हुए आपके पास हों तो कमीशन के दे दीजिये ।’

मिस्टर सेठ ने पांच का नोट देने हुए कहा, ‘चाय का प्रबन्ध तो करा दीजिये ।’

नवल ने नौकर को आवाज देकर बुलाया और उसे पांच का नोट तुड़ाने को देकर कहा, ‘चाय तैयार कर दो ।’

मिस्टर सेठ ने छाया से कहा, ‘मैं कल आपको ंढ़ने घर गया था और यहां भी आया था ।’

‘मणीन्द्र बाबू कल प्रातः ही आ गये थे । पहले तो उनका स्टुडियो, जो ओखले के समीप बन रहा है, देखने गये थे । पश्चात् हम यहां चले आये । तीन घंटे में बीस हजार हारकर हम होटल में चाय पीने गये । बाद में शहर में एक हिन्दुस्तानी पिक्चर ‘सहारा’ देखने चले गये । रात को मैं घर लौटी तो थक गई थी । इससे नींद जल्दी आ गई ।’

‘आपने तो कल का सारा दिन मेरे साथ गुजारने को कहा था !’

‘तो फिर कल सही । क्या जिन्दगी एक दिन में ही समाप्त हो जायगी ?’

इस पर नवल ने छाया से पूछा, ‘तो क्या कमल बाबू ने आपको निमंत्रण नहीं भेजा ?’

‘भेजा है ।’ छाया का उत्तर था, ‘कल उनका विवाह है । एक मुराइन की लड़की से । मैं नहीं जा रही ।’

नवल बाबू मुस्कराकर रह गये । मिस्टर सेठ ने पूछा, यह कमल बाबू कौन हैं ? आप सब लोग प्रायः उनकी बातें करते रहते हैं ।’

वीणा भी इस समय दफ्तर में आ पहुँची थी और उसने मि० सेठ का प्रश्न सुन लिया था । उसने उत्तर दिया, ‘वह देवता हैं । हृदय मनुष्य का अवश्य रखते हैं; परन्तु कर्म देवताओं के करते हैं ।’

‘बस ?’ मिस्टर सेठ ने इतने संक्षिप्त परिचय से विस्मित होकर पूछा ।

‘तो और सुनिये ।’ छायादेवी ने कहा, ‘इस सृष्टि में कुछ जन्तु हैं जो मल-मूत्र में रहने ही में आनन्द अनुभव करते हैं । उन्हें कोई व्यक्ति जन साधारण से ऊँचे रहता भला प्रतीत नहीं होता । वह सबको समतल कर देना चाहते हैं । जो ऊँचे हैं उनको छोड़कर वह छोटों में छोटों की भांति रहना पसन्द करते हैं ।’

‘यह तो महात्मा गांधी भी चाहते हैं और करते हैं ।’ मिस्टर सेठ का उत्तर था ।

छाया के उपर्युक्त कथन से वीणा झल्ला गई और बोली, ‘यह बात नहीं है । कमल बाबू कोटा रियासत के एक प्रसिद्ध ब्राह्मण परिवार में से हैं । इनके पिता जयपुर रियासत के राजवंश थे । वे बलवीरजी के पिता के मित्र थे ।

‘कमलजी अभी एक वर्ष से कम आयु के ही थे जब इनके माता-पिता का देहान्त हो गया । इनको बलवीरजी के पिता ने रख लिया और पालन-पोषण किया । राजवंशजी की सम्पत्ति बलवीरजी के पिता के

पास रही और कोई नहीं जानता था कि वह कितनी है, परन्तु कमलजी को कभी किसी वस्तु की कमी नहीं रही। वे एम० ए० तक पढ़े हैं। साम्यवाद में उनका विश्वास है। उनका साम्यवाद केवल मात्र मनुष्य की आवश्यकताओं तक ही सीमित है। उनकी सम्मति में भोजन, वस्त्र, घर और मनोरञ्जन की प्राप्ति प्रत्येक मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार है। साथ ही आचार-व्यवहार और विचारों के आधार पर वे मनुष्य-मनुष्य की मान-प्रतिष्ठा में भेद समझते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि जो कुछ वह कहते हैं वह करके दिखा भी देते हैं। जब कोई बात युक्ति से सिद्ध हो सकती है, तो वह कहते हैं कि, वह कार्यरूप में भी परिणत हो सकती है। उनका आश्रम उनके विचारों का एक नमूना (model) है।'

'वास्तव में वह दर्शनीय व्यक्ति है। और नवल बाबू ! जिस पर आपकी बीबी लट्टू हो वह कैसा आदमी है देखने को जी चाहता है।' सेठने कहा।

'तो चलो न कल। दिखाऊँ आपको।'

'यदि छायादेवी चले तो मैं इनकी संगति का सौभाग्य नहीं छोड़ सकता।'

नवल, 'छायादेवी ! चलिये। हम दोनों कल जा रहे हैं।'

'केवल विवाह के लिए ही ?'

'हां ! हम ग्यारह बजे चलेंगे। बारह बजे विवाह आरम्भ होगा। दो बजे दावत है। चार बजे गाने-बजाने का प्रोग्राम है। कई अच्छे-अच्छे गाने-बजाने वाले बाहर से आये हुए हैं। सायंकाल सात-आठ बजे वहां से लौटेंगे।'

'मुझे इस प्रोग्राम में कोई दिलचस्पी नहीं और मैं वहां जाना भी पसन्द नहीं करती।'

'नवल बाबू ने कंधों को झटका देकर अपना असन्तोष प्रकट किया। मिस्टर सेठ ने छाया से पूछा, 'तो कल आपसे कहां भेंट होगी ?'

'कल तालाब में तैरने चलेंगे। दो बजे दोपहर को आजाइयेगा।'

'तो चलो अब चलें ?'

‘मे किसी की प्रतीक्षा कर रही हूँ। मेरा यहां पर (Appointment) मिलने का समय निश्चित है।’

निराश होकर मिस्टर सेठ उठ खड़ा हुआ और छाया से बोला, ‘आओ चाय तो पी लें?’

‘आप पीजिये मुझे अभी नवल बाबू से कुछ बातें करनी हैं। कल दो बजे मिलेंगे।’ इतना कहकर छाया ने मिस्टर सेठ को ‘नमस्ते’ कर ली।

मिस्टर सेठ को छाया के इस व्यवहार से इतना क्रोध आया कि वह बिना चाय पिये ही वहां से चला गया।

: ४ :

छाया और मिस्टर सेठ जब क्लब के तालाब में स्नान करते-करते थक गये तो दोनों बाहर टैंक के बरामदे में आ बैठे और ह्विस्की की बोतल गिलास मंगवाकर पीने लगे। ह्विस्की पीते हुए मिस्टर सेठ ने कहा, ‘छायादेवी! अब तो तुम्हारा परिचय लम्बा-चौड़ा हो गया है। और तुम्हें मेरी भी आवश्यकता नहीं रही!’

‘नहीं यह तो नहीं कह सकती, पर मनुष्य का मन परिवर्तन चाहता है। एक ही मकान, एक ही भोजन, एक ही वस्तु और इसी प्रकार एक ही साथी से मन उकता जाता है। मैं नये-नये लोगों से मिलना, बात करना और व्यवहार रखना चाहती हूँ।’

‘तो मैं अब पुराना हो गया हूँ?’

‘कुछ दिन दूर रहकर पुराने फिर नये हो जाते हैं।’

‘मैं समझता हूँ कि यह बात बाहरी लोगों से तो ठीक मानी जायगी; परन्तु हमारा सम्बन्ध तो कुछ अधिक गहरा है न?’

‘आप मानते हैं यह?’

‘भला इसमें भी कुछ शक हो सकता है?’

‘अच्छी बात है! मैं आपसे एक प्रश्न करना चाहती हूँ; परन्तु

उसके पूर्व अपने मन की बात बता देना चाहती हूं। मैं पक्षियों की भांति स्वच्छंद रहना चाहती हूं। मुझ पर किसी प्रकार का भी प्रतिबन्ध लगाना मेरे साथ भगड़ा करना है। बताइये ऐसी दशा में आपका मेरे साथ सम्बन्ध कैसा और कितना रह सकता है ?'

मिस्टर सेठ वकील था और सुगमता से कोई ऐसी बात मानने को तैयार नहीं था, जिसका प्रभाव ऐसा हो कि उसे पीछे से पछताना पड़े। इस कारण बोला, 'मेरे और तुम्हारे विचारों में, भारी समानता है। मेरा भी यह बाल्य-काल से ही स्वप्न है कि मैं भौंरा बनकर वन-वन, पेड़-पेड़ और फूल-फूल पर घूमा करूँ। मुझे अभी तक कोई ऐसा साथी नहीं मिला था कि जो यह कहता जो आज तुमने कहा है। प्रत्येक आदमी मुझे शर्तों में बांधना चाहता था। मुझसे वचन लेना चाहता था। परन्तु देखो न छाया, तुमने मुझको कुछ करने के लिए बाध्य नहीं किया। तुमने तो केवल यही कहा है 'न, कि तुम चिड़िया की भांति स्वच्छन्द रहना चाहती हो। भला मुझे इसमें क्या आपत्ति हो सकती है। मैं भी तो भौंरा बनकर स्वेच्छा से विचरना चाहता हूँ।'

'आखिर आप मुझसे क्या चाहते हैं ?'

'जो चाहता था सो पा चुका हूँ। अब तो यह कहता हूँ कि जो पाया है उसे अपने पास रख सकूँ।'

'यह पास रखने की ममता क्या दूसरे की स्वतन्त्रता में बाधक नहीं होती ?'

'हो सकती है। परन्तु केवल तब, जब कि वह दूसरे की इच्छा के विपरीत हो तो। मेरा यत्न सदा यह रहता है कि मैं दूसरे के मन में यह भावना जगा दूँ कि उसकी इच्छा और मेरी इच्छा एक समान रहें। क्या कभी मैंने तुम्हें अपनी इच्छा के प्रतिकूल करने को बाध्य किया है ?'

'ठीक है। यही कारण है कि मेरा आपसे इतना घना सम्बन्ध हो सका है।'

‘परन्तु छाया ! परसों रात मणीन्द्र ने जो मेरा अपमान किया है, मैं उसे भूल नहीं सकता ।’

‘सच ? पर मैं समझती हूँ कि आपने उस दिन उसका और मेरा दोनों का अपमान किया था ।’

‘कैसे ?’ मिस्टर सेठ ने कुछ सचेत होकर पूछा ।

‘यह बात क्या आप नहीं समझते कि आप बिना बुलाये मेहमान थे ।’

‘मैं आपसे अपना इतना घनिष्ठ सम्बन्ध समझता था और समझता हूँ कि यह पूछने अथवा न पूछने के शिष्टाचार (formality) की आवश्यकता मैंने नहीं समझी ।’

‘सो तो ठीक है; पर आप तो मणीन्द्र बाबू के ऊपर अपने को थोप रहे थे न । मेरी बात तो वहाँ न थी ।’

‘मैं तो आपके पास आया था । उस भूले आदमी को यह मालूम होना चाहिए था कि मेरी तुमसे कैसी मैत्री है; और यदि मैं तुम्हें ‘नमस्ते’ करने गया था तो मुख लम्बा करके बैठ जाने की कोई आवश्यकता न थी । और फिर वह मुझसे अपरिचित भी नहीं था । वह न केवल मेरा मित्र है, प्रत्युत इस सिनेमा के काम में मैं उसका पत्नीदार भी हूँ । तैतीस फी सदी हिस्से उस स्टुडियो में, जो आप उस दिन देखने गई थीं, मेरे हैं ।’

‘ओह ! तो आपका इतना सम्बन्ध है ? मैं यह नहीं जानती थी तब तो उसने आपके साथ शिष्टता का व्यवहार न करके भारी भूल की है ।’

‘छाया ! धन्यवाद । तुम शीघ्र ही समझ गई हो । परन्तु मैं तुम्हें बता देना चाहता हूँ कि मैं जानता हूँ कि वह मुझे वहाँ से क्यों टालना चाहता था ।’

‘क्यों ?’

‘देखो छाया ! मैं तुम पर प्रतिबन्ध लगाने के विचार से यह नहीं कहता ।

मेरा कहने का अभिप्राय केवल इतना है कि तुम और वह समझ सकें कि मैं भी कुछ बुद्धि रखता हूँ। वह स्वभाव से रसिक है। उसका तो यह स्वभाव है—

“कली-कली के स्वाद कूँ, भंवरा मन ललचाय।

माया ममता ना करे, रस चूसे उड़ जाय ॥”

छाया का मुख लाल हो गया, उसकी आंखें नीचे झुक गईं। मि० सेठ यह देख रहा था। वह हंस पड़ा।

‘क्यों हंसे हैं जी आप?’

‘आप क्यों शरमाई हैं?’

छाया फौरन उठकर क्लोजेट में चली गई और नहाने की पोशाक उतारकर अपने कपड़े पहनकर बाहर आ गई। मिस्टर सेठ भी कपड़े पहनकर तैयार खड़ा था। दोनों मोटर में सवार हो होजिआस के बाहर लॉन के एक एकान्त कोने में जा घुल-घुलकर बातें करने लगे।

‘छाया ! कितना सुख अनुभव होता है तुम्हें अपने साथ देखने में?’

‘सच?’

‘तो चलो चलें। कहीं दूर-दूर क्षितिज के उस पार जहां—

“इक तू होवे इक मैं होवाँ”

नदी दा जित्ये किनारा होवे बसेरा हमारा

सइयां दा होवे सहारा उस बिच में मन नू खोवां।”

परन्तु छायादेवी यदि वहां एक ही वस्तु, एक ही दृश्य और एक ही साथी से मन उकता गया तो?’

‘तो मैं चिड़िया की भांति उड़कर दूसरे पेड़ पर जा बैठूंगी।’

‘ओह ! परन्तु जिस पेड़ को छोड़ोगी वह तो झुलसकर राख हो जायगा छाया !’

‘प्रकृति वर्षा ले आयगी और पेड़ पुनः हरा-भरा हो जायेगा।’

मिस्टर सेठ हंस पड़ा।

: ५ :

छाया प्रायः बहुत देर करके घर आती थी। इससे उसकी मां की चिन्ता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती थी। यों तो छाया के माता-पिता बहुत स्वतंत्र विचार के थे। वह देखते अंग्रेज लड़के-लड़कियां हजारों मील घर से दूर अकेले जाते हैं और नौकरी व्यापार करते हैं। हिंदुस्तानी लड़के-लड़कियां वैसा क्यों नहीं कर सकती। इस विचार-धारा के अनुकूल ही उन्होंने अपने बच्चों को शिक्षा दी थी। इस पर भी जब छाया रात के बारह बजे और कभी इससे भी बाद में घर आने लगी तो वे चिन्तित रहने लगे। छाया के पिता दफ्तर के काम से दिल्ली से बाहर गये हुए थे। भृगुदत्त जबलपुर में ठेकेदारी करता था। केवल छाया की मां ही अब घर पर थी।

आज रात तो छाया घर पर आई ही नहीं। उसकी मां बारह बजे तक प्रतीक्षा करने के उपरान्त सो गई। प्रातः जब उठी तो छाया को कमरे में देखने गई। आज उसने निश्चय कर लिया था कि छाया को समझायेगी कि रात को देरी से आना ठीक नहीं। परन्तु छाया कमरे में नहीं थी। उसका बिस्तर ज्यों-का-त्यों लगा था और उस पर कोई सोया नहीं था। छाया को मां कमरे में चिता-ग्रस्त बैठी रही। आखिर वह आई क्यों नहीं। कहीं कोई दुर्घटना तो नहीं हो गई। इसी प्रकार दुश्चिन्ता में बैठे-बैठे ग्यारह बज गये। छाया नहीं आई। उसने उठकर नवल की कोठी पर फान किया और पूछा 'कौन बोल रहा है?'

उत्तर मिला, 'बीणा।'

'छाया आपके पास आई है।'

'रात यहां रही थी।'

'क्यों?'

'क्लब में से मिस्टर सेठ के साथ आई थी। दोनों यहाँ शराब पीते रहे। तत्पश्चात् मिस्टर सेठ ने कहा, "देरी हो गई है और छाया की मां

की नींद खराब होगी। इससे अगर नवल बाबू को आपत्ति न हो तो यहीं रह जायें। सो रात वे यहीं सोये थे। लगभग आधा घंटा हुआ है कि यहां से दोनों चले गए हैं।’

छाया की मां ने टेलीफोन बन्द कर दिया और दांत पीसती हुई वह छाया की प्रतीक्षा करने लगी। बारह, एक, दो और तीन बज गए, पर छाया नहीं आई। अन्त में उसकी मां ने स्नान करके कुछ खा लिया और फिर टेलीफोन से नवल बाबू की कोठी पर पूछा। इस बार नवल बाबू टेलीफोन पर थे। छाया की मां के पूछने पर नवल बाबू ने उत्तर दिया, ‘छाया ? हां यहां से साढ़े दस बजे के लगभग मिस्टर सेठ के साथ गई थी। दो बजे फिर यहां आई थी। तब उसके साथ मणीन्द्र-कुमार था। अब तक दोनों जूआ खेलते रहे और चार बजे के लगभग यहां दोनों चले गए हैं।’

छाया की मां क्रोध से उबल रही थी। उसने कहा, ‘नवल बाबू आप लोगों ने शरीफ आदमियों के बच्चों को खराब करने का अच्छा जाल बिछा रखा है। मैं पुलिस में रिपोर्ट कर दूंगी।’

‘माता जी ! नवल का उत्तर था, ‘शरीफ आदमियों के लड़के-लड़कियां यहां आते ही नहीं। भला आप यह तो बताइये कि बेचारे शरीफों के पास शराब पीने तथा जूआ खेलने के लिए पैसा कहां है ?’

छाया की मां का क्रोध कम नहीं हुआ, और वह विक्षुब्ध सपिणी की तरह फुफकारती हुई बोली, ‘बकवास बन्द करो। उलटा चोर कोतवाल को डांटे।’

नवल ने शांत आवाज में कहा, ‘माता जी आपकी लाडली लड़की इन तीन-चार दिनों में पचास हजार रुपया हार चुकी है ?’

‘पचास हजार रुपया ?’ छाया की मां का मस्तिष्क चक्कर खाने लगा, ‘इतनी भारी रकम उसके पास आई कहां से। तुम झूठ बोलते हो नवल ! उस बेचारी को क्यों बदनाम कर रहे हो।’

‘यह तो अपनी लाडली लड़की से ही पूछ लेना। मुझसे नाराज

होने की क्या आवश्यकता है ?'

इतना कहकर नवल ने टेलीफोन बन्द कर दिया। छाया की मां वहां से हटकर अपने कमरे में खाट पर पड़ रही। दो घंटे तक उसका चित्त स्थिर नहीं हुआ। छै बजे के लगभग छाया मणीन्द्र कुमार की मोटर में लौटी। मोटर की आवाज सुनकर छाया की मां खाट से उठी और बाहर गोल कमरे में चली आई। उसने दरवाजे में से देखा कि छाया मणीन्द्र के साथ अपने कमरे में जा रही है। वह वहां ही खड़ी हो गई। छाया और मणीन्द्र दोनों इकट्ठे कमरे में चले गए। वह दबे पांव कमरे के बाहर जा दरवाजे से कान लगाकर उनकी बातें सुनने लगी। छाया ने मणीन्द्र को कुर्सी पर बैठाया और स्वयं अपनी कपड़ों की अलमारी का ताला खोला। उसमें से अपने आभूषणों की संदूकची निकाली। छाया की मां को उस संदूकची के खुलने का शब्द सुनाई दिया। फिर उसमें से कुछ निकालने और संदूकची के बंद होने का शब्द भी हुआ। कुछ देर बाद छाया की आवाज आई, 'मणीन्द्र बाबू! गिन लो पचीस हजार। मेरे प्रोनोट दे दो।'

मणीन्द्र का उत्तर था। 'हां हां यह लो।'

इसके बाद नोटों के गिनने की सरसराहट का शब्द सुनाई दिया। अब मणीन्द्र ने कहा, 'ठीक पचीस हजार हैं। छाया देवी! मुझे शोक है कि आप इतनी बड़ी रकम हार गई है। मैं सच कहता हूं कि यदि आप जीत जातीं तो मुझे अत्यानन्द होता। मैं सदैव बदला देने के लिए तैयार हूं। जब भी आप कहेंगी यह सब लेकर हाजिर हो जाऊंगा। अच्छा अब इजाजत दें।'

यह सुनकर छाया की मां दरवाजे से हटकर दूर खड़ी हो गई। एक क्षण के बाद मणीन्द्र छाया के कमरे से बाहर आ गया। बाहर उसकी मां को खड़ा देख वह हाथ जोड़कर नमस्ते करके आंखें नीचे झुकाए हुए कोठी के बाहर खड़ी मोटर पर सवार होकर चला गया।

उसके बाद छाया की मां उसके पास पहुंची। छाया अपने बिस्तर

‘पर लेटी थी। मां ने आवाज दी, ‘छाया !’

‘ओह, मां ? क्या बात है !’

‘मैं रात भर तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही हूँ।’

‘मां देर हो गई थी, मैंने समझा तुम्हारी नींद खराब होगी। सोचा, घर पर भी तो जाकर सो ही रहना है। इसलिए वहीं सो गई थी। बीणा ने सोने को स्थान दे दिया था।’

‘पर अब तो दिन भी छिपने को है। सबरे से कहाँ थी ?’

‘दिन में तो मेरा मन यहां लगता ही नहीं, इसलिए यहा आकर ही क्या करती ?’

‘तुम शराब भी पीने लगी हो ?’

‘वैसे ही थोड़ी-सी ले लेती हूँ, क्यों ?’

‘क्यों की बच्ची ! बहुत बिगड़ती जाती हो। लिखती हूँ राय-बहादुर साहब को। मुझसे यह तुम्हारी बातें नहीं सही जाती।’

‘पर क्या किया है मैंने, मां ! तुम भी तो कभी-कभी एक आघ पैग पी लेती हो।’

‘जो मैं करती हूँ वह सब तुम किया करोगी क्या ?’

‘केवल यही नहीं, जो पुरुष करते हैं वह भी मैं किया करूंगी। मां तुम पढ़ी-लिखी तो हो नहीं। तुम क्या जानो कि आजकल दुनिया में क्या हो रहा है। हम औरतें, अब किसी प्रकार भी पुरुषों से कम नहीं रहना चाहतीं !’

‘तो तुम भी नौकरी करो न। दिन भर यह आवागारागर्दी क्यों किया करती हो।’

मैं आवागारागर्दी करती हूँ मां ! भृगुदत्त अभी तक क्या करता था ? उसे तो तुमने कभी नहीं डाटा। माँ, तुम स्त्री हो। तुम्हें तो स्त्रियों के पक्ष की ही बात कहनी चाहिए।’

‘स्त्रियों के पक्ष की बात ही तो कहती हूँ छाया ! तुम अपने को बहुत सस्ता बना रही हो। मैं चाहती हूँ कि इस प्रकार यह सेठ और मणीन्द्र जो तुम्हें साथ-साथ लिये घूमते हैं, तुम्हारी इस आजादी का

अनुचित लाभ उठा रहे हैं। ज़रा सम्भलो और अपने को पहचानो। तुम्हारे जैसी सुन्दर लड़की पर तो किसी को भी नाज़ हो सकता है।’

‘हां। देखा था न उस ठिकानेदार के लड़के बलवीर को। ज़रा-सी बात से रूठकर चला गया।’

‘बेटी! वह तो विवाह की बात थी न; और इन लोगों के साथ निष्प्रयोजन घूमना हमारे लिए भारी अपमान की बात है।’

‘मैं इसमें कोई अपमान नहीं समझती। दुनिया समझती है तो समझे। मैं उसकी परवाह नहीं करती।’

छाया की मां चुपचाप खड़ी सोचती रही। छाया ने चादर उठाकर ओढ़ ली और करवट बदलकर लेट रही। मां हत-प्रभ हो कमरे से बाहर चली गई। अपने कमरे में जाकर उसने छाया के पिता को तार लिखा, ‘छाया घोर मुसीबत में है, शीघ्र आइये।’

: ६ :

कमल और मुरली का विवाह हो गया। जब से आश्रम बना था यह घटना विशेष रूप से आनन्द और खुशी की हुई थी। यों तो आश्रम के काम मशीन की भांति होते थे। सब नियम से और समय पर अपने-अपने कार्य करते थे। कमल अनुशासन को बहुत आवश्यक समझता था। बालक से लेकर वृद्ध तक प्रत्येक आश्रमवासी के लिए अपना-अपना काम नियत था। यदि कोई अपना काम नहीं करता था तो उसमें निहित कारण को ढूँढ़कर उसे दूर कर दिया जाता था। अकारण ही काम में बाधा सहन नहीं की जाती थी। सहज स्वभाव से आश्रम दिन-प्रतिदिन उन्नति करता जाता था। लगभग एक वर्ष में आश्रम में रहने वालों की संख्या, सत्तर हो गई थी। आश्रम में अब तीन रसोईघर सदस्यों की वृद्धि के साथ-साथ बन गये थे। उनमें २५-२५ व्यक्तियों का भोजन बनता था। आश्रम के सदस्यों की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ आश्रम में

सुविधायें भी अधिक हो गई थीं। वह लोग, जो आश्रम से शहरों में काम करने जाते थे, लगभग तीस थे। उनमें पंजाब, युक्तप्रान्त, मध्य भारत, बम्बई तथा मद्रास प्रान्त के लोग सम्मिलित थे। सबकी सामूहिक आय लगभग छै हजार रुपया थी। पन्द्रह बच्चे थे, जो स्कूल-कॉलिज जाते थे। इन सबके लिए दो ट्रक भरकर प्रातःकाल आश्रम से जाते थे और सायंकाल ट्रक इनको लेकर वापस आते थे। दफ्तरों में काम करने वाले तथा पढ़ाई करने वाले बच्चे सब कनाट प्लेस में एकत्रित हो जाते थे और वहां से ट्रकों में सवार हो आश्रम पहुंच जाते थे। स्त्रियां कुछ रसोई, सफाई और कपड़ों के सीने-पिरोने तथा कपड़े धोने का काम करती थीं। कुछ स्त्रियां खेतों में काम करती थीं। कुछ पुरुष भी खेतों में काम पर जाते थे। खेतों के लिए कुछ काम करने वाले नौकर भी रखे हुए थे। खेतों में साग-सब्जियां ही बोई जाती थीं। जो आश्रम की आवश्यकता से बचतीं वह दिल्ली ले जाकर बेच दी जाती थीं। इनसे भी पांच-चार सौ रुपये मासिक की आय हो जाती थी। इनके अतिरिक्त बलवीर और कमल की आय भी कुछ कम नहीं थी।

आश्रमवासियों के लिए मनोरञ्जन का प्रबन्ध भी था। एक टेनिस लॉन बना दिया गया था। फुटबाल, हॉकी का प्रबन्ध भी था। महीने में एक-आध बार सिनेमा देखने का भी प्रबन्ध था।

अब स्थिति ऐसी हो गई थी कि दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त सदस्यों को जेब खर्च के लिए भी कुछ मिल जाता था। यह नियम था कि जो लोग जेब खर्च में से बचायेंगे उन्हें उस धन के स्थान पर कुछ अन्य सुविधायें प्राप्त करने का अधिकार होगा। इनमें स्त्रियों के लिए आभूषण, शृंगार का सामान होता था और पुरुषों के लिए मन-चाहीं वस्तुएं, जैसे फाउन्टेन पेन इत्यादि, मिल जाती थीं।

इस प्रकार सरलता से चलते हुए आश्रम के प्रबन्ध में सबसे पहली घटना माया का आश्रम में आना था। इससे कुछ दिन तक काना-फूसी होती रही। आज कमल के विवाह की चहल-पहल थी। सब आश्रम के

लोग साफ-सुथरे वस्त्र पहनकर आश्रम के बीच में बनी चौपाल पर बैठे थे। बाहर से भी कुछ मेहमान आये हुए थे। विवाह हिन्दू रीति के अनु-कूल होना था। संस्कार के बाद आश्रम वालों तथा मेहमानों को भोज दिया जाना था। सायंकाल भारत के विख्यात गायक श्रीयुत गोलवेलकर और सौभाग्यवती राने का संगीत का प्रोग्राम भी था। शाम को कमल मुरली के साथ बलवीर के पिता के घर आमन्त्रित था। वास्तव में विवाह का सब प्रबन्ध और खर्चा शमशेरसिंह ने ही किया था। आश्रम को इसमें एक पाई भी खर्च करनी नहीं पड़ी थी। बलवीर के पिता का कहना था कि यदि घर पर विवाह होता तो वह दस हजार रुपये इस पर खर्च करते। अब आश्रम की सादगी में दो हजार से ही सब काम चल जायगा। कमल तो इतना खर्च करने के पक्ष में नहीं था। बलवीर के पिता का कहना था कि विवाह के उपलक्ष्य में आश्रमवासियों के एक-रस जीवन में विभिन्न रस लाने के प्रयोजन से ही यह किया जा रहा है।

मुरली की मां की विचित्र अवस्था थी। वह विवाह से एक दिन पूर्व तक यह नहीं जानती थी कि मुरली का विवाह किससे हो रहा है। उसे यही मालूम था कि मुरली का विवाह भी उस दिन ही होगा जिस दिन कमल बाबू का होना निश्चय हुआ है। जब मुरली को मेंहदी लगाई जा रही थी तो मुरली की मां ने वीणा की मां से कहा, 'कम-से-कम अपने दामाद को मैं देख तो लेती ?'

‘तो देख लो न। वह बाहर चौपाल पर तो बैठे हैं।’

मुरली की मां साहस करके बाहर आई। फिर लौटकर भीतर गई और कहने लगी, ‘वीणा की मां। जरा मेरे साथ तो आओ। कहीं भूल न कर लूँ। कई बाहर के आदमी भी आये हैं न ?’

वीणा की मां मुस्कराती हुई मुरली की मां के साथ बाहर चली आई। चौपाल के समीप दोनों पहुंचीं तो बहुत से आदमियों को वहां बैठे परामर्श करते देख मुरली की मां ने कहा, ‘वीणा की मां, लड़के को यहीं बुला दो। देखो कहना नहीं कि लड़की की मां मैं ही हूँ। कहीं मुझ गंवार

को देखकर कोई विघ्न ही खड़ा न कर दे ।’

वीणा की मां की हंसी निकलने ही वाली थी कि वह ‘अच्छा!’ कह कर उसे वहीं छोड़ चुपचाप चौपाल पर जाकर कमल को बुला लाई । मुरली की मां के समीप जाकर वीणा की मां ने कमल से कहा, ‘कमल भैया यह अपने दामाद को देखना चाहती हूँ ।’

कमल ने मुस्कराते हुए कहा, ‘क्या करोगी मां उसे देखकर ?’

‘बेटा !’ मुरली की मां ने कहा, ‘अब तो एक दिन रह गया है । तनिक उसे बहाने से बुलाकर दिखा दो न ।’

‘फिर क्या होगा मां !’

‘मेरा चित्त प्रसन्न होगा । पर उसे यह मत बताना कि मुरली की मां यहीं है । कहीं मुझे देखकर वह यहां न आये ।’

बरबस फूट पड़ने वाली हंसी को रोककर कमल ने बलवीर को बुलाया, ‘बलवीर भैया! जरा इधर तो आना । देखो यह क्या कहती हैं ?’

बलवीर आया । साथ ही बलवीर के पिता और एक मित्र भी आ गये । कमल ने उनकी हैरानी को दूर करने के लिए कहा, ‘चाचा ! यह हैं । मुरली की मां और अपने होने वाले दामाद को देखना चाहती हैं । बेचारी उसे पहचानती भी नहीं ।’

‘ओह यह बात है ?’ शमशेरसिंह ने मुस्कराते हुए पूछा । ‘अच्छा मुरली की मां आखें मूंदो तो । जब हम कहेंगे तो खोलना । जब तुम आखें खोलोगी तो वह तुम्हारे सामने खड़ा तुम्हें नमस्कार करता दिखाई देगा ।’

‘सच ? तो लो मैं आखें मूंदती हूँ ।’

‘ठहरो । अभी मत खोलना ।’ इतना कहकर शमशेरसिंहने भागकर चौपाल पर पड़ी बहुत-सी पुष्प-मालाओं में से एक माला लाकर कमल के गले में डाल दी और उसे मुरली की मां के सामने खड़ा कर दिया । सब लोग मुरली की मां की पीठ के पीछे खड़े हो गये । इसके बाद शमशेरसिंह ने मुरली की मां से कहा, ‘अब तुम आखें खोलकर अपने दामाद को देखो ।’

कमल की हंसी निकल रही थी और वह उसे यत्न से रोक रहा था। जब मुरली की मां ने आंखें खोलीं तो सामने कमल को हाथ जोड़े, सिर झुकाये और गले में फूलों की माला पहने खड़े देखा। वह चकित होकर आंखें मलने लगी। कई बार आंखें बन्द करके और फिर खोलकर देखने पर भी जब उसे कमल ही दिखाई दिया तो वह पूछने लगी, 'तुम...?'

पीछे खड़े सब लोग हंस पड़े। मुरली की मां उनकी ओर देखकर पूछने लगी, 'बाबू क्यों गरीब से हंसी करते हो?'

कमल ने इसका उत्तर दिया, 'हंसी नहीं मां। तुमसे हंसी कौन कर सकता है।' इतना कहकर वह मुरली की मां के चरण छूने लगा। मुरली की मां ने उठाकर उसे गले से लगा लिया और अनायास उसके मुख से निकल गया 'बेटा कमल !' उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

सबने जब मुरली की मां को आनन्द के आंसू बहाते देखा तो गम्भीर हो गये। इस समय चौपाल पर बैठे और लोग भी आगये थे। मुरली की मां खुशी से पागल हो अपनी भोंपड़ी में गई और मुरली को गले लगा कर बार-बार उसका मुख चूमने लगी।

मुरली, मां को पागलों की भांति इस प्रकार प्यार करती देख पूछने लगी, 'क्या है मां !'

'ओह ! पगली लड़की तू नहीं जानती..... ।'

'क्या नहीं जानती मां ?'

'तेरा विवाह किससे हो रहा है। जानती है ?'

'किससे हो रहा है ?'

'कमल बाबू से ?'

'झूठ ?' मुरली ने मुस्कराते हुए कहा।

'देख तो सही सब कह रहे हैं।' मुरली की मां ने मुरली को गले से लगाकर फिर चूम लिया।

'मां ! वे तो सब तुम्हारी हंसी करते हैं। विवाह में हंसी की बातें हुआ ही करती हैं। तुम भी बड़ी भोली हो, कुछ समझती ही नहीं।'

उसने मुरली को गले से लगाकर फिर कहा, 'नहीं ! नहीं ! इतनी बड़ी बात हंसी में नहीं कही जा सकती।' फिर कुछ सोचकर बोली, 'तू तो कहती थी, कि कमल बाबू की बहू तो मैंने देखी है ?' फिर मुरली का मुख देखकर बोली, 'ओह ठीक है। देख मुरली ! मैं कितनी बेवकूफ हूं तेरी बात समझी ही नहीं। वे तुझे बहुत सुन्दर कहते थे और तू कहती थी 'साधारण-सी है।' ओह हो ! देख मैं खुशी से पागल हुई जाती हूं। मुरली तू भी खुश है न ?'

मुरली ने मुस्कराते हुए, आंखें नीचे किये थोड़ा सिर हिलाया और उसकी मां ने उसे फिर गले लगा लिया।

: ७ :

माया को नवां मास जा रहा था। वह कमल और मुरली के विवाह से अत्यन्त प्रसन्न थी। इससे उसे आश्रम की नींव में कार्य करती विचार-धारा का पता चल रहा था। साम्यवाद का एक वास्तविक चित्र उसको दिखाई दे रहा था। आर्थिक समता का उदाहरण प्रस्तुत करके अधिक और कम आय वालों का भेद मिटा दिया गया था।

एक दिन समीपवर्ती गांव का एक लंगड़ा भिखारी कमल के पास आया और रोटी मांगने लगा। कमल उस समय माया के कमरे के बाहर खड़ा था और माया उनकी बातें सुन रही थी। कमल ने भिखारी से पूछा, 'तुम्हारा क्या नाम है ?'

'भ्रिगुर.....' उस लंगड़े ने उत्तर दिया।

'क्या चाहते हो भाई तुम ?'

'भूख लगी है, दो रोटी दिलवा दो।'

'कुछ काम क्यों नहीं करते तुम ?'

'साहब ! टांग टूटी हुई है। खेत में कुछ कर नहीं सकता। रस्सी बटा करता था। धीरे-धीरे अब यह काम भी मशीनों से होने लगा है। वहां पर खड़े होकर काम होता है। मैं खड़ा होने में असमर्थ हूं, अतः मेरा रोजगार छूट गया है। कई दिन से भूख मांगकर खा रहा हूं; सब

तरफ से निराश होकर आज आपके दरबार में आया हूँ। दो रोटी दिलवा दो बाबू ! भूख बड़ी जोर से लगी है।'

कमल ने कुछ सोचकर पूछा, 'भ्रिगुर भैया ! यदि तुम्हारे करने योग्य काम में तुम्हें दे दूँ, तो तुम कर सकोगे क्या ?'

'क्यों नहीं बाबूजी मांगने में लज्जा आती है। परन्तु क्या कहूँ, पेट ऐसी चीज है इसे भरने के लिए ही मैं यह काम करने पर लाचार हुआ हूँ।'

'अच्छी बात है ! तुम यहाँ ही रहा करो। जाओ कुएं पर स्नान करो और रसोईघर में रोटी खाओ। पीछे काम बताऊंगा।'

वह भ्रिगुर जो मैले-फटे कपड़े पहने था और जिसकी भूख से गालें और आँखें अन्दर को धँसी हुई थीं अब देखने में सुन्दर प्रतीत होने लगा था। साफ-सुथरे कपड़े पहनता था। कमल मूँज मंगवाता था और उससे कुटवाता था और फिर बान (बारीक रस्सी) बटवाता था। इस प्रकार आश्रम वालों को अब चारपाइयों के लिए बान मोल नहीं लेना पड़ता था। भ्रिगुर आश्रम में बराबर का सदस्य हो गया था।

माया यह आर्थिक समता देखने के पश्चात् अब जात-पात में समता देख बहुत प्रसन्न थी। परन्तु जब वह अपने विषय में सोचती थी तो शोक में डूब जाती थी। वह मन में सोचती थी। 'मैं मुरली से कम सुन्दर नहीं। पढ़ी-लिखी भी हूँ। सभ्य-समाज के रीति-रिवाज भी जानती हूँ। इस पर भी भृगुदत्त ने मुझसे विवाह नहीं किया। कमल भृगुदत्त से किसा प्रकार भी कम योग्य नहीं है। इस पर भी वह मुरली के प्रेम को ठुकरा नहीं सका, यह क्यों। 'क्या कमल देवता है और वह पशु ?'

आजकल माया की मां आश्रम में ही आ गई थी। बच्चे के प्रसव में शायद कष्ट हो यह सोचकर वह स्वयं माया के समीप रहना ठीक समझती थी, माया का भाई नवीन भी दो मास के लिए दिल्ली में आ गया था और दूसरे तीसरे दिन आश्रम में आकर माया की खबर लेता रहता था। माया की मां और नवीन दोनों माया को कुमार्वावस्था में ही मां बनते देख अत्यन्त दुःख अनुभव किया करते थे; परन्तु वे माया पर अपने मन

की बात प्रकट नहीं होने देते थे । माया की मां ने नवीन से भी कह रखा था । बलवीर और कमल सदैव कहते हैं कि माया को दुःख नहीं होना चाहिए । माया के भविष्य के विषय में बच्चा होने के पश्चात् विचार किया जायगा और उसको सुखी रखने का पूर्ण यत्न किया जायगा ।

नवीन को जब पहले-पहल माया के कष्ट का पता चला तो वह आग-बबूला हो गया था । पहला विचार जो उसके मन में आया था वह भृगुदत्त को गोली से मार डालने का था । परन्तु जब कमल ने पूछा, 'इस कार्य से माया को क्या लाभ होगा ? इससे माया की अवस्था तो सुधरेगी नहीं । हां माया भाई-रहित हो जायगी ।' तो उसका विचार बदल गया था ।

दूसरा विचार उसका था भृगुदत्त को माया से विवाह करने पर विवश किया जाय । इस पर कमल का कहना था, 'माया जैसी सुन्दर सभ्य और सुशील लड़की को जन्म भर के लिए ऐसे दुष्ट व्यक्ति से बांध देना कहां की अक्लमन्दी होगी ।'

इस पर वह पूछता था, 'तो फिर क्या होगा ?'

प्रसव के बाद माया के बच्चे के पालन-पोषण का प्रबन्ध कर दिया जायगा और माया का विवाह जब वह कहेगी, कर दिया जायगा ।'

'इस दुर्घटना के पश्चात् भी क्या माया को मान-प्रतिष्ठा से रखने वाला कोई लड़का मिल जायगा ।' सन्देह भरी वाणी में नवीन पूछता ।

'भविष्य के गर्भ में क्या है ? मैं क्या कह सकता हूं नवीन भैया । मैं तो यत्न करने में विश्वास रखता हूं । फल मेरे आधीन नहीं है ।'

नवीन को भी सब प्रकार से विचार करने के पश्चात् यही मार्ग ठीक प्रतीत हुआ था । परिणामस्वरूप वह मां के कहने पर छुट्टी लेकर दिल्ली में आया और बलवीर के मकान पर ठहर गया । इस प्रकार उसे माया की अवस्था का प्रतिदिन समाचार मिलता रहता था ।

कमल के विवाह में माया सम्मिलित नहीं हुई उसे सब लोगों के सामने निकलते हुए लज्जा अनुभव होती थी । कमल को यह बात

मालूम थी। परिणामस्वरूप विवाह-संस्कार के पश्चात् कमल मुरली को साथ लेकर माया के भोंपड़े में गया। दोनों जब वहां पहुंचे तो माया दीवार से ढासना लगाये चटाई पर बैठी रो रही थी। उन्हें देखकर वह आखें पोंछने लगी। कमल ने उसके समीप चटाई पर मुरली को बैठा दिया और स्वयं सामने बैठ गया। कमल ने कहा, 'माया बहन ! तुम रोती क्यों हो ?'

'नहीं तो।' माया ने बलपूर्वक मुस्कराहट लाते हुए कहा। मुरली का हाथ पकड़कर अपनी गोदी में लेते हुए माया ने कहा, 'तुम्हारे विवाह से मुझे बहुत खुशी हुई है। कमल भैया ! गरीब दुखी बहन की बधाई लोगे न ?' इतना कहते-कहते उसके आंसू फिर टपकने लगे।

आंसू मुरली के हाथों पर टपक रहे थे। मुरली ने कहा, 'माया बहन भगवान् करें, तुम भी यह दिन शीघ्र देखो।

'यह दिन ?' माया के मुख से विकराल हंसी निकल गई।

'बहन ! निराश मत हो !' कमल ने कहा। 'मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह दिन दूर नहीं। वास्तव में मैं तुम्हारे विषय में पूरी योजना बना चुका हूं। समय ही इसका उत्तर देगा। तुम्हारी तपस्या अवश्य ही सफल होगी।'

विवाह के बाद कमल की मित्र-मंडली और बलवीर के पिता के परिचितों ने कमल और मुरली को दावतें देनी आरम्भ कीं। कमल ने चार वर्ष में मुरली को एक मुराइन की लड़की के दर्जे से उठाकर एक आह्वान की पत्नी बनने योग्य बना लिया था। जहां-जहां भी वह दावतों पर गई। अपने वार्तालाप और व्यवहार से सब को प्रिय लगी।

विवाह के लगभग पन्द्रह दिन पीछे माया एक लड़के की मां बनी। यह तीसरी घटना थी, जिसने आश्रम में उथल-पुथल मचा दी थी। कमल ने सब आश्रम के लोगों, विशेष रूप से स्त्रियों, को बुलाकर समझाया कि 'हम इस आश्रम में रहने वाले चरित्र को बड़ी बात मानते हैं परन्तु साथ ही भूल करने के पश्चात् प्रायश्चित्त करने वाले के दोषों को क्षमा

भी कर सकते हैं। माया से भूल हुई उसका प्रायश्चित्त उसने कर लिया है। यदि इसके पश्चात् भी उसकी भूल को हम मन से नहीं निकालते तो हम मनुष्यता के पद पर रहने के योग्य नहीं हैं। पूजिपतियों के संसार में विवाह की रस्म को जो बहुत महत्ता दी जाती है; इसमें कई कारण हैं। वहां बाप की जायदाद का मालिक लड़के को बनना होता है। अमुक बाप का कौन बेटा है? यह निश्चय करना समाज और राज्य के लिए आवश्यक हो जाता है। इस कारण विवाह की रस्म को और उस रस्म के रूप विशेष को भारी महत्ता दी जाती है। परन्तु हम लोग जो किसी बाप की कोई जायदाद ही नहीं मानते और हमारे यहां किसी जायदाद का कोई उत्तराधिकारी नहीं माना जाता। वहां “किस बाप का कौन पुत्र है” और “किस पुत्र का कौन बाप है” किसी भी प्रकार कोई भी महत्त्व की बात नहीं रह जाती। हमारे यहां तो मनुष्य के अपने गुण ही मनुष्य की कीमत लगाते हैं। इस कारण हमारे समाज में इसको कोई महत्त्व नहीं दिया जाता।

‘मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूँ कि हम सब इस नव-जात शिशु तथा शिशु की माता को सब प्रकार से अपने आश्रम का अपने जैसा ही सदस्य मानें। यह किसी भी व्यक्ति को अधिकार नहीं कि वह शिशु अथवा शिशु की माता को किसी प्रकार भी अपने से छोटा अथवा घटिया समझे।’

चौथा भाग

तर्क-वितर्क

: १ :

रायबहादुर केशवदेव को तार गया और वह शीघ्रातिशीघ्र कार्य समाप्त करके घर लौटे। उनके आने से पहले दिन रात को छाया बहुत ही उदास और मलिन मुख लिए घर आई थी। अतएव उस दिन एक विशेष घटना घटित हुई।

सन्ध्या समय छाया अपने बंगले के लॉन में बेंत की कुर्सी पर बैठी किसी गम्भीर विचार में तल्लीन थी कि बाइसिकल पर नवल का नौकर आया और छाया देवी को एक पर्चा दे गया। छाया ने पर्चा पढ़ा। उसमें लिखा था, 'छायादेवी ! नमस्ते। एकाएक आज मेरी स्त्री अपने बाप के घर से आ गई है। आते ही उसने मेरे कैश-बॉक्स और हिसाब की किताबें; जिनमें बैंक की चैक-बुक भी है, अपने अधिकार में कर ली हैं। इस कारण यत्न करने पर भी जो रुपया तुमने मांगा था मैं नहीं भेज सका। आज मुझे घर से निकलने की भी स्वीकृति नहीं मिली। मैंने मणीन्द बाबू को लिखा है कि वह तुम्हारी सहायता करें। उन्होंने उत्तर दिया है कि आज रात के आठ बजे नवल बाबू की कोठी पर वे तुम्हें मिलेंगे। इस कारण मैं समझता हूँ कि तुम उससे बात करके नवल बाबू का कर्जा उतार दो। मैं अब तुमसे शायद रोजाना न मिल सकूंगा। हाँ कभी-कभी क्लब में भेंट हुआ करेगी।'।

छाया इस पत्र को पाकर क्रोध से आग-बबूला हो गई और कोठी में जाकर उसने मिस्टर रामलुभाया सेठ के घर पर टेलीफोन किया। 'हेलो.....क्या यह मिस्टर सेठ का घर है?.....हां, तो कौन बोल रहा है?'

उसे उत्तर आया, 'कौन बोलता है?'

छाया ने कहा, 'देखिये मुझे सेठ साहब से काम है। वह घर पर हैं या नहीं?'

'घर पर तो हैं परन्तु काम कर रहे हैं। अपना नाम बताइये तो उन को बता सकती हूँ।'

छाया के मुख से निकल गया, 'सकती हूँ? आप हैं कौन?'

'इससे आपका मतलब? आप अपना नाम बतायें।'

विवश हाकर छाया को उत्तर देना पड़ा, 'मेरा नाम छाया है?'

'वे आपसे बात नहीं करेंगे। मुझे नौकरों से सब पता लग चुका है कि तुम कौन हो? क्या काम करती हो? और मैं जान गई हूँ कि तुम अब क्या चाहती हो। याद रखो फिर कभी टेलीफोन किया तो जूड़ा मरोड़ दूंगी।'

छाया ने टेलीफोन बन्द कर दिया और मन में बोली, बहुत गंवार औरत मालूम होती है। उसे दस हजार रु० वचन के अनुसार नवल को आठ बजे पहुँचाना था और अब सात बज चुके थे। इसलिए मणीन्द्र से सहायता की आशा मन में लेकर वह तांगा करके नवल की कोठी पर जा पहुँची। जाते ही उसने मणीन्द्र के विषय में पूछा। नवल ने एक कमरे की ओर संकेत करके कहा, 'वह तो बहुत देर से आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।'

छाया उस कमरे में गई तो मणीन्द्र दो बोतल शराब और दो गिलास मेज पर रखे बैठा था। छाया को आया देखकर वह बोला, 'आ गई छायादेवी! आओ! आओ मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था।' छाया खाली कुर्सी पर बैठ गई। मणीन्द्र ने कहा, 'कितना रुपया देना है तुम्हें नवल को।'

‘दस हजार ।’ छाया का उत्तर था ।

‘दस हजार मेरे पास हैं तो; परन्तु मैं रुपया व्यर्थ गंवाना नहीं चाहता । तुम मेरे साथ भाग चलो । हम दरभंगा चले जायेंगे, वहां के जंगल में हमारा काम हो रहा है । उसी जंगल में एक छोटी-सी झोपड़ी बनवाकर रहेंगे । क्यों ? कितनी सुन्दर योजना है । वहां हम दोनों अकेले होंगे । नवल की पहुंच वहां तक न होगी और हम दोनों सुख से जीवन व्यतीत कर सकेंगे । मेरे पास पांच लाख रुपया लोगों का है । स्टुडियो तो बन रहा है; पर लड़ाई के कारण यंत्र नहीं मिलते । मैं समझता हूं स्टुडियो ता लड़ाई में बनेगानहीं, इस लिए रुपए का सदुपयोग तुम्हारे साथ रहकर जीवन व्यतीत करने में ही क्यों न किया जाय ?’

‘तो मैं तुम्हारी स्त्री बनकर तुम्हारे साथ चलूं ।’

‘नहीं । विवाह तो मेरा हो चुका है । तुम मेरी प्रियतमा बनकर चलो । मेरे हृदय-प्रदेश की रानी बनकर चलो । मैं तुम्हारी पूजा करूंगा, तुम्हारी अर्चना करूंगा छाया !’ •

‘तो नवल को रुपया न दिया जाय ।’

‘बिलकुल नहीं ।’

तो फिर मुझे तुम्हारे साथ जाने की क्या आवश्यकता है । रुपया न देकर तो नवल से झूठी बनूं और बाप के घर से भागकर माता-पिता का प्यार खोऊं, । नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती ।’ इतना कहकर छाया कमरे से बाहर निकल आई ।

मणीन्द्र ने कहा, ‘तुम मूर्खा हो छाया, पांच लाख रुपया थोड़ा नहीं होता, यह जिन्दगी भर के लिए काफी है ।’

मणीन्द्र कहता ही रह गया; परन्तु छाया ने पीछे नहीं देखा ।

बाहर नवल इसी प्रतीक्षा में खड़ा था कि छाया रुपये का प्रबन्ध करके आयगी । उसे इतनी जल्दी आता देख वह विस्मय से उसका मुंह देखने लगा । छाया दफ्तर में आकर नवल के सम्मुख कुर्सी पर बैठ गई । नवल उसके उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा । छाया का मुख मलिन पड़

गया था और वह अपने मन में उठते विचारों को प्रकट करने के लिए शब्द ढूँढ रही थी। आखिर साहस करके उसने कहा, 'नवल बाबू ! मैं आपका रुपया नहीं दे सकती।'।

'छाया देवी! दस हजार हैं। छोटी-मोटी रकम नहीं। जब आपके पास इतना रुपया नहीं था तो आपने खेल बंद क्यों नहीं कर दिया था। कम-से-कम कल, जब मिस साठे आपके प्रोनोट मेरे पास बेच रही थीं; आपने यह क्यों नहीं कहा कि आपके पास रुपया नहीं है।'।

'मुझे मिस्टर रामलुभाया सेठ से बहुत आशा थी। परन्तु उन्होंने भी धोखा दे दिया।'।

'क्या कभी पहले भी आपकी जरूरत उसने पूरी की है?'

'आज पहला ही अवसर पड़ा था और उन्होंने साफ इन्कार कर दिया।

'और यह मणीन्द्र बाबू क्या कहते हैं?'

'वह तो कहता है कि आपको रुपया देने की आवश्यकता नहीं और मैं उसके साथ ऐसे स्थान पर भाग जाऊँ, जहाँ तुम हमें न पा सको।'।

'सच? बहुत पाजी है।'।

'और कहता था कि फिल्म कम्पनी का पांच लाख रुपया उसके पास पास है; जो उसको जीवन भर के लिए पर्याप्त होगा।'।

'बेईमान का बच्चा।'।

'मैंने तो उसकी बात मानने से सर्वथा इन्कार कर दिया है।'।

'बहुत अच्छा किया है आपने; परन्तु देखो छाया देवी ! जूआ खेलने वाली आप हैं और मिस साठे हैं। मैंने तो जूआ नहीं खेला। मैंने तो आप पर भरोसा करके प्रोनोटों के नकद दाम दिये हैं। मेरा अपना काम तो आप लोगों के मनोरंजन के लिए साधन उपस्थित करना ही है, और इसी के बदले मैं मैं आपसे कमीशन लेता हूँ। जब आप जीतती थीं तो कभी मुझे आपने उसमें से एक रुपया भी नहीं दिया। अब आप ही बतायें कि आपकी हार में मैं क्यों व्यर्थ ही घाटा खाऊँ?'

‘आपका कथन बिलकुल ठीक है । इस समय मेरे पास एक पैसा भी नहीं । मैं यत्न करूंगी कि आपका सब रुपया शीघ्र ही चुका दूं । परन्तु यत्न करने के अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं कर सकती ।’

‘कैसे यत्न करेंगी आप ?’

‘अभी कुछ नहीं कह सकती । वास्तव में आजकल मेरे दिन ठीक नहीं । मैं जीते हुए रुपये सब हार चुकी हूं । साथ ही मैं अपने आभूषण भी इसी की भेंट चढ़ा चुकी हूं । अब मेरे पास इस अंगूठी, बुन्दों की जोड़ी और नाक की कील के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है । केवल यही नहीं, प्रत्युत एक और मुसीबत मेरे सिर पर सवार हो गई है । मुझे मिस्टर सेठ से बहुत आशा थी परन्तु अब तो कुछ सूझ नहीं रहा ।’

‘मुझे भी तो बताइये कि वह दूसरी मुसीबत क्या है ? यदि मेरे बस की बात हुई तो आपकी पूरी सहायता करूंगा । मैं तो आपका पुराना नौकर हूं । मैं एक समय रायबहादुर साहब की मोटर ड्राइवरी करता था, मुझे रायबहादुर से कई बार गाली खाने का सोभाग्य भी मिल चुका है ।’

‘मैं नहीं जानती कि क्या करूं । मैंने साहस नहीं छोड़ा । इस पर भी मुझे अभी तक कोई मार्ग नहीं सूझा ।’

‘यदि आप मुझे अपने विश्वास के योग्य समझती हैं तो बता सकती हैं ।’

‘मेरे गर्भ ठहर गया है ।’ छाया ने आखें नीचे किये हुए कहा । नवल पर अपना भेद प्रकट करते हुए उसके चेहरे पर लाली दौड़ गई ।

नवल भी यद्यपि कुछ ऐसी ही मुसीबत की आशंका कर रहा था तथापि उसे यह आशा कदापि नहीं थी कि छाया ऐसी गुप्त बात उस पर प्रकट कर देगी । वह बहुत देर तक चुपचाप सोचता रहा । छाया अब भी आखें नीची किये बैठी थी । जब नवल से कुछ उत्तर नहीं मिला तो वह बोली, ‘यदि आप कुछ सहायता नहीं कर सकते तो कोई बात नहीं, परन्तु आप कृपा करके यह भेद किसी पर भी प्रकट न करें ।’

नवल ने कहा, ‘छाया घबराओ नहीं, मैं कोई ऐसी तरीका सोच रहा

हूँ, जो आपको इस उलझन से बाहर निकाल दे। देखिए आपके लिए मैं इस समय निम्न बातें हितकर समझता हूँ।

१. आप किसी सीधे सादे आदमी से तुरन्त विवाह करा लें और पीछे कह दें कि बच्चा सात महीने का है। २. आप गर्भपात कर सकती हैं। मिस साठे डाक्टरी करती हैं वे आपकी सहायता करेंगी। ३. आप घर से भागकर सीधी हरिद्वार चली जायें। वहाँ पर सर गंगाराम ने आप जैसी स्त्रियों के लिए एक आश्रम खोल रखा है। ४. कमल के आश्रम में भी आप जा सकती हैं। माया की भांति वे तुम्हारी भी रक्षा करेंगे। ५. यदि आप आत्म-घात करने की हिम्मत रखती हों तो विष मैं ला दूँगा।'

छाया ने हंसने का बहाना करते हुए कहा, 'बहुत कृपा है आपकी इस परामर्श के लिए।'

'मैं तो आपसे विवाह भी कर लेता। दस हजार भी आपको न देना पड़ता, परन्तु यह देखो वीणा जी आगई है और मैं इनसे बहुत प्रेम करता हूँ।'

वीणा ने यह अन्तिम बात सुन ली थी और उसे ही टालने के लिए नवल ने यह बात कही थी। वीणा हंसकर बोली, 'कर लीजिये न विवाह। मैं क्या आपको मना करती हूँ।'

'नहीं बाबा ! मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। सुनो वीणा ! मैं धनी लोगों से केवल एक ही सम्बन्ध रख सकता हूँ और वह है उनसे धन लूटने का। और यह भी मैं नियमानुकूल ही करता हूँ। ठीक उन नियमों के अनुसार, जो इन धनी आदमियों ने गरीबों को लूटने के लिए बनाये हुए है।'

इस पर छाया ने कहा, 'तो फिर आप एक धनी लड़की की सहायता ही क्यों करेंगे ?'

'इसलिए कि मेरा दस हजार रुपया न डूब जाये। धनी भी गरीब मजदूरों की चिकित्सादि के लिए धर्मार्थ-औषधालय इसलिए खोल देते हैं ताकि स्वस्थ होकर वे उनका काम करें और अपना खून उनके लिए बहायें।'

‘तुम तो बहुत ही बुरे आदमी हो नवल ! तुमसे सहायता लेने में भी मुझे लज्जा आती है ।’

इस पर भी आपको सहायता लेनी चाहिए । इसमें आपका भला ही होगा ।’

छाया जानती थी कि नवल बड़बोला है । वह अपने मन की बात साफ कह देता है । इससे वह पूछने लगी, ‘मैं मिस्टर सेठ से कुछ आशा करूं या नहीं ।’

‘उससे आशा करना बबूल के पेड़ से आमों की आशा करने के समान है ।’

‘फिर भी यदि आप उससे एक बार मिला दे तो मैं आपका अहसान धानूंगी ।’

नवल ने सोचकर कहा, ‘यह कठिन नहीं । यदि आप चाहें तो मैं कल ही उससे मिला सकता हू ।’

‘कैसे ?’

‘यह तुम मुझ पर छोड़ो । मैं जानता हूँ कि उसकी स्त्री बहुत कठोर प्रकृति की है । फिर भी मैं आपको मुलाकात करवा दूंगा । मैं वचन देता हूँ । इस पर भी मैं कहे देता हूँ कि उन तिलों में तेल नहीं है ।’

: २ :

छाया नवल के यहां से लौटी तो रात के दस बज गये थे । वह जब अपने कमरे में पहुंची तो उसकी मां ने कहा । तार आया है, रायबहादुर कल पहुंच रहे हैं ।’

इसके उत्तर में छाया ने मां से कहा, ‘मैं सोने जा रही हूँ । आज मैं भोजन भी नहीं करूंगी कुछ भूख नहीं है ।’

बेटी, थोड़ा खा लो ।’

‘मां! मुझे तंग न करो । सोने दो ।’

मां चली गई । छाया कपड़े बदलकर लेट गई । परन्तु उसे नींद नहीं आई । नवल की बातें बारी-बारी से उसके मन में आती थीं । उन प्रस्तावों

में वह कपने मन की बात जोड़ रही थी कि मिस्टर सेठ से ही विवाह कर ले। यद्यपि नवल ने इसमें आशा प्रकट नहीं की थी तो भी वह इसे सबसे उत्तम बात मानती थी। वह मिस्टर सेठ की दूसरी बीवी बन-कर रहने के लिए भी तैयार थी। फिर भी उसका मन कहता था कि इसकी पूर्ति नहीं होगी। इस प्रकार निराशा से वह फिर एक-एक करके नवल की अन्य तजवीजों पर सोचती थी और अंत में विष खाकर मर जाने का ध्यान करके उसका रक्त जम जाता था। उसे अपनी पूर्ण आशाओं मिट्टी में मिलती देखकर रोना आ जाता था। इस पर भी बार-बार मिस्टर सेठ से बातचीत करने का निश्चय ही वह कर रही थी। प्रायः सारी रात उसने इसी उधेड़-बुन में काटी।

रात भर जागते रहने से प्रातः काल उसका सिर चक्कर खा रहा था, मुख मलिन हो रहा था और पेट में वायु प्रकुपित हो उलटी हो रही थी। मां उसकी यह अवस्था देखकर चिन्तातुर हुई और उसने कहा, 'छाया ! कुछ खा लो न। खाली पेट भी तो वायु बनती है।'

'मां छोड़ो इन बातों को। मैं आराम करूंगी तो ठीक हो जाऊंगी।'

दस बजे रायबहादुर पं० केशवदेव आगये। छाया की मां ने उन्हें पृथक् कमरे में ले जाकर छाया की सारी बातें बताईं। पं० केशवदेव यह सब सुनकर अवाक् हो बैठे रह गए। वह सोचते थे कि यह कैसे हो गया। लड़की तो बहुत सचेत, समझदार और सदाचारिणी थी।

जब छाया अपने कमरे से बाहर आई तो पिता को बैठे देखकर बोली, 'डेडी डीयर.....मौनिंग.....हाउ डू यू डू.....वैन हँव यू कम.....'

रायबहादुर अचम्भे से उसका मुख देख रहे थे। यद्यपि वह प्रसन्नता का भाव दिखा रही थी तथापि रायबहादुर देख रहे थे कि उसकी आंखें फूली हुई हैं और मुख मलिन हो रहा है। उसके चेहरे पर वह तरो-ताज़गी नहीं थी जैसी वह उसके कॉलिज के दिनों में देखा करते थे। जब छाया समीप आई तो उन्होंने सरलता पूर्वक उसका माथा चूमा और अपने

पास बैठकर पीठ पर हाथ फेरते हुए पूछा, 'छाया बेटा ! रात सोई नहीं क्या ?'

'नहीं, नींद ठीक नहा आई।'

'क्यों ? तबियत तो ठीक है ?'

'ठीक है। ऐसे ही करवटें बदलते-बदलते दिन होगया था। अब कुछ सोने लगी थी कि आपके आने की आहट सुनकर बाहर आगई हूं।'

'तो जाओ एक-आध घंटा सो रहो।'

'नहीं अब क्या नींद आयेगी। आज कुछ काम है। मैं नवल बाबू के टेलीफोन की प्रतीक्षा कर रही हूं।'

'कौन नवल ? वही जो हमारी ड्राइवरी करता था और अब जूआ खिलाने का काम करता है।'

'आपको कैसे पता चला है ?'

'उससे तुम्हारा मिलना ठीक नहीं। वह अच्छा आदमी नहीं है।'

'परन्तु डेडी डीयर ! सेक्रेटिरियेट के बड़े-बड़े अफसर, शहर के धनी आदमी और बीसियों प्रसिद्ध औरते तथा मर्द वहां मनोरंजन के लिए जाते हैं। मिस्टर रानाडे कितने भले प्रतीत होते हैं। उस दिन वहां से चार हजार जीतकर लाये थे।'

'छाया !' पंडित जी ने कुछ डाटकर कहा, 'उन लोगों से तुम्हारा क्या मतलब है। रानाडे बड़ी पदवी का अवश्य है, पर चरित्र का अच्छा नहीं है। जो कुछ भी हो मैं तुम्हारा वहां जाना और नवल से मेल-जोल रखना पसंद नहीं करता।'

'परन्तु डेडी ! जब भृगु यहां था तब वह भी तो जूआ खेलता था। वह तो फतेहपुरी में खेलने जाया करता था।'

'उसकी बात दूसरी है। वह तो कमाता भी है और खर्च भी करता है।'

'मैंने भी तो आपसे कहा था कि मैं "विमैन वालन्टियर कोर" में भर्ती हो जाऊं अथवा कोई और काम करने लगूं, परन्तु आपने स्वीकृति

ही नहीं दी थी ।’

‘हां, क्योंकि मैं तुम्हें इस योग्य नहीं समझता था । मेरी पोजीशन देखो और फिर विचार करो कि तुम्हें अपना व्यवहार कैसा रखना चाहिए और किन लोगों से मिलना-जुलना चाहिए ।’

‘मुझे आपकी बातें सुनकर बहुत अफसोस होता है । आप तो औरतों की आजादी के पक्षपाती थे न ? जाने आज आपको क्या हो गया है कि आप ऐसी अयुक्ति-संगत बातें कर रहे हैं । आपकी पोजीशन पर भृगु के आचरण ने ठेस नहीं पहुंचाई और मेरे व्यवहार से आपको डर लग रहा है, इसे मैं क्या समझूं ?’

‘भृगु ने जो कुछ किया है, वह मुझे पसन्द थोड़े ही है । परन्तु छाया, वह लड़का है, उसकी बात लोग भूल जायेंगे । तुम जब कुछ करोगी तो संसार में तुम्हारी और हमारी हंसी होगी ।’

‘मैं इस बात को नहीं मानती । मूर्ख समाज के मूर्खतापूर्ण विचारों से मैं अपने गले में फांस नहीं डाल सकती । मैं तो अपने को उतनी ही स्वतंत्र मानती हूं जितना कि कोई पुरुष । यदि लोग इसे खराब समझते हैं, तो समझें ! वे अपना ही मस्तिष्क खराब करते हैं । मैं उनके आदेश पर अपनी स्वतंत्रता को खोना नहीं चाहती ।’

‘पर स्वतंत्रता की भी तो कुछ सीमा होती है ।’

‘वह पुरुष और स्त्रियों के लिए समान होनी चाहिए ।’

रायबहादुर केशवदेव निरुत्तर होगये । यह उनकी अपनी दी हुई शिक्षा ही थी जिसका फल उन्हें आज छाया के इस आचरण में मिला । इस कारण उन्होंने युक्ति न देकर मिन्नत से कहा, ‘छाया बेटी ! नवल के विषय में सभ्य लोगों की धारणा अच्छी नहीं है । इस कारण मैं तुमसे अनुरोध करता हूं कि उसके यहां आना-जाना बन्द कर दो ।’

‘परन्तु आज तो एक अत्यावश्यक कार्य के लिए मैं समय नियत कर चुकी हूं । बाद में इस विषय में सोचूंगी ।’

‘यह रामलुभाया सेठ कौन है ?’ रायबहादुर ने विषय बदलते हुए पूछा ।

‘दिल्ली शहर के एक विख्यात वकील हैं ?’

‘सुना है वह तुम्हें क्लब में ले जाकर शराब पिलाता है । तुम्हारे साथ नाचता है और तुम्हारा परिचय घावारा लोगों से कराता रहता है ?’

‘मुझे यह सब पता नहीं । शराब कभी-कभी मैं पी लेती हूँ । शराब ममी भी तो कभी-कभी पीती हैं । मैं उनसे प्रेम करती हूँ । वे मुझे किनसे मिलाते हैं और किनसे नहीं मिलाते यह मेरे पूछने की बात नहीं है ।’

‘तुम उससे प्रेम करती हो ? उसका विवाह तो हो चुका है ?’

‘इससे क्या होता है ! प्रेम में ऐसी बातें नहीं देखी जातीं ।’

‘तुम पागल तो नहीं हो गई हो छाया ? कैसी बातें करती हो । मैं तुम्हारा विवाह एक विवाहित पुरुष से नहीं कर सकता ।’

‘पर डेडी ! मैं बालिग हो गई हूँ । क्या मैं अपने विषय में अब भी स्वयं कोई निश्चय नहीं कर सकती ?’

‘तुममें निश्चय करने की योग्यता ही कहाँ है ? पहले तुम बलवीर से विवाह करना चाहती थीं । फिर कमल से कहती थीं । अब यह सेठ आ टपके हैं । आखिर तुम्हारे निश्चय का क्या भरोसा ?’

‘और मान लें कि कल मिस्टर सेठ का विचार छोड़कर मैं किसी और से निर्णय कर लूँ तो आपको इससे क्या ? मैं अपना भला-बुरा पहचानती हूँ ।’

‘हमें कुछ अधिकार ही नहीं ?’ रायबहादुर केशवदेव को क्रोध चढ़ाया । ‘अच्छी बात । यदि हमें कुछ अधिकार ही नहीं तो हमारे घर से चली जाओ । जाओ, जो मन में आये सो करो ।’

‘तो ठीक है मुझे अलग कर दो ।’

‘अलग कर दूँ ? कैसे ?’

‘अपनी जायदाद का आधा हिस्सा बांटकर । आखिर मैं भी तो आपकी वैसी ही सन्तान हूँ जैसे भृगु है ।’

‘सो तो ठीक है । भृगुदत्त मेरी सम्पत्ति बनाने में मेरी सहायता कर रहा है । मैं तो दफ्तर से केवल दो हजार वेतन लाता हूँ और वह तीन वर्ष में पांच लाख रुपये पैदा कर चुका है । तुमने तो अभी तक परिवार के धन में से खर्च ही किया है न ।’

‘तो आप लड़की की कमाई लेंगे ?’

‘नहीं ! मैं लड़की की कमाई न तो लेता हूँ और न ही उसे कमाई में से भाग देता हूँ । यदि तुम जायदाद का भाग मांगती हो तो तुम भी कमाकर लाभो और इस जायदाद की उन्नति में हाथ बटाओ ।’

‘मैं जिसके घर जाऊंगी उसकी सम्पत्ति बनाने में सहायता दूंगी ।’

‘तो हिस्सा भी उसी की सम्पत्ति में से मांगना । मैं जो कुछ दूँगा अपनी इच्छा से दूँगा । तुम बल पूर्वक कुछ नहीं ले सकोगी ।’

‘अच्छी बात है । तो मैं समझूँ कि यह घर मेरा नहीं है ।’

‘लड़कियों के लिए पिता का घर, घर नहीं होता । उन्हें अपने पति के घर रहना चाहिए ।’

‘यह प्राचीन घुने-सड़े विचार इस बीसवीं सदी में पसन्द नहीं किये जाते । इसी से तो मिस्टर सेठ कहते हैं कि लड़कियों का माता-पिता की सम्पत्ति में से लड़कों के बराबर भाग मिलना चाहिए ।’

‘ठीक है, ताकि वह उन्हें बरगलाकर उन लड़कियों की जायदाद हज़म कर सके ।’

‘यह ग़लत है डैडी । आखिर उसकी लड़की को भी तो भाग मिलेगा ।’

‘उसकी लड़की को क्या मिलेगा या क्या नहीं मिलेगा, इससे उसकी स्त्री का कार्य कैसे ठीक हो जायेगा ।’

‘मेरे विवाह पर कुछ दहेज तो देते ही आप ?’

‘वह विवाह के समय दे दूँगा ।’

‘मान लीजिये मेरा विवाह आज ही हुआ है ।’

‘किसके साथ ?’

छाया ने कुछ सोचकर कहा, 'मान लीजिये मिस्टर सेठ के ही साथ ।'

'मुझे यह विवाह पसन्द नहीं । वह तुम्हारे योग्य वर नहीं है ।'

'मुझे तो पसन्द है ।'

'तो अपना दहेज आप ही ले लो ।

'परन्तु डेडी ! कानून मुझे अपना विवाह स्वयं कर लेने की स्वीकृति भी तो देता है ।'

'मैंने इससे कब इन्कार किया है । मैं तो यह कहता हूँ कि कानून मुझे कुछ भी दहेज देने के लिए बाध्य नहीं करता ।'

अब छाया युक्ति में हार गई थी और वह हताश हो सोफे की पीठ का ढासना लगाकर सोचने लगी । इसी समय टेलीफोन की घंटी बजी । छाया ने लपककर उसे उठा कान से लगाकर पूछा, 'हैलो.....छाया हूँ !'

टेलीफोन पर नवल बोल रहा था, 'मैं नवल बोल रहा हूँ । कल आपसे वचन दिया था कि मिस्टर सेठ से तुम्हारी मुलाकात करा दूंगा । अब वह मेरी कोठी में आया हुआ है; तुम तुरंत चली आओ !

छाया टेलीफोन बन्द करके अपने कमरे में गई और कपड़े, बदल, जाने के लिए तैयार हो आई । रायबहादुर जो अभी तक वहीं बैठे थे, पूछने लगे 'छाया, तो जा रही हो तुम, मानोगी नहीं ?'

'नवल बाबू से कुछ काम है । अभी लौट आऊंगी ।' इतना कहकर वह कोठी के बाहर निकल गई । रायबहादुर केशवदेव ने कुछ सोचकर नवल की कोठी पर टेलीफोन किया । बोलने वाली वीणा थी । पंडित जी ने पूछा, 'यह नवल बाबू की कोठी है ? उत्तर मिला 'जी हां । कौन साहब बोल रहे हैं ।'

'मेरा नाम रायबहादुर केशवदेव है । मैं नवल बाबू से बात करना चाहता हूँ ।

'ओह ! तो आप छाया के पिता हैं ? देखिये, मैं वीणा, नवल बाबू की स्त्री, हूँ । नवल बाबू इस समय एक साहब से बात कर रहे हैं, यदि कोई

संदेश आप देना चाहते हैं तो दे सकते हैं, वे तो इस समय आ नहीं सकते ।’

‘कितनी देर में वह खाली होंगे ?’

‘मैं कह नहीं सकती ।’

केशवदेव ने कुछ साचकर पूछा, ‘आप छाया को जानती हैं ?’

‘जी; बहुत अच्छी तरह जानती हूँ ।’

‘वह नवल बाबू के यहां किस काम से आरही है ?’

‘उसने आपको बताया नहीं ?’

‘नहीं ।’

‘तो सुनिए । आपकी लाडली बेटी मिस्टर सेठ से प्रेम करती है और उससे विवाह करना चाहती है । नवल बाबू ने यत्न करके अन्तिम निर्णय करने के लिए उन दोनों को यहां बुलाया है ।’

‘वीणा देवी ! छाया को तुम ही समझाओ न । मिस्टर सेठ का विवाह हो चुका है । उसे सेठ से विवाह करने का विचार छोड़ देना चाहिए ।’

‘मुझे इसमें दिलचस्पी नहीं है । मैं उसको कुछ भी कहना नहीं चाहती, और यदि समझाया भी तो उस पर मेरे कहने का कोई प्रभाव नहीं होगा ।’

‘यत्न तो करो वीणा ।’

‘क्यों करूं ।’

‘छाया को बचाने के लिए । एक भले परिवार की मान-प्रतिष्ठा के लिए और मनुष्यता के नाते ।’

‘आपसे मैंने अभी कहा है कि मुझे इन बातों में कुछ भी रुचि नहीं है । यदि अभी भी आप कहते हैं तो सुनिये कि मैं छाया को गड्ढे में गिरने से क्यों नहीं बचाना चाहती । मेरे एक भाई है उन्होंने बी० ए० किया था । दुर्भाग्य से उनकी कोई सिफारिश नहीं थी और वह हिन्दू परिवार में पैदा हुए हैं । उन्हें कोई नौकरी नहीं मिली । जहां भी वे जाते तो दफ्तरों में आप जैसे अफसर कह देते, हिन्दू तो दफ्तर में बहुत हैं । मुसलमान के लिए जगह है । दुकानों और कारखानों में लोग कह देते थे कि जगह

खाली नहीं। एक ऐसा समय आया कि मेरी भाभी, मेरी मां और मेरे पास पहनने को बाहर जाने के योग्य केवल एक धोती ही रह गई थी। भाई बेकाम था। खाने का सामान बहुत मंहगा हो गया था। हमारे पास एक पैसा भी नहीं था। भाभी के सब गहने भैया की पढ़ाई में बिक चुके थे। मां और भाभी अचानक बीमार हो गईं। भैया एक दिन आये तो बोले; कोई तरस खाकर भीख भी तो नहीं देता। यह घनी आदमी दिन में पांच बार खाते हैं और जब मैं कहता हूं कि मां और बहन भूखी हैं तो लोग हंस देते हैं। आखिर मुझे नवल बाबू के पास अपनी इज्जत बेचनी पड़ी। उस समय आप जैसे घनी लोगोंने कभी ध्यान नहीं दिया था कि एक भले परिवार की प्रतिष्ठा बिगड़ती है। न हा मनुष्यता का किसी ने विचार किया था। मैं समझती हूँ कि आप लोग हम गरीबों से पृथक् श्रेणी के हैं। जब आपको ही कभी हमारी भलाई का विचार नहीं आया तो भला आप कैसे हमसे यह आशा करते हैं कि हम आपकी भलाई की चिन्ता करेंगे।'

'देखो वीणा' रायबहादुर ने बहुत ही मिन्नत के लहजे में कहा, 'तुम जो कुछ मांगोगी मैं देने को तैयार हूँ। किसी प्रकार यह विवाह न होने पाये तो ठीक है।'

'हाँ, इस भांति काम कर सकती हूँ। परन्तु सुनिये, छाया को नवल-बाबू का दस हजार रुपया देना है। छाया के हाथ के लिखे प्रोनोट उनके पास है। वे रुपये आप चुका दें। इसके अतिरिक्त आप यदि पांच हजार रुपया मेरी इस सेवा का मूल्य, अभी आधे घंटे में आकर दे जायें तो मैं विश्वास दिलाती हूँ कि मैं इनके विवाह को रोकने का पूरा-पूरा यत्न करूंगी। आशा है मुझे इसमें सफलता मिल जायगी।'

'नवल बाबू वह प्रोनोट भी मुझे दे देंगे क्या?'

'हाँ।'

'तो तुम यत्न करो मैं अभी आया।'

'छाया आ रही है। उसके आते ही बात होने लगेंगी। इस कारण आप उससे पहले ही आकर यदि तय कर लें तो बात हो सकती है।'

रायबहादुर केशवदेव को यद्यपि पन्द्रह हजार रुपया भारी रकम लगी, तथापि लड़की को और अपनी मर्यादा को बचाने के लिए वह इतना रुपया देने के लिए तैयार हो गये। वह उठे, बैंक की चैक-बुक ली और मोटर में सवार हो बैंक में जा पहुंचे। वहाँ से पन्द्रह हजार रुपया निकालकर वे सीधे नवल की कोठी पर चले गये।

वीणा कोठी के बरामदे में बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी। राय-बहादुर एक सुन्दर लड़की को वहाँ इस प्रकार निश्चिन्त हो बैठे देख समझ गये कि नवल की बीवी यही होगी। वे वीणा को देख चकित रह गये थे। उन्हें यह आशा नहीं थी कि एक ड्राइवर की बीवी इतनी सुन्दर हो सकती है। वह वीणा के पास जाकर खड़े हो गये। वाणा भी उन्हें देख हैरान हुई थी। उसे यह आशा नहीं थी कि छाया का पिता इतना रुपया देने के लिए तैयार हो जायेगा। इस कारण प्रश्न-भरी दृष्टि से वह उनकी ओर देखने लगी।

रायबहादुर ने बहुत नम्रता से पूछा, 'क्या आप ही वीणादेवी हैं ?'

'हां, और आप ?'

'मे छाया का पिता केशवदेव हूं।'

'तो रुपया लाये है, आप ?'

'हां।'

वीणा अपनी कुर्सी से उठ पड़ी और बोली, 'तो आइये।'

वह उन्हें दफ्तर में ले गई और वहाँ एक कुर्सी पर बैठाकर बोली, 'तो आप प्रोनोटों का रुपया देंगे ?'

'हां ! पर क्या मैं उन्हें देख सकता हूं ?'

'क्यों नहीं।' इतना कहकर वीणा ने घंटी बजाई। छाया की पीठ के पीछे एक दरवाजा था। यह दरवाजा एक कमरे में जाता था। घंटी की आवाज सुनकर नवल उस दरवाजे से दफ्तर में आगया। नवल के आने पर वीणा ने उससे कहा, 'आप छाया के पिता हैं और छाया के प्रोनोटों का रुपया देना चाहते हैं।'

केशवदेव ने जेब से हजार-हजार रुपये के दस नोट निकालकर मेज पर रख दिये। नवल ने मेज के दराज को खोलकर उसमें से तीन प्रोनोट निकालकर रायबहादुर के हाथ में दे दिये। रायबहादुर ने उन्हें पढ़ा हस्ताक्षर देखे और फिर लपेटकर जेब में रख लिये। इसी समय नवल ने नोटों को गिनकर मेज के दराज में रख दिया और फिर यह कहकर कि मुझे जाने की इजाजत दें, मैं एक काम कर रहा हूँ, चला गया।

नवल के चले जाने पर रायबहादुर ने कहा, 'वीणा देवी एक और काम भी तो आपने करने को कहा था ?'

'हां अभी समय है। पाँच हजार उसका मूल्य है।'

रायबहादुर ने यह रुपया भी वीणा के सामने रख दिया। वीणा ने रुपया अपने ब्लाउज में रखते हुए कहा, 'आप बाहर बरामदे में कुर्सी पर बैठिये। मैं भीतर जाती हूँ और छाया को लाकर आपके सामने यह कहलवा दूंगी कि मिस्टर सेठ से उसका विवाह नहीं होगा।'

: ३ :

भीतर कमरे में मिस्टर सेठ से छाया अपना अवस्था का वर्णन कर रही थी। 'मुझे एक मास से ऊपर होगया है। अब मेरे लिए इसके अतिरिक्त और कोई चारा नहीं कि मैं किसी से विवाह कर लूँ। यह ठीक है कि विवाह की रस्म को मैं व्यर्थ समझती हूँ, परन्तु मेरे भी पिता हैं, माता हैं, भाई और मित्र हैं। मेरा भी समाज है और उसके विचारों की मैं अवहेलना नहीं कर सकती। यदि मुझे विवाह ही करना है तो मैं समझती हूँ कि आपको इसके लिए विवश करूँ। यह आप भली भाँति-जानते हैं कि मैं आपसे प्रेम करती हूँ और यह होने वाला बच्चा भी आपका ही है।'

'छाया ! जब हममें घनिष्ठता होनी आरम्भ हो गई थी तब ही मैंने सब बातें तुम्हारे सम्मुख रख दी थीं। उस समय तुम कहती थीं कि

जब एक स्थान से मन उकता जायगा तो उड़कर दूसरे पेड़ पर जा बैठोगी। तुम उस समय पक्षियों की भांति स्वच्छन्द रहना चाहती थीं न ? तो बताओ अब मैं क्या करूँ ? मेरा भी समाज है। मेरे भी सम्बन्धी हैं। सबसे अधिक मेरी बीवी है जो बहुत ही कठोर स्वभाव वाली है। इस पर भी वह मुझ पर जान देती है। वह पक्षियों की भांति स्वच्छन्द रहना पसन्द नहीं करती। वह एक पेड़ को भुलसाकर दूसरे हरे-भरे पेड़ पर जाकर बसेरा करना पसन्द नहीं करती। उसका तो आदर्श है :—

“फल खाये जिस पेड़ के, गंदे कीने पात।

धर्म हमारा है यही, जलें इसी के साथ ॥”

‘बताओ मैं उस को कैसे छोड़ सकता हूँ। दुर्भाग्य की बात यह है कि वह स्वतन्त्रता की भी उपासिका नहीं। वह तो मेरे चरण छूती है मेरी टांगें दाबती है, मुझे प्रत्येक प्रकार का सुख देती है। भला बताओ तो सही यदि मैं उसे छोड़ भी दूँ तो वह तो मुझे नहीं छोड़ेगी।’

छाया ने विवश होकर कहा, ‘मैं उसे छोड़ने को नहीं कहती। मैं तो यह कहती हूँ कि आप मुझसे भी विवाह कर लें।’

‘राम ! राम ! तुम उसके साथ एक दिन भी नहीं निबाह सकोगी छाया ! वह जितनी मुझसे मीठी है उतनी ही दूसरों से कड़वी है। जैसे एक मनुष्य अपने मकान की देख-भाल ऐसे करता है जैसे वह मकान की सफाई के लिए नौकर रखा गया है। इस पर भी यदि कोई दूसरा उस मकान पर अधिकार जमाना चाहे तो वह उससे लड़ने-मरने के लिए तैयार हो जाता है। यही अवस्था मेरी धर्म-पत्नी की है। वह मेरी वेदाम की गुलाम है; परन्तु इस गुलामी से छुटकारा पाना भी उसे पसन्द नहीं।’

‘परन्तु मिस्टर सेठ ! यदि वह ऐसी है तब तो उसे छोड़ ही देना चाहिए। देखिये यदि मैं स्वयं स्वतन्त्र रहना चाहती हूँ तो आपको भी स्वतन्त्रता देती हूँ।’

‘मैं आपकी इस कृपा के लिए आभारी हूँ । परन्तु छायादेवी कठिनाई तो मेरी स्त्री की है । वह स्वयं स्वतंत्रता नहीं चाहती । मेरे साथ मेरी दासी बनकर रहती है और चाहती है कि मैं भी उसका दास बना रहूँ । यद्यपि स्वतंत्रता में भी एक मजा है तथापि मैं सच कहता हूँ कि इस प्रकार की परस्पर पराधीनता में भी कम आनन्द नहीं । देखो, अभी वह कलकत्ता अपने बाप के घर पर छै मास तक रहकर आई है, परन्तु मुझे उसके प्रति किसी अन्य पुरुष से सम्बन्ध पैदा करके उसका पुत्र पेट में ले घर चले आने की आशंका कभी नहीं हुई । मुझे उस पर अगाध विश्वास है । परन्तु तुम्हारे जैसी स्वतंत्रता पसन्द करने वाली स्त्री को एक दिन मणोन्द्र के साथ देखकर मुझे शका हो गई है कि यह बालक कहीं उसी का तो नहीं । तुम्हारा क्या ठिकाना, तुम्हारा यह कथन कि तुम झुलसे पेड़ को प्रकृति के दयालु हाथों में छोड़कर चली जाओगी, मुझे सदैव संशय में डाले रखेगा । प्रकृति का क्या भरोसा ; जल बरसायेगी या नहीं । और मेरी तो सदैव यही इच्छा बनी रहेगी कि तुम्हें छै महीने तो दूर, एक दिन के लिए भी अपनी दृष्टि से ओझल न होने दूँ । यदि कहीं तुम दूसरे पेड़ पर जा बैठीं तो मैं सूखा टूट ही रह जाऊंगा ।’

‘तो तुम मुझे क्या करने को कहते हो ?’

‘देखो छाया । आज तक तुमने कभी विवाह की चर्चा नहीं की थी । आज भी तुम यह केवल इसीलिए कह रही हो कि इस होने वाले बच्चे का बाप मुझे ही सिद्ध करना चाहती हो । देखो मैं तुम्हें राय देता हूँ कि बलवीर जी से मिलकर शीघ्र ही अपने विवाह का निश्चय कर लो । ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपने हृदय में अब भी तुम्हें प्रतिष्ठित किये हुए हैं, अन्यथा वह कभी का विवाह कर लेता । बलवीर बहुत ही सीधा आदमी है । एक तो उसे तुम्हारे गर्भवती होने का पता ही नहीं चलेगा और यदि चल भी गया तो वह तुम्हारे भेद को छिपा लेगा ।’

‘तो आपसे मैं कुछ आशा न रखूँ ?’

‘पगली ! बलवीर क्या मुझसे कोई कम है ?’

‘छाया इस प्रकार ठुकराये जाने से रुआसी-सी हो गई। उसने आंचल से आंखें पोंछते हुए कहा, ‘मिस्टर सेठ ! मैं सचमुच ही आपसे “लव” करती थी और मुझे स्वप्न में भी आपसे यह आशा न थी।’

इतना कहकर छाया कमरे के बाहर आने लगी तो वीणा को दरवाजे के समीप खड़ी देखकर बोली, ‘तो तुम सब कुछ सुन रही थीं।’

वीणा ने केवल यह कहा, ‘तुम्हारे पिता आये हैं। मैं तुम्हें बुलाने आई थी।’

छाया कमरे के बाहर आई तो पिता को बरामदे में बैठे देखा। वह सामने आकर खड़ी होगई। वीणा छाया के पीछे खड़ी थी। रायबहादुर ने उत्सुकता से पूछा, ‘क्या हुआ है छाया?’

‘मिस्टर सेठ से मेरा विवाह नहीं हो सकता।’

‘परमात्मा को लाख बार धन्यवाद है। चलो छाया ! मैं मोटर लाया हूँ।’

छाया पिता के साथ-साथ पीछे चल दी और मोटर में जा बैठी। रायबहादुर ने जेब से वे प्रोनोट निकालकर छाया को दिखाये, जो उसने नवल से दस हजार रुपये देकर लिए थे। छाया उन्हें देखकर हैरानी से पूछने लगी, ‘यह कहां मिले हैं आपको?’

‘मैंने नवल बाबू को दस हजार रुपये देकर लिए हैं।’

‘क्यों?’

अपनी और तुम्हारी इज्जत बचाने के लिए।

४ :

जब रायबहादुर छाया को लेकर चले गये तो मिस्टर सेठ कमरे से बाहर निकल आया। नवल वहां बरामदे में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। मिस्टर सेठ के आते ही नवल ने पूछा, ‘पा गये छुटकारा सेठ साहब?’

‘बड़ी कठिनाई से छुट्टी पाई है। बला की औरत है यह।’

‘तुम्हारी बीवी से भी जबर्दस्त है क्या?’

‘नहीं। मगर ज़बरदस्ती-ज़बरदस्ती में भी तो भेद है न, वह तो मुझे सीधे मार्ग पर लाने के लिए मुझ पर दबाव डालती है और यह स्वयं उल्टे मार्ग पर चलने की ज़बरदस्ती करती है।’

‘पर तुमने ही तो इसे खराब किया है। इससे क्या तुम्हारा यह फर्ज नहीं हो जाता कि ऐसे समय में इसकी रक्षा करो?’

‘मैंने उसे बिलकुल खराब नहीं किया। वह तो स्वयं ही पके आम की भांति मेरी झोली में आ गिरी थी। इस मैंने तो उसे उठाकर चूमने का कष्ट किया है। यदि मैं ऐसा न करता तो कोई और उसे उठाकर चूस जाता। मैंने तो केवल अवसर से ही लाभ उठाया है।’

‘भाई सैठ! मुझे तो उस पर दया आती है। यह ठीक है कि उसका शिक्षा में दोष था। परन्तु तुमने तो उसे सीधे मार्ग पर लाने के स्थान में उल्टा ही मार्ग दिखाया। उसका जीवन बर्बाद करने के दोषा वास्तव में तुम ही हो।’

‘नवल बाबू! तुम सब बात नहीं जानते तभी ऐसा कहते हो। वास्तव में यह लड़की अव्वल दर्जे की “फलर्ट” है। यह चलते-फिरते युवकों को भड़काने में सिद्ध-हस्त है। क्लब में मैं इसे ले ज़रूर गया था, परन्तु मेरी इच्छा के विपरीत प्रायः सब युवक मदस्यों से इसने अपना मेल-जोल बढ़ा लिया था। बलवीरजी से इसके परिचय की कहानी तो तुम्हें मालूम ही है। मुझमें कुछ दोष है तो यही कि मैं इसके सौन्दर्य के तेज को सहन नहीं कर सका।’

‘इस पर भी हानि तो उसी की हुई है? तुम्हारा क्या बिगड़ा है।’

‘नवल तुम्हें बहुत दया आ रही है उस पर? यदि इनने उदार बनते हो तो तुम ही विवाह कर लो न उससे। आखिर वीणा से तो वह अधिक सुन्दर है।’

‘नहीं! ……………’

इसी समय वीणा अपने कमरे में से आगई और बोली, ‘नहीं, क्यों कहते हो? वह वास्तव में मुझसे अधिक सुन्दर है; परन्तु मैं उसे आपकी

स्त्री नहीं बनने दूंगी। जानते हैं क्यों ? इसलिए कि आपने एक समय मेरे साथ भलाई की थी। उस अहसान के बदले छाया, जैसी मूर्ख लड़की को मैं आपको बीवी हरगिज़ न बनने दूंगी। वह आपके जीवन को दुःखमय कर देगी।'

मिस्टर सेठ हंस पड़ा और वीणा से पूछने लगा, 'यह सौतिया डाह का सूचक है अथवा नवल के प्रति मां की वत्सलता का ?'

नवल इस कटाक्ष से हंस पड़ा। वीणा ने इसका उत्तर दिया, 'यह है नारी के हृदय का प्रेम, जो अपने प्रेमी को कष्टों से बचाने के लिए सतर्क रहता है। और देखिये आपने उसे जो मार्ग बताया है मैं भरसक उसकी पूर्ति में भी बाधा डालूंगी।'

नवल ने पूछा, 'क्या ? मे समझा नहीं।'

'मिस्टर सेठ छाया से कह रहे थे कि बलवीर भैया सीधे-सादे आदमी है, उनसे वह विवाह कर ले और होने वाले बच्चे को भी उनके मृत्यु मढ़ दे।'

'तो फिर क्या हुआ ?' नवल ने पूछा।

'हुआ यह कि कमल और बलवीर जी के लिए मेरे मन में भारी श्रद्धा है और मैं उन्हें इस गड़बड़ में गिरने से बचाने का यत्न किये बिना नहीं रह सकती।'

मिस्टर सेठ ने कुछ चिढ़कर पूछा, 'मेरी समझ में यह बात नहीं आ रही कि वीणा और कमल का क्या सम्बन्ध है ? आखिर यह क्यों उनको छाया से अलग रखने का यत्न करती है ?'

यह प्रश्न पूछा तो गया था नवल से परन्तु उत्तर दिया वीणा ने।

'तूम इन बातों को नहीं समझ सकते मिस्टर सेठ ! इसके समझने के लिए नारी के हृदय की आवश्यकता है। मैं और प्रायः सभी स्त्रियां किसी के किये गए जरा से भी अहसान को कभी भी भूल नहीं सकतीं। नवल बाबू ने एक दिन दस रुपये देकर मेरी मां की जान बचाई थी। उसके प्रतिकार में वे मेरे पर बिना विवाह किये भी प्रत्येक अधिकार रखते हैं। मैं उनकी दासी बन गई हूँ। एक समय कमल बाबू और बल-

वीर जी ने मेरे भाई की सहायता करके उन्हें पागल होने से बचा लिया था। यदि उस समय कमल जी मेरे भाई को अस्त-व्यस्त अवस्था में देख उस पर संशय करते, तो मेरे नवल जी को आत्म-समर्पण करने के समाचार से उनके पागल होने में बिल्कुल संशय नहीं था। मैं उनके इस उपकार को कदापि भूल नहीं सकती। इस कारण मैं उन्हें हानि पहुंचते भी नहीं देख सकती।'

'तो उस बेचारी के लिए तो आत्म-घात के सिवा और कोई चारा नहीं रहेगा ?'

'मैं उसकी पथ-प्रदर्शिका तो हूँ नहीं। मुझे उसकी कोई चिंता नहीं। चिंता उसे होनी चाहिए, जिसने झूठे प्रेम के आवरण के पीछे उसके शरीर और यौवन से खिलवाड़ की।'

: ५ :

कमल के आश्रम में मिस्टर सुन्दरम् भी एक सदस्य थे। वे माला-वार के इलाके के रहने वाले और जाति के नायर थे, और दिल्ली में एक समाचार पत्र के सम्पादकीय विभाग में काम करते थे। कमल के लेखों को पढ़ और इस आश्रम के नियमों को समझ मनोद्गारों के वेग में आकर वे आश्रम के सदस्य बन गये थे। यों तो वे घर से अच्छे थे, परन्तु परिवार के धन को भाइयों के लिए छोड़ केवल एक धोती और कुर्ता पहने आश्रम में आये थे। उन्हें समाचारपत्र से उस समय ढाई सौ वेतन मिलता था। आश्रम में प्रवेश करते समय कमल ने उसे बताया था कि सदस्यों की औसत आय एक सौ बीस रुपये मासिक है और सदस्यों का औसत व्यय चालीस रुपये मासिक है। शेष जो कुछ बचता है वह सब आश्रम की सम्पत्ति बन जाती है। और आश्रम छोड़ते समय भी यह आवश्यक नहीं कि उस शेष धन में से कुछ भी किसी को दिया जाय। इस पर भी मिस्टर सुन्दरम् अपने को कम्युनिस्ट कहते हुए इस नियम में आपत्ति नहीं उठा सके।

मिस्टर सुन्दरम् नाम के तो सुन्दर थे परन्तु रूप में कुछ और ही थे।

स्वभाव के शुष्क और चित्त के वे अस्थिर थे। परिणाम यह हुआ कि दो मास के भीतर ही उन्हें आश्रम से विरक्ति होगई। सप्ताह में एक दिन उनकी डचूटी रात के समय होती थी। उस दिन वह दिन भर आश्रम में रहते थे। उस दिन वह कमल से वाद-विवाद करने के अतिरिक्त न तो स्वयं कुछ काम करते थे और न उसे ही कुछ करने देते थे। आश्रम के विषय में वे न जाने क्या-क्या धोरणा लेकर आये थे। वह आश्रम की सब स्त्रियों को और विशेषतः लड़कियों को अपनी वासना-तृप्ति का साधन समझते थे। जब वीणा नवल के साथ नहीं गई थी वह अपनी कृपा-दृष्टि उस पर रखते थे। उसके दुर्भाग्य से वीणा कमल पर अपनी दृष्टि लगाये हुए थी। जब वीणा चली गई तो उसका ध्यान मुरली पर गया। इस बार भी उसे असफलता ही पल्ले पड़ी। कमल उसमें भारी बाधा था। जब मुरली का विवाह कमल से होगया तो मिस्टर सुन्दरम् की दृष्टि माया पर गई। पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् माया शीघ्र ही स्वस्थ होती जा रही थी और मिस्टर सुन्दरम् का ध्यान इस ओर अनायास ही खिंच रहा था।

आज मिस्टर सुन्दरम् का खाली दिन था। वह ग्यारह बजे सोकर उठा और कुएं पर स्नान करने चला आया। जगत पर माया लड़के को गोदी में लिये बैठी थी। मिस्टर सुन्दरम् आया तो लड़के को आवाज देकर अपनी ओर माया को आकर्षित करने के बहाने उसके सम्मुख आकर खड़ा हो गया। वह बच्चे को गोदी में ले कुछ देर उसे खिलाकर माया से बोला, 'बहुत सुन्दर लड़का है। जी चाहता है इसे खिलाते ही रहो।'

माया आखें नीची किये बैठी रही। सुन्दरम् ने बात बदलकर कहा, 'सुना है माया ! तुम यहां से जा रही हो ?'

'कहाँ ?' माया ने आखें नीची किये हुए ही पूछा।

'अपनी मां के घर।'

'क्या करूंगी वहां जाकर।'

'यहां भी तुम्हारा क्या है ? हां अगर मेरा कहना मानो तो किसी से विवाह कर लो, यहीं आश्रम में। मैं समझता हूं यह सबसे अच्छी बात होगी।'

माया एक लम्बी सांस लेकर चुप हो रही । सुन्दरम् ने बच्चे को एक बार उछालकर फिर कहा, 'शायद तुम यह समझती हो कि यहाँ तुमसे कौन विवाह करेगा ?'

माया की आँखें तरल और सजल हो उठीं । सुन्दरम् ने उपयुक्त अवसर समझ फिर कहा, 'तुम्हारा यह विचार गलत है । भला, यदि मैं ही तुमसे विवाह की बात करूँ तो तुम्हें कैसा लगेगा ?'

माया ने कुछ उत्तर नहीं दिया । सुन्दरम् ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'यह लड़का मुझे बहुत प्यारा लगता है । मैं इसे अपने लड़के की भाँति पालूँगा ।'

माया ने अब भी कुछ उत्तर नहीं दिया । सुन्दरम् ने फिर कहा, 'तो माया ! क्या मैं तुम्हारी स्वीकृति समझूँ ?'

माया को अब विवश होकर बोलना ही पड़ा, उसने कहा, 'नहीं जी । मेरा अभिप्राय यह नहीं । आप ऐसी बातें मेरे बड़ों से करिये, वे जो भी उचित समझेंगे करेंगे ।'

'तुम्हारे बड़े यहाँ कौन है । तुम्हारी माता से कहूँ क्या ?'

'कमल भैया जो हैं ?'

'कमल ? कमल कौन है ? मैं उसे यहाँ का बड़ा नहीं समझता । वह कम्युनिज़्म के विषय में कुछ भी नहीं जानता, इस पर भी वह ऐसे आश्रम का मुखिया बना बैठा है ।'

'मैं आश्रम के मुखिया अथवा आपके बड़े की दात नहीं कह रही । मैं तो अपने बड़े की बात कह रही हूँ । वह मेरे बड़े हैं । मैं उनको अपना बड़ा भाई मानती हूँ । मेरे विषय में मुझसे न कहकर आप उनसे ही कहिये ।'

'परन्तु अब तुम बालिग हो माया ! अब तुम्हें अपने विषय में स्वयं निश्चय करने का भी तो अधिकार है न !'

मैं स्वयं निश्चय करके एक बार भूल कर चुकी हूँ । और वैसी भूल अब दोबारा नहीं करना चाहती ।'

‘संसार में सब लोग एक जैसे नहीं हैं। उनमें कोई भले भी तो हो सकते हैं ?’

‘इतने बड़े संसार में क्या एक से अधिक दुष्ट मिलने सम्भव नहीं। बड़े-बड़े गुरुघंताल इसमें भरे पड़े हैं सुन्दरम् बाबू।’ माया ने व्यंग कसते हुए कहा।

‘पर मैं तो ऐसा नहीं हूँ।’

‘वह भी तो ऐसा ही कहता था। मिस्टर सुन्दरम् !’ माया ने लड़के को गोद में लेते हुए कहा, ‘इस विषय में आप कमल भैया से बातें करें। मैं स्वयं बात करना उचित नहीं समझती।’

सुन्दरम् स्नान करने के लिए कुएं की जगत पर चढ़ गया और माया बच्चे को कंधे के साथ लगाकर अपने कमरे में चली गई। सुन्दरम् स्नान कर, वैसे ही गीली धोती और तौलिया लेकर कमल के कमरे में जा पहुंचा। कमल आज एक पुस्तक लिख रहा था, जिसका नाम था ‘भारतीय-संस्कृति।’ कमल अभी लिख ही रहा था कि सुन्दरम् ने आकर ‘नमस्कार’ की।

कमल ने लिखना बन्द करते हुए कहा, ‘आओ भाई सुन्दरम् ! आज छुट्टी का दिन है क्या आपका ?’

‘जी ! परन्तु मैं आज आपके पास एक विशेष प्रयोजन से आया हूँ।’

‘हा ! बताइये। मैं आपकी सेवा में उपस्थित हूँ।’

‘मेरा मतलब यह है कि आपने जीवन की तीन मुख्य आवश्यकताओं को तो आश्रम के अधीन कर दिया है। मेरा अभिप्राय भोजन, वस्त्र और मकान से है। परन्तु एक इससे भी अधिक आवश्यक बात है, जिस ओर आपने ध्यान ही नहीं दिया। वह है मनुष्य की शारीरिक भूख विवाह। यह भी जीवन की एक परमावश्यक बात है। इसके बिना मनुष्य का जीवन अपूर्ण रह जाता है। इस विषय में आपके आश्रम के नियम चुप हैं।’

‘मिस्टर सुन्दरम् !’ कमल ने कुछ देर उसके कहने का अभिप्राय

समझने का यत्न करते हुए कहा, 'बात तो आपकी बहुत महत्व की है। मैं आपकी बात को इस प्रकार समझता हूँ, कि क्या भोजन, वस्त्र और मकान की भाँति स्त्री-पुरुष के विवाह का प्रबन्ध भी मैं इस आश्रम के अनुशासन में ले आऊँ ? वास्तव में हिन्दू समाज ने इस बात को भोजन, वस्त्र इत्यादि से अधिक महत्व दे रखा था और इस समाज में यह यत्न किया जाता था कि प्रायः प्रत्येक लड़के, लड़की का विवाह कर ही दिया जाय। हिन्दू समाज की सभ्यता उस समय की थी जब शायद खान-पान का कष्ट प्रायः किसी को नहीं था। इस कारण इन बातों की ओर ध्यान न देकर विवाह जैसी जटिल समस्या को समाज के नियमों में बाँधने का यत्न किया था। उनका यत्न, जैसा कि तुम जानते हो, न तो सफल कहा जा सकता है और न असफल। शताब्दियों तक बिना किसी संघर्ष के हिन्दू समाज के नियमानुकूल लड़के-लड़कियों के विवाह होते रहे हैं। इन नियमों में लड़के लड़की की अनुमति की भी कोई आवश्यकता नहीं मानी जाती थी। क्या आपका मतलब यही है, कि जैसे भोजन-वस्त्र इत्यादि का प्रबन्ध व्यक्तिगत सदस्य को करना नहीं पड़ता; आश्रम सबके खाने इत्यादि का प्रबन्ध करता है, वैसे ही सबके विवाह का प्रबन्ध भी आश्रम ही करे ?'

'हां, परन्तु व्यक्तिगत सदस्यों की रुचि का ध्यान रखकर ही।'

'हां, हां, यह तो होगा ही। विवाह और भोजन में भारी अन्तर है। भोजन अथवा मकान इत्यादि में तो दूसरे लोगों की सम्मति से इतनी हानि होने की सम्भावना नहीं जितनी कि विवाह के विषय में। समाज तो साधारण नियम ही बना सकता है, जिससे विवाह करने वालों की योग्यता का माप-दंड नियत किया जा सके। शेष च्नाव तो अपना-अपना ही हो सकता है।'

'यही तो बहुत कठिन बात है। अब देखिये मैं हूँ, ढाई सौ रुपये वेतन लेता हूँ। शरीर से स्वस्थ हूँ और आयु में विवाह के योग्य हूँ। मेरे चरित्र के विषय में तो सब आश्रम निवासियों को विदित ही है। पढ़ा-

लिखा भी हूँ। इस पर भी मेरा विवाह यहां किसी लड़की से हो सकेगा मुझे यह आशा नहीं। जब भी मैं किसी लड़की से बात करता हूँ तो वह मुझे दूर भाग जाती है, जैसे मुझे छूत की बीमारी लगी हुई है। और यदि मैं किसी लड़की के पिता से बात करता हूँ तो वह हंस देता है।

‘यदि मैं आश्रम में न होता और अपने पूरे वेतन पर अधिकार रखता तो हिन्दू-समाज मेरा विवाह अवश्य कर देता। यहां आये मुझे एक वर्ष हो चुका है। मेरे देखते-देखते वीणा और मुरली का विवाह हो चुका है और मेरी ओर किसी का ध्यान भी नहीं गया।’

कमल भी यह अनुभव करता था कि शायद सुन्दरम् जैसे आदमी का, उसके आश्रम में विवाह हो नहीं सकेगा। बाहर के संसार में उसका वेतन, उसकी जाति, उसके सम्बन्धियों का प्रभाव उसके गुण थे, जो उसे पत्नी ला देते। इस आश्रम में वेतन और जाति कुछ भी महत्त्व नहीं रखते। उसके सम्बन्धी उससे नाराज हैं कि वह अपना वेतन आश्रम वालों को क्यों दे देता है। और आश्रम में तो प्रत्येक सदस्य अपने निजी गुणों से ही विवाह करने की सफलता की आशा कर सकता है। दुर्भाग्य की बात यह थी कि यह गुण सुन्दरम् में नाम-मात्र को भी न थे।

कमल ने गंभीरता पूर्वक विचार करके कहा, ‘मिस्टर सुन्दरम् ! दो में से केवल एक ही बात हो सकती है। या तो हिन्दू-समाज की भांति लड़के-लड़कियां अपने साथी ढूँढने का अधिकार अपने बड़ों को अथवा समाज में प्रतिष्ठित लोगों को दे दें। ऐसी अवस्था में अच्छी बुरी लड़की अथवा लड़का जो भी मिले, उस पर ही संतोष करना होगा। या फिर अपने-अपने जोड़े स्वयं ढूँढने पड़ेंगे। समाज या बड़े लोग केवल उस समय हस्तक्षेप करेंगे जब युवक कोई भारी भूल करने लगेंगे। ऐसी अवस्था में साधारण बुद्धि के, कुरूप, अशिक्षित लोगों के विवाह होने कठिन हो जायेंगे। बताइये आप इन दोनों में से क्या पसंद करते हैं?’

इस प्रकार के स्पष्ट प्रश्न ने सुन्दरम् को दुविधा में डाल दिया।

वह चाहता था कि माया से उसका विवाह कर दिया जाय; परन्तु उक्त दोनों तरीकों में से किसी एक को मानकर भी यह सम्भव नहीं था। इस पर भी उसने कह ही दिया 'देखिये मि० कमल ! मैं तो चाहता हूँ कि मायादेवी से मेरा विवाह कर दिया जाय। इसी प्रयोजन से मैं आपके पास आया हूँ।'

'आपने माया से पूछ लिया है?'

'हां ! वह कहती है कि कमल भैया जैसा कहेंगे वैसा वह करेगी।'

'तो इसका अर्थ आपने यह समझा है कि अपने पति के चुनाव का अधिकार वह मुझे दे रही है। अब अच्छा बुरा जो कुछ भी मैं उसके लिए चुनूंगा वह स्वीकार कर लेगी। पर क्या आप भी वह अधिकार मुझे देना चाहते हैं? यदि मैं माया के स्थान में कोई और लड़की आपके लिए तजवीज् करूँ तो क्या आप स्वीकार कर लेंगे?'

'नहीं ! मैं अभी तो माया के लिए ही आपको अधिकार देता हूँ। यदि वह माने तो आप मेरी ओर से उससे पूछ लें।'

'तो यह अधिकार नहीं कहा जा सकता। यह तो केवल आपका आदेश ही है। मैं इसका पालन करूँगा; परन्तु ऐसी अवस्था में मैं उसे भी अपने लिए निर्णय करने की स्वतंत्रता दे दूँगा। अधिकार एकांगी नहीं हो सकता।'

'जो कुछ भी हो मैं देखना चाहता हूँ कि आप उसे मेरे विषय में क्या राय देते हैं?'

अगले दिन सुन्दरम् रात को जब आश्रम में आया तो कमल ने बुलाकर उसको कह दिया कि 'मैंने माया के मन के भावों को जानकर यह निश्चय किया है कि आपका विवाह उससे नहीं हो सकेगा।'

'क्या कहा आपने?'

'आप दोनों के विचारों में आकाश-पाताल का अन्तर है। आपका विवाहित जीवन उसके साथ विवाह करने से सुखमय नहीं हो सकेगा।'

'यह आपका ही विचार है न?'

‘नहीं। माया का भी यही विचार है।’

‘मैं समझता हूँ कि आप लोग मुझे कोई नीच—अछूत व्यक्ति— समझते हैं। ऐसी अवस्था में मैं आपके आश्रम में भी नहीं रह सकता।’

‘देखिये मिस्टर सुन्दरम्! आश्रम में रहने अथवा न रहने की आपकी इच्छा है। परन्तु जहाँ तक विवाह का सम्बन्ध है आप मुझे अपने लिए पत्नी ढूढने का पूर्ण अधिकार दे दे तो मैं इस काम में आपकी सहायता करने का पूर्ण प्रयत्न करूँगा। जब तक मुझे आपके गुण, कर्म तथा स्वभाव से मेल खाने वाली लड़की न मिल जायगी तब तक मैं आपको विवाह करने के सम्बन्ध में कुछ नहीं कह सकता। यह नहीं हो सकता कि एक ओर तो आप समाज की सहायता मांगें और दूसरी ओर समाज पर हुक्म चलायें। आप रात भर विचार करके प्रातःकाल लिखित रूप में मुझे यह अधिकार लिखकर दे दें तो मैं आपके लिए पूर्ण प्रयत्न करूँगा।’

‘आप तो इसे एक संयुक्त हिंदू परिवार की भांति चलाना चाहते हैं। जैसे एक परिवार के वृद्धजन अपनी इच्छा से छोटी-छोटी विवाह करते हैं वैसे ही रीति आप आश्रम में भी चलाना चाहते हैं। मैं इसे मनुष्य की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर कुठाराघात समझता हूँ और मैं इसे मानने में सर्वथा असमर्थ हूँ।’

इतना कहकर सुन्दरम् कमल से विदा हो गया; परन्तु उसने आश्रम छोड़ने का विचार अभी स्थगित कर दिया।

: ६ :

माया की माँ और भाई आश्रम में आये हुए थे। पहले तो उनका विचार था कि बच्चे को किसी को पालने के लिए दे दिया जाय और माया को, जो अब स्वस्थ हो गई थी, घर ले जायें। माया उनके साथ जाने से इन्कार करती थी। परन्तु आश्रम से न जाने का कारण उसने अपनी माता तथा भाई को नहीं बताया। इस पर दोनों उसे लेकर कमल

के पास जा पहुँचे। जब अपना प्रस्ताव माया की मां ने कमल के सामने रखा तो उसने पूछा, 'माया की क्या इच्छा है ?'

'मैं अब इस आश्रम में ही रहना चाहती हूँ।' माया ने कहा।

माया की मां ने पूछा, 'परन्तु यह क्यों ?'

'इसमें कई कारण हैं। एक तो यह है कि मैं इस बच्चे को छोड़ना नहीं चाहती।'।

इस पर कमल ने कहा, 'इस बच्चे के पालन-पोषण का प्रबन्ध तो आश्रम में कर दिया जायेगा।'

'बात यह है, कमल भैया ! मैं अब बाहर संसार में आँख दिखाने योग्य नहीं रही। वहाँ के लोगो का विचार ऐसा ही है। बाहर जाने पर मुझे सदैव डर लगा रहेगा कि कोई कहीं मेरे भेद को जानकर मेरी निंदा न करे। एक चोर की भाँति मैं सदैव सशंक रहूँगी। आपके आश्रम में आप सब मुझे जानते हैं; मेरे दोषों को भी जानते हैं। इस पर भी आप सब मुझसे स्नेह करते हैं। इसके अतिरिक्त यदि किसी समय बाहर के संसार में किसी कारण से मैं निराश्रय हो गई तो वहाँ मेरा कोई सहारा नहीं है। यहाँ आपकी एक ऐसी संस्था है जो मेरे दोष को कुछ भारी दोष नहीं मानती। साथ ही यहाँ कभी कोई निराश्रय हो ही नहीं सकता। समाज सबका आश्रय है। ऐसे समाज में रहना, जहाँ सबके खाने-पीने और रहने की गारण्टी हो, मैं सौभाग्य समझती हूँ। इसके अतिरिक्त और कारण भी हैं, जिन्हें मैं नहीं बताना चाहती।'

कमल ने माया के भाई और मां से कहा, 'जहाँ तक बच्चे के रखने का सम्बन्ध है, आश्रम में प्रबन्ध हो जायगा। जहाँ तक माया के रहने का प्रश्न है यह माया के अपने विचार करने की बात है। यहाँ हम किसी को रहने पर बाध्य नहीं करते। यदि कोई हमारे नियमाधीन रहना चाहे तो हमारे पास रहने के लिए बहुत स्थान है।'

माया के दृढ़ निश्चय ने नवीन को इस बात पर विवश कर दिया कि कमल और उसकी माता आश्रम के सदस्य बन जायें। माया की मां

पुनः स्यालकोट से दिल्ली आ गई और कमल के आश्रम में ही रहने लगी । नवीन जब तक कमीशंड अफसर था तब तक प्रत्यक्ष रूप में तो सदस्य नहीं बना, परन्तु अपने वेतन में से जो कुछ बचाकर अपनी माँ को भेजा करता था वह आश्रम को भेजने लगा था ।

कमल ने यह प्रस्ताव रखा कि माया के लड़के का नाम रखा जाय । यह एक साधारण-सी बात थी परन्तु माया की माँ और मुरली के प्रस्तावानुसार नामकरण के समय आश्रम में एक विशेष उत्सव करने का निर्णय हुआ । पहले से ही मुरली ने सभी सदस्यों को अपनी सम्मति के अनुकूल बना लिया था । सुन्दरम् और कुछ अन्य सदस्य इस प्रस्ताव के विरुद्ध अवश्य थे, परन्तु कमल आश्रम के जीवन को रोचक और सरस बनाने के लिए कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देता था । जो सदस्य विरुद्ध थे वे भी इसे मनोरंजन का प्रोग्राम समझकर पक्ष में हो गए थे । इस प्रकार माया के लड़के का नामकरण-संस्कार होने का निश्चय हो गया ।

ऐसे अवसरों पर कमल आश्रम की ओर से खूब सज-धज कराने के पक्ष में होता था । फलस्वरूप इस अवसर पर भी चौपाल को झंडे, पत्तों की बेलों, पुष्पों की मालाओं इत्यादि से खूब सजाया गया । इस बार आश्रम के रहने वालों ने ही गाने-बजाने एवं नृत्य आदि का प्रोग्राम बनाया । एक-आध छोटे-छोटे प्रहसन करने के लिए भी समय रखा गया ।

बाहर से भी कुछ मेहमान बुलाये गये थे । बलवीर के माता-पिता और वीणा तथा नवल भी उनमें थे । उत्सव के समय मुरली माया के कमरे में गई और बच्चे को गोदी में उठाकर मंडप में ले आई । माया को भी वहाँ आने के लिए कहा गया । पहले तो उसने आना स्वीकार कर लिया था, परन्तु समय पर भेंप गई और मुरली से कहने लगी, 'मुरली बहन ! मुझे लज्जा आती है, बाहर सबके सामने आने में ?'

‘क्यों ?’

‘बिना पिता के बालक का संस्कार हो रहा है न । मां....।’

इसके आगे माया के मुख से शब्द नहीं निकला। वह हंस पड़ी, परंतु उसकी आंखें भर आई थी। माया की मां ने जब देखा कि लड़की जाने के लिए तैयार होकर भी नहीं जा रही तो उसने मुरली से कहा, 'घेटी तुम ही बच्चे को अपनी गोद में रखो और माया को ले जाने का हठ न करो।'

संस्कार विधिपूर्वक किया गया। संस्कार के, समय बच्चा मुरली की गोद में रहा। जब पंडित संस्कार समाप्त कर चुका और मिठाई बाट दी गई तो कमल ने आश्रम निवासियों और मेहमानों के सामने माया के कमरे में चलकर बधाई देने का प्रस्ताव रखा। सब लोग वहां गये और मेहमानों ने बच्चे को वस्त्र व आभूषण इत्यादि भेंट दिये। यह सब देखकर माया रो रही थी। जब सब लोग भेंट आदि देकर कमरे के बाहर चले गये तो मुरली ने माया के गले में बांह डालकर पूछा, 'माया दीदी, रोती क्यों हो तुम। यह तो हर्ष का समय है।'

'मुरली बहन, मेरे यह आँसू खुशी के ही हैं। मैं सोचती हूँ, कैसे अच्छे हैं आप लोग। कमल बाबू और बलवीरजी के चित्त की निर्मलता में कदापि नहीं भूल सकती। इन लोगों ने सदा के लिए मुझे अपना बना लिया है। भला इस प्रकार के बच्चों के भी संस्कार किये जाते हैं कहीं?'

'क्यों बच्चे ने क्या बुरा किया है?'

'इसका बाप नहीं है और मां लज्जा के मारे सिर ऊंचा नहीं कर सकती।'

'माया दीदी! बस रहने दो। हमने, मेने और कमल बाबू ने, यह निश्चय कर लिया है कि इस बच्चे के माता-पिता हम रहें।'

'तुम मां?'' माया की हंसी निकल गई। 'पगली, बिना कष्ट भोगे मां बनने में मजा नहीं।'

कष्ट भी यथासमय भोग ही लिया जायगा। अभी मां बनने का

सौभाग्य तो मिल ही गया है न । नाम रखने वाला पंडित भी मुझे ही मां समझता था और तुम तो न मां हो न कुछ और ?'

'क्या नाम रखा है ? मुरली !'

'बनवारी ।'

इस समय नवीन कमरे में आया और बच्चे को, जिसे वह बाहर ले गया था, लाकर मुरली की गोदी में देते हुए बोला, 'कमल भैया कहते हैं कि बच्चे की मां मुरली है ।'

'ठीक तो है ?' मुरली ने कहा ।

'तो माया को अब यहाँ छिपकर बैठे रहने की कोई आवश्यकता नहीं ?'

'बिलकुल नहीं ।'

'तो यह बेचारी केवल कष्ट भोगने के ही लिए थी क्या ?'

'नहीं, मिठाई भी खा सकती है ।' मुरली ने कहा ।

नवीन ने कहा, 'माया अब तो तुम चलो, वहाँ बड़े कमरे में लोग नाटक कर रहे हैं ।'

माया उठी और नवीन ने मुरली की ओर मुस्कराते हुए कहा, 'देखा मुरली ! बच्चे को दूध पिलाकर लाना । कहीं यह रोकर वहाँ रंग में भंग न कर दे ?'

'अरे ! यह तो भूल ही गई थी । मां तो बन गई पर दूध कहां से लाऊंगी ? बाजारी दूध देने को तो अभी डॉक्टर मना करते हैं ।'

नवीन माया का हाथ पकड़कर बड़े कमरे में ले गया । वहाँ स्टेज बना था । पर्दे लगे थे और दर्शकों के बैठने के लिए फर्श पर दरी-चादर और कालीन बिछे थे । आश्रम के सब लोग, बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष सब उपस्थित थे ।

माया वहाँ आकर सबके पीछे दीवार के साथ खड़ी हो गई । नवीन भी वहाँ ही खड़ा हो गया । मुरली बच्चे को लेकर सबसे आगे जा पहुँची । उसे बच्चे को गोदी में लिए आया देखकर सबने तालियाँ

बजाकर स्वागत किया। मुरली ने बच्चे को गोदी में लिए हुए कहा, 'अब इस नाटक को छोड़कर वास्तविक नाटक में जा रही हूँ।' और वह स्टेज पर जा पहुँची।

पर्दा उठा। मुरली बालक को लिये हुए गाने लगी—

घर आये श्याम मुरारी, मोरे
 घर आये श्याम मुरारी,
 सुन्दर श्याम कमल नयनन से
 मन मोह लियो बनवारी ॥ घर....
 मोर मुकुट पीताम्बर साजे
 साजे छवि अति प्यारी
 वृन्दावन की सब वनिताये
 बार बार ! बलिहारी ॥ घर....
 देख देख यशोदा मैया
 सब की होय अभारी
 क्या देखो हो मोर लला में
 है सब कृपा तुम्हारी ॥ घर....

: ७ :

कमल बलवीर के माता-पिता को विदा करने बाहर गया हुआ था। कुछ मेहमान अपनी-अपनी गाड़ियों में जा चुके थे। बलवीर के माता-पिता अपनी मोटर में सवार थे और कमल भूमि पर मोटर के पास खड़ा उनके आने का कष्ट करने के लिए धन्यवाद दे रहा था। इस समय छाया एक तांगे द्वारा वहाँ पहुँच गई। बलवीर की माता कमल से कह रही थी, 'बेटा आज सायंकाल शहर आना। साथ में बलवीर और मुरली को भी लेते आना।'।

'आयंगे चाची।'।

इसी समय छाया तांगे से उतरकर कमल के पास आ खड़ी हुई। छाया आज विशेष श्रृंगार करके आई थी। कमल उसे देखकर क्षण भर तो चकित खड़ा रह गया। छाया ने वलवीर के माता-पिता को हाथ जोड़कर 'नमस्ते' की। वे 'नमस्ते' का उत्तर देकर शहर चले गए।

छाया ने कमल से पूछा, 'आज क्या था यहां? मार्ग में बहुत से लोग जाते हुए मिले हैं।'।

कमल का विचार भंग हुआ और उसने हाथ जोड़कर नमस्ते की तथा उसका स्वागत करते हुए कहा, 'आइये। आप ठीक समय पर आई हैं।' और कमल छाया को साथ लेकर आश्रम में दाखिल हुआ।

छाया ने पूछा, 'क्या आज किसी और का विवाह कर डाला है?'।

'नहीं! विवाह तो अभी मेरा ही हुआ है। निमंत्रण आपको भेजा था, पर आप तो आई ही नहीं।'।

'मुझे उस दिन एक बहुत जरूरी काम लग गया था।'।

'हां मुझे पीछे पता चला था कि पिस्टर रामलुभाया सेठ की क्लब में "कोकटेल पार्टी" थी।'।

छाया का सिर लज्जा से झुक गया। वह कमल के साथ-साथ जा रही थी। कमल ने बात जारी रखते हुए कहा, 'आज माया के लड़के का नामकरण-संस्कार था।'।

'माया के लड़के का? कब हुआ है लड़का?'

'आज चार महीने का हुआ है। नाम बनवारी रखा गया है।'।

'उसके नामकरण-संस्कार पर आपने इतने आदमी बुलाये हैं?'।

'हां! क्यों? यह ठीक नहीं किया क्या?'

'और इन सब लोगों को पता था कि.....'

इस समय वे दोनों बड़े कमरे के बाहर जा पहुंचे थे। कमरे के भीतर हंसी-मजाक हो रहा था। अब भी तालियों से कमरा गूंज रहा था।

'छाया।' कमल ने कहा, 'देखो जी, यह आश्रम के लोग खुशियां मना रहे हैं।'।

‘खुशी ? आप सब विचित्र लोग हैं। क्या माया भी भीतर है ?’
‘जरूर होगी।’

छाया वहीं बाहर ही खड़ी हो गई और कुछ सोचने लगी। भीतर वीणा बंसरी बजा रही थी और मुरली उसके साथ गा रही थी—

‘सुन्दर श्याम देखन की आशा, नैनन बान पड़ी।
चार याम मोहे तड़पत बीते, रह गई एक घड़ी॥
भूषण बसन भवन नहीं भावे, विरह वियोग भरी।
दया करो अत्र वेग मिलो प्रभु, मैं अकुलात खड़ी॥’

छाया के मुख से निकल गया, ‘मुरली बहुत अच्छा गाने लगी है।’
कमल ने फिर कहा, ‘चलो न भीतर चले।’

‘कहीं मेरे अन्दर जाने से माया नाराज न हो जाय ! मैं रग में भंग नहीं करना चाहती। यदि बलवीरजा को बाहर बुला दें तो कृपा होगी।’

‘उनसे विशेष कार्य है क्या ?’

‘हां उनसे मिलने ही तो आई हूं।’

‘अच्छी बात है। जरा ठहरो।’

कमल भीतर चला गया। मुरली नाचने के लिए पाव में धुंधरू बांध रही थी और वीणा बंसरी बजा रही थी। एक आदमी तबला बजा रहा था। वच्चा नवल की गोदी में था और बलवीर उसके समीप ही बैठा था। कमल ने बलवीर को संकेत से अपनी ओर बुलाया।

मुरली ने नाचना और गाना आरम्भ कर दिया था—

छन छन छननना छन छन
छननना छन छननना छन
आज खेलूं श्याम संग होरी
पिचकारी रंग भर केसर की। आज...
छननना छन छन छननना
कुंवर कन्हैया संग सुख राधा

रंग भरी जोरी सोहत की । आज...

छन छन छनना छन छन

बलवीर जब समीप आया तो कमल ने कान में कहा, 'दादा वह आई है ।'

'कौन ?'

'मेनका ।'

'कौन, छाया ?'

'हां ।'

'उस चुड़ैल को किसने बुलाया था आज ?'

'आज तो सोलहों शृंगार करके आई है ।'

'तो मैं क्या करूं ?'

'छाया तुमसे मिलने आई है । बाहर बुलाती है ।'

कुछ सोचकर बलवीर कमल के साथ बाहर चला गया । छाया ने हाथ जोड़कर नमस्ते की । बलवीर ने सिर से पाव तक उसे देखकर कहा, 'भीतर नहीं आओगी छाया ? मुरली नाच रही है ।'

'तो बहुत विघ्न डाला है मेने आपके आनन्द में ?'

'आजाओ न । तुम्हारे आने से विघ्न क्यों होगा । आओ तुम्हें दिखाऊं, माया के लड़के को कितनी भेटें मिली है ।'

'नहीं मैं अब नहीं देखूंगी । माया मुझे देखकर दुखी होगी । मुझे आपसे ही काम था । यदि मालूम होता कि यहाँ जलसा हो रहा है तो मैं आज न आती । शाम को मिलियेगा क्या ?'

'कहाँ ?'

'हमारे ही घर पर आ जाइये ।'

'वहाँ पर आना तो बहुत कठिन है । यदि कुछ आवश्यक काम है तो अभी बता दो न । कहीं एकान्त में चलें क्या ?'

'जैसी आपकी इच्छा ।'

'तो चलो मेरे झोंपड़े में चलो ।'

बलवीर छाया को लेकर अपने भोंपड़े में जा पहुँचा। वहाँ चटाई बिछी थी। एक ओर पुस्तकों का ढेर लगा था। दूसरी ओर दीवट पर सरसों के तेल का दिया रखा था। चटाई पर छाया को बैठने का संकेत करके बलवीर बोला, 'यहाँ तो यही है। कष्ट के लिए क्षमा करना छाया।'।

छाया सेंडल उतारकर बैठ गई। बलवीर भी चप्पल उतारकर सामने चटाई पर बैठ गया और पूछने लगा, 'हाँ ! अब फरमाइये। मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ।'।

'इतनी जल्दी-जल्दी नहीं। पहले आप बताइये : आप अच्छी तरह तो हैं। आपके माता-पिता भी मुझे जाते हुए यहाँ ही मिले थे।'।

'हूँ।'।

'वे जाते समय कमल से कह गये हैं कि आप कमल और मुरली के साथ शहर चले आये।'।

'अच्छः ?'

'तभी मैंने कहा था। सायंकाल घर आजाते तो...?'

'परन्तु जब आप इतना कष्ट उठाकर दस मील की यात्रा करके यहाँ आई हो हैं तो कह दीजिये न कि क्या आज्ञा है ?'

'देखिये बलवीर जी ! आदमी भूल करता है तो उसका सुधार भी कर सकता है। माया ने भूल की और आप लोगों ने उसमें सुधार करके उसे सिर पर उठा लिया है।'।

'हाँ। यह तो है ही। हम सब लोग मनुष्य हैं, परमात्मा नहीं। भूलें करते हैं, फिर सुधारते हैं। ठोकरें खाते हैं, फिर उठते हैं; माया की भूल पर हमने विचार किया और फिर उसको हमने समझा-बुझाकर यह सब कुछ सहने को नैयार कर लिया। ईश्वर चाहेगा तो उसका भावी जीवन अटूट सुख का भंडार होगा।'।

'आप बहुत उदार हैं और आपकी इस बात ने ही मेरे मन में भारी परिवर्तन कर दिया है। मैं अब वह छाया नहीं रही जो पुरुषों से बराबरी पाने के लिए झगड़ा करती थी।'।

‘ओह ! तब तो बहुत-बहुत बघाई है । परन्तु मेरे विचार तो अब भी वही हैं । मैंने एक बार आपसे कहा था कि मैं स्त्रियों को पुरुषों से अधिक मान-प्रतिष्ठा और सुख देने के पक्ष में हूँ और संसार भर में यही बात प्रचलित भी है ।’

बलवीर कुछ सोचकर फिर कहने लगा । ‘संसार में अनेकों उदाहरण मिलते हैं जहाँ किसी पति ने स्त्री को बुरी तरह पीटा अथवा कष्ट दिया है । परन्तु साथ ही ऐसे उदाहरण भी हैं जहाँ स्त्रियों ने पुरुष का नाक में दम कर रखा हो । शायद ऐसे पुरुष अधिक हैं ; परन्तु यह मनुष्य-समाज में अववाद है । नियम नहीं । इनसे कोई मिद्धान्त स्थिर नहीं होता । ये जो आर्थिक प्रतिबन्ध स्त्रियों पर हैं, वे इस कारण नहीं कि पुरुष स्त्रियों को जान-बूझकर धन से वंचित रखना चाहते हैं । इसमें कारण है पूँजीवाद । जब एक पूँजीवादी देखता है कि उसकी लड़की अथवा स्त्री उसकी सम्पत्ति में वृद्धि नहीं करती, अथवा जब वह यह देखता है कि उसकी लड़की विवाह करके दूसरे के घर चली जायगी, तो वह अपनी अथवा अपने परिवार की सम्पत्ति दूसरे घर में जाने से रोकने के लिए लड़कियों को सम्पत्ति का भाग नहीं देना चाहता । इस असमता को दूर करने का एक-मात्र उपाय पूँजीवाद का नाश करना ही है । इसके दूर होते ही पुरुष और स्त्री का वास्तविक भेद मिट जायगा ।’

छाया आगे नीचे किये हुए यह सब सुन रही थी । वह इन बातों की सत्यता को अनुभव करने लगी थी । बलवीर ने कुछ काल पर्यन्त चुप रहकर फिर कहना आरम्भ किया, ‘जहाँ रुपए पैसे का झगड़ा नहीं, वहाँ प्रायः स्त्रियों को अधिक मान-प्रतिष्ठा से रखा जाता है । मुरली की ही बात देखो न । कुछ अधिक पढ़ी-लिखी भी नहीं । नारीत्व से सराबोर अपनी कामलता से तथा भक्ति से कमल पर पूर्ण आधिपत्य रखती है । बड़े-बड़े जटिल प्रश्नों में कमल भैया उससे राय लेते हैं । कभी मत-भेद भी हो जाता है तो वह उससे लड़ते नहीं । कमल मेरे साथ तो झगड़ा भी करता है परन्तु मुरली को प्रेम से, विनय से, और आदर से ही समझाता

है। वास्तव में यह स्वाभाविक ही है। मुरली भी तो अपने को सब प्रकार से उसके अधीन समझती है और ऐसा व्यवहार रखती है कि वह दोनों "दो शरीर एक प्राण" प्रतीत होते हैं। देखने वाले, जानने वाले, और समझने वाले उनमें भेद नहीं समझते।'

आखिर छाया बोली। उसकी आंखें झुकी हुई थी, 'मुझे अब आपकी बातों में वास्तविकता दिखाई देती है। नारी पुरुष पर हुकूमत करती है पर उसकी हुकूमत के अस्त्र तीर-तलवार अथवा धूँसा-मुक्का नहीं प्रत्युत प्रेम और सेवा हैं।'

'छाया ! आपको आज यह कहते हुए देख मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। आप अब शीघ्र समझ गई हैं। मैं ऐसी ही आशा करता था आपसे।'

'तो आप मुझे मेरी उद्दंडता के लिए क्षमा करते हैं न ?'

'क्षमा करने वाला मैं कौन हूँ छाया ! मैं तो कभी भी तुम्हें अपने से छोटा नहीं मानता था। मैं सदैव कहता रहता था कि मैं आपका मान करता हूँ। कुछ विचार-भेद अवश्य था। यदि वह भेद मिट गया है तो मुझे इससे बहुत खुशी हुई है।'

'सच कहते हैं आप ?' छाया कुछ आगे खिसक गई और झुककर बहुत धीरे से बोली, 'बलवीर जी !'

छाया ने ऐसे ढंग से बलवीर की ओर देखा कि वह परास्त हो गया। छाया ने अपना हाथ बलवीर के हाथ में देकर कहा, 'क्या मैं आपकी दृष्टि में पुनः मान पा सकती हूँ ? क्या मैं आपको अपना कह सकती हूँ ? पिछली सारी बातें, आप भूल जायेंगे क्या ?'

बलवीर पर छाया के सौंदर्य का पूर्ण प्रभाव पड़ रहा था। इस समय उसका मुख बलवीर की गाल से केवल एक इंच के अंतर पर था और उसके उष्ण निःश्वास उसके गालों को छू रहे थे। बलवीर ने छाया के हाथ पर अपना हाथ रखकर कहा, 'छाया मैं तुम्हारे इस प्रस्ताव के लिए कृतज्ञ हूँ। सायंकाल मैं तुम्हारे पिता के सम्मुख बातचीत करूँगा।'

छाया की आंखें डबडबा आईं। और उसने प्रति विनीत भाव से कहा, 'आपने जो मुझे क्षमा किया है, उसके लिए मैं आपकी आभारी हूँ, इसे मैं जन्म भर नहीं भूलूंगी। आप सायकल को आइयेगा अवश्य। मैं प्रतीक्षा करूंगी। लो, मैं चला। मुझे टांगे में जाना है, देर लगेगी और आप तो मोटर में जायेंगे।'।

छाया और बलवीर दोनों उठ खड़े हुए। दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए भोंपड़े से बाहर निकल आये। कमल मैदान में खड़ा था। उसने दोनों को भोंपड़े से इस अवस्था में निकलते हुए देख लिया था।

: ८ :

जब बलवीर कमल के समीप आया तो उसने कहा, 'दादा बहुत बहुत, बधाई है। आखिर सुलह हो गई न ?'

'कैसे जाना तुमने कमल ?'

'उसका विशेष रूप से शृंगार करके आना और फिर विदा होते समय आपके हाथ में उसका हाथ होना इसी बात का सूचक है दादा ! क्या मैं घोषित कर दूँ यह शुभ-सवाद ?'

'अभी नहीं। पहले तो भैया तुम यह बताओ कि क्या मेरा उससे विवाह अब ठीक रहेगा ? मैं तो तुम्हारी सम्मति से ही चलना उचित समझता हूँ। फिर पिताजी है, माताजी हैं। उन सबकी अनुमति चाहिए न ?'

'दादा मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। यदि विवाह के बाद भी उसने कुछ उच्छृङ्खलता की तो सीधी कर दी जायगी। परन्तु अब आशा नहीं कि कुछ गड़बड़ हो।'।

'क्यों ? यह आशा तुमने कैसे बांध ली है ? पहले तो तुम्हारा ऐसा विचार नहीं था।'।

'इस समय बात दूसरी है। उस दिन आप उसके पीछे गये थे। आज वह आपके पीछे आई है। मालूम होता है कि कहीं भारी ठोकर लगा

है उसको ।’

इस प्रकार बातें करते हुए दोनों बड़े कमरे के बाहर पहुँच गये जहाँ भीतर नाटक हो रहा था, दोनों कमरे के भीतर चले गये ।

स्टेज पर मदनमोहन एक भोंपड़ी के सामने चिथड़े पहने खड़ा गा रहा था

सब जग में है दिवाली, है मेरे घर अंधेरा
सैयाद ने तो अपना इस जा पे डाला डेरा ॥ सब जग....
हम बेकसों की दुनिया बरवाद हो चुकी है ।
वे नाज़ से हैं कहते क्या खूब हं बसेरा ॥ सब जग....
महल में रहने वालो किसने बनाया इनको ।
किस के खून से यह रंगीनियां बनी हैं ॥ सब जग....
किसने बहा पसीना तुमको बनाया इतना
कहते हो उसको तुम ही कुछ भी नहीं है तेरा ॥ सब जग....
किसके लिए जिऊं मैं किसके लिए मरूं मैं
इन्साफ से बरी इस दुनिया को क्या करू मैं ।
बस चाहता हूँ कि मैं इक ग्राह से फूँक डालूँ
कुछ न रहे तुम्हारा जब कुछ नहीं है मेरा ॥ सब जग....

इसके पश्चात् परदा गिरा और खेल समाप्त हो गया । लोग उठकर बाहर आने लगे थे कि बलवीर नवीन से बोला, ‘सुना है आपकी छुट्टी समाप्त हो गई है ?’

‘हां, अब मैं आसाम के मोर्चे पर जा रहा हूँ ।’

‘तो कल शहर में पिताजी के यहां भोजन कीजियेगा । मैं भी वहीं रहूंगा ।’

भोंपड़ी के बाहर वीणा और नवल बलवीर और कमल से विदा मांगने के लिए खड़े थे । उनकी ओर देखते हुए बलवीर ने कहा, ‘आप की गाड़ी तो काफी बड़ी है । हमको भी साथ में शहर लेते चलियेगा क्या ?’

‘कौन-कौन जा रहा है ?’

‘मैं कमल भैया और मुरली भाभी ।’

‘और यह नवीन इत्यादि ?’

‘इनके पास अपनी छोटी गाड़ी है । मेरी कार मरम्मत के लिए गई है ।’

‘कब तक चलिएगा ?’

‘बस कमल और मुरली तैयार होने गये हैं ।’

इसी समय नवीन और नवीन की मां अपनी छोटी गाड़ी में जा बैठे । उनकी ओर देखते हुए वीणा ने कहा, ‘माया का कहीं विवाह कर दें तो बहुत अच्छा होगा ।’

‘यह माया और उसके भाई का काम है । जो कुछ हमारा कर्तव्य था सो कर दिया । शेष हमारा काम नहीं ।’

‘क्या आश्रम में कोई लड़का इसके योग्य नहीं ?’

बलवीर ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, ‘मिस्टर सुन्दरम् का आप जानती हैं न । कुछ दिन पूर्व वे माया से विवाह करने में अपना सीभाग्य समझते थे ।’

‘उस भैसे की बात छोड़ो । वह तो सब लड़कियों के प्रति यही भावना रखता है । वह एक समय मेरे पीछे पड़ा था । फिर मुरली पर कृपा-दृष्टि की । अब माया की बारी है तो कल कन्हैया की कोई लड़की होगी । उसके मस्तिष्क में कम्युनिज्म के विचित्र अर्थ हैं । वह स्त्रियों को एक ऐसा पदार्थ (Commodity) समझता है जिस पर पुरुषों का बराबर-बराबर अधिकार होना चाहिए ।’

नवल हंस पड़ा और बोला, ‘उस भैसे में इतनी तो बुद्धि है कि वह किसी स्त्री से बंधकर नहीं रहना चाहता ।’

वीणा ने तिरछी दृष्टि से नवल की ओर देखकर कहा, ‘और दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जिनमें भैसे जितनी भी बुद्धि नहीं, जो एक ही स्त्री के गले का हार बने हैं ।’

बलवीर हंस पड़ा और उसने कहा, 'पर वीणा इस अज्ञानता से, तुम जैसी स्त्रियों को तो लाभ ही है।'

'यहां लाभ-हानि की बात थोड़े ही हो रही है, यहां तो बुद्धि की बात है। एक तो छाया बुद्धिमती है और अब एक अब हमारे सोहब भी उसका अनुकरण करना चाहते हैं।'

बलवीर ने उत्सुकता से पूछा, 'वीणादेवी ! क्या छाया मिलती है तुमसे ?'

'अभी कल ही तो आई थी। आपसे मिलने की बात कह रही थी।'

बलवीर, 'मुझसे भी अभी मिलकर गई है। छं मास के पश्चात् यह भेंट हुई है।'

वीणा, 'अच्छा ? यहां आई और बिना हमसे मिले ही चली गई ?'

बलवीर, 'ऐसे ही किसी काम से आई थी।'

'मुझे मालूम है, क्या काम था। भला हमसे चोरी का क्या काम था ?'

'उसे शायद पता नहीं था कि आप लोग भी यहां हैं।'

'हमारी मोटर तो यह खड़ी है। भला इतनी बड़ा वस्तु छिपी ता रह नहीं सकती। मैं जानती हूं कि हमसे चोरी रखने की क्या बात थी ?'

नवल, जो वीणा से कुछ दूर खड़ा था, वीणा के समीप आ खड़ा हुआ और उसकी बात समाप्त होते-न-होते बीच में ही बांह पकड़कर बोला, 'चलो वीणा चलें। देखो कमल और मुरली भी आगये हैं।' नवल ने मुरली की बांह इतने जोर से पकड़ी थी कि उसकी 'आह' निकल गई। नवल ने हाथ ढीला कर दिया। वीणा ने झटके से बांह छड़ाकर कहा, 'नवल बाबू ! मैं बात बताये बिना न रहूंगी।'

बलवीर और कमल अचम्भे में वीणा और नवल के इस झगड़े को सुन रहे थे। नवल ने कुछ लज्जित होकर कहा, 'वीणा ! मैं तो दया

के भाव से ही कह रहा था। मैं चाहता हूँ कि तुम्हें जो कुछ भी कहना है, वह सोच-विचार कर ही कहो। आज अभी तक तो बलवीर का विवाह नहीं हुआ। कल हो जाय तो छाया जन्म भर के लिए तुम्हारी शत्रु हो जायगी।'

वीणा ने कहा, 'मैं उसकी मित्रता की इच्छुक नहीं। मेरे और उसके विचार और आचार में आकाश-पाताल का अंतर है। क्यों बलवीर भैया ! वह आपके पास विवाह का प्रस्ताव लेकर आई थी न ?'

नवल ने फिर प्रार्थना के भाव से कहा, 'वीणा अच्छी तरह से समझ लो।'

वीणा ने नवल की ओर देखकर कहा, 'मुझे शोक है कि मैं इस विषय में आपकी आज्ञा का उल्लंघन कर रही हूँ; परन्तु आपको विदित होना चाहिए कि बलवीर जी और कमल जी का भी मुझ पर परम स्नेह है। यदि मैंने उनको सारी बात न बताई तो मैं यह अपने से भी अन्याय करूंगी।'

प्रायः वीणा और नवल में कमल और बलवीर के प्रति व्यवहार के विषय में सदा ही मतभेद रहता था। वीणा इस विषय में नवल के कहने की अवहेलना किया करती थी। इस समय नवल को वीणा का छाया के विषय में हस्तक्षेप बिल्कुल पसन्द नहीं था। वीणा नहीं मानी और कहने लगी—'बलवीर जी ! मेरा अनुमान ठीक है या नहीं ?'

'ठीक है। परन्तु मैं कुछ नहीं समझा कि आपके इस भगड़े का वास्तविक रहस्य क्या है ?'

'सो मैं बताती हूँ। पहले आप बताइये कि क्या वह आपसे विवाह का वचन ले गई है ?'

'मैंने कहा है कि शाम को उसके पिता के सम्मुख ही सब बातचीत होगी।'

'परन्तु बातचीत से पहले आपको यह जान लेना चाहिए कि वह आजकल गर्भवती है और कुछ लोगों की राय से वह बच्चा आपके नाम

मढ़ने का षड्यन्त्र हो रहा है।’

वीणा की इस रहस्यपूर्ण बात से कमल, मुरली और बलवीर चकित हो एक दूसरे का मुख देखने लगे। कई मिनट तक बलवीर चुपचाप भूमि की ओर देखता रहा। कमल इस विषय में तटस्थ रहना चाहता था। मुरली के मस्तक पर तयौरी चढ़ गई थी। नवल ने जेब से सिगरेट निकालकर सुलगा ली थी। उसे इस बात से संतोष था कि वीणा ने षड्यन्त्रकारियों में उसका नाम नहीं लिया था। इस पर भी उसके मन में चोर था और वह डर रहा था कि कहीं कमल, जिसे वह बलवीर से अधिक समझदार समझता था, षड्यन्त्रकारियों के नाम न पूछ ले। इस घबराहट और भय को छिपाने के लिए ही उसने सिगरेट पीना आरम्भ कर दिया था।

अंत में बलवीर ने नवल से कहा, ‘चलो चलें।’

नवल के अचम्भे का ठिकाना नहीं रहा; परन्तु वह लपककर मोटर ड्राइवर के स्थान पर बैठ गया। वीणा उसके पास जा बैठी। मुरली से नहीं रहा गया और वह कह बैठी, ‘बलवीर जी, यदि आप छाया के घर जा रहे हैं तो मैं नहीं जाऊंगी।’

बलवीर हंस पड़ा, परन्तु उसके कहने से पहले ही कमल बोल उठा, ‘मुरली ! माया की बात भूल गई हो क्या ?’

उत्तर बलवीर ने दिया, ‘माया और छाया में अन्तर है ? एक प्रायश्चित्त करने आई थी और दूसरी ठगने।’

‘शायद वह भी अपनी सब बात बता दे। बिना जाने किसी पर भी न्याय करने बैठना ठीक नहीं।’

‘इसी की परीक्षा के लिए तो जा रहा हूँ। मुरली भाभी ! निश्चित रहो, बिना आप लोगों की सम्मति के मैं कुछ नहीं करूँगा। मैं आश्रम में रहता हूँ और यहां भूठ, फरेब और दगा बिल्कुल नहीं आने दूँगा।’

बलवीर, कमल और फिर मुरली पीछे की सीट पर बैठ गये और मोटर चल पड़ी।

बलवीर ने सबका ध्यान दूसरी ओर करने के लिए नवल से पूछा,
'नवल बाबू ! यह गाड़ी कितने की ली है ?'

'यह पौन्ट्रिक है । पच्चीस हजार दाम है । पर मेरी बात दूसरी है ;
मुझे बीस हजार की पड़ी है या' यों कहो कि मुझे इसका दाम कुछ भी
नहीं देना पड़ा ।'

'अच्छा ? तो क्या कोई साहब इसे भी जूए में हार गये हैं ?'

'हां, और वह साहब कोई छोटे-मोटे आदमी नहीं । गवर्नमेन्ट आफ
इंडिया के ज्वायंट सेक्रेटरी हैं ।'

'नवल, एक बात पूछूं ।'

'हां !'

'आपने अब तक कितना रुपया जमा कर लिया है ?'

'इस समय मेरे पास नकद तीन लाख से ऊपर है ।'

'मगर किसी दिन पकड़े गये तो सब निकल जायगा ।'

'मेरी जान व माल उतना ही खतरे में है जितना कि किसी भी
ठेकेदार या रिश्तत लेने वाले अफसर का है । डूबूंगा तो साथ में बीसियों
बड़े-बड़े आदमियों को भी ले मरूंगा ।'

'यह तो ठीक है । इस युद्ध के काल में ईमानदार व्यक्ति ढूढ़ने से
से भी मिलना कठिन है । इस पर भी बिना आवश्यकता के खतरे का
काम करना कहां की प्रवृत्तमन्दी है । देखो नवल बाबू, वीणा हमारे एक
सदस्य की बहन है और हमसे उसके स्नेह का प्रमाण आप अभी पा चुके
हैं । इसी कारण मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि अब आपके पास धन
काफी हो गया है जो आपके जीवन को सुख एवं शान्ति से व्यतीत करने
के लिए पर्याप्त है ।'

'मिस्टर बलवीर ! आप लोग साधु-स्वभाव के हैं । आश्रम में आप
लोग चालीस रुपये मासिक पर निर्वाह करते हैं । मुझसे यह नहीं हो
सकता । मैं जब देखता हूँ कि बेईमान लोग संसार के समस्त ऐश्वर्य का
उपभोग कर रहे हैं, तो मैं उतावला हो उठता हूँ और उस विभूति को,

उस ऐश्वर्य को, जिस तरह भी हो सके, उनसे छीनकर स्वयं भोग करने के लिए विवश हो जाता हूं। मेरे शरीफ हो जाने से उनकी लूट और बेईमानी बढ़ नहीं हो जायगी।'

गाड़ी कर्जन रोड पर पहुंच गई थी। बलवीर ने वहीं उतरने को कहा। नवल गाड़ी को कोठी में ले गया और सबसे कहने लगा, 'अब समय हो गया है, अगर चाय पीने की कृपा करें तो मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी।'

बलवीर मान गया। सब लोग ड्रायंग रूम में जा बैठे। वीणा नौकर को चाय बनाने के लिए कहने चली गई। बलवीर ने नवल से नम्रता पूर्वक कहा, 'नवल बाबू मैं एक वचन आपसे लेना चाहता हूँ।'

'बताइये।'

'वह यह है कि आप छाया पर यह बात प्रकट न होने देंगे कि मुझे उसके इस रहस्य का पता चल गया है।'

'इससे आपको क्या लाभ होगा?'

'मैं परीक्षा करना चाहता हूं कि वास्तव में वह मेरे माय सचाई का व्यवहार करना चाहती है अथवा वीणा के कथनानुसार मुझे ठगना चाहती है।'

'अच्छी बात है मैं वचन देता हूं कि इस विषय में उससे कुछ नहीं कहूंगा।'

: ६ :

सायंकाल सात बजे के लगभग छाया बंगले के ड्रायंग रूम में श्रृंगार करके बैठी थी। वह समझती थी कि उस दिन की जितनी भी जीत उसकी हुई है, उसका श्रेय उसके श्रृंगार को ही है। इस समय उसने और भी ढंग से अपने को सजाया। बहुत बढ़िया लिवैण्डर निकालकर उसने अपनी साड़ी और सिर से लगा लिया। बाहर लॉन में से वह गुलाब के दस बारह फूल लम्बी-लम्बी डंडियों सहित तोड़ लाई। उन्हें गुलदस्ते में डाल दिया और फिर बढ़िया गुलाब का इतर लेकर एक-एक बूंद फूलों में डाल दिया। इस

प्रकार तैयार होकर वह ड्रायंग रूम में जाकर बलवीर की प्रतीक्षा करने लगी। ठीक सात बजे बलवीर कमल के साथ पिता जी की मोटर में आ पहुंचा। जब छाया ने कमल को साथ देखा तो उसका हृदय धड़कने लगा। इस पर भी वह उठी और उसने स्वागत किया और कहा, 'ओह ! कमल जी को भी साथ ले आये हैं ? यह तो आपकी छाया की भांति आपके साथ ही रहते हैं।'।

कमल ने व्यंग से कह दिया, 'छाया को तो छाया ही मिटा सकती है छाया देवी !'

छाया ने बात बदल दी, 'आज तो समय बीतने में ही नहीं आया। आपकी प्रतीक्षा करते-करते थक गई हूं। आखिर आप आ ही गये ?'

'तो आपको मेरे आने में सन्देह था क्या ?'

'सन्देह तो नहीं था, परन्तु प्रतीक्षा पागल बना देती है न।'।

कमल ने कहा, 'छाया देवी ! बैठने को नहीं कहेंगी क्या आर ?'

'ओह भूल हो गई है। आप बैठिये ! नोकर चाय लाता है। और हम जरा एकान्त में बातचीत करना चाहते हैं।'।

'इसके लिए मैं तैयार होकर ही आया हूं। आज घर पर आपके माता-पिता नहीं दिखाई देते, कहीं गए हैं क्या ?'

'पुरानी दिल्ली में कुछ खरीदने गये हैं।'।

बलवीर ने कुछ अचम्भा प्रकट करते हुए पूछा, 'तो आपने हमारे आने के विषय में उनसे कुछ कहा नहीं था क्या ?'

'मेरे घर पहुंचने से पहले ही वे लोग चले गये थे।'।

'कब तक लौटने को कह गये हैं ?'

'पता नहीं। पर मैं समझती हूं कि आने ही वाले होंगे। उनके आने तक ठहरियेगा नहीं क्या ?'

उत्तर कमल ने दिया, 'रोटी चाचाजी के यहां खानी है।'।

बलवीर ने कहा, 'अच्छी बात है यदि अब न मिल सके तो कल प्रातःकाल मिल लेंगे।'।

छाया ने कहा, 'जल्दी किस बात की है ? आखिर वह आयागे तो हैं ही । उनको भी तो खाना खाना है ।'

छाया ने बलवीर की बांह में बांह डाली और दूसरे हाथ में गुलदस्ते में से एक गुलाब का फूल लेते हुए वह उसे सोने के कमरे में ले गई । बलवीर ने समझा वह अपना रहस्य बताने के लिए ले जा रही है । इस कारण कमल से क्षमा मांगता हुआ वह छाया के साथ चला गया ।

सोने के कमरे में पलंग लगा था और उस पर फूलों के गजरे पड़े थे । छाया स्वयं पलंग पर बैठ गई और बलवीर को अपने साथ वहां बैठने को कहा । बलवीर ने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई । ड्रेसिंग टेबल के सामने एक कुर्सी रखी थी । उसने अपनी बांह, जो छाया ने पकड़ी हुई थी, छुड़ाकर कुर्सी उठा ली और पलंग के सामने रखकर उस पर बैठकर पूछने लगा, 'अच्छा तो फरमाइये ?'

'आप यहां मेरे समीप नहीं बैठियेगा क्या ।'

'अभी नहीं । अभी मुझे अधिकार नहीं है । मैं यही तो जानने आया हूँ कि यह अधिकार मेरी सामर्थ्य में भी है या नहीं ?'

'आपको अभी भी संदेह है क्या ?'

'संदेह की बात नहीं । आज आपका रंग-ढंग कुछ विचित्र-मा प्रतीत हो रहा है । आपको याद है पहली बार जब हम इसी प्रयोजन से आये थे तो कमल जी ने एक दोहा सुनाया था ।'

'याद है ।' छाया ने कहा, 'यही तो था—

'जहां ज्वार ऊंचे चढ़े तां पर घाटा आय ।

समतुल रहने से सदा किंचित् सोच न पाय ॥'

परन्तु छोड़िये इस बात को कमल जी विलक्षण जीव है । उनकी सब बातें सब मनुष्यों पर और सदैव घट नहीं सकती ।'

छाया ने वह गुलाब का फूल स्वयं सूँघकर और अपनी गालों पर लगाकर बलवीर की ओर फेंक दिया । बलवीर ने उसे उठाया और सूँघकर कहा, 'यह लाल गुलाब है । इसमें गन्ध नहीं होती, परन्तु इस

फूल की महक तो स्वाभाविक गन्ध से भी अधिक है। कहीं इसमें इतर तो नहीं डाला तुमने ?'

'मनुष्य प्रकृति की त्रुटियों को पूर्ण करने का यत्न करता रहता है।'

'तो आपका कहने का अभिप्राय यह है कि यह सुगन्ध कृत्रिम है। छाया! यह बनावट तुम्हें क्यों पसंद है। वास्तव में जब से मैं यहां आया हूं मेरा तो दम घुटा-सा जा रहा है।'

'क्यों ?' छाया ने विस्मय पूर्वक पूछा।

'मुझे यहां सब ओर नकलीपन ही दृष्टिगोचर हो रहा है। देखो छाया, मैं असलियत को प्यार करता हूं। झूठ और नकल से मुझे हार्दिक घृणा है।'

'पर यहां तो सब कुछ असल-ही-असल है। हां ! केवल असल को कुछ अच्छा दिखाने का प्रयत्न अवश्य किया गया है।'

'पर मैं तो समझता हूं, अच्छा करने के यत्न में आपने कुछ बिगाड़ ही दिया है। देखो बिना इस श्रृंगार और बनाव के आप अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होती थीं। इस रूज और पाउडर में वह सौन्दर्य, कहां, जो तुम्हारे मुख पर प्रकृति ने दिया था। यह साड़ी, यह जरीदार जम्पर, यह भूषण और फिर उस पर लिवण्डर की गन्ध, मुझे इस सबसे घृणा है। छाया ! मैं तो तुम्हें स्वाभाविक रूप में ही पसन्द करता हूं।'

'सच ?'

'बिलकुल। यह बनावट तो कुरूप वस्तु के लिए ही होती है।'

'बिलकुल स्वाभाविक रूप में ? तो यह लो।' इतना कहकर वह पलंग पर से उठी और गुसलखाने में जा उसने अपना मुख धो डाला। इसके बाद सोने के कमरे में लगी हुई ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़ी होकर उसने तौलिये से मुख पोंछ डाला और वहां खड़े-खड़े ही उसने भूषण उतार दिए। इसके बाद बलवीर जी की ओर देखकर बोली, 'आपको यदि यह साड़ी और जम्पर भी पसंद न हों तो यह लो।' इतना कहते-कहते उसने जम्पर उतारकर मेज पर रख दिया और साड़ी की गांठ वह खोलने

हो लगी थी कि बलवीर को ध्यान आया कि वह क्या करने लगी है, और वह कुर्सी से उठकर बोली, 'छाया ! ठहरो।' और वह भागकर दरवाजे से बाहर जा खड़ा हुआ। वहाँ से वह बोली, 'कपड़े बदलकर तुम बाहर आ जाना। मैं वहाँ कमल के पास बैठा हूँ।'

इतना कहकर बलवीर कमल के पास ड्रायंग रूम में जा बैठा।

बलवीर के मुख पर घबराहट देखकर कमल ने चिंतित भाव से पूछा 'दादा क्या हुआ है ?'

'बहुत भयंकर औरत है यह। वीणा की बात ठीक प्रतीत होती है। भारी षड्यंत्र रचा जा रहा था।'

'कुछ बताया है उसने ?'

कमल तब तक एक प्याला चाय पी चुका था। दूसरा बनाकर पीने ही वाला था कि बलवीर ने कमल का प्याला उठाकर पीते हुए कहा, 'भैया चाय थोड़ी और मंगवा लो।'

कमल ने नौकर को बुलाया और कहा, 'एक प्याला और ले आओ।'

बलवीर ने चाय पीते हुए कहा, 'भैया ! बुरी तरह फंस गया था। बड़ी मुश्किल से बचा हूँ।'

कमल ने हसते हुए कहा, 'ज़रा दिल ठीक करो दादा ! अभी आती होगी।'

'भैया। अब तुम ही बात करना।'

इतने में नौकर चाय का एक प्याला और ले आया।

जब बलवीर बाहर भागकर आया था तब छाया प्रायः नंगी हो चुकी थी। उसे भांगता देखकर छाया अपनी हार के विषाद से भर गई। उसने हाथ से अपनी अंगिया फाड़कर फेंक दी और ड्रेसिंग टेबल के दराज़ में से सफेद सूती धोती तथा जम्पर निकालकर पहन लिए और बाद में यह देखने के लिए कि बलवीर तथा कमल कहीं चले तो नहीं गये, बाहर ड्रायंग रूम में चली आई। वहाँ कमल और बलवीर को शान्ति से चाय पीते देखकर उसके मन में फिर आशा बंध गई और उनके

समीप जाकर स्वयं चाय बनाने लगी। यद्यपि वह बाहर से शान्त प्रतीत होती थी, परन्तु मन में बहुत ही लज्जा और क्रोध से भरी हुई थी। चाय बनाते समय उसका हाथ काँप रहा था। छाया को उस अत्यन्त शृंगारी रूप से एकदम सादी पोशाक और पाउडर सुखी-रहित रूप में देखकर कमल ने साश्चर्य पूछा, 'छाया देवी यह क्या हुआ ?'.

छाया ने माथे पर त्योंरी चढ़ाकर कहा, 'अपने दादा से ही पूछो न। मुझे यह स्वाभाविक रूप में देखना चाहते थे। जब मैं स्वाभाविक रूप में आने लगी तो भाग खड़े हुए।'।

कमल के मन में प्रकाश हो गया, 'ओह अब समझा। बलवीर जी "ईव इन पैराडाईज" के दृश्य से डरकर भाग आये मालूम होते हैं। पर मैं पूछता हूँ, दादा ! यह जानते हुए भी कि ईश्वर की सृष्टि में औरत सबसे कुरूप जन्तु है, आपने उसे देखने की इच्छा की ?'

'कमल भैया ! मेरा यह अभिप्राय नहीं था।'

छाया ने माथे पर त्योंरी चढ़ाकर पूछा, 'परन्तु कमल जी, यह आपको किसने बताया है कि स्त्री एक कुरूप जन्तु है ?'

'स्वयं स्त्रियों ने ही। प्रत्येक कारागर घटिया वस्तु को बढ़िया बनाने का यत्न करता रहता है। आदि-सृष्टि से संसार भर की स्त्रियाँ शृंगार करती रही हैं। इससे क्या यह सिद्ध नहीं होता कि वे अपने को बदसूरत अनुभव करती हैं और उस कुरूपता को छिपाने के लिए शृंगार करने का यत्न करती रहती हैं ?'

'मेरा यह अभिप्राय नहीं था। आप इस विषय में कुछ नहीं जानते।'

'इसके तो और भी प्रमाण हैं। ईश्वर की सृष्टि में हम अन्य जन्तुओं के उदाहरण से भी इसी परिणाम पर पहुँचते हैं। मुर्गी से मुर्ग सुन्दर होता है, मोरनी से मोर, बन्दरी से बन्दर, और चिड़िया से चिड़ा। आप किसी भी जन्तु के जोड़े को लें, उसमें नर मादीन से अधिक सुन्दर प्रतीत होगा। इससे भी यही समझ में आता है कि पुरुष भी स्त्री से अधिक सुन्दर है।'

छाया ने वैसे हा नाक चढ़ाकर कहा, 'छोड़िये इस बात को । बल-वीर जी ! मैं यह जानना चाहती हूँ कि आप मेरे किस कार्य पर रीझ सकेंगे ? मुझे जब से अपनी भूल का ज्ञान हुआ है तभी से बराबर मैं पश्चात्ताप से जल रही हूँ और मेरी विचार-शक्ति दिन-प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है ।'

बलवीर चुप रहा । कमल ने छाया देवी को मार्ग सुझाने के लिए कह दिया, 'छाया देवी ! बलवीर जी सीधे-सादे आदमी हैं । इन्हें मुलम्मे बाजी पसन्द नहीं । यह तो मन, वचन और कर्म से जीवन में सरलता चाहते हैं । यदि आप इसका अवलम्बन करेंगी तो यह आपको सिर पर उठा लेंगे ।'

छाया चुपचाप फर्श की ओर देखती रही । दोनों उसका मुख देख उसके अन्तरात्मा का अनुमान लगाना चाहते थे । छाया कुछ देर तक सोचकर बोली, 'आप पिताजी के आने तक ठहरेंगे न ?'

बलवीर बाला, 'मालूम नहीं वे कब तक आयेंगे । माताजी ने खाना तैयार किया होगा और खाने के समय हमारा घर पर पहुंचना अत्यन्त आवश्यक है ।'

कमल ने हाथ पर बंधी घड़ी की ओर देखकर कहा, 'साढ़े आठ तो बज गये हैं । दादा चलो चलें ।'

बलवीर उठ खड़ा हुआ, 'अच्छी बात है मैं फिर आऊंगा ।'

छाया भी उठ खड़ी हुई और बलवीर की बांह में बांह डालकर उसे बाहर लॉन में ले गई । कमल वहीं कमरे में खड़ा रह गया । छाया के चले जाने और कमल को भी जाने के लिए तैयार देख नौकर भीतर आया और बर्तन उठाने लगा । कमल के मन में एक बात आई और उसने नौकर से पूछा, 'पंडितजी कब गये हैं ?'

'आपके आने से कुछ ही पहले गये थे । सिनेमा देखने को कह रहे थे ।'

‘तो छाया देवी को साथ नहीं ले गये ?’

‘इनसे चलने को कहा गया था । परन्तु वह कहने लगीं कि आज कुछ तबियत खराब है ।’

‘तो फिर उन्होंने पूछा नहीं कि क्या कष्ट है ?’

‘वह तो कहते थे मोटर में जाना है और मोटर में ही आना है । फिर वहां तो दिल बहलावा ही होगा । पर छायाजी कहती गई कि मैं थका हुई हूं और आराम करूंगी ।’

कमल बाहर चला आया । बलवीर और छाया लॉन में खड़े-खड़े बातें कर रहे थे । वह मोटर में जा बैठा । इसके कुछ देर बाद वे दोनों बातें करते हुए धीरे-धीरे मोटर के पास आ गये । बलवीर ने मोटर में बैठने से पहले छाया को हाथ जोड़कर ‘नमस्ते’ की और कहा, ‘यदि आपके माता-पिता कल आना चाहते हैं तो टेलीफोन पर मुझे बता देना । कहीं मैं आश्रम को न चला जाऊं ?’

जब मोटर कोठी के बाहर निकल गई तो बलवीर ने पूछा, ‘कमल ! क्या तुम्हारी यह जानने की इच्छा नहीं है कि एकान्त में छाया ने क्या किया और कहा था ?’

‘कुछ जानने योग्य कहा था क्या ?’

‘कहती थी एक दो दिन में विवाह हो जाय तो ठीक है ।’

‘उस विषय में कुछ बताया था क्या, जो वीणा ने कहा था ?’

‘कुछ नहीं ।’

‘विवाह की जल्दी का कारण तो पूछना ही था ?’

‘मैं चाहता हू कि वह स्वयं ही अपनी अवस्था का वर्णन करे । यदि वह पश्चात्ताप के रूप में कहेगी तो मैं उसे माया की भांति ही अग्नि-परीक्षा में से गुजरने को कहूंगा । विवाह का प्रश्न तो उसके पीछे उत्पन्न होगा ।’

कमल ने कुछ उत्सुकता से पूछा, ‘क्या यह अच्छा न होगा कि तुम उसे अपनी अवस्था प्रकट करने में प्रोत्साहन दो ?’

‘कमल भैया ! नहीं। यह उसकी अपनी निजी बात है। आज दोपहर को मैं उसके बनाव-ठनाव से परास्त हो गया था; परन्तु अब विचारोपरान्त मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि हमारे मार्ग समानान्तर रेखाओं में नहीं जाते। वह परस्पर एक-दूसरे को काटते हैं। कमल ! तुमने यह अनुभव नहीं किया कि यह दिल्ली है। यहां सहस्रों वर्षों से अनेकों सभ्यताओं का संघर्ष होता चला आ रहा है। एक समय यहां चंद्र-वंशियों ने सूर्य-वंशियों को परास्त किया था। उसके पश्चात् बार-बार पश्चिम से अपनी-अपनी परिपाटी लेकर भाँति-भाँति के लोग आये और वे भारतीय संस्कृति को कुचल डालने का यत्न करते रहे। अब अंग्रेज यहां विराजमान हैं और यह भी अपनी सभ्यता को यहां के लोगों में भर देने का भरपूर यत्न कर रहे हैं। इनकी इस नीति ने मुसलमानों को हिंदुओं के विरुद्ध कर दिया है। छोटी जात वालों को बड़ी जात वालों के, सिखों को बिना केश वालों के, और इसी प्रकार स्त्रियों को पुरुषों के विरुद्ध भड़का दिया है। कमल तुमने कभी ध्यान नहीं दिया। इस नगर में सभ्यताओं के संघर्ष का चित्र, “वायसरीगल लॉज” से उतरकर सीधी सड़क, जो “वार मेमोरियल” को जाती है, भली-भाँति चित्रित करती है। यह सड़क “किंग्सवे” (राजा का मार्ग) है। कैसी-विचित्र बात है कि यह मार्ग “क्वीन्जवे” (रानी के मार्ग) को काटता हुआ जाता है। देहला का मान-चित्र बनाने वाले के मन में इन मार्गों को परस्पर काटते हुए बनाने में क्या गूढ़ बात निहित थी यह मैं नहीं जानता; परन्तु दिल्ली की वास्तविक अवस्था का प्रदर्शन तो यह परस्पर काटकर जाती हुई सड़कें भली-भाँति करती हैं। दिल्ली चौराहा है, जहां भिन्न-भिन्न विचार-धारायें, आशाएँ, अभिलाषायें, संस्कृतियों साथ-साथ जाने के स्थान काटती हुई जाती हैं। पाश्चात्य सभ्यता के पुजारी पूर्वीय सभ्यता को जड़ से काट देना चाहते हैं। छाया देवी एक मार्ग की पथिक हैं और मैं दूसरे मार्ग का। दुर्भाग्य से यह दोनों मार्ग परस्पर मिलकर आगे को नहीं बढ़ते, प्रत्युत एक दूसरे को काटते हुए जाते हैं।’

कमल ने कुछ सोचकर कहा, 'दादा यह तो ठीक है कि वह सब कुछ भूठ कह और कर रही है। जब तुम दोनों बाहर लॉन में निकल आये थे तो मैंने नौकर से पूछा था। उससे पता चला है कि रायबहादुर छाया के पहुंचने के बाद 'सिनेमा' देखने गये हैं। उन्होंने छाया को भी साथ चलने के लिए कहा था परन्तु वह नहीं गई। और हमें यह बताती थी कि उसके माता-पिता उसके घर पहुंचने के पूर्व ही चले गये थे।'

'कमल भैया ! मेरे लिए तो बात स्पष्ट है। मैं इस जाल में फंसने से बच गया हूं। इसके अतिरिक्त इस प्रलोभन से बचने का मैंने एक उपाय और भी सोच लिया है। मैं अपना विवाह शीघ्र ही कर लूंगा। तब यह बला पीछा छोड़ेगी।'

: १० :

अगले दिन जिस समय नवीन और उसकी मां बलवीर के पिता के यहां खाना खाने आये हुए थे, छाया के माता-पिता भी वहां पहुंच गये। भोजन के पश्चात् सब ड्राइंग रूम में बैठ गये और प्रत्येक अपने-अपने मन की बात पर विचार करने लगा। छाया के माता-पिता छाया के कहने पर आये थे। उन्होंने टेलीफोन द्वारा यह बात पूछ ली थी कि वे आवें या नहीं। बलवीर ने कह दिया था कि, 'छाया से बातचीत करते समय कुछ भ्रम हो गया है। इस कारण यदि वह उस भ्रम का स्पष्टीकरण करना चाहती है तो आप आ सकते हैं।'

इस कारण मन में संशय और भ्रम लिये हुए वे आये थे। नवीन को यद्यपि निमंत्रण तो बलवीर ने दिया था तथापि वह इस अवसर पर माया के विषय में बातचीत करना चाहता था।

बलवीर भी अपने मन में कुछ विचार रखता था जो वह दोनों पक्षों को स्पष्ट बता देना चाहता था। खाने के समय सबके मन में विचार उठ रहे थे; परन्तु सभी बात आरम्भ करने से डरते थे। प्रत्येक समझता था कि कहीं उसकी बात समय से पूर्व ही न निकल जाये।

आखिर शमशेरसिंह ने कहा, 'रायबहादुर साहब, आप आये हैं तो अच्छा ही हुआ है। सुना है बच्चों में फिर मैत्री हो गई है। अब आपसे भी मित्रता का भाव रखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी।'

रायबहादुर ने यह अवसर उपयुक्त जानकर कहा, 'आज छाया ने आग्रह करके मुझे भेजा है और कहा है कि बलवीर जी विवाह के लिए मानने को तैयार हैं, यदि मैं स्वयं आपसे निवेदन करूँ तो।'

शमशेरसिंह ने बलवीर की ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा। बलवीर ने अपने मन की बात कह दी, 'छाया जिन संस्कारों में पली है, वह मेरे संस्कारों से सर्वथा भिन्न हैं। मैंने यह बात पहले भी अनुभव की थी और कल की बात-चीत से भी मुझे यही समझ में आया है। इस कारण हमें परस्पर एक दूसरे को समझने और एक दूसरे के अनुकूल बनने के लिए अभी और समय चाहिए।'

छाया की माँ ने कहा, 'पर वह तो कहती थी कि आप मान गए हैं।'

'मैंने विवाह की बात तो मान ली थी; परन्तु विवाह के दिन का निश्चय अभी नहीं हो सका था। वह चाहती थी कि एक-दो दिन में ही विवाह हो जाय। मैं चाहता था कि एक वर्ष के पश्चात् हो।'

'एक वर्ष तो बहुत लम्बा समय है', छाया की माँ ने विनीत भाव से कहा।

'आपका कहना वस्तुतः सत्य है; परन्तु मेरी और छाया की परिस्थिति साधारण हिन्दुस्तानियों की-सी नहीं है। मैं विलायत में सात वर्ष रहकर भी विचारों, से हिन्दुस्तानी रहा हूँ और आपने उसे हिन्दुस्तान में रहते हुए भी अंग्रेज महिला बनाने में कसर नहीं रखी।'

इस पर रायबहादुर बोल उठे, 'भाई हिन्दुस्तानी और अंग्रेज महिला है तो महिला ही। लड़की से वह लड़का तो नहीं बन गई?'

'क्षमा करें रायबहादुर साहब! दोनों में भारी अन्तर है। दोनों के गुणों में भले ही कम अन्तर हो; पर दोनों के दुर्गुणों में तो आकाश-पाताल का भेद है। हिन्दुस्तानियों ने अंग्रेजों के दुर्गुण ही साखे हैं। अंग्रेजी

सभ्यता में सराबोर हिन्दुस्तानी स्त्री एक साधारण हिन्दुस्तानी औरत से कोसों दूर है ।’

‘भाई हमें तो ऐसा प्रतीत नहीं होता ।’

‘आप ठीक कहते हैं; यदि आपको ऐसा प्रतीत होता तो आज छाया की यह अवस्था न होती । अभी तक किसी से उसका विवाह कभी का हो चुका होता ।’

‘तो फिर हम क्या करें उससे ?’

‘यदि वह मेरे लिए एक वर्ष तक प्रतीक्षा करना चाहती है और इस काल में पाश्चात्य सभ्यता के आकाश से उतरकर हिन्दुस्तानी घरस्तल पर आने का यत्न करना चाहती है तो मुझे आज एक पत्र में अपना निर्णय लिखकर भेज दे । मैं उससे विवाह करने के लिए एक वर्ष तक ठहरूंगा ।’

इसके पश्चात् रायबहादुर और उनकी धर्मपत्नी वहां सबसे प्रेम-भाव से मिलकर विदा हो गये । उनके जाने के पश्चात् बलवीर के पिता ने कहा, ‘बलवीर, यह तुमने अपने को इतने दिन के लिए बांधकर अच्छा नहीं किया । मैं तो समझता हूं कि विवाह करना है तो आज ही कर लो । इसके पश्चात् यह पुरुष का अधिकार है कि स्त्री को अपने मार्ग पर ले आवे।’

‘पिता जी ! छाया से मेरा विवाह होना सर्वथा असम्भव है ।’

‘फिर भी तुमने एक वर्ष तक अपने को बांध लिया है ।’

‘मुझे विश्वास है कि आज शाम को ही उसका पत्र आजायगा और वह उसका अंतिम पत्र होगा ।’

बलवीर के कहने का कमल ने समर्थन किया, ‘चाचा जी ! यह छाया से दादा का संयोग विधाता ने नहीं बनाया । इस विषय को आप छोड़िये । रहा यह वर्ष का वचन; यह तो केवल दांव-पेंच है । वास्तविक बात कुछ और है ।’

इस समय नवीन ने माया की बात आरम्भ कर दी । उसने बलवीर के पिता से कहा, ‘पिता जी मैं तो युद्ध के मोर्चे पर जा रहा हूं । ईश्वर

जाने वहां से कब लौटूंगा और लौटूंगा भी या नहीं, यह भी नहीं कह सकता। कमल भैया ने माया को आश्रम में रखने की कृपा की है। आपसे तो मैं यह निवेदन करने आया हूं कि आप उसके सिर पर पिता का हाथ रखें। बच्चों से भूल हो ही जाती है और माता-पिता उसे क्षमा कर देते हैं।’

‘नवीन ! माया को मैं अपनी लड़की के ही समान समझता हूं। इस में सारा दोष रायबहादुर केशवदेव का है। उन्होंने अपने बच्चों के मस्तिष्क खराब कर रखे हैं। लड़की की बात तो बलवीरसे आप सुन ही चुके हैं और भृगुदत्त की बात हम जानते हैं। दोनों दूषित विचार-धारा के फल हैं। बेचारी माया भी इन विषाक्त फलों के संसर्ग में आकर डंक खा गई थी। उस बेचारी का कुछ भारी दोष नहीं।’

‘वस मैं यही निवेदन करना चाहता था कि यदि किसी समय उसे अपनी जीवन-यात्रा में आपकी सहायता की आवश्यकता पड़े तो आप उसे अपनी लड़की ही मानकर उचित सम्मति और सहयोग दें।’

‘नवीन ! निश्चित रहो कि उसे मुझसे निराश नहीं होना पड़ेगा।’

: ११ :

शाम को छाया की चिट्ठी आई। उसमें लिखा था,—
परम प्रिय !

आपने जो कुछ मेरे विषय में मेरे माता-पिता से कहा है वह मुझे आश्चर्य में डालने वाला है। पर मैं समझती हूं इसमें आपका कुछ दोष नहीं। भला हममें कौन-सा इतना विचार-भेद हो गया है जिसे सुधारने के लिए तीन सौ पैंसठ दिन की तपस्या की आवश्यकता है। तीन सौ पैंसठ दिन और तीन सौ पैंसठ रातें कब बीतेंगी। तब तक कौन जियेगा और कौन मरेगा। यह कठोर दंड, जो आप मुझको देना चाहते हैं किसने आप के मन में भर दिया है। जब आश्रम में भेंट हुई थी तब तो आपके मन में यह बात नहीं थी। फिर सायंकाल आपने केवल यही कहा था कि कुछ

समय तक विचार करना आवश्यक है और अब आपने उस काल को इतना लम्बा-चौड़ा करके निश्चित कर दिया है ।

‘मैं समझती हूँ कि कमल बाबू कोई पूर्व-जन्म का बदला मुझसे ले रहे हैं । कमल बाबू को तो अपने आश्रम की धुन सवार है और वह उसे सफल बनाने के लिए सब कुछ बलिदान कर देने के लिए तैयार हैं । एक मित्र की सम्पूर्ण आय और सम्पत्ति उनके लिए पर्याप्त नहीं । वह उसका जीवन चाहते हैं । वह चाहते हैं कि आप हजारों रुपया महीना कमायें और उनके आश्रम के भूखे-नंगों के लिए दे दें । आशा है मेरे इस कठोर सत्य के लिए, आप मुझे क्षमा करेंगे परन्तु यह सर्वथा सत्य है । आप आश्रम के एक-एक सदस्य को किसी भी आश्रय के बिना संसार में छोड़कर देखें कि सबकी कीमत दुनिया क्या लगाती है । इनमें मुझे एक भी व्यक्ति ऐसा दिखाई नहीं देता जो दो समय की रोटी पैदा करने की भी योग्यता रखता हो । कमल बाबू को आप सोने का अंडा देने वाली मुर्गी मिल गये हैं और वह इतने चतुर हैं कि इस मुर्गी को हाथ से जाने नहीं देना चाहते । आपको ईश्वर की सौगन्ध है यदि भूठ बोलें तो । क्या मेरा अनुमान मिथ्या है ? क्या आपको कमल ने ही इतनी कड़ी शर्तें रखने को नहीं कहा ?

‘मैं प्रार्थी हूँ कि आप अपनी बुद्धि का प्रयोग करें । अपने मन के भावों का अनुकरण करें । कल सायंकाल मैंने जो कुछ किया वह सर्वथा स्वाभाविक था । कौन स्त्री अपने पति को अपने बस में करने का यत्न नहीं करती । इससे तो आपको रुष्ट होने के स्थान में प्रसन्न होना चाहिए था । मैं अपने पूर्ण मन और शरीर से उस समय आपकी सेवा के लिए खड़ी थी ।

‘मैं तो चाहती हूँ कि यदि आप स्वीकार करें तो इसी सप्ताह में विवाह हो जायेगा । एक सप्ताह भी बहुत लम्बा समय है । अब यह विरह और वियोग अधिक सहन नहीं होसकता । आशा है पत्र का उत्तर शीघ्रातिशीघ्र देंगे ।

आपकी कृपाभिलाषिणी, छोया ।’

बलवीर ने चिट्ठी पढ़कर कमल के हाथ में दे दी। कमल ने वह पढ़ी और पढ़ते-पढ़ते उसके माथे की त्योंरी चढ़ गई। परन्तु तुरंत ही अपने को वश में करके उसने मुस्कराते हुए चिट्ठी बलवीर को वापिस कर दी।

बलवीर ने पूछा, 'भैया क्या समझा है ?'

'दादा ! यह तुम्हारे ससभने और कहने की बात है । मुझे इसमें कुछ नहीं कहना ।'

'नाराज हो गये कमल ? यह देखो मैं बताता हूँ जो कुछ मुझे इसमें करना है ।'

इतना कहकर बलवीर ने टेलीफोन उठाकर रायबहादुर का नम्बर घुमा दिया और बातें होने लगीं—

'कौन बोलता है ?'

उत्तर मिला, 'छाया ।'

'मैं बलवीर बोल रहा हूँ ! आपकी चिट्ठी मिली है । मुझे आपसे पूरी सहानुभूति है और मैं आपकी विरह-पीड़ा को अनुभव करता हूँ । परन्तु छाया देवी आप एक भारी भूल कर रही हैं । आप जब मुझ से आश्रम में मिलने आई थीं तब मेरा विचार तुरंत विवाह कर लेने का अवश्य था परन्तु अब पीछे बदल गया है । यह आपको भूल है कि इस सबका दोषी आप कमल को ठहराती हैं । मेरा विचार तो वीणा ने बदली है । आपको मालूम होना चाहिए कि वीणा ने मुझे आपके बारे में एक रहस्यमयी बात बताई थी जिससे मेरा शीघ्र विवाह करने का विचार बदल गया है । मैं इस प्रतीक्षा में था कि तुम इस विषय पर अवश्य प्रकाश डालोगी, परन्तु तुम तो दूसरे मार्ग पर ही चल पड़ीं । इससे मैंने निश्चय किया है कि कम-से-कम एक वर्ष तक यदि तुम प्रतीक्षा कर सकती हो तो मैं विवाह करने का वचन दे सकता हूँ ।'

छाया ने पूछा, वीणा ने क्या कहा था आपसे ?

'वीणा से ही पूछ लो । वह तुम्हारी सहेली है । मैं समझता हूँ कि

वह मुझसे झूठ नहीं बोल सकती ।’

‘उसने कुछ चुगली खाई है क्या ? परन्तु मैं विश्वास दिलाती हूँ कि कोई ऐसी बात नहीं कि जिससे विवाह स्थगित करना आवश्यक हो ।’

‘बहुत अच्छी बात है । तुम वीणा से बात कर लो ।’

इतना कहकर बलवीर ने टेलीफोन बन्द कर दिया । बलवीर और कमल में इस विषय पर कोई बातचीत नहीं हुई थी । रात का खाना खाने के पश्चात् वीणा का टेलीफोन आया । बलवीर ने सुना ।

‘वीणादेवी ? हां.....बोल रहा हूँ ।’

वीणा कह रही थी, ‘छाया का टेलीफोन आया था । पांच मिनट तक गालियां देती रही और अंत में बोली कि वह बात केवल मिस्टर सेठ को धोखा देने के लिए कही गई थी । वह कहती थी कि वास्तव में वह गर्भवती नहीं है । इस पर मैंने उससे कहा कि वह स्वयं आपसे बातचीत कर ले । वह कहती थी कि मैं उसकी सफाई दे दूँ । सो मैं आपको कह रही हूँ ।

‘बलवीर दादा ! छाया झूठी है । मैंने जो कुछ कहा है उसका प्रमाण मेरे पास मौजूद है । छाया शीघ्र गर्भ-पात कराने का यत्न करेगी ।’

पांचवा भाग

बदला

: १ :

इसके कई दिन पश्चात् की बात है। प्रातःकाल नवल और वीणा स्नान इत्यादि से निवृत्त होकर 'ब्रेकफास्ट' कर रहे थे। नवल ने वीणा से कहा, 'छाया ! से भगड़कर तुमने अच्छा नहीं किया वीणा !'

'आपको उस छोकरी से मोह हो गया है क्या ?'

'मोह नहीं वीणा, उसका बाप यहां का बड़ा अफसर है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह हमें दिल्ली से भगा देने का यत्न कर रहा है। रात को थानेदार वर्दी पहनकर यहां आया था और कहता था कि मैंने दिल्ली को खूब लूटा है। अब मुझे किसी दूसरे शहर में चला जाना चाहिए। उसने इतने स्पष्ट शब्दों में तो नहीं कहा; परन्तु उसकी सब बातचीत की मैं यही परिणाम निकाल सका हूं।'

'तो फिर !'

'मैंने निश्चय कर लिया है कि यहां से कुछ दिन के लिए कहीं टल जाऊं। पीछे देखा जायगा। आज ही मैं वह सब प्रबन्ध कर लूंगा।'

'मुझे इससे प्रसन्नता होती है। शायद इस बहाने ही आप इस काम को छोड़ सकेंगे।'

'वीणा ! मैं इस काम के अतिरिक्त केवल मोटर ड्राइवरी जानता हूं। क्या तुम समझती हो कि कोई भी मोटर ड्राइवर दस हजार रुपये

महीना कमा सकता है। विवश होकर मुझे फिर भी यही काम करना पड़ेगा। अब मैं गरीबी का जीवन व्यतीत करने के सर्वथा अयोग्य हो गया हूँ।

नवल ने कुछ देर तक सोचकर कहा, 'मैं अपनी पूर्ण सम्पत्ति को नोटों में कर रहा हूँ और चाहता हूँ कि दो-चार आभूषणों को छोड़कर शेष तुम भी बेच डालो। रुपया जब मैं डालकर कहीं चलेंगे।'

उस दिन नवल अपनी सब वस्तुएं बेचने में लगा रहा। सायंकाल तक बहुत-सी वस्तुओं को नोटों में बदलकर वह घर लौटा। वीणा ने बताया कि छाया उससे मिलने आई थी। कई जूआ खेलने वाले भी आये थे, परन्तु उसने उनको कह दिया है कि वह कुछ दिन के लिए हरिद्वार घूमने जा रहे हैं। कोठी बन्द रहेगी। नवल ने अपनी कार-गुजारी बताई। उसने कहा मोटर में मिस्टर सेठ के पास दस हजार की बेच डाली है। कोठी का सब फर्नाचर पांच हजार का बिक गया है। तुम्हारे आभूषण पच्चीस हजार के बिके हैं। बैंक से मैंने सब रुपया निकाल लिया है। सब नोट सौ-सौ रुपये के कर लिये हैं। सब हम जिस दिन भी चाहें हाथ में छड़ी लेकर यहां से निकल जायेंगे। मेरा विचार है दो बिस्तर भी तुम बिलकुल तैयार रखो।'

वीणा सोने के कमरे में बिस्तर बांधने चली गई। इसी समय छाया का टेलीफोन आया, 'नवल बाबू ! मैं छाया बोल रही हूँ। दो बार मैं आपकी कोठी पर आपसे मिलने पहुँची थी, परन्तु आप नहीं मिले। देखिये वीणा ने मुझे कितनी हानि पहुंचाई है, वह जीवन भर में भी पूरी नहीं होसकेगी। इस पर भी मैंने उत्साह नहीं छोड़ा। मैंने डॉक्टर साठे से गर्भ-घात के लिए सब बातें तय कर ली हैं। आज वह मुझे जुलाब दे गई हैं। कल इसके लिए इंजेक्शन देंगा। उनका विचार है कि कोई अंतरंग व्यक्ति, जो पूरी बात से परिचित हो, बाजार से दवाई इत्यादि खाने के लिए व डॉक्टर इत्यादि को खबर देने के लिए होना चाहिए।

मैंने उसे आपका नाम बता दिया है। मेरा विचार है कि आप मुझे खोला नहीं देंगे। मिस्टर नवल ! क्या मैं आप पर भरोसा कर सकती हूँ ?'

नवल ने उत्तर दिया, 'मैं कल सुबह हरिद्वार जा रहा था। परन्तु यदि तुम कहो तो एक दो दिन के लिए ठहर जाऊंगा। हाँ एक बात है मैं ऐसी बातें टेलीफोन पर करना पसन्द नहीं करता। मैं स्वयं तुम्हें कोठी पर मिलूंगा। बताओ कल किस समय मिलूँ ?'

'डॉक्टर साठे कल दस बजे आयेगी। पांच सौ रुपया वह मांगती है। मैंने दस बजे देने का वचन दिया है। इसके पश्चात् वह इंजेक्शन देंगी। आप भी उसी समय आजायें तो ठीक रहेगा ?'

'रुपये का बंदोबस्त है क्या ? या वह भी मुझे ही करना होगा।'

'रुपये का मैंने अपना लौकेट बेचकर प्रबन्ध कर लिया है। आप आजायें।'

अगले दिन प्रातःकाल नवल ने वीणा से कहा, 'आज या कल हम यहां से चले जायेंगे। यदि कोई पूछे तो हरिद्वार ही बताना। बलवीर और कमल से भी। मैं अभी एक स्थान पर काम से जा रहा हूँ। यदि वह काम हो गया तो आज रवाना हो जायेंगे नहीं तो कल।'

इसके पश्चात् नवल स्नान इत्यादि से निवृत्त हो सुबह का खाना खा कर एक टांगे से छाया के घर जा पहुंचा। छाया ने रात को जुलाब ले लिया था। इससे उसे दस्त आरहे थे और वह अपने सोने के कमरे में थी।

नवल जब उसके कमरे में जा रहा था तो रायबहादुर केशवदेव दफ्तर जाने को तैयार खड़े थे। नवल ने हाथ जोड़कर 'नमस्ते' की। रायबहादुर ने तिरछी आंख से देखकर सिर हिला दिया। नवल छाया के कमरे में गया तो उसने कृतज्ञता भरी दृष्टि से नवल की ओर देख कर कहा, 'मैं आपका अहसान कभी भी नहीं भूलूंगी।'

'अहसान की कोई बात नहीं छाया ! प्रत्येक व्यक्ति अपना-अपना सिद्धांत रखता है। मैं अपने मित्रों को, चाहे वह कितने भी बुरे क्यों न

हों, मुसीबत में देखकर चुप नहीं रह सकता। इसी विचार से मैंने वीणा की सहायता की थी और अब तुम्हारी सहायता भी इसी विचार से कर रहा हूँ।’

‘परन्तु वीणा तो आपकी स्त्री बन गई है न?’

‘मैंने उससे जबरदस्ती नहीं की थी। केवल प्रार्थना ही करता रहा था।’ और उसने मुस्कराकर कहा, ‘तुम भी यदि चाहो, तो बन सकोगी।’

‘नहीं! यह नहीं होगा। यदि आपकी सहायता का यह मूल्य है, तो प्राप जा सकते हैं।’

‘छाया! मैंने तो कुछ नहीं मांगा। मित्रों का सहायता मूल्य लेने के लिए नहीं की जाती।’

इतने में डॉक्टर साठे आ गई। नवल को वहां देखकर उसने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, ‘आप आगये, बहुत अच्छा हुआ।’

छाया ने तकिये के नीचे से सौ-सौ के पांच नोट निकालकर साठे के हाथ में दे दिये। उसने नोट अपने हैंडबैग में रख लिये।

इसके पश्चात् इंजेक्शन की सुई और दूसरा सामान निकालकर वह इंजेक्शन देने की तैयारी करने लगी।

नवल ने पूछा, ‘आज सायंकाल तक काम हो जायगा या नहीं?’

‘मुझे तीन इंजेक्शन देने पड़ेंगे। एक तो अभी दिये देती हूँ। दूसरा दोपहर के समय दूंगी। तीसरा शाम को पांच बजे दूंगी। उम्मीद है रात को आठ बजे तक सब काम हो जायगा।’

‘डॉक्टर साहब! बात यह है कि रात को इसके पास रहने के लिए किसी स्त्री की आवश्यकता है। कौन रह सकता है?’

‘यदि मुझे पांच सौ और मिलें तो मैं ही रात को यहां रह जाऊंगी।’

‘अच्छी बात है, यह रुपया मैं शाम को पांच बजे आपको दे दूंगा।’

डॉक्टर ने कमर में इंजेक्शन दे दिया। पश्चात् एक बजे आने के लिए कहकर वह जाने को तैयार हो गई।

नवल ने कहा, ‘मैं भी उसी समय आऊंगा।’

इतना कहकर दोनों बाहर निकल आये । जब कमरे से बाहर निकले तो रायबहादुर कोठी के बरामदे में खड़े कुछ सोच रहे थे । डॉक्टर अपने टांगे में आई थी और नवल भाड़े के टांगे में । दोनों जब कोठी से बाहर निकल गये तो रायबहादुर छाया के कमरे में पहुंचे । छाया पलंग पर लेटी थी । रायबहादुर ने पूछा, 'छाया ! क्या बात है ?'

'पिता जी ! रात से पेचिश हो रही है, इस कारण डॉक्टर को बुलाया था ।'

'में डॉक्टर की बात नहीं कर रहा । मैंने दस हजार रुपए देकर तुम्हें नवल से छुटकारा दिलवाया था । अब फिर वह तुम्हारे पास आने-जाने लगा है ।'

'डैडी ! नवल बाबू बुरे आदमी नहीं हैं । वह मेरे मित्र हैं, इस कारण मेरी बीमारी की बात सुन करके खबर लेने चले आये थे ।'

'परन्तु छाया तुम नहीं जानतीं नवल बहुत भयानक आदमी है । इसके वारंट निकल चुके हैं और आज या कल में पुलिस इसे पकड़ने वाली है । मुझे डर है कि कहीं यह हमारी कोठी में ही न पकड़ा जाय ।'

'डैडी डीयर ! आप कहते थे न इन्स्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस आपके मित्र हैं । आप यह वारंट कैंसिल नहीं करवा सकते ?'

'परन्तु तुम उसकी सिफारिश क्यों करती हो । फिर मैं ही उसकी सिफारिश क्यों करूं । वह हमारा क्या लगता है ?'

'वह मेरा मित्र है ।'

'तुम्हारे मित्रों ही ने ही तो तुम्हारा सब कुछ चौपट कर दिया है । छाया ने विनय के भाव से कहा, 'डैडी !'

इस समय उसी पहली बार वेदना हुई । वह समझी कि इन्जेक्शन का प्रभाव हुआ है । उसके मुख से 'आ' निकल गई ।

रायबहादुर ने पूछा, 'क्या है छाया ?'

'पेट में मरोड़ा उठता है ।'

'अच्छी बात है अब मैं दफ्तर जा रहा हूं । देखो अब नवल को कह

देना कि वह यहां न आये । मैं सरकारी अफसर हूं और वह है राजनीतिक अपराधी ।’

छाया ने विस्मय से पूछा, ‘राजनीतिक ? डंडी कहीं भूल हो रही है । वह तो राजनाति से उतना ही दूर है जितना कि गधे के सिर से सींग ।’

‘छाया तुम नहीं जानतीं । मैंने तुम्हें सचेत कर दिया है । और देखो उसे कुछ बताना नहीं । अन्यथा मेरी नौकरी वगैरह सब समाप्त हो जायगी ।’

: २ :

रायबहादुर यह कहकर चले गये और छाया विचार में पड़ गई । वह सोचती थी कि इस मुसीबत के समय केवल नवल ही उसे सहारा देने के लिए तैयार हुआ है और सेठ के अतिरिक्त वही उसके रहस्य को जानता है । ऐसी अवस्था में उसका पकड़ा जाना अवश्य ही उसे कठिनाई में डाल देगा । साथ ही वह यह भी सोचती थी कि यदि नवल को वह यह बता देगी तो वह दिल्ली छोड़कर कहीं बाहर भाग जायगा । इससे भी उसे कठिनाई होगी । फिर क्या करे । अचानक उसे फिर वेदना हुई । पीड़ा शान्त होने पर वह फिर सोचने लगी । वह सोचती थी कि उसके पिता यदि इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस को कह दें तो वारंट रह हो सकते हैं, परन्तु वह यह भी जानती थी कि राजनीतिक बातों से रायबहादुर दूर रहते थे । तो पिताजी उसकी सिफारिश नहीं करेंगे । फिर यह सोचकर कि शायद आज वह नहीं पकड़ा जायगा और यदि कल भी न पकड़ा गया तो तब तक तो उसकी जरूरत भी पूरी हो जायगी । तब तक वह सोझ लेगी कि उसे सचेत करे अथवा नहीं ।

इसी समय उसकी मां कमरे में आई, ‘छाया बेटो ! तुम्हारे पिता कहते थे कि तुम्हें पेचिश हो गई है और अभी डॉक्टर भी आया था । परन्तु तुमने हमें तो बताया ही नहीं ।’

‘ममी ! डॉक्टर साठे मेरी सहेली हें । नवल बाबू ने सुबह टेलीफोन से एक काम बताया था । जिस पर मैंने कहा कि मैं बीमार हूं । तो उन्होंने डॉक्टर साठे को सूचना भेज दी थी और दोनों आ गये । डॉक्टर इंजेक्शन देकर चली गई है । आशा है सायंकाल तक ठीक हो जाऊंगी ।’

‘परन्तु नवल बाबू का तुमसे क्या काम था ? उसका यहां आना ठीक नहीं है ।’

‘क्या बात है ममी ! डंडी भी यही कहते थे । नवल तो बहुत भला आदमी है ।’

‘खाक भला आदमी है । हमें वह शरीफ नहीं, बदमाश समझता है । एक बार उसने मुझे टेलीफोन पर गालियां दी थीं ।’

‘ममी ! वह कोई और होगा । टेलीफोन पर प्रायः ऐसी भूल हो जाता है । पर मैं पूछती हूं कि सुना है, पुलिस उसके खिलाफ, कुछ करने वाली है ?’

‘हां । रायबहादुर बताते थे । पर मैं तो पढ़ी-लिखी हूं नहीं । मुझे इन बातों की समझ नहीं ।’

छाया को अब फिर पीड़ा उठी । उसने दांतों में होठ दबाकर आवाज निकालने से रोक ला । मां उसके मुख पर सलवटें पड़ते देख रही थी । उसने पूछा ‘क्या है ।’

छाया ने वही मरोड़े का बहाना लगाकर फिर टाल दिया ।

मां ने पूछा, ‘तो तुम्हारे लिए चावल और दही बनवा दूं ?’

‘अभी खाने को जी नहीं चाहता । भूख होगी तो खा लूंगी ।’

मां चली गई । छाया का दर्द जल्दी-जल्दी उठने लगा था और वह आशा कर रही थी कि शीघ्र ही छुट्टी हो जायगी ।

एक बजे डॉक्टर आई । नवल अभी नहीं आया था । छाया की मां भी डॉक्टर को देखकर वहां आ गई । इससे डॉक्टर बहुत परेशान हुई । आधे घंटे तक उसकी मां वहीं बैठी रही और डॉक्टर उसके जाने की प्रतीक्षा करती रही । मां देख रही थी कि छाया को सुबह से अधिक

कष्ट है। वह बार-बार कह रही थी कि 'मिस साठे ! यदि तुम्हें समझ नहीं आता तो किसी और डॉक्टर को बुला लें।'

साठे ने कह दिया, 'नहीं, कुछ चिन्ता की बात नहीं। आप जरा बाहर जायें तो मैं इसे एक इंजेक्शन लगा दूँ।'

'मेरे सामने ही लगा दो न। मुझे डर नहीं लगता। मैं भी एक बार बीमार हुई थी तो डॉक्टर दिन में दो बार सूई लगाता था।'

जब मां नहीं गई तो छाया ने क्रोध में कहा, 'अम्मी ! तुम जाओ बाहर। जाती क्यों नहीं ?'

मां कुछ समझ नहीं सकी और उठकर बाहर चली गई। वह अभी इसका कारण सोच ही रही थी कि नवल छाया के पास जाने के लिए आया। छाया की मां ने अचम्भे में उसको देखकर पूछा, 'तुम ?'

'हां। शरीरों के बच्चे को आवारा बनाने वाला नवल।'

इतना कहकर नवल छाया के कमरे की ओर घूमा तो छाया की मां ने कहा 'नवल बाबू ! लड़की को इंजेक्शन लग रहा है। तुम भीतर मत जाओ।'

'नवल ने विस्मय में पूछा, न जाऊं ?'

'हां। डॉक्टर ने मुझे भी बाहर निकाल दिया है।'

'ओह ! मैं समझा। अच्छी बात, मैं यहीं बाहर ही बैठता हूँ।' नवल सब बात समझ गया और बरामदे में रखी बेत की कुर्सी पर बैठ गया।

छाया की मां भी एक कुर्सी पर बैठकर पूछने लगी, 'आपका छाया से क्या काम है ?'

नवल ने मुस्कराते हुए कहा, 'छाया से काम है। आपसे नहीं, मां जी !'

'मैं छाया की मां हूँ।'

'तभी तो आपको बाहर निकाल दिया गया है।'

छाया की मां को यह बहुत बुरा लगा और उसने त्योंरी चढ़ाकर

कहा, 'क्या मतलब है तुम्हारा ?'

'कुछ नहीं। सिर्फ यही कि आपको लड़की आपको अपनी बीमारी भी नहीं बता सकती। बहुत विचित्र मां हैं आप, और वैसी ही विचित्र आपकी लड़की भी है।'

'बताई क्यों नहीं। बताई तो है। उसे डिसेंटरी है और डॉक्टर इंजेक्शन दे रही है।'

नवल मुस्कराकर चुप हो गया। उसने समझा इससे अधिक बात करना ठीक नहीं, परन्तु छाया की मां को उसका मुस्कराहट में कुछ शरा-रत सूझी। उसने कुछ डांटकर कहा, 'नवल बाबू ? क्या यह ग़लत है ? क्या बीमारी है छाया का ? बताते क्यों नहीं।'

'मां जी ! मुझे क्या मालूम। मैं कोई डॉक्टर तो हूँ नहीं। लो डॉक्टर साहिबा आगई हैं। आप ही पूछ लो न, इनसे !'

मिस साठे बहुत घबराई हुई बाहर आई। एक क्षण तो वह छाया की मां को वहां देखकर चुप खड़ी रही परन्तु आखिर अपनी घबराहट को वह रोक नहीं सकी। और बोली। 'मिस्टर नवल ! छाया की हालत खराब है। ऑपरेशन की ज़रूरत होगी। यह परचा ले जाओ और मेरे औज़ार और दूसरी दवाइयां ले आओ। मोटर होती तो बहुत अच्छा था।'

नवल ने कहा, 'मैं जाता हूँ और अभी जाता हूँ।' परचा लेकर नवल अपने भाड़े के टागे में सवार होकर चला गया।

छाया की मां ने मिस साठे से पूछा, 'क्या हुआ है छाया को ?'

साठे बहुत घबराई हुई थी। उसके मुख से निकल गया, 'आओ देख लो।'

दोनों कमरे में गये। छाया का रंग फक हो चुका था। उसकी आंखें चढ़ गई थीं और खून लगातार बह रहा था। मां ने छाया को पुकारा, छाया की एक बार आंखें फड़कीं। मां ने डाक्टर से पूछा, 'यह क्या है ?'

साठे के मुख से निकल गया, 'ऐबारशन !'

'क्या कहा ?'

साठे ने हृदय की गति को कायम रखने के लिए एक इंजेक्शन लगा दिया और दूसरा इंजेक्शन रक्त-स्राव रोकने के लिए। तीसरा वह भर ही रही थी कि छाया की मां को समझ में आया कि रायबहादुर को बुला लें।

उसने टेलीफोन पर जाकर अपने पति को बुलाया। 'देखो जी ! छाया की हालत बहुत खराब है। जल्दी मोटर लेकर आजाओ। किसी अच्छे डॉक्टर को भी टेलीफोन करके बुलाते आओ। जल्दी करो। मैं तो समझती हूं कुछ मिनटों की ही बात है।'

रायबहादुर ने पूछा, 'क्या हुआ है। डॉक्टर को क्या बताऊं ?'

छाया की मां ने कह दिया, 'मिस साठे आई हैं, कहती हैं 'ऐबारशन' है। खून बहुत जारहा है। छाया बहोश पड़ी है।'

रायबहादुर के पांव तले से जमीन खिसक गई। दो क्षण तो वह, किर्तव्य विमूढ़ की भांति, खड़े रहे। फिर अपने एक परिचित डॉक्टर को टेलीफोन पर सब बात बताकर शीघ्र घर पहुंचने के लिए कहा और स्वयं दस्तूर से मोटर पर सवार होकर घर पहुंचे।

जब रायबहादुर घर पहुंचे तो नवल भी तांगा लेकर बेतहाशा भागता हुआ वहां आ पहुंचा। वह अपने साथ मिस साठे का सरजिकल बॉक्स, एक टोकरी में बहुत-सी दवाइयां और रुई, पट्टी का सामान लिये वहां पहुंच गया। नवल को, पसीने से तर-बतर धोड़े वाले, टांगे से उतर, सामान दोनों बगलों और हाथों में उठाए हुए, आते देखकर रायबहादुर अचम्भे में खड़े रह गये। नवल, रायबहादुर की ओर एक नजर भी देखे बिना, छाया के कमरे में जा पहुंचा। मिस साठे रक्त बन्द करने के लिए तब तक चार इंजेक्शन दे चुकी थीं और रक्त बन्द हो चुका था।

छाया के रक्त इतना जा चुका था कि वह अभी भी खतरे से बाहर नहीं थी। रक्त कम होने के कारण हृदय की गति बहुत धीमी

पड़ गई थी। मिस साठे ने कमल को सामान लाते देखकर कहा, 'घन्य-वाद मिस्टर नवल। अब इसकी जान बच जायगी।'

उसने दवाइयों में से ग्लुकोज सल्यूशन का बल्ब निकाला और उसका मुख खोलकर स्टैरा-लाईज्ड रबड़ की नाली से जोड़ लिया। पश्चात् उस नाली के साथ नीडल लगा बांह की नाड़ी में चुभो दी। इसके पश्चात् धीरे-धीरे आधा पिन्ट ग्लुकोज सल्यूशन शरीर में डालकर नाड़ी बन्द कर दी। छाया की आंखें खुल गई थीं। नाड़ी का वेग बढ़ गया था और वह अपने चारों ओर सबको पहचान रही थी। नवल की ओर उसने कृतज्ञता भरी दृष्टि से देखा, तो मिस साठे ने कहा, 'छाया ! बच गई हो। परमात्मा को घन्यवाद है। छाया ! के सामने ही रायबहादुर के विशेष चिकित्सक खड़े थे। वह उस समय आये थे जब ग्लुकोज सल्यूशन छाया के शरीर में भेजा जा रहा था। इस कारण उन्होंने हस्तक्षेप नहीं किया। जब छाया ने उनकी ओर देखा तो डॉक्टर ने मिस साठे से कहा, 'मैं तुम्हारा लाईसेंस जब्त करवाकर रहूंगा। यह तुमने क्या किया है?'

छाया ने विनय के भाव से अपने पिता की ओर देखा। उसने डॉक्टर साहब से कहा, 'इस विषय में बाहर चलकर बातचीत करेंगे।'

इतने में रायबहादुर का चपरासी दरवाजे के समीप आकर कहने लगा, 'साहब बाहर थानेदार आपको पूछ रहे हैं।'

'गुड गाँड ! 'रायबहादुर ने कहा। उन्होंने समझा कि थानेदार एबार्शन का सूचना पाकर आया है। अतएव रायबहादुर सब लोगों को यह कहकर कि 'आप लोग यहीं ठहरें, मैं मालूम करता हूँ कि क्या बात है?'

रायबहादुर बाहर चले गये। जब नीकर ने थानेदार के आने का बात कही थी, डॉक्टर साठे के मुख का रंग पीला पड़ गया था। उसके हाथ कांप रहे थे। उसने जल्दी-जल्दी अपना सामान डिब्बे में बन्द कर दिया और सामान उठाकर ड्रायंग रूम में चली गई। रायबहादुर के अपने डॉक्टर भी, वहां रहना उचित न समझ, ड्रायंग

रूम में चले गये। अब नवल अकेला छाया के पास रह गया था। उसने छाया से कहा, 'मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि तुम बच गई हो। परन्तु छाया में पकड़ा जा रहा हूँ। मुझे मालूम है कि पुलिस मेरे ही लिए आई है। मुझे मालूम नहीं कि मुझे किस अपराध में यह पकड़ रहे हैं परन्तु कुछ भी अपराध हो मैं यह, इतना कहकर उसने जेब से नोटों के दो बंडल निकालकर छाया के तकिये के नीचे रख दिये, 'साथ नहीं ले जा सकता और यह भी लो।' उसने हाथ की भंगूठी भी उतारकर नोटों के पास रख दी।

'यदि मैंने तुम्हारे लिए कुछ किया है तो इन्हें वीणा को दे देना।'

वह अभी इतना कह ही पाया था कि रायबहादुर कमरे में आए और बोले, 'नवल बाबू चलो।'

नवल रायबहादुर के कहने को अनसुना करके बाहर बरामदे की ओर जाने के स्थान में ड्रायंग रूम में चला गया। वहां डॉक्टर साठे, भयभीत, सिर से पांव तक कांपती हुई खड़ी थी।

नवल ने कहा, 'मिस-साठे। छाया का ध्यान रखना।' इससे अधिक वह कह नहीं पाया। थानेदार ने, जिसने नवल को ड्रायंगरूम में जाते देखा था, आकर उसे पकड़ लिया। तीन चार कांस्टेबल भी वहां आगए और उन्होंने नवल के हथकड़ी लगा दी। इसके बाद थानेदार ने रायबहादुर से मांफी मांगते हुए कहा, 'रायबहादुर साहब क्षमा करे। मैंने आपकी लड़की के इलाज में विघ्न डाला है।'

इसके पश्चात् सलाम करके नवल को पुलिस वैन में चढ़ाकर थानेदार चला गया। दो पुलिस वैन आई थीं। लगभग दो दर्जन पुलिसमैन थे, जो कोठी के चारों ओर घेरा डाले हुए थे।

∴ ३ ∴

पुलिस जब नवल को लेकर चली गई तो रायबहादुर दोनों डॉक्टर को लेकर छाया के कमरे में आये और उनसे कहने लगे कि छाया का

भली-भांति परीक्षा करके जो कुछ इसके लिए ठीक हो तजवीज् कर दो ।’

मिस साठे ने अपनी सफाई देते हुए कहा, ‘रायबहादुर जो कुछ मने किया है वह सब बड़े घर की लाज रखने के लिए ही किया है ।’

इस पर रायबहादुर ने दूसरे डॉक्टर से कहा, ‘अब यह बात यहीं समाप्त कर देनी चाहिए । जो कुछ आप चाहें वह आपको दे दूंगा ।’

‘अच्छी बात है ।’ इतना कहकर डॉक्टर ने छाया की नाड़ी देखी, हृदय की गति देखी और फिर जेब से कलम-कागज निकालकर एक नुसखा लिख दिया । रायबहादुर ने जाकर सौ-सौ रुपये के पांच नोट निकाले और डॉक्टर साहब के हाथ पर रखकर कहा, ‘मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ ।’

डॉक्टर रायबहादुर से हाथ मिला और बाहर बरामदे में, स्टेन्ड पर लटकी अपनी टोपी लेकर, मोटर में सवार होकर चला गया । मिस साठे छाया को यह कहकर, कि वह पुनः सायंकाल का आयगी, चली गई । जब सब चले गये तो छाया ने अपने पिता से पूछा, ‘नवल बाबू को क्या हुआ ?’

‘उसे पुलिस पकड़कर ले गई है ।’

छाया ने पूछा, ‘क्यों ?’

‘थानेदार कहता था कि जापानियों से उसका सम्बन्ध है । वह “फिफ्थ कालमिस्ट” है ।’

‘पिता जी, उन्हें छोड़ा दीजिये न ।’

‘छाया बस ! बहुत हो चुकी । मैं तुम्हारे मित्रों से न तो तुम्हारा और न अपना सम्पर्क रखना चाहता हूँ । क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती । अपनी इस अवस्था में भी तुम उनकी सिफारिश करती हो जिन्होंने तुम्हारी यह हालत की है ।’

‘नवल उनमें नहीं है पिता जी ।’

‘मैं जानता हूँ । वह जुआरी है, चोर है, ठग है और सरकार का अपराधी है । इससे अधिक और क्या चाहती हो ? मैं अपना गला फांसी

में नहीं दे सकता ।’

‘परन्तु डडी, वह अपराधी नहीं है । उसने ही मेरी जान बचाई है ।’
इससे तो तुम मर जातीं तो अच्छा था । तब मैं कम-से-कम उन लोगों के सम्मुख तो लज्जित न होता जो तुम्हारे भेद को जान गये हैं । छाया तुमने हमारे मुख पर कालिख पोत दी है ।’

छाया चुप रही । इस समय छाया की मां भी वहां पर आ गई थी । उसने आते ही कहा, ‘यह नवल की बला तो टली । ईश्वर को धन्यवाद है । क्यों जी ! अब इसे छोड़ेंगे तो नहीं ?’

रायबहादुर ने कहा, ‘छोड़ना तो दूर की बात है, मेरा विचार है कि कल इसका कोर्ट मार्शल होगा और परसों इसे फांसी लगा दी जायगी ।’

‘परन्तु आप तो कहते थे कि दो चार वर्ष की कैद ही होगी ?’
फांसी की बात सुनकर छाया की मां का दिल धड़कने लगा था ।

रायबहादुर ने कहा, ‘मैंने तो केवल इतना ही करने को कहा था ; परन्तु इन्स्पेक्टर जनरल ने कहा कि यदि वह केवल बंदी ही रखा गया तो प्रति छै महीने के पीछे उसके कागज पड़ताल किये जाया करेंगे और हर बार झूठ का पुलिन्दा बनाना पड़ेगा । सम्भव है कि भूठी कारंवाई का भेद खुल जाय । इन्स्पेक्टर जनरल कहते थे कि इस आर्डिनेंस के अधीन तो एक कोर्ट मार्शल बैठेगा । अफसर प्रायः शराब पीकर गुट्ट होते हैं । सफाई का कोई अवसर अपराधी को नहीं दिया जाता । सरकारी वकील अपराध का कुछ विवरण पढ़ देता है और एक-आध घंटे में कोर्ट मार्शल फांसी का हुक्म दे देता है । एक बार फांसी हुई तो फिर मिसल किसी पुरानी अलमारी में फेंक दी जायगी जहां उसे दीमक खा जायगी ।’

‘ऐसों के साथ ऐसा ही होना चाहिए । मुर्दार कहता था “शरीफ आदिमियों के लड़के-लड़कियाँ यहां आते ही नहीं ।” अब पता चलेगा शरीफ क्या कर सकते हैं । जी चाहता है कि उसे फांसी पर लटकता हुआ देखूँ ।’

छाया यह सब कुछ सुन रही थी और यह सुनकर उसका मस्तिष्क घूमने लगा था। वह दुर्बल इतनी हो गई थी कि बहुत बोल नहीं सकती थी। जितना कुछ उसने अपने पिता से कहा था वह उसे थका देने के लिए पर्याप्त था। पिता की बात समाप्त होने पर वह कुछ कहने ही लगी थी कि उसका गला सूख गया और आवाज़ नहीं निकली। मां ने मुख खुलते देखा और समझा कि पानी मांग रही है। इस कारण उसने ग्लूकोज़ को पानी में घोलकर दे दिया। छाया पीकर चुप हो गई।

: ४ :

बलवीर एक दिन शाम को आश्रम में आया उसने अपने मन में उठते विचारों को कहने के लिए मोटर गैराज में छोड़ी और माया के कमरे में जा पहुंचा। माया की मां और माया दोनों आश्रम के लोगों के कपड़े सी रहे थे। आश्रम के लोग पतलून तो पहनते ही नहीं थे। यहां पर अचकने और चुस्त पायजामे का रिवाज था। अचकने भी केवल उन लोगों के लिए ही होती थीं जिन्हें सरकारी दफ्तरों से काम पड़ता था। बाकी सब पायजामे के ऊपर कुर्ता और उस पर जवाहर वास्केट ही पहनते थे। यह सब कपड़े माया और माया की मां बना लेती थीं।

बलवीर ने जब दरवाजा खोला तो माया की मां ने बलवीर का देखकर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, 'आग्रो बेटा। आग्रो, बैठो न।'

बलवीर ने कहा। 'मां ! माया को रात के समय काम नहीं करना चाहिए आखें खराब हो जायंगी।'

'पर भैया ! कमल जी कहते थे कि कल तक बीस पायजामे चाहिए और अभी दस बने हैं।'

'पर मां जी ! आपको यह भी पता होना चाहिए कि नौ घंटे से अधिक काम करना और कराना अपराध है।'

'यहां कानून की बात नहीं। बलवीर ! हम तो इसे घर समझकर ही काम करते हैं। भैया देखो, जब तक आश्रम को घर न माना

जायेगा तब तक कैसे काम चलेगा । माया दो मास तक कुछ काम नहीं कर सकी तो आपने उसे कुछ कहा नहीं । अब यदि कुछ काम अधिक है तो इसे भी कुछ कहना ठीक नहीं ।’

‘पर मां जी, मैं तो माया से कुछ बातें करने आया हूँ ।’

‘अच्छा, तो जाओ बेटी ! इस साथ के कमरे में लैम्प जला लो ।’ माया उठी और दियासलाई आलमारी में से निकालकर मिट्टी के तेल का लैम्प जलाने लगी ।

बलवीर ने कहा, ‘इसकी क्या आवश्यकता है माया ! बाहर बहुत प्रकाश है । देखती नहीं हो कि आज चांदनी की रात है ।’

माया कमरे से बाहर निकल आई । बलवीर उसे साथ लेकर कुंए की ओर ले गया । वहां कुंए की जगत का सहारा लेकर बलवीर ने कहा; ‘माया ! यदि मैं तुमसे कोई बात ऐसी कहूँ जो रुचिकर न हो, तो नाराज तो न होगी ?’

‘नाराज आपसे ? बलवीर जी आप नहीं समझते कि मैं कितनी आपके अहसान से दबी हुई हूँ । जो कुछ सद्व्यवहार में यहां देख रही हूँ, वह मैं जन्म-जन्मान्तर तक नहीं भूल सकती । कहिये, क्या अपराध हो गया है मुझ से !’

‘अपराध की बात नहीं । मैं तुम्हें बताना चाहता था कि मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं इस सप्ताह में ही विवाह कर लेना चाहता हूँ ।’

‘तो यह तो बहुत प्रसन्नता की बात है ।’ माया ने लम्बी सांस खींचकर कहा । उसने कुछ दिन हुए, छाया के आने की बात सुनी थी और बलवीर के इस कहने से उसने यही समझा कि छाया से उसके विवाह की बात पक्की हो गई है । यह बात भी उसके मस्तिष्क में एकदम दौड़ गई कि छाया का भाई उसकी मुसीबत का कारण था । इस कारण, बलवीर उससे क्षमा मांगने लगा है । इससे उसकी टांगें कुछ कांपने लगी थी । फलस्वरूप वह कुंए की जगत पर चढ़कर बैठ गई और

अपनी बात को कहती गई, 'बलवीर जी ! भला इससे मैं नाराज़ क्यों होऊंगी ? आपकी स्त्री आश्रम में आकर रहेंगी न ?'

बलवीर ने कहा, 'माया ! अभी सारी बात तुमने सुनी ही नहीं।'

'अच्छा कुछ और भी है ? तो कहिए । क्या उसके आने से मुझे आश्रम छोड़ना पड़ेगा ?'

'माया ! तुम क्या समझ रही हो ? शायद तुम्हारा खयाल है कि मैं छाया से विवाह कर रहा हूँ और उसने विवाह से पहले यह शर्त कर ली है कि तुम्हें यहाँ से निकाल दिया जायगा । ऐसा कुछ नहीं, माया ! मैंने विवाह का निश्चय तो अवश्य कर लिया है, परन्तु जिससे विवाह करना है उसकी स्वीकृति के लिए तो तुम्हारी सिफारिश की आवश्यकता है । मैं तो यही कहने वाला था कि क्या मेरी उससे सिफारिश तुम्हें करना पसन्द होगी या नहीं ?'

'ओह !' माया ने सुख की सांस लेते हुए कहा, 'आपकी सिफारिश के लिए मैं इन्कार नहीं कर सकती । परन्तु मेरी सिफारिश चलेगी कहां ? किसकी लड़की है जिसके पास आप मुझे दूत बनाकर भोजना चाहते हैं ?'

'तुम्हारी सिफारिश चलने की बहुत आशा है । इसीलिए तो तुमसे कह रहा हूँ।'

'मेरी समझ में नहीं आया कि आप क्या कह रहे हैं । क्या कोई कॉलिज की सहेली है । ओह हाँ ! कहीं वह लड़की तो नहीं, जिसको आपने मलेरिया में इंजेक्शन दिये थे ? वह नीला, मेरी सहेली जरूर है पर मेरा कहना मानेगी क्यों ? बड़े बाप की बेटी है । कॉलिज में भी अपनी अमीरी की बू में अकड़कर चला करती थी । फिर भी यदि आप आज्ञा देंगे तो मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ और फिर मैं आपकी प्रशंसा की वह झड़ी लगाऊंगी कि एक बार तो उसका मस्तिष्क धूम बायगा !'

'माया ! यही तो मैं चाहता हूँ कि एक बार मेरी उस लड़की के

सम्मुख ऐसी प्रशंसा करो कि वह मेरे साथ विवाह करने के लिए राजी हो जाय। परन्तु वह लड़की नीला नहीं है। मुझे वह पसन्द नहीं।'।

'ता और कौन है ? बताइये।'।

'वह है तुम्हारी सहेली। मेरे मित्र नवीनचन्द्र की छोटी बहन माया। मैं चाहता हूँ कि तुम उसे यदि मेरी ओर से पूरा जोर लगाकर कहो तो मेरा काम बन जायगा। माया ! बताओ कहोगी उससे ?'

यह सुनकर माया अवाक् मूखबैठी रह गई। उसके मुख से आवाज नहीं निकली और वह इसी दुविधा में थी कि क्या कहे। उसे बलवीर जी से ऐसी आशा न थी। बलवीर के पिता बहुत धनी आदमी थे। बलवीर की आय भी अब एकसहस्र रुपया मासिक से ऊपर चली गई थी। माया के पिता नहीं थे। मां कुछ अधिक सम्पत्ति नहीं रखती थी। भाई कमिश्नड ऑफिसर अवश्य था, परन्तु अपने दर्जे (Position) को रखने के लिए उसे अपनी सारी आय खर्च ही कर देनी पड़ती थी और फिर उसे बिना विवाह के लड़का हुआ था। वह यह तो आशा करती थी कि बलवीर और कमल किसी योग्य वर को ढूँढ़कर उससे विवाह करने की बातें करेंगे। परन्तु उसे स्वप्न में भी यह आशा नहीं थी कि बलवीर स्वयं ही उससे विवाह करने की बातचीत करेगा।

बलवीर ने जब माया को चुप देखा तो वह कुछ चिन्ता से बोला, 'माया ! क्या उस अपनी सहेली के योग्य तुम मुझे नहीं समझती ?'

'यह बात नहीं है बलवीर जी ! मैं समझती हूँ कि वह आपके योग्य नहीं है। कुरूप है, चरित्र की भी ठीक नहीं है और फिर बदनाम भी हो चुकी है। आपके घर में जाकर आपके पुरखों तक को वह कलंकित करेगी।'।

'यह तुम कहती हो व। मेरे मन से पूछो। वह हृदय से, मन से और शरीर से भी अति सुन्दर है। मैं अपना सौभाग्य समझूँगा यदि वह मेरे घर में आने के लिए तैयार हो।'।

माया ने कुछ सोच कर कहा, 'हम दोनों इकट्ठी ही सोती हैं।

यदि आप आग्रह करते हैं तो रात को सोने से पहले मैं उससे राय करूंगी। इस पर भी मैं कहती हूँ कि गंदी नाली में पड़े कंकर को उठाने में हाथ गंदे हो जाते हैं।’

‘माया, मैं सब कुछ सोच-विचार कर कह रहा हूँ। यदि उसे यह स्वीकार हो तो मैं नवीन को पत्र लिख दूँ, जिससे भाई भी बहन को आशीर्वाद भेज सके।’

‘अच्छी बात है, यदि आप हठ करते हैं तो मैं सिफारिश कर दूंगी, पर वह मानेगी या नहीं, अभी कह नहीं सकती।’

‘तो मुझे कब और किस प्रकार पता चलेगा?’

‘मैं समझती हूँ आपके मित्र की माँ ही आपको बतायेंगी, मैं तो केवल सिफारिश कर दूंगी। आप कल नवीन बाबू की माँ से मालूम कर सकते हैं।’

बलवीर ने कहा, ‘धन्यवाद, माया मैं तुम्हारी सिफारिश के लिए तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा और यदि तुम अपने कार्य में सफल होगई, अर्थात् यदि तुम्हारी सहेली ने मुझसे विवाह करना स्वीकार कर लिया तो मैं तुम्हारा मुँह मीठा कराऊँगा और तुम्हें बहुत-बहुत भेंट दूँगा।’

माया में अब वह शिथिलता नहीं रही थी जो उसमें कुए की जगत पर चढ़कर बैठने को समय थी। अब वह कूदकर नीचे उतरी और भागती हुई अपनी कुटिया में चली गई।

∴ ५ ∴

माया जब बलवीर से बातचीत करके लौटी तो उसकी माँ ने पूछा, ‘माया क्या बात थी?’

‘कुछ नहीं माँ। वे आश्रम का व्यवस्था के विषय में कुछ कहते थे।’

‘तो यह दो पायजामे यदि तुम सी दो तो शेष कल दोपहर तक कर देना।’

‘नहीं माँ! अब मैं थक गई हूँ, मैं तो अब सोना चाहती हूँ।’

‘तो दूध तो पी ले न ।’

‘अब तो किसी चीज की भी इच्छा नहीं है ।’

‘तो बच्चे को दूध कहाँ से मिलेगा । कुछ पागलों की-सी बातें करने लगी हो अब तुम ।’

‘अच्छा माँ ! तुम ले आओ । मैं तो सो रही हूँ ।’

माँ ने सीने की मशीनों को उठाकर एक ओर रख दिया । और कपड़े को समेटकर वह रसोईघर में जाकर एक गिलास दूध का ले आई । जब माया की माँ दूध लेने रसोईघर में गई थी तो बलवीर वहाँ बैठा खाना खा रहा था ।

माया दूध पीकर खाट पर लेट गई । आज उसे नींद नहीं आ रही थी और वह रात भर करवटें लेती रही, धीरे-धीरे रात गुजर गई, परन्तु माया की पलक नहीं लगी ।

प्रातःकाल उठकर जब माँ ने माया को बुलाया तो वह लपककर उठ बैठी । यद्यपि वह सोई नहीं थी तो भी रात के जागने के लक्षण माया की लाल आँखों के अतिरिक्त और कहीं नहीं थे । पर यह भी माँ की दृष्टि से बच नहीं सके । माँ ने पूछा, ‘माया ! तुम्हारा आँखें लाल क्यों हो रही हैं, क्या फिर रात को रोती रही हो ?’

‘हां ! माँ !’ माया ने सिर झुकाये हुए कहा ।

‘अरी ! यह क्यों ? अब क्या बात हुई है ?’

‘कुछ विशेष बात नहीं थी माँ ! बलवीरजी इतने दयालु हैं कि उनका बात सुनकर मेरे मन के उद्गार उभर उठते हैं और प्रसन्नता के आंसू बहने लगते हैं ।’

‘तो बलवीर जी ने रात फिर कुछ बात कही थी ?’

‘हां कहते थे कि वे तुम्हारे दामाद बनना चाहते हैं ।’

‘सच !’

माया ने आँखें नीची किये हुए सिर हिला दिया ।

‘तो तुमने क्या कहा ?’

‘मैंने कहा था कि आप जिसके दामाद बनना चाहते हैं उसी से पूछ लेना । मुझसे इस सम्बन्ध में कुछ भी कहने की जरूरत नहीं ।’

‘तो फिर उन्होंने क्या कहा ?’

‘वे कहते थे कि मैं तुमसे उनकी सिफारिश करूँ । आश्रम के एक सदस्य को दूसरे सदस्य की सिफारिश करनी चाहिए ।’

‘ठीक तो कहते थे बेटा ’ मां ने प्रसन्नता से विभोर होकर कहा, ‘तो तुम सिफारिश करती हो न ?’

‘क्या करूँ ? आश्रम की व्यवस्था को भी तो कायम रखना है । सिफारिश तो करनी ही पड़ेगी ।’

माया लपककर उठी और अपने बच्चे को गले से लगाकर उसका मुख चूमने लगी ।

बलवीर शहर जाने से पूर्व रसोईघर में नाश्ता कर रहा था । माया की मां जब माया के लिए दूध लेने आई तो उसने हाथ जोड़कर ‘नमस्ते’ की और पूछा, ‘मां जी ! माया ने कुछ सन्देशा मेरे लिए दिया है ?’

‘हां बेटा तुम चिरञ्जीव रहो । भगवान् तुम दोनों को धन-धान्य और पुत्र-पौत्रों से सुशोभित करे ।’

‘मां मेरी पीठ पर हाथ रखकर आशीर्वाद दो ।’

माया की मां ने बलवीर की पीठ पर हाथ फेरा । कमल ने इस समय रसोईघर में प्रवेश किया । उसने माया की मां को बलवीर की पीठ पर हाथ फेरते देख लिया था । उसने कहा, ‘दादा ! यह सब सौभाग्य आप-ही-आप ले रहे हो क्या ?’

‘ओह ! कमल भैया । इधर आओ । तुम्हारे लिए एक शुभ समाचार है ।’

कमल माया की मां के समीप आकर खड़ा हो गया और प्रश्न भरी दृष्टि से दोनों की ओर देखने लगा । बलवीर ने कहा, ‘देखो, मां जी मुझे आशीर्वाद दे रही हैं कि मैं धन्य-धान्य और पुत्र-पौत्रों से सुशोभित होऊँ ।’

कमल ने मुस्कराते हुए कहा, 'बिना विवाह किये ही क्या?'

'भैया ? यही तो बात है । साथ ही विवाह का प्रबन्ध भी तो यह कर रही हैं ।

'तब तो बघाई हो, दादा ? बहुत बहुत बघाई हो । क्या मैं आश्रम में घोषित कर दूँ ? लड़की कहां की है ?'

माया की मां वहां से खिसक गई । भोजनालय में अन्य बहुत से सदस्य भी कमल और बलवीर के चारों ओर एकत्रित हो गये और पूछने लगे, 'लड़की कौन है ?'

'यह तो तुम लोगों को मां जी से पूछना चाहिए था ।'

कमल समझ गया और बलवीर की बांह में बांह डालकर उसे मोटर गैराज की ओर ले गया । जब वह एकान्त में पहुंचे तो उसने पूछा, 'चाचाजी से तो पूछ लिया होगा ? माया और छाया में अंतर है ।'

'माताजी पर तो मुझे कभी सन्देह नहीं हुआ । पिताजी ने भी जो आश्वासन उस दिन नवीन को दिया था उससे मुझे विश्वास है कि उस ओर से भी कोई आपत्ति नहीं होगी ।'

: ६ :

उस दिन की ही बात है । मिस्टर सुन्दरम् की छुट्टी का दिन था । कमल बलवीर के माया से विवाह करनेके विषय में चिन्ता-सागर में डूबा हुआ था । उसका मन तो कहता था कि बलवीर के माता-पिता को माया के विषय में आपत्ति नहीं करनी चाहिए ; परन्तु वह इस बात को मनसे निकाल नहीं सका कि बलवीर अपने माता-पिता की एक ही संतान है । वे अब वृद्ध हो चुके हैं और अब भी उनके रक्त में, मान-अपमान और राजपूती आचार-व्यवहारके विचार भर रहे हैं, यह विवाह, सम्भोग, संतान-उत्पत्ति, चरित्र-भ्रष्टता की नवीन व्याख्याएँ उनके मस्तिष्क में ओनी अति कठिन हैं । यदि बलवीर के पिता ने बलवीर के माया के साथ विवाह को परिवार का नाक काटने की बात मानी तो बलवीर क्या करेगा ?

क्या वह इस पर भी विवाह करेगा ? इससे उनको कितना दुःख होगा । यदि ब्रह्म बलवीर ने विवाह से इन्कार कर दिया तो माया के लिए आत्म-घात के अतिरिक्त और क्या मार्ग रह जायगा ?

कमल इसी प्रकार के विचारों में लीन था कि मिस्टर सुन्दरम् उसके पास आ बैठे । कमल ने अभिवादन के पश्चात् प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखा । सुन्दरम् ने अपने आने का आशय बताते हुए कहा, 'आश्रम के लोग कह रहे हैं कि माया का विवाह बलवीर जी से होने वाला है ।'

'हां ! परन्तु अभी तक निश्चय नहीं कहा जा सकता ।'

'क्यों ? उनका इससे क्या सम्बन्ध है ? मिस्टर कमल एक बात में नहीं समझ सका । आप आगे चलते हुए भी मुख पीछे को किये हुए ही हैं । एक ओर तो यह आश्रम आर्थिक विषय में बहुत उन्नत दृष्टिकोण रखता है और सब परम्पराओं और रूढ़ियों को तोड़कर यह नवीन ससार की रचना कर रहा है । भला इसमें हिन्दू सभ्यता का कहीं चिन्ह मात्र भी है ? सब मेहनत-मजदूरी करते हैं और खाने-पहनने को पाते हैं । किसी की न तो निज की ओर न परिवार की सम्पत्ति है । न कोई उत्तराधिकारी है और न नसीयत करने वाला है । क्या यह हिन्दू सभ्यता है ? परन्तु जहां आप ने एक ऐसी वस्तु बनाई है वहां दूसरी ओर आप अभी तक रामायण, तथा गीता को पकड़े बैठे हैं । राम की पितृ-भक्ति, लक्ष्मण का भ्रातृ-स्नेह, भरत की न्याय-परायणता और सीता की पति-सेवा आप ठूस ठूस कर आश्रम के निवासियों में भर रहे हैं ?'

कमल मुस्कराकर पूछने लगा, तो आप क्या चाहते हैं ? इनके स्थान पर आप यहां कौन-सी प्रथा चलाना चाहते हैं ?'

'मैं चाहता हूं कि आप आश्रम वासियों को प्रत्येक प्रकार की पूर्ण स्वतंत्रता दे दें ।'

'मैं तो समझता हूं कि मैंने स्वतंत्रता दे रखी है ।'

'सबसे बड़ी स्वतन्त्रता तो यह है कि यहां पर कोई किसी पर अपनी इच्छा बल पूर्वक नहीं थोप सकता । बलवीर जी यदि माया से विवाह

करना चाहते हैं तो उन्हें भी माया की स्वीकृति की आवश्यकता है।'

'इसमें भला स्वीकृति की क्या आवश्यकता है। माया के लिए तो यह सौभाग्य की बात होगी। बात तो तब है जब मेरे जैसे के लिए, जहां मैं चाहूं, विवाह करने की स्वतन्त्रता हो।'

'ओह। तो यह बात है। आपको माया ने स्वीकार नहीं किया न, इसी से आपको बलवीर जी का व्यवहार पसन्द नहीं आया। मेरी सम्मति तो यह है कि आप माया का विचार छोड़कर किसी और जगह पर यत्न करें?'

'इसी के लिए तो मैं आपके पास आया हूं। बलवीर जी की बात तो ऐसे ही चल पड़ी थी। हमारे दफ्तर में एक क्लर्क हैं। उनकी लड़की अब बीस-बाईस वर्ष की है। वह लड़की मुझसे विवाह करना चाहती है, परन्तु उसके माता-पिता कहते हैं कि जब तक मैं इस आश्रम में रहूंगा वे अपनी लड़की का विवाह मेरे साथ नहीं करेंगे।'

'तो आपके सम्मुख अब यह प्रश्न है कि आप अपना विवाह वहां करने के लिए आश्रम को छोड़ें या न छोड़ें? क्यों जी! मैंने ठीक समझा है या नहीं?'

'हां! बात यह है कि मैं जब भी चाहूं आपका आश्रम छोड़ सकता हूं, परन्तु लगभग डेढ़ वर्ष से मैं यहां का सदस्य हूं और मेरी आय का बहुत-सा भाग आश्रम में जमा है। क्या वह शेष धन मुझे आश्रम के बाहर अपना घर चालू करने के लिए मिल सकेगा?'

'कायदे से तो नहीं मिलेगा। परन्तु यह प्रश्न मैं स्वयं निर्णय न करके आश्रम के सदस्यों की सर्व साधारण बैठक में रख दूंगा। जैसा वहां पर निर्णय होगा वैसा ही मैं करने को तैयार हूं।'

'मैं तो यह जानना चाहता हूं कि आप इसमें क्या मत रखते हैं?'

'मेरा अपना मत यह है कि बिना आपके वेतन और उसमें से बचे धन का हिसाब किये, आश्रम की अपनी आर्थिक स्थिति का ध्यान रखकर आपको बाहरी संसार में, मकान में रहने योग्य वस्त्र, फर्नीचर

बर्तन इत्यादि आश्रम की ओर से मिल जाने चाहिए।”

मिस्टर सुन्दरम् तो कमल से यह भी आशा नहीं रखता था। इस कारण इतना वचन लेकर वह कहने लगा, ‘यदि मैं आपके आश्रम में सम्मिलित न होता तो कम-से-कम साढ़े तीन हजार रुपया मैं अब तक बचा लेता। इतना तो अब मिल ही जाना चाहिए।’

‘आप क्या बचा लेते और क्या खर्च कर देते, यह जानना अति कठिन है। अब तो आप यदि आश्रम छोड़ना चाहते हैं तो इस बात का विचार त्याग कर छोड़िये कि आपको यहां से क्या मिलेगा आश्रम के नियम इस बात की गारन्टी नहीं करते कि आपको एक पाई भी यहां से अवश्य मिलेगी इस पर भी मैं समझता हूं कि यह आश्रम के लिए प्रतिष्ठा और मान की बात होगी यदि आप बाहरी संसार में सुख-आराम से रह सकेंगे।’

जब सुन्दरम् का मामला आश्रम के सदस्यों की साधारण बैठक में उपस्थित हुआ तो कमल ने सुन्दरम् के लिए कुछ फर्नीचर, वस्त्र और सुन्दरम् की स्त्री के लिए दो आभूषण आश्रम की ओर से लेकर देने का प्रस्ताव कर दिया। कमल का कहना था कि अब आश्रम की ऐसी स्थिति है कि इतना कुछ दे सके।

सुन्दरम् के विवाह से पूर्व ही, वह मकान जो उसने अपने रहने के लिए भाड़े पर लिया था, बलवीर ने फर्नीचर से सजवा दिया। रसोई-घर में बर्तनों का एक सैट रखवा दिया और विवाह के समय जितना खर्च, सुन्दरम् की ओर से हुआ, सब किया गया साथ ही उसकी स्त्री को एक जोड़ा वस्त्र और हाथ की चूड़ियां तथा गले का एक हलका-सा हार ले दिया गया।

इन उपहारों से सुन्दरम् के मन में आश्रम के विषय में सब अविश्वास और आशंका मिट गई। इन सबकी कीमत तीन हजार रुपये से ऊपर थी। कमल ने सुन्दरम् को आश्रम से विदा होते समय, एक पत्र दिया था। इसमें उसने आश्रम के सदस्यों की ओर से शुभ कामना प्रकट करने के

साथ यह भी लिखा था। 'मिस्टर सुन्दरम् । मैं जो कुछ आज देख रहा हूँ इससे मेरा विश्वास संयुक्त परिवार की प्रथा में और भी दृढ़ हो गया है। प्राचीन काल में जब यह प्रथा हिन्दुओं में प्रचलित हुई थी उस समय डाक, रेल, तार और अन्य मेल-मिलाप के साधन न होने के कारण परिवार एक माता-पिता की सन्तान की परिधि में ही सीमित था। बाहर के लोगों से सम्पर्क कम होने के कारण एक परिवार के लोग ही संयुक्त जीवन व्यतीत करते थे। अब विज्ञान में उन्नति हो जाने से जैसे प्रान्त, देश और विदेश समीप-समीप हो गये हैं वैसे ही, भिन्न-भिन्न परिवारों के लोग भी संयुक्त परिवार की सीमा के भीतर आ गये हैं। जहाँ प्राकृतिक अन्तर कम हो गये हैं वहाँ विचार-भेद भी कम हो रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि हम एक ऐसा परिवार बनाने में सफल हुए हैं जिसमें कई परिवार ही नहीं, प्रत्युत भिन्न-भिन्न प्रान्तों के लोग भी सम्मिलित होकर सुख और शान्ति से जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

'संयुक्त परिवार का सबसे मुख्य गुण दुर्घटनाओं से उत्पन्न होने वाली मुसाबतों से बचाव है, जो हमारे आश्रम में पूर्ण रूप से विद्यमान है। आपने देखा होगा कि वे लोग, जो अकेले रहने से अपना निर्वाह करने में भी सफल नहीं हो रहे थे, आश्रम में आकर खाने, पहनने और रहने की चिन्ता से दूर हो गये। केवल यही नहीं, प्रत्युत वे अब अनुभव करते हैं कि उन्होंने अपनी मेहनत से ऐसा कोष इकट्ठा कर लिया है, जिससे वह कई बेकार लोगों को काम पर लगा सकते हैं अथवा किसी भी मुसीबत के समय सिर ऊंचा करके दुर्भाग्य को आँखें दिखा सकते हैं।

'आप भी यह बात समझते होंगे कि जिस स्थिति में आश्रम में आप आये थे उससे अच्छी ही स्थिति में इससे बाहर गये हैं। मैं तो यह भी समझता हूँ कि आप अकेले रहते हुए भी इतना कुछ एकत्रित न कर सकते थे जितना कि आश्रमवासियों ने उपहारों में, बिना किसी भी प्रकार का कष्ट अनुभव किये, आप को दे दिया है।

'इसके यह अर्थ नहीं कि आश्रम के लोगों ने आप पर कुछ

अहसान किया है । प्रत्येक आश्रमवासी को इससे उतना ही लाभ हुआ है जितना कि आपको हुआ है । इसमें हमें यदि किसी का अहसान मानना चाहिए तो वह हैं संयुक्त परिवार की प्रथा । मेरा पूर्ण विश्वास है कि इसके चलाने वाले यदि ईमानदार हों तो यह प्रथा व्यक्तियों को उन्नत करने की भारी शक्ति रखती है ।’

: ७ :

जिस दिन सुन्दरम् का विवाह हुआ था उस दिन ही नवल पकड़ा गया था । बलवीर, कमल और अन्य आश्रम के सदस्य सुन्दरम् के विवाह में उपस्थित थे । विवाह के पश्चात् सब लोग आश्रम को, आश्रम के टुकों में सवार होकर चले गये । बलवीर, कमल और मुरली बलवीर के पिता के घर रह गये । ये लोग रात के आठ बजे घर पहुंचे, तो इन्हें पता लगा कि नवल पकड़ा गया है । बलवीर के पिता ने बताया कि ‘सायंकाल चार बजे के लगभग वीणा यहां आई थी । पहले वह बलवीर की दुकान पर गई थी । वहां उसे न पाकर वह घर चली आई । उसे पुलिस ने कोठी से बाहर निकाल दिया है और सब सामान जब्त कर लिया है । वीणा, सिवाय उन कपड़ों के, जिनको वह पहने हुए थी, अपने साथ कुछ भी नहीं ला सकी । मैंने नवल के विषय में जानने का यत्न किया है और अब तक मैं केवल इतना ही जान सका हू कि उसे जापानियों से सम्पर्क रखने के अपराध में पकड़ा गया है ।’

बलवीर, कमल और मुरली को इस समाचार से बहुत दुःख हुआ । परन्तु वह कुछ कर नहीं सकते थे । नवल की सहायता करना तो दूर रहा वे यह भी नहीं जान सकते थे कि नवल बंदी बनाकर कहाँ रखा गया है । कानून से नवल के विषय में कोई कुछ नहीं जान सकता था । इस प्रकार नवल पर काला परदा पड़ जाने से सब विवश थे । इसी समय वीणा, जो साथ के कमरे में बैठी, उनके पास आ गई । उसकी आँखें रोने से फूली हुई थीं । कमल ने उसे देखकर कहा, ‘वीणा

बहन ! ...'

आगे जो कुछ वह कहना चाहता था नहीं कह सका । उसके मुख से यथार्थ बात निकल नहीं सकी । मुरली अपने स्थान से उठी और वीणा की बांह-में-बांह डालकर उसे साथ के कमरे में ले गई । वह उसे अपने समीप बिठाकर बोली, 'बहन ! धीरज से ही निर्वाह हो सकता है । अधीर होने से तो कुछ काम नहीं बनेगा । मुझे पूर्ण विश्वास है कि नवल बाबू का पता करने और उनकी सहायता करने का पूर्ण यत्न किया जायगा । आश्रम की पूर्ण सम्पत्ति भी यदि इस कार्य में लग जाये तब भी हम उनका पता करने में संकोच नहीं करेंगे ।'

'मुरली बहन ?' वीणा ने धीमी आवाज में कहा । 'सब व्यर्थ है । मुझे चाचा जी ने सब समझा दिया है । पुलिस के एक बड़े अफसर अभी चाचा जी के बुलाने पर यहां आये थे और उन्होंने सब स्थानों पर टेली-फोन से पूछ-ताछ करके यह बताया है कि उनको जो दंड मिला है वह युद्ध समाप्त होने के पीछे ही पता चलेगा । इससे पूर्व कुछ भी पता नहीं चल सकता । सब सुख-स्वप्न समाप्त हो गया । मैं उनसे पहले ही कहती थी कि सुख का दीपक धीरे-धीरे जलाना चाहिए । आखिर वही हुआ, जिसकी मुझे आशंका थी । दीपक का तेल चुक गया और मैं अन्धकार में खड़ी रह गई । हाँ, इतना ईश्वर का धन्यवाद है कि मेरा कमल भैया से मेल-जोल है और मैं उनके आश्रम को ही अब अपना सहारा समझती हूँ । वे सदैव कहते रहते थे कि आश्रम हमारे लिए सदैव खुला है । सो उनके कहने से मैं अब लाभ उठाऊंगी ।

'एक समय था कि जब मैं सब आश्रम निवासियों के मना करने पर भी नवल जी के साथ चली आई थी । अब मुझे पुनः अपना काला मुख वहां ले जाते लज्जा तो लगती है; परन्तु क्या कहां । भूख का ताण्डव मैं देख चुकी हूँ और एक, इस घन के लोभी समाज में, धन न रखने वाले की दुर्दशा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर चुकी हूँ । यह तो ईश्वर का धन्यवाद है कि कमल जी की उदारता और उनका उदार समाज उपस्थित

है जो मुझ जैसी दुखिया के लिए सहानुभूति का हाथ पसारे खड़ा है । क्या मैं गलत समझ रही हूँ ?'

मुरली यही कहने के लिए उसे पथक् कमरे में लाई थी । इससे वीणा के प्रश्न पर कहने लगी, 'भला यह भी कोई पूछने की बात है । आश्रम मेरा या किसी एक का नहीं है । आश्रम में, कार्य करते हुए रहने वाले के लिए, सदैव स्थान उपस्थित है । और फिर लज्जा किस बात की है, तुम्हारा, नवल जी की प्रकृति का, अनुमान मिथ्या नहीं हुआ । उन्होंने तुम्हें घर से निकाला तो नहीं । यह तो दुर्घटना है जिसको न तो तुम जान सकती थीं और न ही कोई और ।'

अगले दिन वीणा पुनः आश्रम में जा पहुँची । नवल के विषय में अधिक-से-अधिक समाचार प्राप्त करने का यत्न किया गया । परन्तु सिवाय इसके, कि वह दिल्ली से कही बाहर है, कुछ पता नहीं चला ।

आश्रम के लोगों को वीणा के पुनः वहां लौट आने पर अचम्भा नहीं हुआ । यह सबको भली-भाँति विदित था कि वीणा ने अपना सम्पर्क आश्रम से बराबर स्थिर रखा हुआ था और इस मुसीबत के समय, उसका आश्रम में आना, जहां उसका भाई और माता रहती थी, स्वाभाविक ही समझा गया ।

वीणा ने नवल की जेब में पांच लाख रुपये के नोटों के होने की बात भी बताई । नवल को पकड़ने वाले पुलिस अफसरों से यह पता मिला कि नवल के पास से सिवाय उसके फाउन्टेनपैन के और कुछ नहीं निकला । यह रुपये का प्रश्न पुलिस में नहीं चलाया गया । इसका कारण तो स्पष्ट था । सरकार की आज्ञा से नवल की पूर्ण सम्पत्ति जब्त कर ली गई थी । इससे यह समझा गया कि यदि यह बात बड़े अफसरों तक जा पहुँची कि नवल के पास पांच लाख रुपया था तो इसकी खोज आरम्भ हो जायगी और यदि नवल ने उस धन को कहीं छिपाकर रखा होगा और वह मिल गया तो पुलिस उस पर भी अपना अधिकार कर लेगी ।

इस पर भी बलवीर और कमल ने अपने आप रुपये की खोज जारी

रखी। इसके लिए नवल के पकड़े जाने के दिन का पूर्ण प्रोग्राम जानना आवश्यक था। परिणाम-स्वरूप वीणा से पता चला कि वह घर से साढ़े नौ बजे गये थे। फिर रायबहादुर से बातचीत करने से यह पता लगा कि दस बजे, जब रायबहादुर दफ्तर जाने के लिए तैयार खड़े थे, नवल इनकी कोठी पर मौजूद था। यह भी पता लग गया कि वहां से वह टांगे में सवार होकर साढ़े दस बजे के कुछ ही पीछे गया था और फिर एक बजे के कुछ पश्चात् वहां आ गया था। ढाई पीने तीन घंटे तक वह कहां रहा, यह जानना अति कठिन था। बहुत यत्न किया गया कि उस टांगे का पता किया जाय जिसमें वह गया था, परन्तु कुछ पता नहीं मिला।

इसी विषय में खोज करते-करते उनकी डॉक्टर साठे से भेंट हो गई। उसने छाया के गर्भ-पात की कहानी सुना दी और साथ ही नोटों के छाया के पास होने की बात भी बताई। डॉक्टर साठे ने कहा, 'जब पुलिस आई थी तो मैंने समझा गर्भ-पात की सूचना पाकर पुलिस आई है। इससे मैं भयभीत होकर ड्रायंग रूम में चली गई। वहां डॉक्टर जैन भी चले आये। इसी समय मैंने सोचा कि थानेदार छाया के कमरे में जायगा और, यदि हो सके तो, सुनना चाहिए कि वह क्या कहता अथवा करता है। इसके लिए मैं पुनः छाया के कमरे के दरवाजे के पास, जो ड्रायंग रूम में खुलता था, जा खड़ी हुई और दरवाजे से कान लगाकर सुनने लगी।

नवल छाया से कह रहा था। 'यदि मैंने तुम्हारे लिए कुछ किया है तो इसे वीणा को दे देना। मेरे मन में उत्सुकता हुई कि मैं देखूँ कि वीणाको क्या देने को कहा जा रहा है। मैंने दरवाजे को कुछ खोलकर झांका। नवल छाया के तकिये के नीचे अपनी हीरे वाली अंगूठी रख रहा था। वहीं पर नोटों के दो बंडल पड़े थे। उस दिन से पहले, जब मैंने छाया से अपनी फीस मांगी थी तो उसने कहा था कि उसके पास रुपये नहीं हैं फिर उसने कहा था कि वह अपने गले का लोकेट बेचकर मेरी फीस का रुपया लायेगी।

उसी दिन नवल ने कहा था कि रात को रहने की मेरी फीस वह देगा, क्योंकि छाया के पास कुछ नहीं है। इससे मुझे यही समझ में आया था कि वह नोटों के बंडल भी नवल ने ही वहां रखे होंगे। अब जब आप कहते हैं कि उसकी जेब में पांच लाख के नोट थे तो मैं समझती हूँ कि मेरा अनुमान ठीक ही था। जहां तक मैं देख सकी थी उससे यह कह सकती हूँ कि एक बंडल तो हजार-हजार रुपयों के नोटों का था।'

साठे के इस कथन के पश्चात् रुपये की खोज और आगे करने की आवश्यकता नहीं रही थी। छाया उस रुपए को वापिस वीणा को देगी या नहीं, यह कहना कठिन था। कमल का अनुमान था कि वह रुपया नहीं देगी। वह कहता था कि छाया ऐसे समाज और वातावरण में पली है, जहाँ हाथ में आया हुआ रुपया वापस नहीं दिया जाता। इतना तो निश्चय ही था कि इस रुपये के लिए कोई झगड़ा नहीं किया जा सकता था। वास्तव में वह रुपया तो सरकार से ज्वल रकम ही थी।

इस रुपये की खोज करते-करते छाया के गर्भ-घात की बात भी उन्हें मालूम होगई। इसके बाद बलवीर सोच रहा था कि क्या अब भी छाया उसके पास आयगी और वीणा की बात को झूठा सिद्ध करने का यत्न करेगी।

: ८ :

जब रायबहादुर केशवदेव को छाया के प्रोनोट छुड़ाने के लिए दस हजार रुपया देना पड़ा और पांच हजार वीणा ने पत्तेबाजी में ले लिया तो उनके क्रोध का ठिकाना न रहा। फलस्वरूप उन्होंने नवल का कांटा, नई दिल्ली क्या, संसार से ही निकाल देने का प्रबन्ध कर दिया। एक भारी पुलिस अफसर उनके मित्र थे। वे उनके पास पहुंचे और उन्होंने उसे नवल के विषय में बताया कि किस प्रकार वह दिल्ली के सीधे-सादे नवयुवकों को लूट रहा है। पुलिस अफसर नवल के विषय में सब कुछ जानता था परन्तु युद्ध के जमाने में हराम की कमाई के लिए कोई

निकास भी होना चाहिए, अन्यथा सोसाइटी में ईमानदार और बेईमान में कोई तुलना न रह सकेगी। इस विचार से अफसर लोग इस प्रकार की संस्थाओं का अस्तित्व सहन करते थे। इसके अतिरिक्त नवल जैसे लोगों से अफसरों को लाभ ही होता था। परन्तु रायबहादुर ने इस पुलिस के अफसर पर बहुत अहसान किया हुआ था इसलिए वह राय-बहादुर का कहना टाल नहीं सका।

बहुत सोच-विचार के बाद उन्होंने यह ही निश्चय किया कि नवल के विरुद्ध राजनीतिक अपराध लगाकर मुकद्दमा चलाया जाय। अपराध यह सोचा गया कि शत्रु से इसका सम्पर्क है और यह बड़े-बड़े अफसरों को जूआ खिलाकर व शराब पिलाकर सरकारी भेद मालूम करके जापानियों तक भेजता है। नवल की कोठी जापानी जासूसों का अड्डा करार दे दी गई।

एक बार जब यह दोष नवल पर लगाया गया तो फिर इसके परिणाम को रोकने की क्षमता किसी में भी नहीं रही। सरकारी मशीन सड़क कूटने के इजन की भांति नवल को कुचलती हुई निकल गई। जिस दिन इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस ने चीफ कमिश्नर को रिपोर्ट की, उसी दिन नई दिल्ली के थानेदार को पता चल गया और वह नवल को सचेत भी कर गया। नवल इतनी बुद्धि तो रखता था कि थानेदार के कहने का अर्थ समझ सके परन्तु छाया की सहायता करने से वह पिछड़ गया। यदि वह उस दिन छाया के भगड़े में न पड़ता तो दिल्ली से कहीं बाहर पहुँच चुका होता और सम्भव था कि अपना नाम बदलकर कहीं शेष जीवन शांति पूर्वक व्यतीत कर सकता। परन्तु ऐसा होना नहीं था।

जिस दिन छाया देवी का गर्भ-पात हुआ था उस दिन प्रातःकाल से ही पुलिस नवल को ढूँढ़ रही थी। पुलिस जब नवल के बंगले पर पहुँची तो वह वहाँ से छाया की ओर जा चुका था। उसके बंगले पर तो पुलिस ने घेरा डाल लिया और शहर भर में उसकी खोज होने लगी। अंत में वल्लभ रायबहादुरकेशवदेव के बंगले पर छायादेवी के कमरे में पकड़ा गया।

नवल के पकड़े जाने के पश्चात् नवल की सम्पत्ति पर पुलिस ने अधिकार कर लिया और वीणा को वहां से निकाल दिया। वीणा के शरीर पर जो वस्त्र और आभूषण थे उनके अतिरिक्त उसे वहां से कुछ भी ले जाने की स्वीकृति नहीं मिली। विवश होकर वीणा ने टांगा किया और सीधी बलवीर के चिकित्सालय पहुंची। जब बलवीर उसे वहां नहीं मिला तो उसके पिता की कोठी पर पहुंची और उसके पिता से अपनी स्थिति का वर्णन किया। उसने बताया कि नवल बाबू कहीं प्रातःकाल के गये हुए हैं। पुलिस उनके जाने के आधा घंटा बाद पहुंचा और उन्हें वहां न देखकर वहां से चली गई, परन्तु मैं समझती हूँ कि सफदपोश लोग कोठी के चारों ओर बैठे हुए थे। लगभग दो बजे दोपहर पुलिस पुनः आई और मुझे कोठी से बाहर करके ताला लगा दिया है चलते समय मुझे वहां से जो कुछ मैं पहने हूँ इसके सिवाय उन्होंने और कुछ लेने नहीं दिया। नवल बाबू ने कोठी का सब सामान तथा और सब जो कुछ हमारे पास था पहले ही बेच डाला था और जाने के समय उनका जेब में पांच लाख रुपये के नोट थे।

बलवीर के पिता ने जब यह सब वृत्तान्त सुना तो उन्होंने नवल के मित्रों के यहां टेलीफोन करके उसका पता पूछा। मि० सेठ और मणोन्द्र-कुमार को कुछ पता नहीं था। जब छाया के यहां टेलीफोन किया गया तो छाया की मां ने पूरी बात बता दी। उसने बताया, 'लगभग एक बजे पुलिस नवल को हमारी कोठी से पकड़कर ले गई है। हमें मालूम हुआ है कि उसका जापानियों से सम्बन्ध था। इस अपराध में उसे पकड़ा गया है।'।

इस पर बलवीर के पिता शमशेरसिंह ने एक परिचित पुलिस अफसर के द्वारा समाचार मंगवाया। यह पता मिला कि नवल पकड़कर किसी अज्ञात स्थान पर ले जाकर कैद कर दिया गया है। नवल के पास से कुछ भी वसूल नहीं हुआ। इससे अधिक और कुछ पता नहीं चल सका।

छठा भाग

विवाह

: १ :

छाया दो सप्ताह तक घर से बाहर नहीं निकल सकी। उसका अनुमान था कि गर्भ-पात की बात नवल और डॉक्टर साठे के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता। इससे वह एक बार पुनः बलवीर से बातचीत करके अपनी बात को सत्य और वीणा के अनुमान को असत्य सिद्ध करना चाहती थी। इस विषय में उसने एक योजना बनाई। इस बार वह पूरी तैयारी से काम करना चाहती थी।

एक सप्ताह तक घर पर आराम करके जब उसने देखा कि वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गई है और कुछ अधिक दुर्बल भी प्रतीत नहीं होती, तो वह घर से निकलकर डॉक्टर साठे के पास पहुंची। डॉक्टर साठे का धन्यवाद करके उसने उससे वचन लिया कि वह उसके इस गर्भ-पात की बात किसी से भी नहीं बतायेगी। डॉक्टर साठे बलवीर को पहले ही सब बता चुकी थी। परन्तु छाया को उसने कुछ नहीं बताया। वहां से वह वीणा को ढूंढती हुई बलवीर के चिकित्सालय में पहुंची। बलवीर उसे देखकर विस्मय से पूछने लगा, 'छाया देवी ! क्या काम है ?'

'मैं कुछ बीमार हो गई थी। इस कारण उस दिन टेलीफोन पर वार्तालाप करने के पश्चात् आपसे मिल भी नहीं सकी। उसी विषय पर वीणा से मिलना चाहती थी। क्या मैं जान सकती हूं कि वह कहाँ है आज-कल ?'

‘वह आश्रम में रहती है। आप वहां जाकर उनसे मिल सकती हैं।’

‘नवलजी के पकड़े जाने से दुखी तो बहुत होगी बेचारी?’

‘जब आप उससे मिलने जा ही रही हैं तो स्वयं जान लीजियेगा।’

‘आप कब जाइयेगा?’

‘मैं आज नहीं जाऊंगा। मुझे पिता जी से कुछ आवश्यक काम है।’

‘उस दिन मैंने जो कमल के विषय में लिखा था वह आने उनसे कहा तो नहीं होगा?’

‘क्यों? वह बात उनको बताने की नहीं थी क्या? मैंने तो आपकी चिट्ठी कमल भैया को दिखा दी थी।’

‘और वे क्या कहते थे?’

‘कहते थे कि ‘यह विचार करने की बात नहीं है। इसमें तो दादा तुम्हें सोचने-समझने के लिए लिखा है।’

इस पर मैंने वह चिट्ठी फाड़कर चूल्हे में डाल दी थी।

‘यह चाहे ठीक न हो कि मेरी निन्दा कमल ने की है, इस पर भी इसमें सन्देह नहीं कि आपके आश्रय पर ही वह आश्रम चल रहा है। उनके मन में यह भय समाया रहता है कि कहीं आपकी मुझसे शादी होगई तो मैं आपको अपनी मेहनत की कमाई इस प्रकार उन भूखे-नंगे लोगों को नहीं देने दूंगी। इस कारण आरम्भ से ही उसने आपमें और मुझमें भगड़ा कराने का यत्न किया है।’

‘देखो छाया देवी! मैं आपकी इस बात को गलत समझता हूं। इसमें आप दो भूलें कर रही हैं। एक तो यह कि आप मुझे इतना मूर्ख समझती हैं कि मैं कमल की नीयत को समझ नहीं सकता। मैं वास्तव में इतना बेवकूफ नहीं हूं। कमल जो कुछ कर रहा है उसे मैं भली प्रकार समझता हूं। कमल की इस आश्रम की योजना में बहुत कुछ मेरी ही विचार-धारा काम कर रही है। उसका तो केवल यह विचार था कि देहातियों से अधिक नागरिकों में सुधार की आवश्यकता है। उसके इस संकेत पर आश्रम की योजना, उसके नियम, उसमें सम्मिलित

होने वालों पर अनुशासन की आवश्यकता, सदस्यों से इकरारनामा लिखाने की योजना और लिखी शर्तें सब मेरी इच्छा और राय से ही बनी हैं। मुझमें और कमल में अन्तर यह है कि मैं डॉक्टर हूँ और अपने पेशे को छोड़ नहीं सकता। कमल इस कार्य में अपना पूर्ण समय दे सकता है और दे रहा है।

‘रही मेरे विवाह की बात। उसका कमल से इतना ही सम्बन्ध है जितना छोटे भाई का बड़े भाई के विवाह से हो सकता है। मैं जब कुछ पूछता हूँ, तो वह सम्मति दे देता है अन्यथा चुप रहता है।

‘एक दूसरी भूल तुम यह कर रही हो कि मैं सहस्रों रुपए महीना कमाकर आश्रम को दे रहा हूँ। यह तुम इस कारण कहती हो कि तुम्हें अभी तक यह भी पता नहीं कि आदमी की आय कैसे बढ़ती-घटती है। जब मैं नया-नया विलायत से लौटा था तो मैं दो रुपये राय देने की फीस लेता था और अब दस रुपये लेता हूँ। यह क्यों है? क्या यह इसलिए नहीं कि मैंने दो-दो रुपये देने वालों पर परीक्षण करके अपना अनुभव अधिक कर लिया है? इसका लाभ तो उन लोगों को ही होना चाहिए न जिनकी जान जोखिम में डालकर मैंने अनुभव प्राप्त किया है। लाभ हो रहा है मुझे, जो पहले से भी कम मेहनत करता हूँ। यह तो बात हुई मेरी आय बढ़ने की, परन्तु मेरी आय एक मजदूर से अधिक क्यों है, इसमें भी मेरी मेहनत के अतिरिक्त कुछ दूसरे व्यक्तियों का हाथ है। मान लो कोई मैडिकल-कॉलज ही न बना होता, या मान लो उसमें काम करने वाले अध्यापक ही योग्य लोग न होते अथवा सरकार लोगों से प्राप्त टैक्स में से रुपया खर्च करके वहाँ सामान ही न एकत्रित करती, तो मेरा ज्ञान भी उतना ही होता जो एक साधारण बाजारू आदमी रखता है। यदि मुझमें अधिक ज्ञान है और उस ज्ञान के बल पर मैं एक मजदूर से कई सौ गुना अधिक बचा रहा हूँ तो इसमें हाथ है उन सब बातों और लोगों का, जिनका मैंने ऊपर वर्णन किया है। भला इसका फल मैं अकेला ही भोगूँ यह कैसे हो सकता है।’

छाया के लिए यह नये विचार थे । वह तो अभी तक यही समझती थी कि उसका भाई, जो लाख दो लाख वर्ष में पैदा कर लेता है, चाहे वह किसी भी ढंग से हो, जब उसके हाथ में आया तो उसका हो गया । भृगुदत्त की आय में किसी और का हाथ ग्रथवा सहायता हो सकती है यह उसने कभी सोचा ही नहीं था । आज बलवीर को यह युक्ति देते देख वह इसको समझ नहीं सकी । इस पर उत्तर देने की योग्यता न रखने के कारण वह बात बदल कर बोली —

‘मान लिया कि आप यह सब कुछ आश्रम को अपनी इच्छा से देते हैं, परन्तु यह भी तो ठीक ही है न कि वीणा का भाई मदनमोहन बीस रुपया मासिक तक की नौकरी भी प्राप्त नहीं कर सकता था । आज भी यदि आश्रम का उसे आश्रय न हो तो उसकी नौकरी छूटने में एक भी दिन न लगे । बीसियों उस जैसे बेकार घूमते फिरते हैं । प्रायः ऐसे ही व्यक्ति आश्रम के सदस्य हैं । आखिर ये लोग आपकी कमाई के अधिकारी कैसे हो गये हैं । आपके पिता ने आपको शिक्षा देकर योग्य बनाया है । इसी प्रकार यदि आप अपने बच्चों को शिक्षा देकर योग्य बना देंगे तो समाज का ऋण आपके ऊपर से उतर जायगा । इन निकम्मे लोगों को अपनी मेहनत का फल देकर तो आप उससे उद्धरण हो नहीं सकते ।’

‘पिता जी ने जो कुछ किया है उसका बदला मैं अपनी सन्तान पर चुका दूंगा । परन्तु जो कुछ समाज ने किया है वह समाज के साथ करने से ही चुक सकता है । मैंने इस विषय पर बहुत विचार किया है । मैं आज अपनी सेवायें समाज को बिना मूल्य दे सकता हूँ, परन्तु जानती हो क्या होगा ! लोग मुझे अयोग्य समझने लगेंगे । मूर्ख समाज के लोग उस डॉक्टर को योग्य मानते हैं जो भारी फीस मांगता है । उन मूर्ख लोगों को मैं अपनी सेवायें अमूल्य देकर अपनी कीमत कम करना नहीं चाहता । अब प्रश्न केवल यह है कि मैं अपनी आय केवल इन आश्रम वालों को क्यों देता हूँ । कहीं अन्य स्थान पर किसी मन्दिर

अथवा धर्म समाज में क्यों नहीं दे देता। इसमें भी एक भारी कारण छिपा है। मैं यह समझता हूँ कि आश्रम में प्रायः ईमानदार, मेहनती, सरल चित्त और सत्यवादी लोग इकट्ठे हैं। मैं इनके साथ मिलकर अपनी आय बांटकर खाता हूँ। यदि यह बहुत अच्छा नहीं है तो इसे 'पाप भी नहीं कहा जा सकता।'।

छाया ने अपनी योजनानुसार पहलू बदला। उसने कुछ देर तक गम्भीरता पूर्वक विचार करके कहा, “यद्यपि मैं आपकी सब युक्तियाँ भली प्रकार समझ नहीं सकीं तो भी आपको भावना की सराहना करती हूँ। इस समय तो मैं वीणा से मिलने आई थी। इस विषय पर आपसे फिर बातचीत करूंगी। वीणा से मिलने कल जाऊँगी। अच्छा अब चली, नमस्ते।’

इतना कहकर छाया बलवीर के चिकित्सालय से बाहर निकल आई। बलवीर इस सबका आशय नहीं समझ सका। वास्तव में जब से वीणा ने छाया के विषय में यह कहा था कि वह गर्भ-पात करवाने वाली है तब से ही वह किसी-न-किसी ढंग से छाया के विषय में कुछ-न-कुछ बातें जानता ही रहता था। जिस दिन नवल पकड़ा गया था उस दिन छाया सख्त बीमार थी। यह बात बलवीर को मालूम हो गई थी। उसे यह भी विदित हो गया था कि मिस साठे और डॉक्टर जैन ने चिकित्सा की थी। पीछे उसने यह मालूम किया था कि कब बीमारी आरम्भ हुई और कब समाप्त हुई। नवल के पकड़े जाने से एक दिन पूर्व छाया नवल की कोठी पर दो बार टाँगें में गई थी। इससे पता चला कि उस दिन वह विशेष बीमार नहीं थी। नवल के पकड़े जाने के समय दोनों डॉक्टर वहाँ उपस्थित थे। उस समय छाया की हालत नाजुक थी। इस पर दोनों में से कोई डॉक्टर फिर छाया को देखने नहीं गया। साथ ही नवल के रुपये की खोज में डॉक्टर साठे का बयान सुनकर तो बलवीर के संदेह को और भी पुष्टि मिली थी। इस सब वृत्तान्त के साथ वीणा का यह कथन कि वह गर्भ-पात करके बलवीर के सम्मुख वीणा

को झूठा सिद्ध करेगी, केवल यही सूचित करता था कि छाया गर्भ-पात करवा चुकी है। इस पर भी बलवीर यह जानने के लिए उत्सुक था कि वह वीणा से मिलकर क्या बातचीत करती है।

अगले दिन छाया वीणा से मिलने आश्रम में गई। एक घंटे तक दोनों एकान्त में बैठी बातें करती रहीं। विदा होते समय छाया वीणा से यह कहकर गई थी कि वह अगले दिन उसे कनाॅट प्लेस में मिले। उसी दिन सायंकाल बलवीर ने आश्रम में आते ही कमल से मिलकर पूछा, 'छाया आई थी क्या ?'

'हां। क्यों ?'

'वह वीणा से मिलना चाहती थी। मैं जानना चाहता हूं कि वह उससे क्यों मिलना चाहती थी ?'

'दादा ! अब छाया का विचार छोड़ दो। बताओ चाचा जी से माया के विषय में तुम्हारी क्या बातचीत हुई ?'

'हुई है। पहले तो वह पसन्द नहीं करते थे। परन्तु जब मैंने बताया कि मेरे जीवन भर का सुख और शान्ति इसी में निहित है तो वे हंसने लगे और बोले जवानी में सब युवक जब किसी स्त्री पर आसक्त होते हैं तो ऐसा ही समझने लगते हैं। इस पर भी उन्होंने कहा कि मैं इतना पढ़-लिख गया हूं, बिलायत तक घूम आया हूं इसलिए अपने विषय में आप ही भली-भांति विचार सकता हूं। इसके पश्चात् उन्होंने माता जी को बुलाकर मेरी और माया की बात बताई। माता जी ने कहा, 'बेटा ! तुम्हारी आयु अब तीस वर्ष की तो हो गई है। विवाह तो हो ही जाना चाहिए। फिर कोई नई लड़की मिल तो जायेगी; परन्तु उसको भी तो जानने और समझने के लिए तुम समय मांगोगे। माया को वर्ष भर से तुम देख रहे हो यदि उसका स्वभाव और रहन-सहन तुम्हें पसन्द है तो मुझे इसमें क्या आपत्ति हो सकती है ?'

इस पर पिता जी ने कहा, "उसकी बदनामी से हम भी तो बदनाम बनेंगे।"

‘फिर माता जी ने कहा, “बदनाम अपने अच्छे चरित्र से नेक नाम हो सकते हैं और नेक नाम उलटी बातें करने से बदनाम। बात तो आगे रहने की है।’

‘बस स्वीकृति मिल गई। अब शेष प्रबन्ध के विषय में हमें सोचना है।’

कमल और बलवीर दोनों कपड़े बदलकर भोजनालय में जाने के लिए तैयार हो रहे थे कि वीणा वहां आ गई। मुरली भी उसके साथ थी। बलवीर को ‘नमस्ते’ करके वीणा ने कहा, ‘दादा आप कल नहीं आये?’

‘कल पिता जी से अपने विवाह के विषय में परामर्श करना जरूरी था। इस कारण रात को वहां ही ठहर गया था।’

‘तो परामर्श हो गया? परन्तु मैं समझती हूँ कि अभी यह परामर्श समाप्त नहीं हुआ। शायद छाया आपसे एक बार पुनः प्रस्ताव करेगी।’

‘यह तो मैं कल ही समझ गया था। वह मुझे मिली थी। आष षंटे तक मुझसे ऐसी ही बातें करती रही मानो मेरी सम्पत्ति और आय में उसको भी कुछ अधिकार है।’

‘तो कल आपसे मिली थी? विवाह के विषय में आपसे बातचीत हुई थी क्या?’

‘नहीं!’

‘मुझसे आज कहती थी कि यदि बलवीर जी से मैं उसकी सुलह करवा दूँ तो वह जन्म-जन्मान्तर तक मेरे अहसान से दबी रहेगी। नवल जी के विषय में भी वह कहती थी कि मैं पिता जी से उनके छुड़ाने की सिफारिश करवा दूंगी। होम मैम्बर उन्हें छुड़ाने का अधिकार रखता है। यदि सिफारिश की गई तो संभवतः वे छूट जायेंगे।’

‘तो फिर तुमने क्या कहा?’

‘मैंने क्या कहा? मैंने कहा था कि बलवीर जी मेरे मातहत नहीं हैं, जो मैं उन्हें तुमसे मित्रता करने पर विवश कर सकूँ। रहा नवल जी के विषय में, सो जैसा वह उचित समझे करे। अंत में उसमें और मुझमें एक बात तय हुई है कि यदि वह नवल जी को छुड़ा दे तो मैं उसके भेद

की बात किसी से नहीं कहूंगी ।’

‘अर्थात् । वह बात किसी को पता नहीं है ।’

‘वह तो ऐसा ही समझती है । आज मैं मिस साठे के पास गई थी और उसने मुझे बताया है कि जब पुलिस उनको पकड़ने आई तो उन्होंने जेब से रुपयों के बंडल निकालकर छाया के तकिये के नीचे रख दिये थे । मिस साठे ने यह समझा था शायद गर्भ-पात की बात पुलिस को पता चल गई है और पुलिस डॉक्टर को पकड़ने आई है । इस कारण वह भागकर दूसरे कमरे में चली गई थी । वहां से वह छाया के कमरे में झांक रही थी कि उसने उनको रुपया और हीरे वाली अंगूठी छाया को देते देखा था । मैं समझती हूं कि छाया को आपके विवाह की बात अभी न बताई जाये तो ठीक है । मैं देखना चाहती हूं कि वह कितनी ईमानदारी से बतवि करती है ।’

‘हमें सब मालूम है ।’ इतना कहते हुए बलवीर और कमल हंस पड़े और भोजनालय में चले गये ।

: २ :

अगले दिन पूर्व निश्चयानुसार वीणा आश्रम की बस में बर्नाट सरकस में पहुंच गई । वहां पर पहले से ही छाया अपनी मोटर में उसे लेने आई हुई थी । दोनों वहां से तुगलक रोड वाले बंगले में पहुंच गई । छाया के सोने के कमरे में पहुंचकर उन दोनों में बातचीत आरम्भ हुई ।

छाया ने कहना आरम्भ किया, ‘मैंने नवल जी के विषय में पिता जी से कहा है । वे कहते थे कि वह पूरा यत्न करेंगे । परन्तु मेरा मन चाहता है कि बलवीर जी से ही विवाह हो । मेरा बना-बनाया काम तुमने बिगाड़ा है और तुम्हें ही अब बनाना चाहिए ।’

वीणा ने कहा, ‘पर मैं पूछती हूं कि आखिर बलवीर जी को ही कौन सुरखाब के पर लगे हैं कि तुम उनके पीछे पड़ी हो । तुम्हारे पिता इतने बड़े आदमी हैं; वे यदि चाहें तो किसी बहुत अच्छे लड़के को ढूँढ़

सकते हैं।

‘सो तो मैं भी जानती हूँ। पर मुझे इस प्रकार के विवाह पसन्द नहीं हैं। बलवीर जी से कुछ लगाव हो गया है। अब वह हटता नहीं। मैंने इस विषय पर बहुत सोचा है?’

‘वह तो ठीक है छाया! पर बलवीर जी तुम्हारे पूर्व-जीवन को भली-भाँति जानते हैं। वे अब तुम्हें उस मान की दृष्टि से कभी नहीं देख सकेंगे जिससे पहले देखते थे। कुछ भी हो तुम्हारा शराब पीकर मदमस्त क्लब में लोगों के साथ नाचना वे कदापि भूल नहीं सकेंगे।’

‘मैं अपने आचरण से यह बात उन्हें मुला दूंगी।’

‘तो तुम अपने पिछले जीवन पर पश्चात्ताप करती हो?’

‘सच ही मैं ऐसा अनुभव करती हूँ।’

‘तो इस पश्चात्ताप को आज से ही आरम्भ कर दो न। सबसे पहले बलवीर जी के सम्मुख जाकर अपनी त्रुटियाँ मान जाओ और उनको वचन दो कि तुम फिर ऐसा नहीं करोगी। आशा है कि वह तुम्हारे हृदय की सत्यता पर विश्वास कर लेंगे। यदि वह एकदम न करें तो तुम अपना भावी जीवन इतना सरल बनाओ कि उन्हें तुम पर विश्वास करने को विवश होना पड़े।’

‘बात तो तुम ठीक कहती हो। मैं परसों उनसे मिली थी और मैंने अपने मन की शंकायें उनके सम्मुख रखी थीं। अब फिर मिलूंगी।’

‘तो अपने गर्भ-पात के विषय में उनसे स्वयं कह दो और भूल स्वीकार कर लो। मैं समझती हूँ यही एक उपाय है जिससे तुम उनका स्नेह प्राप्त कर सकती हो।’

‘तो जिस बात को मैं अभी तक इतने यत्न से छिपा रही हूँ, उसे अब उनसे खोलकर कह दूँ?’

‘प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप के तो यही अर्थ हैं।’

‘परन्तु जो बात छिपी हुई है उसे अब पुनः खोलकर बताना कहां की बुद्धिमत्ता होगी।’

‘इसमें बुद्धिमत्ता की बात नहीं है। इसमें तो चित्त की शुद्धता की बात है। बताओ क्या तुम यह कर सकोगी?’

‘तुम इसमें मेरी क्या सहायता करोगी?’

‘मेरी बात तो यह है कि यदि तुम मेरे साथ सरलता का व्यवहार करा तो मैं भी तुम्हारी सहायता कर सकूंगी।’

‘तुमसे तो अब कोई बात छिपी हुई नहीं है।’

‘हे तो, वे कैद होने से पूर्व मेरे लिए तुम्हें कुछ संदेश दे गये थे। उसके विषय में अभी तक तुमने मुझसे कुछ नहीं कहा।’

छाया का मुख पीला पड़ गया। उसने कांपते हुए स्वर में कहा, ‘मैं उस समय अचेत थी। यदि कुछ कह गये होंगे तो मैं भली प्रकार समझ नहीं सकी। मुझे तो होश ही पीछे आया है।’

‘अच्छी बात है।’ वीणा ने कहा।

‘तो तुम मेरे साथ बलवीर जी के पास चलो। मैं तुम्हारे सामने ही सब बात कह दूंगी।’

‘नहीं, मैं इस प्रकार जाना नहीं चाहती। पति-पत्नी की बातों में किसी तीसरे को दखल नहीं देना चाहिए। हां, यदि वे मुझसे पूछेंगे तो कह दूंगी कि तुम सच्चे हृदय से पश्चात्ताप कर रही हो।’

‘धन्यवाद है वीणा! मैं इस कृपा के लिए तुम्हारी सदा कृतज्ञ रहूंगी। मैं अब सीधी बलवीर जी के पास जा रही हूँ। तुम्हें कहाँ जाना है?’

‘मुझे कनाॅट सरकस में उतार दीजियेगा।’

: ३ :

उसी दिन सायंकाल छाया और रायबहादुर केशवदेव में बातचीत होरही थी। छाया की मां भी वहां बैठी थी। रायबहादुर कह रहे थे, ‘सरदार केवलसिंह ने पिछले वर्ष पचास लाख इन्कमटैक्स दिया है; इसका मतलब यह है कि ईमानदारी की नकद आय पच्चीस लाख तो

जरूर हुई है और आजकल कौन ठेकेदार ईमानदार है। मेरा अनुमान है कि इस वर्ष की उसकी आमदनी एक करोड़ रुपये से कम नहीं होगी। उनका लड़का इन्द्रजीतसिंह बिलकुल “माडर्न” है। देखने में बहुत सुन्दर और बातचीत करने में सभ्य प्रतीत होता है और वह तुम्हें जानता भी है। शायद क्लब में मिला होगा। बताओ क्या उससे विवाह करना तुम्हें मंजूर है?’

छाया इन्द्रजीतसिंह को भली-भांति जानती थी। मिस्टर सेठ के द्वारा ही उससे परिचय हुआ था। डॉक्टर साठे का वह गहरा दोस्त था। छाया ने केवल इतना ही कहा, ‘पिताजी वह सिख है।’

‘तो फिर क्या हुआ?’

कुछ विचित्र-सी बात प्रतीत होती है।’

‘वह देहली तो क्या, हिन्दुस्तान के बड़े आदमियों में से हैं।’

‘मैं सोचकर बताऊंगी।’

‘इसमें सोचने की क्या बात है? और हां वह तुम्हारे रहस्य की बात को भी जानता है इस पर भी वह तुमसे विवाह करने के लिए राजी है।’

छाया चुप थी। छाया की मां ने कहा, ‘यह भी तो बता दो न, कि वह पांच लाख रुपया दहेज में मांगता है।’

‘पांच लाख रुपया?’ छाया ने मुख लम्बा करके कहा।

‘हां!’ रायबहादुर ने उत्तर दिया, ‘यदि यह प्रस्ताव कुछ दिन पहले होता तो मैं कभी भी स्वीकार न कर सकता। मेरे पास इतना धन है ही कहां। परन्तु अब तो मैं एक समझता हूं कि तुम अपना दहेज स्वयं ही दे सकोगी।’

‘मैं?’ छाया ने अचम्भे में पूछा।

‘हां। मैंने तुम्हारे कपड़ों के ‘ड्रार’ में पांच लाख के नोट पड़े देखे थे।’ छाया की मां ने कहा।

‘वह रुपये मेरे नहीं हैं। नवल पकड़े जाने से पूर्व वीणा को देने के

लिए मुझे दे गया था । '

'तब तो ठीक है ।' रायबहादुर ने कहा, 'उसकी कमाई एक अच्छे काम में लग जायगी ।'

'नहीं ! वह रुपया मे इस्तेमाल नहीं कर सकती । उस पर मेरा अधिकार नहीं है ।

'देखो छाया । नवल के दोस्तों ने तुम्हें बदनाम किया है और उस बदनामी को धोने के लिए ही यह पांच लाख कीमत मांगी जाती है । यदि नवल का रुपया ही इस काम आये तो इससे अच्छी और क्या बात होगी ।'

'परन्तु मैं तो यह रुपया वीणा को वापिस करने का निश्चय कर चुकी हूँ ।'

'किससे निश्चय किया था ।'

'अपने मन में ।'

'क्यों ? क्या तुम्हें पता नहीं कि वीणा ने मिस्टर सेठ से तुम्हारा विवाह रोकने का दाम पांच हजार वसूल किया था ।'

'किससे ?'

'मुझसे ।'

'ओह ।' छाया इस बात को सुनकर चुप हो गई ।

रायबहादुर ने कहा, 'मैं इन बातों में देरी करना पसन्द नहीं करता । इस कारण मैंने निश्चय किया है कि कल तुम्हारी सगाई होगी और अगले रविवार को विवाह । विवाह सिंखों की रीति से होगा । रुपया विवाह के समय दिया जायेगा ।'

इतना कहकर रायबहादुर अपने स्थान से उठकर भीतर चले गये । छाया ने अपने कमरे में जाकर जब कपड़ों के ड्रार को देखा, जिसमें नवल का रुपया रखा था, तो वहां उसे कुछ भी नहीं मिला । उसने मन में सोचा कि रुपया मां ने निकाल लिया होगा और उसकी यह कल्पना ठीक ही निकली । अब वह अपने कमरे में बैठकर सोचने लगी कि-

क्या करे ।

आज बलवीर के पास गई तो थी अपने दोषों को स्वीकार करने; परन्तु वहां वह कुछ भी कह नहीं सकी । बचपन से ही उसने कभी अपना दोष स्वीकार नहीं किया था । अब इसकी आवश्यकता अनुभव करते हुए भी उसके मुख से कुछ नहीं निकल सका । इसके विपरीत भी वह बलवीर को घनिष्ठता की ओर खींचने का यत्न कर रही थी ।

आखिर बलवीर ने कह ही दिया, 'मैं समझता हूं कि मेरा आपसे विवाह होना अब सर्वथा असम्भव है । मेरे पिताजी नहीं मःनंगे । साथ ही मेरे विचार आपसे बिल्कुल नहीं मिलते ।'

छाया ने कहा, 'आप इसे असम्भव न कहें । मुझे अवसर दें कि मैं अपने वास्तविक प्रेम का परिचय देकर आपका प्रेम प्राप्त कर सकूं ।'

'मैं सदा से आपको यह अवसर देता आया हूं और आज भी देता हूं ।'

इसके पश्चात् छाया वहाँ से चली आई और दिन भर मन में सोचती रही थी कि वह बलवीर से संपर्क रखे अथवा छोड़ दे । उसे वीणा का यह कहना ठीक ही प्रतीत हो रहा था, कि आखिर बलवीर ही में कौन खूबी है । इस पर भी उसका मन कहता था कि बलवीर पर आविपत्य जमाकर ही उसकी भारी जीत होगी । कमल से उसे धृणा हो गई थी और वह कमल और बलवीर में भगड़ा करवाना चाहती थी । यह तभी सम्भव था जब बलवीर से उसका विवाह हो जायें ।

अब एक नई समस्या उसके सामने आ उपस्थित हुई थी । इन्द्रजीत-सिंह अच्छा खूबसूरत जवान था परन्तु साठे का मित्र होने से वह सब रहस्य की बात जानने के कारण सदैव उस पर हुकूमत करेगा । सो भी वह यह भी समझती थी कि वह बहुत धनी आदमी है । यदि वह कुछ भी चतुराई से काम लेगी तो बलवीर जैसों को मोल ले सकेगी । जब उसने देखा कि कुमल का पांच लाख रुपया भी उसकी आलमारी

से निकाल लिया गया है तो 'कि कर्तव्य विमूढ़' बैठी-की-बैठी रह गई।

दूसरे दिन सरदार केवलसिंह अपने कुछ मित्रों को साथ लेकर रायबहादुर केशवदेव की कोठी पर आया और छाया की सगाई की रस्म अदा कर दी गई। रायबहादुर ने एक हजार एक रुपया-फलों और मिठाइयों से भरे टोकरे के साथ दिया।

रविवार को प्रातः काल चार बजे आसा की वार के पश्चात् छाया का विवाह इन्द्रजीतसिंह से हो गया और पूर्व निश्चयानुसार रायबहादुर ने भूषण, वस्त्र इत्यादि के अतिरिक्त पांच लाख रुपये नकद इस अवसर पर दिये। इन्द्रजीतसिंह के पिता तथा अन्य सम्बन्धी दहेज को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। इन्द्रजीतसिंह भी मन ही बहुत प्रसन्न था, परन्तु छाया की अवस्था उस समय बड़ी विचित्र थी, वह उस समय कुछ डरी और सहमी हुई थी।

इसी दिन सायंकाल बलवीर और माया का विवाह कमल के आश्रम में हुआ था। यहां दहेज के देने अथवा लेने का कुछ भी विचार नहीं था। न ही कुछ अधिक रस्मों का भ्रमेला था। माया का भाई नवीन आसाम के मोर्चे पर चला गया था और वहां से उसने आशीर्वाद का तार भेजा था। माया की मां अब आश्रम की सदस्या थी। आश्रम के सब सदस्य इस विवाह से बहुत प्रसन्न थे। सदैव की भांति आश्रम में भी जलसा और जशन हुआ था। बाहर के मेहमानों की संख्या पहले से कुछ अधिक थी। इस पर भी पूर्ण कारंवाई सर्वथा सादी थी।

बलवीर उसी रात माया को लेकर बम्बई घूमने चला गया।

: ४ :

सरदार केवलसिंह की दुमजिली कोठी बाराखंभा रोड पर थी और बीसियों नौकर-चाकर वहां रहते थे। विवाह के अवसर पर कई सम्बन्धी भी आये हुए थे। कोठी भर में चहल-पहल थी। डोली सायं चार बजे के लगभग आई थी और अड़ोस-पड़ोस, मित्र और संबंधियों

की स्त्रियाँ छाया को मिलने, देखने और उसके सौन्दर्य की प्रशंसा करने अथवा उसके बाप के दिये दहेज को देखने रात को बहुत देर तक आती रहीं।

बारह बजे के पश्चात् छाया को अवसर मिला कि वह अपने पति के कमरे में जा सके। इन्द्रजीतसिंह वहाँ पहले ही उपस्थित था। छाया को आया देखकर वह मुस्कराकर कहने लगा, 'आइये, आइये, मिस छाया। ओह ! भूल गया हूँ, "मिसेज सिंह !" परन्तु आपके लिए यह उपनाम केवल नाम-मात्र ही तो है न।'।

छाया मुस्कराकर पलंग पर बैठ गई। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। इन्द्रजीतसिंह ने बिना उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये ही कहना जारा रखा, 'छाया ! बाहर के लोग तो यह समझते हैं कि तुम अब मेरी स्त्री हो, परन्तु यह मैं जानता हूँ कि तुम इस योग्य नहीं हो। देखो, नाराज होने की कोई बात नहीं। मैं तुम्हारी सब बातें भली-भाँति जानता हूँ। उनको तुम्हारे सामने कहना आवश्यक नहीं है। अब मैं भविष्य में तुम्हें अपनी सहधर्मिणी न समझकर केवल-मात्र अपनी मित्र ही समझूँगा और ऐसा समझने में ही मेरी और तुम्हारी भलाई है।'।

'मेने तो समझा था आज से मैं अपने जीवन का नया अध्याय आरम्भ कर रही हूँ। इसमें मैं अपनी पति-भक्ति और पातिव्रत-धर्म को मुख्य रखना चाहती थी।'।

'यह तो तुम्हारे समझने की बात है। मैं इससे तुम्हें मना नहीं कर सकता। परन्तु मैं उस दिन की बात को भूल नहीं सकता जब मैं, मि० सेठ, मणीन्द्र, तुम और मिसेज वर्मा ओडियन में साथ-साथ बैठे थे। मिसेज वर्मा के साथ की सीट पर मिस्टर मणीन्द्र बैठे थे और तुम्हारे बराबर की सीट पर मैं बैठ गया था। मिस्टर सेठ पीछे रह गये थे। जब वह आये तो मेरे दूसरी ओर की सीट पर बैठने के स्थान में वह मेरे सम्मुख खड़े रहे और तुमने मुझसे कहा था कि मैं अपनी जगह उनकी दे दूँ। वह थी तो सिनेमा की सीट, परन्तु तुम्हारा मिस्टर सेठ की ओर इतना

भुकाव उस समय मुझे बहुत बुरा लगा था। तुम्हें याद होगा कि मैं एक-दो मिनट पश्चात् वहां से चला आया था। अब तो क्या, जीवन-पर्यन्त मैं तुम्हारे उस अपमान तथा अशिष्टता पूर्ण व्यवहार को न भूल सकूंगा। इससे कहता हूं कि तुम्हारा और मेरा सम्बन्ध केवल मित्र का ही है। इससे अधिक नहीं।'।

‘यदि यह बात थी तो आप इस विवाह के लिए राजी ही क्यों हुए थे।’

‘तुम्हारा पांच लाख रुपया लेने के लिए। तुम तो जानती हो कि मैं मिस साठे से प्रेम करता हूं और उससे विवाह भी कर लेता; परन्तु पांच लाख रुपया तो तुमसे ही मिल सकता था। मिस साठे को तो दुकान चलाने के लिए भी पांच हजार रुपया मैंने ही दिया था।’

‘मैंने तो सुना था कि आप बहुत अमीर आदमी हैं। यह पांच लाख आपके लिए कुछ नहीं। इस पर भी आपने इसके लोभ में मुझे फंसाया है।’

‘आपको तो फंसाया है उस सिनेमा वाली घटना का बदला लेने के लिए। रही रुपये के लोभ की बात, ऐसा करने से ही तो हम लोग धनी हुए हैं।’

‘इस लोभ में कुछ तो तुमने भी न्याय-अन्याय का विचार किया होता।’

‘ऐसी छोटी-छोटी बातों के विचार करने से घन एकत्रित नहीं हो सकता। आखिर इतनी बड़ी कोठी हैं, बीसियों नौकर हैं। सैकड़ों सम्बन्धी हमारे आश्रय में पलते हैं। यदि हम केवल अपनी मेहनत की कमाई पर ही रहें तो भला ये सब लोग कहां से पाले जा सकते हैं, और फिर कहीं गुरु-द्वारा कमेटी का चन्दा है, कहीं सिख प्रोटेक्शन लीग है, कहीं अफसरों को दावतें देने हैं और कहीं अर्ध सरकारी फंडों में चन्दे देने हैं। भला यह सब काम न्याय की आमदनी से कैसे चल सकते हैं। तुम

ही सोचो ।’

छाया इस स्पष्टवादिता से अवाक् मुख बैठी रह गई थी । उसने इस व्यवहार की स्वप्न में भी आशा नहीं की थी । इस पर भी वह अपने भविष्य के विषय में निश्चित रूप से जानना चाहती थी । इस कारण उसने पूछा, ‘तो मैं अपने पिताजी के घर लौट जाऊं ?’

‘इसकी कोई आवश्यकता नहीं है ।’

‘फिर ?’

‘फिर क्या ? संसार की दृष्टि में तुम मेरी स्त्री हो और वास्तव में मैं जानता हूँ और तुम भी जानती हो कि ऐसा नहीं है । यदि तुम पसन्द करो तो संसार की दृष्टि में तुम मेरी स्त्री के रूप में रह सकती हो । वास्तव में तो डॉक्टर साठे ही मेरी स्त्री हैं और तुम.....मैं नहीं जानता किसकी स्त्री हो ? कल सुबह ‘हनी मून’ के लिए मैं बम्बई जाना चाहता हूँ । बताओ चलोगी ?’

‘चलूंगी ?’

‘डॉक्टर साठे भी साथ में होंगी ।’

‘तो ?’

‘वास्तव में मैं उसी के साथ जा रहा हूँ लोगों की दृष्टि में यदि अपना स्थिति, (मेरी स्त्री की) बनाये रखना चाहती हो तो तुम भी मेरे साथ चलो ।’

‘मैं नौकरानी बनकर नहीं जा सकती ।’

‘मेने तो मित्र के रूप में कहा है ।’

‘तो चलूंगी । परन्तु अब ?’

‘अब अपना विस्तर फर्श पर कर लो और सो जाओ ।’

इस प्रकार के शुष्क व्यवहार से वह क्रोध से उतावली हो उठी । उसने एक गद्दा और चादर लेकर फर्श पर बिछा लिया और मुख दीवार की ओर करके लेट गई ।

: ५ :

अगले दिन पूरा फर्स्ट क्लास का डिब्बा रिजर्व कराकर छाया और इन्द्रजीतसिंह बाँम्बे मेल में सवार होकर बम्बई के लिए रवाना हो गये । इन्द्रजीतसिंह के कई मित्र और सम्बन्धी उसे नई दिल्ली स्टेशन पर विदा करने आये । छाया उस सब व्यवहार को, जो इन्द्रजीत ने उसके साथ रात को किया था, भीतर-ही-भीतर पी गई और हंस-हंस कर सबसे बातें करती रही । जब गाड़ी नई दिल्ली से चल पड़ी तो उसने पूछा, 'आपकी साठे नहीं आई ?'

'मथुरा में मिलेगी ।'

बस इसके अतिरिक्त और कुछ बात नहीं हुई । इन्द्रजीतसिंह 'इलस्ट्रेटेड वीकली' पढ़ने लगा और छाया एक उपन्यास, जो वह अपने साथ लाई थी, पढ़ने लगी, गाड़ी वेग से चली जाती थी । ढाई बंटे में वह मथुरा पहुँच गई । वहाँ प्लेटफार्म पर मिस साठे अपना सामान लिये पहले ही से खड़ी थी । इन्द्रजीत ने उसका स्वागत किया । साठे छाया से भी मिली । छाया का स्वागत सर्वथा शुष्क था ।

'रूठ गई हो छाया ?' साठे ने मुस्कराते हुए पूछा ।

'किससे ?' छाया ने अपना ध्यान पुस्तक से हटाते हुए पूछा ।

'मुझसे ।'

'बहुत धोखा हुआ है,' छाया ने पुनः पुस्तक पढ़ने का बहाना करते हुए कहा ।

'तो तुम पुनः घर लौट सकती हो ।' इन्द्रजीत ने कहा ।

'अब लौटने की गुंजाइश ही नहीं है । अब तो आगे-ही-आगे चलेंगे ।'

'छाया ने पुस्तक एक ओर रख दी और सीट की पीठ के साथ ढासना लगाकर आराम से बैठते हुए कहा, 'मिस साठे ! आप यदि नाराज न हों तो "मिसेज सिंह !" सीभाग्य तथा दुर्भाग्य से हम दोनों एक ही गाड़ी में सवार हो गए हैं । यदि गाड़ी में दोनों के लिए स्थान हुआ तो झगड़े की

बात ही नहीं। अन्यथा एक को तो नीचे प्रयत्न उतरना होगा। कौन नीचे उतरेगा और कैसे उतरेगा अब यह विचारणीय विषय है।'

'छाया तुम बात तो बहुत समझदारी की करती हो। मैं तुम्हारी इस परिस्थिति के विश्लेषण करने की प्रतिभा की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकती। मैं नहीं जानती कि गाड़ी में दोनों के लिए स्थान है या नहीं? हां इतना अवश्य जानती हूँ कि इस गाड़ी में चढ़ने का टिकिट तो मेरे पास है। तुम्हारे पास टिकिट है और कहां का है? यह तो तुम ही जानो। जिसके टिकिट का दाम चुक जायगा उसे नीचे उतरना होगा।'

'अच्छी बात!' छाया ने गम्भीर चिन्तन की मुद्रा बनाकर आंखें मूंदते हुए कहा, 'टिकिट देखने का अधिकार तो टी० टी० का ही है न। जब वह आयेगा तब टिकिट दिखा दूंगी।'

इन्द्रजीतसिंह इस रूपक को समझकर हंस पड़ा और बोला, 'यदि टी. टी. मुझसे पूछेगा तो मैं तो कह दूंगा दोनों बिना टिकिट के सवार हूँ। दोनों का टिकिट मैं देने को तैयार हूँ। यदि वह कुछ जुर्माना भी मांगेगा तो दे दूंगा।'

छाया ने कहा, 'सो तो करना ही होगा। कम-से-कम मेरे लिए?'

'तुम्हारे लिए ही क्यों?' मिस साठे ने हंसते हुए पूछा।

'इसलिए कि मैंने अपना टिकिट कल पांच सौ आदमियों के सम्मुख इन श्रीमान् जी के हाथ में दिया था।'

'और मैंने तो अपना टिकिट भगवान् की साक्षी करके दिया है। पांच-सौ दिल्ली के धनो-मानी ठेकेदारों के मित्र और सम्बन्धी भूठ बोल दें तो बोल दें, परन्तु भगवान् कभी अन्याय नहीं करता।'

'यही तो देखना है!' छाया ने पुनः आंखें खोलकर कहा।

खट-खट करती हुई गाड़ी भागी चली जा रही थी। इसके पश्चात् कोई उल्लेखनीय बात नहीं हुई और अगले दिन ये लोग बम्बई पहुंच गये। सरदार केवलसिंह के एक मित्र की, मालाबार हिल पर कोठी थी।

वह उनके लिए खाली करवा दी गई थी। वे तीनों वहीं रहने लगे।

इन्द्रजीतसिंह और डॉक्टर साठे प्रायः इकट्ठे रहते, खाते और सँवरने जाते थे। छाया अकेली घूमा करती थी, अकेली खाना खाती और सोती थी। वहाँ के लोगो में यह विख्यात था कि छाया इन्द्रजीतसिंह की स्त्री की सहेली है, जो किसी आवश्यक कार्यवश बम्बई आई हुई है। छाया का नित्य का कार्य-क्रम था, प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो, चाय पी-कर शहर घूमने निकल जाना। दोपहर को किसी होटल में खाना खाना और टैक्सी, ट्राम अथवा घोड़ागाड़ी से दिन भर भिन्न-भिन्न स्थानों पर घूमते रहना। सायंकाल घर आना और रात का खाना वहाँ खाकर सो जाना। किसी-किसी दिन तो उसे इन्द्रजीत और डॉक्टर साठे के दर्शन-मात्र भी नहीं होते थे। वे भी दोनों अपनी खुशी में इतने लीन थे कि उन्हें छाया का वहाँ होना भूल-सा गया था। जब कभी उससे भेंट हो जाती, तो उन्हें याद आ जाता कि वह भी उनके साथ आई हुई है और इन्द्रजात पूछ लेता, 'सुनाओ छाया ठीक तो हो ?'

'हां।' छाया का उत्तर प्रायः यही हुआ करता था।

सातवां भाग

प्रकाश

: १ :

छाया को आये छः दिन हो चुके थे और वह बम्बई के प्रायः सभी दर्शनीय स्थानों को देख चुकी थी। इस पर भी समय बिताने के लिए वह घूमा ही करती थी। एक दिन सायंकाल को चौपाटी पर निष्प्रयोजन खड़ी वह लोगों की भीड़ को देख रही थी। पारसी, मराठी, गुजराती और विरली मद्रासी युवतियों को रंग-बिरंगी साड़ियां और जम्पर पहने अपने सम्बन्धियों और मित्रों के साथ घूमते, बातें करते तथा खेलते-कूदते देखकर छाया का मन बैठता जाता था। वह उदास आकाश की ओर देख रही थी कि उसे ऐसा भास हुआ कि कोई सामने आकर खड़ा हो गया है। उसने दृष्टि आकाश से हटाकर सामने खड़े हुआ को देखा और उसके अचम्भे का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि बलवीर और माया, इकट्ठे खड़े उसकी ओर अचम्भे से देख रहे हैं। अकस्मात् उसके मुख से निकल गया—

‘माया और आप ? नमस्ते !’ उसने अपने को काबू में करते हुए कहा। माया की मांग में सिद्धूर देखकर वह सब कुछ समझ गई। उसके सिर में चक्कर आने लगा और उसका मुख विवर्ण हो गया। बलवीर देख रहा था कि वह गिरने ही वाली है। उसने आगे बढ़कर उसे पकड़

लिया। छाया उस समय अचेत हो गई थी। बलवीर ने उसे आश्रय देकर वहीं रेत पर लिटा दिया। कुछ लोग, तमाशा देखने वाले चारों ओर इकट्ठे हो गये। बलवीर ने उसे होश में लाने का प्रयत्न किया। समीप ही लगे नल से माया हाथों का चुल्लू बनाकर पानी ले आई थी। बलवीर ने पानी के छीटे दिये।

छाया को जब चेतना हुई तो लोगों की भीड़ अपने चारों ओर खड़ी देखकर वह घबराई। उसने धीरे से कहा, 'मुझे एकांत में ले चलो।'

बलवीर ने आश्रय देकर छाया को उठाया और मैदान से बाहर सड़क के किनारे ले आया तथा वहाँ से टैक्सी करके छाया को होटल में, जहाँ वह ठहरा हुआ था, ले गया। एक आध खुराक बाँड़ी और सोडा की देने पर छाया का चित्त स्थिर हुआ और वह माया की ओर घूम-कर पूछने लगी, 'माया ! कब हुआ है विवाह तुम्हारा ?'

'पिछले इतवार को।'

'इतवार को ?' छाया के मुख पर फिर उदासी छा गई।

माया ने पूछा, 'क्यों क्या बात है छाया ? तुम्हें पसन्द नहीं है क्या ?'

इसके उत्तर में छाया ने आँखें नीची किये हुए कह दिया, 'मेरा भी विवाह हो गया है।'

बलवीर ने अचम्भे में पूछा, 'सच ? किससे ?'

'सरदार केवलसिंह के सुपुत्र इंद्रजीतसिंह से।'

'कब हुआ है ?'

'उसी रविवार को जब आपका हुआ था।'

'तो वे कहाँ हैं ?' माया ने चिंता प्रकट करते हुए पूछा।

'सोमवार से हम "हनी मून" करने के लिए देहली से निकले हुए हैं। मालाबार हिल पर कोठी नं० २६३ में ठहरे हैं।'

'मगर अब कहाँ हैं वे ? कोठी में टेलीफोन है ?'

'नहीं।' इतना बताते-बताते छाया की आँखें आंसुओं से भर आईं।

'क्यों, क्या बात है छाया देवी ? तुम रोती क्यों हो ?'

‘कुछ नहीं बलवीर जी ! एक प्याला चाय मंगवा दें तो बहुत कृपा होगी ।’

बलवीर उठकर चाय के लिए कहने चला गया ।

माया ने पूछा, ‘छाया बहन ! बहुत दुखी हो तुम ?’

‘हां । और तुम ?’

‘मैं तो बहुत सुखी हूं । ईश्वर का लाख-लाख धन्यवाद है कि डूबते का किनारा मिल गया है ।’

‘मेरी बेहद इच्छा थी कि मेरा विवाह बलवीर जी से हो ।’

‘इसमें अचम्भा करने की कोई बात नहीं । वह हैं ही ऐसे । मैं तो समझती हूं कि उन जैसा साधु स्वभाव वाला व्यक्ति संसार में कोई नहीं है ।’

इसी समय बलवीर आ गया । उसके साथ होटल का नोकर ट्र में चाय के बरतन सजाये हुए लेकर आया । बैरा ने चाय लगा दी और माया, छाया के लिए चाय बनाने लगी । चाय बनाते हुए उसने बलवीर से कहा, ‘छाया कहती है कि वह अपने विवाह से सुखी नहीं है ।’

‘इसमें अचम्भे की कोई बात नहीं । कारण यह है कि छाया की मानसिक अवस्था ऐसी है कि वह अधिक समय तक एक वस्तु से प्रसन्न रह ही नहीं सकती ।’

‘यह बात नहीं है बलवीर जी ! मेरा चुनाव ग़लत नहीं था; परन्तु मेरी शिक्षा उलटी थी । पारणाम स्वरूप मैं अपने ध्येय तक न पहुंच सकी ।’

‘तो तुम अब यह समझ गईं…… ।’ इसके आगे बलवीर कुछ कहना चाहता था परन्तु कह नहीं सका ।

‘हां ! हां ! कहते-कहते रुक क्यों गए ? यही न कि देरी से मुझे समझ आई है ?’

‘परन्तु अब क्या हुआ है । इन्दूजीतसिंह कहां है । मैं उनको जानता तो नहीं । तुम यह तो बताओ कि अब उनसे पृथक् कैसे हो ?’

‘यह सब विवाह से कुछ घंटे पीछे ही हो गया ।

‘यह विवाह पिता जी ने निश्चित किया था । पांच लाख दहेज में मांगा गया और वह भी दिया गया, परन्तु भारी भूल हुई । इन्द्रजीत-सिंह डॉक्टर साठे से प्रेम करते हैं और अब भी वह उसी के साथ कहीं घूम रहे हैं ।’

बलवीर और माया यह सुनकर अवाक् मुख देखते रह गये । छाया ने कहना जारी रखा । ‘जब से मेरा विवाह हुआ है तब से मुझे एकांत में विचार करने का अवसर बहुत मिला है । यों तो मुझे पहले भी विचार करने का अवसर मिलता था, परन्तु उस समय वायु-मण्डल ऐसा था कि विचार-धारा ठीक ओर नहीं जाती थी । अब इस नई परिस्थिति में विचार-धारा दूसरी ओर जा रही है । इससे जो परिणाम में पहले निकाला करती थी उससे उलटे परिणामों पर ही पहुंच रही हूं । तब समझती थी कि आप मुझसे शीघ्र विवाह न करके मुझ पर घोर अन्याय कर रहे हैं । अब मुझे यह समझ में आ रहा है कि मैं आपको अपनी ओर कृत्रिम उपायों से आकर्षित कर आप पर अत्याचार कर रही थी । उस समय मैं यह समझती थी कि कमल जी ने आश्रम ढोंग बना रखा है । अब मैं यह समझती हूं कि आश्रम ने कम-से-कम माया के जीवन को पतन से बचा दिया है । आश्रम पर खर्च किया गया रुपया, यदि और कुछ भी न हुआ हो तो केवल इससे ही सफल समझ लेना चाहिए ।’

बलवीर ने कुछ सोचकर कहा, ‘छाया देवी ! मुझे बहुत शोक है कि तुम्हारे पिता की अनेकों अन्य बातों की भांति तुम्हारे लिए पति का चुनाव भी ग़लत हुआ है । परन्तु मैं तो कहता हूं कि मनुष्य के जीवन में विवाह एक बहुत बड़ा प्रश्न होते हुए भी जीवन के अन्य कार्यों के मुकाबले में बहुत छोटी-सी बात है । जीवन का सर्वाङ्ग में सुखी होना तो किसी विरले के ही भाग्य में होता है । जितना अधिक-से-अधिक सुख, शान्ति और आनन्द मिल सके उसे केवल ग़लत विवाह के लिए बिगाड़ देना बहिमत्ता नहीं है ।’

छाया ने इसका उत्तर नहीं दिया और वह कुछ सोचती रही। इस पर माया ने पूछा, 'आप लोग कब तक यहां ठहरने का विचार रखते हैं ?'

'मैं नहीं जानती। जिनका वास्तविक 'हनी मून' है वह प्रायः मुझे मिलते भी नहीं। प्रातः से सायंकाल तक अपने में ही लीन रहते हैं।'

'यदि हम आप लोगों को चाय का निमन्त्रण भेजें तो आप स्वीकार कर लेंगे ?'

'मैं नहीं जानती।'

इस पर बलवीर ने कहा, 'डॉक्टर साठे से मेरा परिचय है, यदि आपको आपत्ति न हो तो मैं उससे मिलकर आपको कल चाय पर आमन्त्रित करूँ ?'

'मैं नहीं जानती कि वह आपसे कैसा व्यवहार करेंगे।'

'अच्छी बात है, हम यत्न करेंगे। आप हमें कहां मिलियेगा ? मैं समझता हूँ कल सायं चार बजे आप उनके साथ अथवा अलग यहां आ जायें। वे आवें या न आवें आपकी हम अवश्य प्रतीक्षा करेंगे'।

: २ :

अगले दिन सायंकाल ठीक चार बजे छाया होटल में बलवीर और माया से मिलने आ पहुंची। माया और बलवीर उसकी प्रतीक्षा में तैयार बैठे थे। छाया ने आते ही पूछा, 'वे आ रहे हैं क्या ?'

'हां। आने को कहा तो है। हम दोनों आज साढ़े नौ और दस बजे के लगभग मालावार हिल पर घूमने चले गये थे। कोठी नं. २६३ के सामने कितना ही देर तक खड़े रहे। आखिर वे बाहर निकले, उस समय आप साथ नहीं थीं। मैंने डॉक्टर साठे को देखकर अवस्था प्रकट करते हुए उनसे हाथ मिलाया और पूछा, "आप यहां ? कैसे ?"

'वह बोली, "यह है मिस्टर इन्द्रजीतसिंह मेरे पति, हम हनीमून के लिए आये हुए हैं।"

‘मैंने उनसे भी हाथ मिलाया और फिर माया का परिचय कराया । पीछे बताया कि हम भी विवाह के पश्चात् सैर के लिए आये हुए हैं । अब माया ने निमंत्रण दे डाला । “यदि आज सायंकाल आप हमारे यहां चाय पीने की कृपा करें तो हमें अत्यन्त प्रसन्नता होगी ।” इन्द्रजीत कुछ दुविधा में पड़ गया था । डॉक्टर साठे के आग्रह पर वह मान गया और दोनों ने साढ़े चार बजे यहां आने का वचन दे दिया है ।’

‘पर मुझे यहां देखकर तो उन्हें क्रोध चढ़ आयगा ।’

‘जो भी हो ।’ माया ने कहा, ‘हम उनके नौकर नहीं हैं । इस पर भी मैं तुम्हें अपनी सहेली बनाकर परिचय कराऊंगी और यह कहूंगी कि आप अभी यहां नीचे सड़क पर घूमती मिल गई थीं । इस पर भी यदि तुम यह पसन्द न करो तो इस पिछले कमरे में छिपकर बैठ सकती हो ।’

छाया ने कुछ सोचकर कहा, ‘नहीं छिपने की कोई आवश्यकता नहीं, जो होगा देखा जायगा ।’

इन्द्रजीतसिंह और डॉक्टर साठे पांच बजे के लगभग वहाँ पहुँचे । बलवीर ने उठकर कमरे के बाहर जाकर उनका स्वागत किया और उनको साथ लेकर कमरे में आ गया । छाया दरवाजे की ओर पीठ किये बैठी थी । माया का मुख दरवाजे की तरफ था । माया उठकर साठे से मिली और उसे अपने समीप बैठा लिया । इन्द्रजीतसिंह अभी बलवीर के साथ आधा घंटा देरी से आने के लिए क्षमा मांग रहा था । साठे छाया को वहाँ बैठी देखकर चौंक उठी ।

माया ने उसकी हैरानी की ओर ध्यान न देते हुए छाया का परिचय कराया, ‘यह हैं मेरी कॉलिज की सहेली छाया देवी । अभी-अभी मैं बाजार से आ रही थी कि यह मिल गई । मैं इनको ले आई और चाय के लिए राक रखा है ।’

‘अच्छा तो यह आपकी कॉलिज-मेट हैं ?’

साठे ने अब छाया को सम्बोधित कर पूछा, ‘आप यहाँ अकेली

आई हुई हैं क्या ?'

'नहीं अपने भाई जी के साथ हूँ । वह काम से पूना गये हुए हैं, बस उनके आते ही दिल्ली लौट जाऊंगी ।'

इसी समय इन्द्रजीतसिंह भी वहाँ आ गया और वह बलवीर और छाया के बीच में पड़ी कुर्सी पर बैठ गया । माया ने इन्द्रजीत से भी छाया का परिचय वैसा ही करा दिया । इससे इन्द्रजीत और साठे ने यह समझा कि छाया के विवाह की बात माया इत्यादि को पता नहीं ।

बलवीर ने चाय बनाते हुए डॉक्टर साठे से कहा, 'आपका विवाह कब हुआ है ?'

'पिछले रविवार को हुआ था ।'

'ओह ! हमारा विवाह भी उसी दिन हुआ था ।'

'कितनी विचित्र बात है ।' इन्द्रजीत ने कहा ।

'हां और हम भी आपकी तरह "हनी मून" के लिए यहां आये हुए हैं और फिर आज अकस्मात् भेंट हो ही गई ।'

इस पर इन्द्रजीत ने कहा, 'आओ हम एक दूसरे के लिए "लांग और लक्की लाइफ की विश" करें ।'

दोनों जोड़ों ने एक दूसरे के लिए शुभ-कामना प्रकट की । पश्चात् इधर-उधर की बातें होती रहीं । एकाएक माया ने पूछ लिया, 'छाया ! सुना था तुम्हारा भी विवाह होने वाला है । कब होगा ?'

'मैं उसी मौके के लिए भाई जी के साथ भूषण खरीदने यहां आई थी । एकाएक उन्हें पूना जाना पड़ा । अब हम शीघ्र ही लौट जाने वाले हैं ।'

'और जाते ही विवाह होगा ?' माया ने शरारतभरी नज़र से देखते हुए पूछा ।

'देखें ।' छाया ने आंखें नीची किये हुए कहा ।

बलवीर ने बात बदलकर इन्द्रजीतसिंह को अपना पता बताया, 'पुरानी दिल्ली में, फव्वारे के समीप मेरा चिकित्सालय है । मुझे पूरी

आशा है कि यह मेल-जाल अब वहां जाकर और भी बढ़ेगा । कभी मेरे योग्य कई सेवा हो तो बताइयेगा । मिसेज सिंह ? क्या अब भी आप प्रेडिक्स करेंगी ?'

साठे ने उत्तर दिया, 'हां । मेरा तो यही विचार है । पर अभी निश्चय नहीं किया । दिल्ली जाने पर सोचूंगी ।'

चाय के बाद साठे और इन्द्रजीत विदा हो गए । छाया चिन्ता-ग्रस्त थी । वह समझती थी कि रात को भगड़ा हुए बिना नहीं रहेगा । बलवीर ने जब उसके मन की बात जानी तो उसे कह दिया, 'छाया देवी ! इन्द्रजीत का सम्बन्ध साठे से बहुत दिन तक नहीं रह सकता । इस कारण यदि सावधानी से काम लोगी तो तुम इस झमेले से बच निकलोगी । इस पर भी यदि तुम किसी समय मेरी अथवा आश्रम की सहायता चाहो तो तुम्हें मिल सकेगी ।'

: ३ :

छाया के चले जाने के बाद बहुत देर तक बलवीर और माया में बातें होती रहीं । बलवीर कह रहा था, 'मैं छाया की सराहना करता था और करता हूं । वह बहुत ही साहसी लड़की है परन्तु उसके पिता ने उसे पाश्चात्य सभ्यता की छाया-मात्र बना रखा है । परिणाम यह हुआ कि वह पग-पग पर ठोकर खाती रही है और समझ की बात एक भी नहीं कर सकी । यहां तक कि तुम्हारा उदाहरण होते हुए भी वह अपनी गर्भावस्था को स्वीकार करने के स्थान में मुझे और प्रत्येक व्यक्ति को धोखा देती रही । उसे यह जान लेना चाहिए था कि हम उस जैसी लड़की की भूल को क्षमा करने की क्षमता भी रखते हैं । इस पर भी अपनी कुशिक्षा के कारण उसने गर्भ-पात का मार्ग स्वीकार किया । अब अंतिम आघात उस पर यह विवाह हुआ है । इन्द्रजीत अवश्य जानता होगा कि छाया गर्भ-पात करवा चुकी है । साठे ने ही तो वह करवाया था । ऐसी अवस्था में छाया उसके पंजे में एक बिड़िया की भांति डरती रहेगी । बहुत बुरा परिणाम हुआ है उसकी इस उच्छृंखलता का ।'

‘अब उसकी सहायता नहीं हो सकती क्या ?’

‘यह परमात्मा के आधीन है ।’

दूसरी ओर उसी रात जब छाया कोठी में पहुंची तो इन्द्रजीतसिंह और साठे उसकी प्रतीक्षा में बैठे थे । छाया के पहुंचते ही इन्द्रजीतसिंह ने पूछा, ‘माया ने जो तुम्हारा परिचय दिया है वह ठीक था क्या ? वह नहीं जानती क्या, कि तुम्हारा विवाह हो चुका है ?’

‘मुझे नहीं मालूम कि वह क्या जानती है और क्या नहीं जानती । मैं तो यह बता सकती हूं कि मैंने उसे कुछ नहीं बताया । यदि मुझे मालूम होता कि आप भी चाय पर जा रहे हैं तो मैं वहां से पहले ही चली गई होती ।’

‘तो उनको कुछ पता नहीं ?’

‘मालूम तो ऐसा ही होता है ।’

‘हम कल यहां से जा रहे हैं ।’

‘कहां ?’

‘दिल्ली को ?’

‘मैं तैयार हूं ।’

‘ऐसे नहीं ! मैंने एक फर्स्ट क्लास का डिब्बा रिजर्व कराया है । तुम टैक्सी करके यहां से मनमाड चली जाओ और जैसे साठे मथुरा से सवार हुई थी तुम वहां से सवार हो जाना ।’

छाया को यह सब बातें सहन करने का स्वभाव नहीं था परन्तु वह ऐसी परिस्थिति में पड़ गई थी कि उससे छुटकारा पाने की तरकीब भी, कोई उसके पास नहीं थी । अतएव वह चुपचाप सब कुछ सहन करने के लिए तैयार होगई । वह सोचती थी कि दिल्ली चलकर शायद उसका पति उससे अच्छा व्यवहार करने लगेगा । वह प्रातःकाल ही मनमाड चली जाने को तैयार हो गई ।

: ४ :

छाया की आशा दिल्ली में आकर भी पूरी नहीं हुई। इन्द्र-जीतसिंह ने डॉक्टर साठे को बारहखंभा रोड पर अपनी कोठी की बगल में ही, एक कोठी किराये पर ले दी और उसे वहाँ प्रैक्टिस करने में सहायता देने लगा। स्वयं वह प्रत्यक्ष रूप से डॉक्टर साठे से सम्बन्ध रखे हुए था।

छाया जब से दिल्ली आई थी, अपने माता-पिता से मिलने नहीं गई थी। इन्द्रजीतसिंह ने एक-आध बार कहा भी, 'छाया रायबहादुर ने तुम्हें अपने यहाँ एक-आध दिन के लिए बुलाया है।'।

छाया उत्तर देती, 'क्या करूंगी वहाँ जाकर। यदि किसी को मिलना हो तो यहाँ आकर ही मिल जाये।'।

विवश होकर रायबहादुर और छाया की मां एक दिन उससे मिलने आये। छाया अपने कमरे में बैठी थी। छाया ने बिना किसी प्रकार का हर्ष प्रकट किये और बिना उठकर स्वागत किये ही उन्हें एक सोफे पर बैठने को संकेत कर दिया। जब वे बैठ गए तो छाया उनके कहने की प्रतीक्षा करने लगी।

आखिर मां ने इस शान्ति को भंग किया और बोली, 'छाया ! तुम्हारा मन हमसे मिलने को नहीं करता क्या ?'

'नहीं मां।' छाया ने दीवार पर टंगी एक तस्वीर की ओर देखते हुए कहा।

छाया मां को 'ममी' और पिता को 'डैडी' कहा करती थी, परन्तु आज एकाएक उसके मुख से 'मां' का शब्द निकला, यह रायबहादुर और उनकी स्त्री को कुछ विचित्र-सा प्रतीत हुआ।

रायबहादुर ने पूछा, 'छाया ! क्या बात है, तुम तो एकदम बदल गई हो ?'

'हां। पिताजी ! वह छाया, जिस छाया को आपने पाल-पोसकर तथा

शिक्षा देकर इतना बड़ा किया था, अब मर गई है। एक नई छाया का जन्म अब हुआ है। यह छाया अभी बच्ची है और अपना मार्ग ढूँढ़ने में भी असमर्थ है। इसी कारण वह घर से बाहर नहीं निकलती।’

पं० केशवदेव छाया की बातें सुनकर घबरा उठे। उन्हें ऐसा ज्ञान पड़ा कि छाया का मस्तिष्क बिगड़ रहा है। वह नीम पागल-सी हो गई है। इससे उन्होंने कहा, ‘छाया ! तुम बीमार हो ? चलो हमारे घर। हम तुम्हारी चिकित्सा करायेंगे।’

छाया मुस्कराकर बोली, ‘नहीं पिताजी ! मैं बीमार नहीं हूँ। आप जिस छाया को ढूँढ़ रहे हैं वह यहां नहीं है इसी से आपको भ्रम हो रहा है।’

‘तुम वही तो हो, जो मुझे “डेडी डीयर” कहकर पुकारा करती थीं। तुम वही तो हो जो टेनिस खेला करती थीं, जो अंग्रेजी नाच और गाने को पसन्द करती थीं। तुम भूल गई हो क्या, मेरे गले में बांह डालकर लाड करना ?’

छाया उठ खड़ी हुई और बोली, ‘अभी आप ठहरियेगा या जाइयेगा ?’

‘तो क्या, हम जायें ?’ मां ने अचम्भे में पूछा।

‘आपको यहां नहीं आना चाहिए था। मुझे ज़रूरत होती तो आपसे मिल आती।’

‘पर हमें तो ज़रूरत है।’

‘तो वह अभी पूरी नहीं हुई क्या ?’

‘नहीं; अभी तो आये हैं। बैठो न।’

छाया पुनः बैठ गई और बोली, ‘बताइये।’

‘बेटा ! तुम सुखी हो यहां ?’ रायबहादुर ने पूछा।

‘सुख स्वप्नों में मिलता है। वास्तविक संसार में सुख नहीं है।’

‘ओह !’ रायबहादुर ने लम्बी सांस खींचकर कहा, ‘तुम्हें क्या कष्ट है यहां ?’

‘मुझे इस समय आपको सामने देखकर बड़ा कष्ट हो रहा है।’

‘हैं ? क्यों ? मैं येही तो पूछता हूँ ।’

‘मैं बता नहीं सकती । वास्तव में मैं जानता ही नहीं कि क्यों यह सब हो रहा है ? गर है बात यही । मैंने कहा है न कि नई छाया अभी बच्ची है । उसे बहुत बातों की समझ अभी नहीं आई । किसी समय यदि मैं अपने मन की बात भली-भाँति जान सकी तो आपको बताऊंगी । इस समय तो यही समझ पड़ता है कि आपसे मिलने पर मुझे सुख के स्थान में दुःख ही हुआ है ।’

रायबहादुर और उनकी धर्मपत्नी हैरान हो छाया की ओर देखते रह गये । वह मुंहफट तो पहले ही थी, परन्तु रायबहादुर इसे स्वतंत्रता और स्पष्टवादिता कहकर छाया की प्रशंसा किया करते थे । आज छाया को अपने को चले जाने के लिए कहते सुनकर उनको अच्छा नहीं लगा । परन्तु वे क्या कर सकते थे ?

रायबहादुर ने कहा, ‘मैं डॉक्टर जैन को तुम्हारे पास भेजूंगा । मैं समझता हूँ कि तुम्हें अपना चिकित्सा करानी चाहिए । मैं तुम्हारे स्वसुर से भी कहता हूँ ।’

इतना कहकर दोनों छाया के कमरे से चले आये और सरदार केवल-सिंह के पास जा पहुँचे । वे कोठी के लॉन में मेज़ कुर्सी लगाकर मुन्शियों से हिसाब ले रहे थे ।

सरदार साहब ने उठकर स्वागत किया और रायबहादुर ने कहा, ‘मैं समझता हूँ कि छाया कुछ बीमार है । उसके देखने के लिए मैं डॉक्टर भेजूंगा ।’

‘आपको तकलीफ करने की आवश्यकता नहीं । मैं स्वयं उसे किसी लेडी डॉक्टर को दिखा दूंगा । यह हमारे पड़ोस में डॉक्टर साठे आ गई हैं और मैं समझता हूँ वह बहुत समझदार हैं, और वह इन्द्रजीत की मित्र भी हैं । वे ही इसे भली प्रकार देख लेंगी ।’

: ५ :

छाया का विवाह हुए दो वर्ष हो चुके थे। इधर डॉक्टर साठे के एक लड़का हुआ, जिसको इन्द्रजीत ने प्रकट रूप में अपना लड़का मान लिया था। इससे डॉक्टर साठे की बदनामी बहुत हुई, परन्तु इससे क्या हो सकता था। साठे का निर्वाह चिकित्सा-कार्य पर नहीं था। इन्द्रजीतसिंह उसकी सब आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। एक हजार रुपया महीना और कोठी का किराया तथा नौकरों का वेतन दे दिया करता था।

यह बात तो अब स्पष्ट हो चुकी थी कि इन्द्रजीतसिंह डॉक्टर साठे के पास रहता था और छाया से उसका कोई सम्पर्क नहीं था। विवाह के पश्चात् कुछ मास तक तो छाया अपनी प्रत्येक इच्छा के विपरीत घटनाओं को होता देखकर मूर्ख बनकर विस्मय में पड़ी रही। इतने दिनों में वह यह तो समझ गई थी कि उसकी इच्छाओं के अपूर्ण रहने तथा उनके विपरीत घटनाओं के होने में कोई भारी कारण है। सबसे पहली बात, जो उसके मन में उत्पन्न हुई, वह समाज का खराब होना था। वह समझती थी कि यदि बलवीर ने उसकी शर्तें नहीं मानी थीं तो यह सब समाज में स्त्रियों की हीन अवस्था के कारण था। यदि कमल ने उससे विवाह करना अस्वीकार किया था तो इसका भी कारण समाज की विचार-धारा में दोष ही था। यदि रामलुभाया सेठ उससे अच्छा व्यवहार नहीं रख सका तो इसमें भी समाज दोषी है और यदि अब इन्द्रजीतसिंह उससे ठीक सम्बन्ध नहीं रखता तो हिन्दू समाज में ही त्रुटियाँ हैं।

कुछ ही महीनों के मनन से उसके मन में नये विचार उत्पन्न हुए। समाज में दोषों के होते हुए भी बलवीर, कमल, मुरली, माया अपने सुख निर्माण में सफल हो गये हैं। बलवीर एक स्वाभिमानी राजपूत परिवार में पैदा होकर भी माया जैसी लड़की से, जिसके अविवाहित अवस्था में ही लड़का उत्पन्न हो चुका था, विवाह करने के लिए उद्यत होगया।

बम्बई में उसने अपनी परिस्थिति और माया की परिस्थिति में अन्तर देखा था। इस विचार से उसे अपने माता-पिता पर क्रोध चढ़ आया। वह समझने लगी थी कि सब दोष उसके माता-पिता का है। उन्होंने उसे ग़लत शिक्षा दी थी, उसे अस्वाभाविक, अर्थात् कृत्रिम जीवन व्यतीत करने को कहा था और उसे भारतीय संस्कृति के स्थान में पश्चात्य संस्कृति के अवगुणों को ग्रहण करने का अवसर दिया था।

उसके मन की यह अस्वस्था भी चिर-काल तक नहीं रह सकी। अब उसे ऐसा प्रतीत होने लगा था कि उसका जीवन-सुख उसके माता-पिता के ग़लत विचारों की चट्टान से टकराकर चकनाचूर अवश्य हुआ है; पर उसके माता-पिता के ग़लत विचार भी किसी अन्य परिस्थिति के कारण बने हैं। यह कारण है 'पूँजीवाद का रूप' प्रचलित दस्तकारी की उन्नति के वातावरण में। पूँजीवाद तो चिरकाल से संसार में था, परन्तु उसे अधिक हानि पहुँचाने का अवसर नहीं था। दस्तकारी में मशीनों के समावेश ने पूँजापतियों को मनमाना ऊधम मचाने का अवसर दे दिया। जिसके परिणाम स्वरूप लोगों के चरित्र में गिरावट उत्पन्न हो गई है। यही गिरावट उसके माता-पिता में आगई थी। वास्तविक दोष तो पूँजीवाद का है। इस वैज्ञानिक युग में पूँजीवाद के दांत तोड़ने का आवश्यकता है।

उसके मन के इस विकास में बलवीर और कमल का भारी हाथ था। वह उनसे प्रायः मिला करती थी। दोनों के प्रयत्न से बना आश्रम उसके सन्मुख था। इस काल में आश्रम ने बहुत उन्नति कर ली थी। लगभग दो सौ व्यक्ति उसमें रहते थे। उनके लिए पचास मकान बन गये थे। अर्थात् पचास के लगभग परिवार उस आश्रम में सम्मिलित थे। इनमें साठ के लगभग स्कूल तथा कॉलिज जाने योग्य बच्चे थे। सौ के लगभग स्त्री-पुरुष देहली शहर में नौकरी तथा कोई व्यवसाय करते थे। शेष चालीस के लगभग स्त्री-पुरुष आश्रम के प्रबन्ध में तथा अन्य अबाज पैदा करने में लगे हुए थे। आश्रम में पाँच व्यक्ति ऐसे थे

जो वृद्धावस्था तथा अन्य रोगों के कारण अपाहिज थे ।

खेती-बाड़ी में मशीनों से काम लिया जाने लगा था । सिंचाई के लिए कुओं पर पम्पिङ्ग इंजन लगवाया जा चुका था । खेती में काम के लिए ट्रैक्टर थे । फसल काटने के लिए हार्वेस्टिङ्ग मशीन थी । इस प्रकार थोड़े से लोग न केवल आश्रम की अनाज और सब्जियों की आवश्यकता पूरी कर देते थे, प्रत्युत इतना पैदा करते थे कि हजारों रुपए की बचत भी आश्रम को हो जाती थी ।

अब तो आश्रम में बढ़ई थे, मैमार थे, मजदूर थे, जुलाहे और दर्जी थे । बहुत कम आवश्यकताएं ऐसी थीं, जिनके लिए आश्रम को बाहर से खरीद करनी पड़ती थी ।

छाया यह सब कुछ देख रही थी । सबसे बड़ी बात जो उसे यहां पर दिखाई दी, वह पाप-पुण्य, अच्छाई-बुराई, और उचित-अनुचित का एक नया मापदण्ड था । माया पतिव्रता स्त्री मानी जाती थी । मुरली पंडिताइन थी, वीणा साध्वी थी, कमल नेता था और बलवीर मंत्री । इसी प्रकार जैसा बाहर संसार में था छाया को उससे प्रत्येक बात भिन्न प्रतीत होती थी । पिछले वर्ष पांच बच्चों ने स्कूल फाईनल पास किया था । उनमें से केवल एक को कॉलिज में प्रविष्ट करने की स्वीकृति मिली थी और वह आश्रम की बसों पर एक क्लीनर का काम करने वाले का लड़का था । वह अब्बल दर्जे में पास हुआ था ।

ज्यों-ज्यों छाया इस आश्रम की उन्नति देख रही थी, त्यों-त्यों उसमें मानसिक क्रांति उत्पन्न हो रही थी । वह अपने पिता की धन-लोलुपता देख चुकी थी, अब वह अपने स्वसुर की धन एकत्रित करने में, न्याय-अन्याय को विचार छोड़कर, भाग-दौड़ को भी देख रही थी । दूसरी ओर आश्रम में धन के अर्थ ही दूसरे समझे जाते थे ।

एक दिन वह आश्रम में गई हुई थी । कमल उसे साथ लेकर आश्रम के नये काम दिखा रहा था । एकाएक छाया ने पूछा, 'आपके आश्रम में

सबसे धनी व्यक्ति कौन है ?'

कमल ने उत्तर दिया, 'पुरुषों में क्षिगुर मूँज कूटने वाला ।

'अरे ! यह कैसे ?' छाया ने विस्मय से पूछा ।

कमल का उत्तर था, 'वह सबसे अधिक रोटी खाता है ।'

छाया समझ गई । उसे अब बहुत समझाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी । वह जानती थी कि उसका स्वसुर केवलसिंह लाखों रुपये कमाता हुआ भी दो छोटे-छोटे फूलकों से अधिक नहीं खा सकता था । और क्षिगुर दिन-रात में सोलह रोटियां खाता था ।

आश्रम में एक पुस्तकालय खोला गया था । छाया वहां की पुस्तकों का चुनाव देख रही थी । कमल उसे दिखा रहा था, 'यह हमने बच्चों की किताबों का विभाग खोला है । इसमें पांच हजार पुस्तकें इकट्ठी कर चुके हैं ।'

छाया हैरान थी कि यह सब खर्चा कहां से आता है । उसके इस सम्बन्ध में प्रश्न करने पर कमल ने कहा, 'हमारे आश्रम में लगभग एक सौ चालीस स्त्री-पुरुष दिन में नौ घंटे काम करते हैं । हम यह देखते रहते हैं कि किसी भी व्यक्ति की मेहनत व्यर्थ न जाय । यह मेहनत ही तो धन है । इससे हमारा आश्रम एक अच्छा धनी परिवार है ।'

'क्या आश्रम में ऐसे लोग नहीं, जो खाने-पीने की सुविधा हो जाने से सुस्त और कमजोर हो गए हों !'

'हां, यदि नियंत्रण ढीला हो जाये तो ऐसे लोगों की संख्या बहुत हो जाये । मनुष्य तो स्वभाव से कामचोर है । इस स्वभाव के विपरीत वह विवश होकर ही काम करता है । यह विवशता भूख, व्यास तथा अन्य कष्टों से उत्पन्न होती है । साथ ही कई अन्य बातें भी हैं जो मनुष्य को काम करने पर विवश कर देती हैं । उनमें से एक बात है मान-प्रतिष्ठा का लालसा और दूसरी बात है स्वभाव । हम आश्रम में इन दोनों बातों से सदस्यों को काम करने पर विवश करते रहते हैं । पहले तो हम उन सदस्यों की अधिक मान-प्रतिष्ठा करते हैं जो नियम पूर्वक मन लगाकर

काम करते हैं। पीछे सदस्यों को काम करने का स्वभाव ही उन्हें विवश करने लगता है। यह स्वभाव अभ्यास से पड़ जाता है।

‘आपके आश्रम में और कितने सदस्यों को भरती करने के लिए स्थान है?’

‘हम तो चाहते हैं कि भारतवर्ष का प्रत्येक नगर और गांव एक-एक आश्रम बन जाय। ऐसी अवस्था उत्पन्न होने पर आश्रम के नियमों में कई परिवर्तन करने पड़ेंगे। हम समझते हैं इनसे आजकल के नगरों की अवस्था उन्नत हो जायगी।’

‘मैं तो यह पूछ रही हूँ कि आपके आश्रम में कोई एक कमरा खाली है क्या?’

‘यह प्रश्न ही ऐसा है कि इसमें सरमायेदारी की गन्ध आती है। यहां तो प्रत्येक का अपने लिए स्वयं स्थान बनाने का अवसर है। जो भी नया सदस्य आता है उसके लिए स्थान तुरंत मेहमानघर में मिल जाता है, और पीछे उसके लिए उसकी अवश्यकतानुसार मकान मिल जाता है, या बन जाता है।’

‘यदि मैं आपके आश्रम में आ जाऊँ तो?’

‘आप?’ कमल ने अचम्भे में पूछा।

‘हां। इसमें हैरान होने की कोई बात नहीं है। देखिये कमल जी। जब से मेरा विवाह हुआ है मैं अपने समाज और आपके समाज के भेद को भली-भांति समझने लगी हूँ। एक में सिर से पांव तक धोखा, फरेब, बेईमानी और पाप भरा है। दूसरे में सरलता, स्वच्छता, ईमानदारी और न्याय-परायणता देखती हूँ। यहां वह कारण, जिससे मनुष्य दूसरे पर अन्याय करने का लोभ करता है, नहीं रहा। वहां, धन ही, जो मेहनत से पृथक् वस्तु है, मुख्य पदार्थ माना जाता है। यहां मेहनत को धन समझते हैं और यह सब लोग करते हैं। जब मेहनत को हम एक चल पदार्थ में बदल देते हैं, तो यह चोरी की जा सकती है, छीनी जा सकती है और फिर उसका अपव्यय किया जा सकता है।

यहां इसे चल पदार्थ में बदलने नहीं दिया जाता। मैं अपने संसार से ऊब गई हूं।'

'यों तो कोई भी व्यक्ति, जो मेहनत करने से नहीं डरता, हमारे आश्रम में आ सकता है। और आपके लिए तो सदा से ही इसका दरवाजा खुला है।'

'धन्यवाद। मैं अब वापस घर जाना नहीं चाहती।'

'सच; परन्तु यह क्यों?'

'मैं घर वालों से लड़कर आई हूं। यों तो मेरी घनिष्ठता उनसे कभी भी नहीं थी। पर आज तो बिल्कुल तिनका तोड़ आई हूं। आज प्रातःकाल वे आये और कहने लगे, डाक्टर साठे मुझे बुला रही हैं? मैंने कारण पूछा तो कहने लगे कि उसे मुझसे काम है। मैंने कह दिया 'तो वे स्वयं यहां चला आवें मेरा मन वहां जाने को नहीं करता और मैं आज कमल जी से मिलने जा रही हूं।'

इस पर वह बोले, 'वहां क्या है?' मेरा उत्तर था, 'वहां मुझे शांति मिलती है; इस पर वे कहने लगे- 'साठे से अवश्य मिलने जाना है।' मैंने कह दिया, 'मैं किसी की लौंडी नहीं हूं।' वह बोले 'यहां तो ऐसे ही रहना होगा नहीं तो मैं अपना किनारा कहीं और कर लूं।' फल स्वरूप मैंने अपना किनारा यहीं करने का विचार कर लिया है।'

'परन्तु तुम अपने पिता जी के घर भी तो जा सकती थीं।'

'तो आपको पता नहीं कि क्या हुआ है? भृगुदत्त ने एक औरत की हत्या कर डाली थी। इस अपराध के लिए उसे फांसा का दंड हुआ है। पिता जी का इस समाचार से "हार्ट फेल" हो गया है। मां हैं परन्तु मैं उसके पास रहना नहीं चाहती।'

'भृगुदत्त ने हत्या कर दी,' कमल ने अचम्भे में पूछा, 'क्यों?'

'उसका उस स्त्री से अनुचित सम्बन्ध था। पीछे उसे सन्देह हुआ कि वह स्त्री किसी और से भी सम्बन्ध रखती है। एक दिन उसने शराब पीकर उसके पेट में छुरा घोंप दिया। वह मर गई और

भृगुदत्त भाग गया। पीछे एक बाजारी औरत के मकान पर वह छिपा पाया गया। मुकदमा हुआ, फांसी का दंड हुआ और पिता जी की हृदय की गति बन्द हो गई।'

रायबहादुर केशवदेव के परिवार का यह दुःखान्त नाटक देखकर कमल विस्मित-सा देखता रह गया। छाया ने अपना आशय स्पष्ट करते हुए पूछा, 'तो आप मुझे रहने को स्थान देंगे?'

कमल ने कुछ सोचकर कहा, 'बीणा के साथ रह सकोगी क्या?'

'बीणा? मुझे कुछ संकोच होता है और शायद वह भी पसन्द न करे!'

'क्यों?'

'मैंने उससे अच्छा बरताव नहीं किया। मेरे पास.....।'

इसके आगे वह चुप हो गई।

कमल ने गम्भीर होकर कहा, 'देखो छाया! उस जगत् की बातें वहीं छोड़कर यहां आना चाहिए। वहां एक-एक पैसे के लिए लोग धोर पाप करने पर तैयार हो जाते हैं। यहां रुपये-पैसे का कुछ भी मूल्य नहीं है। या यों कहिए कि उसके लिए किसी व्यक्ति को चिन्ता नहीं करनी पड़ती। यदि तुम बीणा का पांच लाख रुपया दे भी देतीं तो वह उसे अपने पास तो रखती नहीं। फिर उसके न मिलने से उसे दुःख और कष्ट होने को तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।'

छाया का विचार था कि पांच लाख की बात उनको विदित नहीं और इसी कारण वह स्वयं बताते-बताते चुप हो गई थी। कमल को पांच लाख की बात सहज-स्वभाव से कहते देखकर उसका मुख लाल हो उठा और उसकी आंखें लज्जा से नीचे झुक गई थीं। कमल ने बात जारी रखते हुए कहा, 'यदि कहो तो बीणा को बुलाकर पूछूं। उसके मन में उस धन का कुछ भी विचार नहीं है।'

छाया ने कहा, 'परन्तु उसको मालूम है कि उसका इतना रुपया

मेरे पास था ।’

‘हां उसका विचार था कि तुम स्वयं एक दिन आकर दे जाओगी परन्तु जब हमें मालूम हुआ कि तुम्हारे विवाह पर पांच लाख दहेज में दिया गए है, हमें विश्वास हो गया था कि वह धन तुम देने का विचार नहीं रखतीं । इसके पश्चात् तो उसकी कभी बात भी नहीं हुई ।’

‘मैं वीणा के साथ रह सकूंगी ।’ छाया ने कहा, ‘मुझे क्या काम करना होगा ?’

‘यह तो अभी विचारकर बताया जायगा । पर मैं तो समझता हूं कि तुम्हें तुम्हारे सुसराल वाले यहां से ले जाने का यत्न करेंगे ।’

‘मैं सुसराल वालों से ऊबकर ही तो यहां आई हूं । आने से पहले मैं अपने स्वसुर से कह आई हूं कि मैं उनके घर नहीं रह सकती ।’

वे पूछने लगे, ‘क्यों ?’

मैंने कहा, ‘यह तो मुझे आपसे पूछना चाहिए कि मैं आपके घर क्यों रहूं ।’

इस पर वे सोचने लगे और कहने लगे, ‘जो मन में आवे करो ।’

कमल ने वीणा को बुलाकर कह दिया, ‘छाया उसके साथ आश्रम में ही रहेगी ।’

